

हमारे अन्य प्रकाशन

मलाई कर बुराई से डर,	180.00
जहाँ चाह वहाँ राह	170.00
रूसी लोक कथाएँ	150.00
पापा जब बच्चे थे	75.00
बच्चों सुनो कहानी	110.00
सोने की चाबी	60.00
कहानियाँ धातुओं की	60.00
तीन मोटे	60.00
रामानुजन, निराला, कौपनिक्स, शरतचंद — प्रत्येक	12.00

आर्डर हेतु सम्पर्क करें

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड

5-ई, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली - 110 055

दूरभाष : 011-23523349, 23529823

ईमेल : pph56@bol.net.in

हीरे-मोती सोवियत भूमि की जातियों की लोक-कथाएँ



हीरे-मोती सोवियत भूमि की जातियों की लोक-कथाएँ



पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड

5-ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली - 110055

हीरे-मोती

सोवियत भूमि की
जातियों की
लोक-कथासं



पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस (प्रा.) लिमिटेड

५-ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली -110055

e-mail: pph5e@bol.net.in

अक्तूबर, 2010

मूल्य : 200 रुपये

शमीम फ़ैजी द्वारा डावरसन्स स्टाइलिश प्रिंटिंग प्रैस, 5 मलिक बिल्डिंग,
लक्ष्मी नारायण गली, चूना मण्डी, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55 द्वारा मुद्रित और
उन्ही के द्वारा पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस (प्रा.) लिमिटेड, 5-ई, रानी झांसी रोड,
नई दिल्ली से प्रकाशित।

अनुक्रम

जादुई घोड़ा। रूसी लोक-कथा	६
किसान का बेटा इवान और तीन भयंकर राक्षस। रूसी लोक-कथा	१६
बेमिसाल मुक़बला। रूसी लोक-कथा	२७
सुककता मटर। उक़रनी लोक-कथा	३१
ईमानदारी और बेईमानी। उक़रनी लोक-कथा	४५
मेड़िया, कुत्ता और बिल्सा। उक़रनी लोक-कथा	५३
चतुर किसान और घमंडी जागीरदार। उक़रनी लोक-कथा	५७
जादुई बेला। बेलोरूसी लोक-कथा	६१
बिज्जू और लोमड़ी मांव में क्यों रहते हैं। बेलोरूसी लोक-कथा	६५
वसीली ने अजगर को कैसे जीता। बेलोरूसी लोक-कथा	६६
पीलीप्का। बेलोरूसी लोक-कथा	७३
बूढ़ा और जवान पासा। लिथुआनियाई लोक-कथा	७८
एक नवाब कैसे घोड़ा बना। लाटवियाई लोक-कथा	८२
जैसी करनी वैसी भरनी। एस्तोनियाई लोक-कथा	८६
वन-देव हिस्सी की चक्की। कारेलियाई लोक-कथा	९०
बेटों ने बाप का सखाना कैसे पाया। मोल्दावियाई लोक-कथा	९६
बासिल सुंदर स्वरूप और सूर्य सहोदरा इल्याना। मोल्दावियाई लोक-कथा	१००
समझदार खरनियार। आज़रबैजानी लोक-कथा	११७

कामचोर शहीदुल्ला। आजरबैजानी लोक-कथा	१२२
अनाइत। आमीनियाई लोक-कथा	१२७
राजा और जुलाहा। आमीनियाई लोक-कथा	१४२
हिरन-बालक और सुन्दरी येलेना। जार्जियाई लोक-कथा	१४६
भालू ने पाठ पढ़ाया। जार्जियाई लोक-कथा	१६४
बबर और सरगोश। जार्जियाई लोक-कथा	१६६
सोने की कौड़ीवाला अल्तीन-साका। बश्कीरी लोक-कथा	१६८
तीरंदाज और त्सारकिन-खान। काल्मिक लोक-कथा	१७८
हीरे-मोती। तुर्कमानी लोक-कथा	२०६
लालची क्राजी। ताजिक लोक-कथा	२११
तीन अक्लमन्द माई। उज्बेक लोक-कथा	२१८
सबसे बड़ा कौन? किर्गीज लोक-कथा	२२४
अल्बार-कोसे और शिगाई-बाई। कज़ाख लोक-कथा	२२६
बोरोल्बोई-मेर्गेन और उसका बहादुर बेटा। अल्ताई लोक-कथा	२३८
दूब-बाला। याकूतियाई लोक-कथा	२४३
सोने का प्याला। बुर्यात लोक-कथा	२५१
पवन-राज कोतूरा। नेनेत्स लोक-कथा	२५७
लड़की और चन्द्रमा। चुक्ची जाति की लोक-कथा	२६७

प्रकाशकीय

प्रिय पाठको,

हमें विश्वास है कि आपको यह मालूम है कि सोवियत संघ एक विशाल देश है - यह संसार में सबसे बड़ा देश है। पूर्व में अलास्का और पश्चिम में स्कैंडिनेविया इसके पड़ोसी हैं। दक्षिण में यह काकेशिया और पामीर पर्वतमाला तक फैला है और उत्तर में आर्कटिक महासागर तक चला जाता है। और इस विशाल देश का हृदय है मास्को। सुदूर पूर्व में जब खबारोव्स्क नगर में आकाश पर भोर के सूर्य की पहली किरणें फूटती होती हैं, मीन्स्क, कीयेव तथा पश्चिम के अन्य नगरों में सूर्य अस्ताचल की ओर जाता ही होता है। याकूतिया में जब बर्फानी हवाएं चलती होती हैं, तो ताशकंद में मंद समीर के झोंकों में खिले गुलाब झूलते होते हैं और काले सागर के रेतीले तट पर सैलानी लोग सूर्य की सुहानी किरणों में स्नान करते होते हैं।

इस विराट देश में कितनी ही क्रीमें रहती हैं - हर क्रीम की अपनी परंपराएं और रीति-रिवाज, स्वभाव और भाषाएं हैं। उदाहरण के लिए, उज्बेक भाषा और रूसी या मोल्दावियाई में इतनी ही सभानता है, जितनी अरबी की अंग्रेजी या चीनी से।

और सोवियत संघ की हर जाति की अपनी लोक-कथाएं हैं।

चुक्ची, नेनेत्स तथा सुदूर उत्तर की अन्य जातियों की लोक-कथाएं हमें बर्फ़ीले टुंड्रा में ले जाती हैं, प्रबल तुषार और सांय-सांय करते बर्फ़ीले अंधड़ों के इलाक़े में, जहां कुसे और रेंडियर ही मनुष्य के सबसे अच्छे मित्र हैं। मध्य एशियाई जातियों की लोक-कथाओं में ऊंटों के कारवां मंथर गति से जलते रेगिस्तानों को पार करते हैं और चिरप्यासे खेतों को सिंचित करनेवाली नहरों में बहते पानी का अबिराम मर्मर सुनाई देता है। जब हम रूसी लोक-कथाएं पढ़ते हैं, तो और ही दृश्य और बिंब हमारे मानस पटल पर उभरकर आते हैं। इन कथाओं के वीरहृदय तरुण नायक मैदानों और वनों को मुक्की घोड़ों पर

सवार होकर पार करते हैं, जिनमें ग्रीष्म में हरियाली और शीत में बर्फ की सफेदी छाई होती है और अभ्रक की खिड़कियोंवाले लकड़ी के महलों में भुवनमोहिनी राजकुमारियां उनकी प्रतीक्षा में पलकें बिछाये बैठी होती हैं।

इन सभी लोक-कथाओं को हमने क्यों हिंदी में प्रकाशित किया ? इसलिए कि इन में रस है, कल्पना की उड़ान है, सुखद भविष्य के सपने हैं।

जब किताब खोलिये तो सही, आप अपने आपको जादू की दुनिया में पायेंगे। किसान के बेटे इवान के साथ आप आग उगलनेवाले राक्षसों से तलवारें टकरावेंगे, लुढ़कते मटर के साथ आप पाताल लोक में उतरेंगे और उसके साथ उक्राब पर सवार होकर धरती पर वापस आयेंगे, मक्कार और बेरहम शाह को मात देनेवाली चतुर जरनियार से मिलेंगे, अपनी कौम की भलाई के लिए अपने ही बेटे के जीवन को संकट में डालनेवाले अल्ताई पर्वतमाला के साहसी शिकारी बोरोल्दोई-मेर्गेन की सराहना करते झूमने लगेंगे और उस चतुर जुलाहे की त्वरमति पर मुग्ध हो जायेंगे, जिसने बादशाह और उसके आलिम फाज़िल बज़ीरों को समझदारी की एक सीख दी थी।

हमें विश्वास है कि इस पुस्तक के नायकों से परिचित होने के बाद आप उन्हें चाहने लगेंगे और वे आपके अच्छे और विश्वस्त मित्र बन जायेंगे।



जादुई घोड़ा

रूसी लोक-कथा

बहुत पुरानी बात है कि कहीं एक बूढ़ा रहता था। उसके तीन बेटे थे। वो बड़े बेटे घर के काम-काज की देखभाल करते थे, बड़े उदार और बानी थे। उन्हें सुन्दर कपड़े पहनने का भी बड़ा शौक था। मगर इवान जो सबसे छोटा था, उसमें कोई भी गुण नहीं था, निरा बुद्ध था। वह अपना अधिकतर समय अलावधर पर बैठे-बैठे बिता देता और केवल खुमियां इकट्ठी करने के लिए ही बाहर जंगल में जाता।

जब बूढ़े का मरने का वक्त करीब आया तो उसने तीनों बेटों को अपने पास बुलाकर कहा -

“जब मैं मर जाऊं तो तुम लोग लगातार तीन रातों तक ज़रूर मेरी कब्र पर आना और मेरे खाने के लिए कुछ रोटी लाना।”

बूढ़ा मर गया और उसे दफ़ना दिया गया। पहली रात को सबसे बड़े भाई को कब्र पर जाना था, लेकिन वह बड़ा सुस्त था या यों कहिये कि बड़ा डरपोक था और कब्र पर जाने से डरता था। इसलिए उसने बुद्ध इवान से कहा -

“अगर तुम आज मेरी जगह पिताजी की कब्र पर चले जाओ तो मैं तुम्हें केक खरीब दूंगा।”

इवान फ़ौरन राजी हो गया। उसने कुछ रोटी ली और अपने पिता की कब्र पर जा पहुंचा। वह कब्र के पास बैठ गया और आने घटने वाली घटना का इन्तज़ार करने

लगा। आधी रात होने पर जमीन फट कर अलग हो गयी और बूढ़ा बाप क्रब से बाहर आकर बोला -

“कौन है? क्या तुम हो, मेरे बड़े बेटे? मुझे बताओ रूस का क्या हाल है? क्या कुत्ते भौंक रहे हैं, या भेड़िये चिल्ला रहे हैं, या मेरे बेटे रो रहे हैं?”

तब इवान ने जवाब दिया -

“यह मैं हूँ, पिताजी, आपका बेटा। और रूस में सब कुछ ठीक-ठाक है।”

तब पिता ने भर पेट रोटी खायी और अपनी क्रब में जा लेटा। इवान घर लौट आया और रास्ते में केवल खुमियां इकट्ठी करने के लिए ही रुका।

जब वह घर आया तो उसके सबसे बड़े भाई ने पूछा -

“पिताजी से भेंट हुई?”

“हां, हुई,” इवान ने जवाब दिया।

“उन्होंने रोटी खायी?”

“हां, उन्होंने भर पेट रोटी खायी।”

एक और दिन गुबरा और तब दूसरे भाई की बारी आयी। लेकिन वह भी या तो बेहद सुस्त था या इतना डरता था कि जाना नहीं चाहता था। इसलिए उसने इवान से कहा -

“इवान, अगर तुम मेरी जगह चले जाओ तो मैं तुम्हें नये जूते बना दूंगा।”

“ठीक है,” इवान ने कहा, “मैं चला जाऊंगा।”

उसने कुछ रोटी ली और अपने पिता की क्रब पर आकर इन्तजार करने लगा।

आधी रात होने पर जमीन फट कर अलग हो गयी। बूढ़े बाप ने क्रब से बाहर आकर पूछा -

“कौन है? क्या तुम हो, मेरे मंजले बेटे? मुझे बताओ रूस का क्या हाल है? क्या कुत्ते भौंक रहे हैं, या भेड़िये चिल्ला रहे हैं, या मेरे बेटे रो रहे हैं?”

तब इवान ने जवाब दिया -

“यह मैं हूँ, पिताजी, आपका बेटा। और रूस में सब कुछ ठीक-ठाक है।”

तब पिता ने डटकर रोटी खायी और अपनी क्रब में लौट गया। इवान घर वापस चला आया। रास्ते में उसने फिर खुमियां इकट्ठी कीं। वह घर आया तो मंजले भाई ने पूछा -

“पिताजी ने रोटी खायी?”

“हां, भर पेट खायी।”

तीसरी रात इवान की बारी थी। उसने अपने भाइयों से कहा -

“दो रात से मैं पिताजी की क्रब पर जाता रहा हूँ। आज तुममें से कोई एक जाये। मैं घर पर रहकर आराम करूंगा।”

“नहीं,” भाइयों ने जवाब दिया, “आज भी तुम ही जाओ। तुम तो इसके आदी हो चुके हो।”

“चलो, कोई बात नहीं!” इवान राखी हो गया।

उसने कुछ रोटी ली और क्रब पर जा पहुंचा। आधी रात होने पर जमीन फटी और बूढ़ा बाप क्रब से बाहर आकर बोला -

“कौन है? क्या तुम हो, मेरे तीसरे बेटे, इवान? मुझे बताओ रूस का क्या हाल है? क्या कुत्ते भौंक रहे हैं, या भेड़िये चिल्ला रहे हैं, या मेरे बेटे रो रहे हैं?”

तब इवान ने जवाब दिया -

“मैं ही हूँ, पिताजी, आपका बेटा इवान। और रूस में सब कुछ ठीक-ठाक है।”

पिता ने भर पेट रोटी खायी और उससे कहा -

“केवल तुमने ही मेरे आदेश का पालन किया है, इवान। मेरी क्रब पर आते हुए सिर्फ तुम ही नहीं डरे। अब तुम ऐसा करना - खुले मैदान में जाकर पुकारना: ‘जाबुई घोड़े, मेरे सामने आओ, मेरी सुनो और मानो!’ जब घोड़ा तुम्हारे सामने आये तो उसके बायें कान में दाखिल होकर बायें से बाहर आ जाना। तब तुम इतने सुन्दर युवक बन जाओगे कि जैसा पहले कभी किसी ने देखा ही न हो। फिर तुम घोड़े पर सवार होकर, जहां मन चाहे चले जाना।” इतना कह कर पिता ने उसे लगाम दी।

इवान ने वह लगाम ले ली और धन्यवाद दे कर घर की ओर चल दिया। रास्ते में उसने खुमियां इकट्ठी कीं।

वह घर आया तो उसके भाइयों ने पूछा -

“पिताजी से भेंट हुई, इवान?”

“हां, हुई।”

“क्या उन्होंने रोटी खायी?”

“हां, उन्होंने भर पेट रोटी खायी और मुझे क्रब पर न आने का आदेश दिया।”

अब हुआ यह कि उन्हीं विनों जार ने देश के सभी भागों में डौड़ी पिटवायी। सभी सूरमाओं को राजधानी में इकट्ठे होने के लिए कहा गया।

जार की बेटी अनुपमा ने अपने लिए बारह स्तम्भों पर बलूत के लट्टों की बारह तहोंवाला एक महल बनवाने का आदेश दिया था। उसने सबसे ऊपर की मंजिल की

खिड़की में बैठकर उस आदमी की प्रतीक्षा करने का निश्चय किया था जो अपने घोड़े से खिड़की तक उछल कर उसके होंठों को चूम लेगा। जीतनेवाला चाहे अमीर-कुलीन हो, चाहे गरीब-गुरबा, ज़ार अपनी बेटी अनुपमा का विवाह उसी के साथ करेगा और उसे अपना आधा राज्य भी देगा।

यह खबर इवान के भाइयों ने भी सुनी। उन्होंने आपस में तय किया कि वे भी अपनी अपनी क्रिस्मत आजमाने जायेंगे।

उन्होंने अपने बढ़िया घोड़ों को खूब जई खिलायी और उन्हें अस्तबलों से बाहर लाये। उन्होंने अपनी बढ़िया पोशाकें पहनीं और घुंघराते बाल संवारे। अलावघर पर बैठे हुए इवान ने अपने भाइयों से कहा -

“मुझे भी अपने साथ ले चलो, मेरे भाइयो! मुझे भी क्रिस्मत आजमाने का मौका दो।”

“तुम्हें साथ ले चलें? बूढ़ कहीं के! तुम यहीं अलावघर पर बैठे अच्छे लगते हो!” उन्होंने ठहाका लगाया। “अगर तुम हमारे साथ गये तो लोग तुम्हें देखकर हंसेंगे। तुम्हारे लिए तो यही अच्छा है कि जंगलों में जाकर खुमियों की तलाश करो।”

उसके भाई अपने बढ़िया घोड़ों पर सवार हुए। उन्होंने अपने टोपों के सिरे ऊपर करके सीटी बजायी, सिंहनाद किया और सरपट घोड़े दौड़ाते हुए धूल के बादल में विलीन हो गये। इवान ने पिता की बी हुई लगाम उठायी और खुले मैदान में जा पहुंचा। पिता ने जैसे बताया था, उसने वैसे ही चोर से आवाज दी -

“जादुई घोड़े, मेरे सामने आओ, मेरी सुनो और मानो!”

और लो! एक घोड़ा उसकी तरफ तेजी से आता हुआ दिखाई दिया। उसके पांव तले की धरती कांपती थी, उसकी नाक से शोले और कानों से धुएं के बादल निकल रहे थे। यह तेज घोड़ा इवान के पास आकर रुक गया और कहने लगा -

“हुक्म, मालिक!”

इवान ने घोड़े की गर्दन थपथपायी, उसे लगाम पहनायी और उसके बायें कान में प्रवेश कर बायें से बाहर आ गया। देखते ही देखते वह उषा-बेला के आकाश जैसा सुन्वर युवक बन गया। वह जादुई घोड़े की पीठ पर सवार हो गया और ज़ार के महल की तरफ चल दिया। जादुई घोड़ा अपनी दुम की फटकार के साथ पहाड़ियों को लांघता, घाटियों को फांदता, ठूठों-पेड़ों को फसांगता हुआ बढ़ता चला गया।

इवान आखिर ज़ार के महल के आंगन में जा पहुंचा। उस समय महल के इर्द-गिर्द के मैदान लोगों से भरे पड़े थे। वहां ही बारह खम्भों पर बलूत के लट्टों की बारह

तहोंवाला महल था। उस महल की सबसे ऊपर की मंजिल की खिड़की में राजकुमारी अनुपमा बैठी थी।

ज़ार बाहर ओसारे में आया और उसने कहा -

“वीर युवको! तुम में से जो अपने घोड़े पर सवार होकर महल की खिड़की तक उछल कर मेरी बेटी के होंठ चूमेगा, वही उससे शादी करेगा और उसे मैं अपना आधा राज्य भी दूंगा।”

राजकुमारी अनुपमा को पाने की इच्छा रखनेवाले नौजवान, बारी-बारी से घोड़े पर सवार होकर आये, कूबे-फांदे, मगर अफ़सोस! खिड़की उनकी पहुंच से बहुत दूर थी। दूसरे लोगों के साथ इवान के दोनों भाइयों ने भी कोशिश की। वे आधी अंचाई तक भी न पहुंच सके।

अब इवान की बारी आयी। उसने अपना जादुई घोड़ा सरपट दौड़ाया, वह हुंकारते और सिंहनाद करते हुए ऊपर की उछला और दो कम अन्तिम लट्टे तक जा पहुंचा। वह एक बार फिर घोड़े को तेजी से दौड़ाता हुआ आया, ऊपर की उछला और इस बार एक कम अन्तिम लट्टे तक पहुंच गया। उसके लिए अब तीसरा और आखिरी मौका बाक़ी रह गया था। इस बार उसने जादुई घोड़े को बहुत ही तेज दौड़ाया। घोड़ा हांफ रहा था और उसके मुंह से भाग निकल रहा था। इवान आग की तेज लपट की भांति खिड़की के पास पहुंचा और उसने राजकुमारी अनुपमा के शहब जैसे मीठे होंठ चूम लिये। राजकुमारी ने अपनी मुहर की अंगूठी से उसके माथे पर निशान लगा दिया।

लोग चिल्लाये -

“इसे पकड़ो! इसे रोको!”

लेकिन इवान और उसके घोड़े का कहीं अता-पता ही न था।

वे दोनों तेजी से खुले मैदानों में पहुंचे। इवान जादुई घोड़े के बायें कान में दाखिल होकर बायें से बाहर निकल आया और देखते ही देखते वह पहले जैसा हो गया। जादुई घोड़े को वहीं छोड़ कर वह अपने घर की ओर चस दिया। रास्ते में उसने खुमियां इकट्ठी कीं। वह मकान के भीतर गया, एक चियड़े से उसने अपना माथा बांध लिया और पहले की भांति अलावघर पर चढ़कर लेट गया।

कुछ देर बाद उसके भाई आये। वे जहां गये वे और उन्होंने जो कुछ देखा था, वह सब बयान किया।

“राजकुमारी को चाहने वाले बहुत थे और एक से एक बढ़-बढ़ कर सुन्वर भी,” उन्होंने कहा। “लेकिन उनमें से एक तो बस, कमाल ही का था। वह अपने तूफ़ानी घोड़े

से उछलकर राजकुमारी की खिड़की तक पहुंचा और राजकुमारी के होंठ चूमने में सफल हो गया। हमने उसे आते देखा, मगर जाते नहीं देखा।”

चिमनी के पास अपनी जगह से इवान ने कहा—

“शायद वह मैं था, जिसे तुमने देखा था।”

उसके भाई खीझ कर बोले—

“अरे बेवक्रूफ, अपनी बकवास बन्द करो! वहीं अलावघर पर बैठकर खुमियां खाओ!”

तब इवान ने खोल दिया राजकुमारी की मुहर के ऊपर बंधा हुआ चिथड़ा। बस, फिर क्या था, तेज रोशनी से सारा घर जगमगा उठा। उसके भाई डरकर चिल्लाये—

“अरे बेवक्रूफ, यह तुम क्या कर रहे हो? मकान जला डालोगे!”

अगले रोज़ ज़ार ने बहुत बड़ी दावत की, जिसमें उसने अपनी सारी प्रजा को बुलाया। उस दावत में जागीरदार और रईस, साधारण लोग, गरीब-अमीर, जवान-बूढ़े—सभी बुलाये गये।

इवान के भाई भी दावत में शामिल होने के लिए तैयार हुए। “मुझे भी अपने साथ ले चलो, भाइयो,” इवान ने प्रार्थना की।

“क्या?” वे हंसे। “जो भी तुम्हें देखेगा, वही हंसेगा। यहां बैठकर खुमियां खाओ!”

भाई अपने बढ़िया घोड़ों पर सवार होकर चले गये और इवान उनके पीछे-पीछे पदस ही चल दिया। वह ज़ार के महल में पहुंचा और दूर एक कोने में ही बैठ गया। राजकुमारी अनुपमा मेहमानों से भेंट करने लगी। वह सभी को शराब का एक जाम देती और साथ ही यह देखती कि किसी के माथे पर उसकी मुहर तो नहीं लगी है।

इवान के सिवा वह सभी मेहमानों से मिली। इवान के पास पहुंचते ही राजकुमारी का दिल बैठ गया। इवान के सारे शरीर पर कालिख पुती हुई थी और उसके बाल बिखरे हुए थे।

राजकुमारी अनुपमा ने पूछा—

“तुम कौन हो? कहां से आये हो? तुम्हारे माथे पर चिथड़ा क्यों बंधा हुआ है?”

“मैं गिरकर चक्की हो गया हूं,” इवान ने जवाब दिया।

राजकुमारी ने चिथड़ा खोला तो सारा महल एकदम जगमगा उठा।

“यह मेरी मुहर है!” वह चिल्लायी। “यह रहा मेरा मंगेतर!”

ज़ार इवान के पास आया और उसे देखकर कहने लगा—

“अरे नहीं, राजकुमारी अनुपमा, यह तुम्हारा मंगेतर नहीं हो सकता! यह तो निरा उल्लू है!”

इवान ने ज़ार से कहा—

“मुझे अपना मुंह धोने की इजाजत दे दीजिये, ज़ार।”

ज़ार ने इजाजत दे दी। इवान आंगन में पहुंचकर उसी भांति चिल्लाया जैसा कि उसके पिता ने सिखाया था—

“जाबुई घोड़े, मेरे सामने आओ, मेरी सुनो और मानो!”

और लो! एक घोड़ा सरपट दौड़ता हुआ उसकी तरफ़ आता दिखाई दिया। उसके पैरों तले की जमीन कांप रही थी, उसकी नाक से झोले और कानों से धुएं के बादल निकल रहे थे। इवान उसके बायें कान में बाखिल होकर बायें से बाहर निकल आया और एक बार फिर वह उषा-बेला के आकाश जैसा सुन्दर बन गया। वह कितना सुन्दर था, यह बयान के बाहर है।

महल में जमा सभी लोगों ने जब उसे देखा तो दांतों तले उंगली दबा कर रह गए।

इसके बाद, उन दोनों की शादी हो गयी और ज़ार ने शादी की खुशी में एक बड़ी दावत दी।

किसान का बेटा इवान और तीन भयंकर राक्षस

रूसी लोक-कथा



कभी किसी राज्य में एक बूढ़ा अपनी बुढ़िया के साथ रहता था। उनके तीन बेटे थे। सबसे छोटे का नाम इवान था। वे लोग ज़रा भी कामचोर नहीं थे, सुबह से रात तक मेहनत करते थे, हल चलाते थे और बीज बोते थे।

एक दिन इस राज्य में एक बुरी खबर फैली कि एक बहुत ही भयंकर राक्षस देश पर हमला करनेवाला है, वह लोगों को मौत के घाट उतारेगा और सभी नगरों और गांवों को आग की नज़र कर देगा। बूढ़ा-बुढ़िया बहुत दुखी हुए और रोने-धोने लगे। बड़े बेटों ने उन्हें तसल्ली देते हुए कहा -

“आप दुखी न हों! हम उस भयंकर राक्षस से लड़ने जायेंगे और आखिरी सांस रहते तक उस से लोहा लेंगे। इसलिये कि आपको एकाकीपन न खले हम इवान को आपके पास छोड़े जाते हैं। वह तो वैसे भी लड़ने-भिड़ने के लिये अभी बहुत छोटा है।”

“नहीं, मैं घर में रहना और तुम्हारा इन्तज़ार करना नहीं चाहता। मैं भी भयंकर राक्षस से लड़ने जाऊंगा,” इवान ने कहा।

बूढ़े-बुढ़िया ने इवान को न तो रोका-टोका और न ही समझाया-बुझाया।

बूढ़े-बुढ़िया ने अपने तीनों बेटों को सफ़र के लिये तैयार किया। तीनों भाइयों ने



भारी-भारी गदाएं लीं, खाने-पीने की चीज़ों से भरे हुए थैले लटकाये, अपने बड़िया घोड़ों पर सवार हुए और चल दिये।

वे बहुत दूर गये या थोड़ी दूर, यह तो राम जाने! आखिर रास्ते में उन्हें एक बुजुर्ग मिला।

“नमस्कार, सूरमाओ!”

“नमस्कार, दादा!”

“किधर जा रहे हैं आप लोग?”

“हम जा रहे हैं भयंकर राक्षस से लड़ने, अपनी मातृभूमि की रक्षा करने।”

“यह तो बड़ा नेक काम है। मगर लड़ने का काम तुम्हारी गदाओं से नहीं चलेगा, इसके लिये तो दमिश्की इस्पात की तलवारें चाहिये।”

“ये तलवारें कहां से हासिल करें, दादा?”

“यह मैं बताता हूं। सूरमाओ, आप बिल्कुल सीधे ही चलते जायें। आखिर एक ऊंचा पहाड़ आयेगा। उस पहाड़ में एक गहरी गुफा है। मगर उसके मुंह पर एक बहुत बड़ी चट्टान रखी हुई है। उस चट्टान को हटाकर गुफा में दाखिल हो जाना और वहां आपको दमिश्की इस्पात की तलवारें मिल-जायेंगी।”

तीनों भाइयों ने बुजुर्ग राहगीर को धन्यवाद दिया और जैसे उसने बताया था, सीधे ही बढ़ चले। आखिर क्या देखते हैं कि एक बहुत ऊंचा पहाड़ खड़ा है जिसके एक ओर बहुत बड़ी चट्टान रखी हुई है। भाइयों ने उस चट्टान को हटाया और गुफा में दाखिल हुए। भीतर उन्होंने क्या देखा कि तरह-तरह के हथियार ही हथियार हैं, जिनकी न कोई गिनती है, न शुमार। उन्होंने अपने लिये एक-एक तलवार चुन ली और आगे चल दिये।

“भला हो उस बुजुर्ग का,” वे बोले। “तलवार से लड़ाई करना कहीं अधिक आसान होगा!”

वे अपने घोड़े बढाते गये, बढाते गये और आखिर एक गांव में पहुंचे। देखते क्या हैं कि वहां चारों ओर सुनसान है, न कहीं कोई इन्सान है, न इन्सान का नाम-निशान। सभी कुछ जला पड़ा है, खण्डहर ही खण्डहर हैं। बस, एक छोटी-सी झोंपड़ी खड़ी है। तीनों भाई झोंपड़ी में गये। अलावघर पर एक बुढ़िया लेटी हुई कराह रही थी।

“प्रणाम, दादी!” भाई बोले।

“जीते रहो, सूरमाओ! किधर जा रहे हो?”

“हम किशमिशी नदी के रसभरी पुल पर जा रहे हैं, भयंकर राक्षस से लड़ने, अपनी मातृभूमि की रक्षा करने।”

“शाबाश ! बहुत नेक काम करने जा रहे हो। बहुत जालिम है वह राक्षस। सभी को लूटता-खसोटता और मारता-काटता है, सब कुछ आग की नजर कर डालता है। हमारे यहां उसने यही कुछ किया। बस, एक मैं ही जिन्दा बची हूँ...”

तीनों भाइयों ने बुढ़िया की झोंपड़ी में रात बितायी, तड़के ही उठे और फिर चल दिये अपनी मंजिल की ओर।

वे किशमिशी नदी और रसमरी पुल पर पहुंचे। तट पर सभी ओर टूटी तलवारें और तीर-कमान पड़े थे, इन्सानी पंजरों के ढेर लगे थे...

भाइयों को एक खाली झोंपड़ी मिल गई और उन्होंने वहीं रात बिताने का फैसला किया।

“भाइयो, मेरी बात सुनो,” इवान ने कहा, “हम बहुत ही दूर और एक अजनबी देश में आ गये हैं। अब हमें अपनी आंखें और कान खुले रखने चाहिये। आइये, हम बारी-बारी से पहरा दें ताकि भयंकर राक्षस रसमरी पुल को पार न कर सके।”

पहली रात को सबसे बड़ा भाई पहरा देने के लिये गया। उसने तट पर चक्कर लगाया और किशमिशी नदी के पार नजर डाली। वहां एकदम सन्नाटा था, न कोई आदमी था न जीव-जन्तु, न कोई आहट थी न मनक। सबसे बड़ा भाई भाइयों के नीचे जाकर लेट रहा और तुरंत गहरी नींद में डूबकर जोर से खरटि लेने लगा।

इधर इवान झोंपड़ी में लेटा हुआ था—उसकी आंखों में नींद नहीं थी, वह तो ऊंच भी नहीं पा रहा था। जब आधी रात बीत गई तो उसने दमिश्की इस्पात की तलवार उठाई और किशमिशी नदी की ओर चल दिया।

वहां जाकर उसने देखा कि सबसे बड़ा भाई भाइयों के नीचे पड़ा जोरों से खरटि ले रहा है। इवान ने उसे जगाया नहीं। वह रसमरी पुल के नीचे छिप गया और वहां खड़े रहकर पहरा देने लगा।

अचानक नदी के पानी में भारी खलबली मच गई और बलूत वृक्षों पर उक्काब चीखने लगे—छः सिरोंवाला भयंकर राक्षस चला आ रहा था। जैसे ही वह रसमरी पुल के बीचोंबीच पहुंचा, उसका घोड़ा लड़खड़ाने और कंधे पर बैठा हुआ काला कौआ पंख फड़फड़ाने लगा और पीछे-पीछे आते हुए काले कुत्ते के रोंगटे खड़े हो गये।

छः सिरोंवाला भयंकर राक्षस बोला—

“मेरे घोड़े, तू क्यों लड़खड़ा रहा है? काले कौवे, तू क्यों पंख फड़फड़ा रहा है? काले कुत्ते, तेरे रोंगटे क्यों खड़े हो गये हैं? क्या तुम्हें ऐसा लग रहा है कि किसान का बेटा इवान यहीं कहीं है? वह तो अभी पैदा भी नहीं हुआ। अगर पैदा हो भी गया

है, तो मेरे सामने वह राई जितना भी नहीं है! मैं उसे एक हाथ से ऊपर उठाकर दूसरे से मसल दूंगा।”

इतना सुनकर इवान पुल के नीचे से निकला और बोला—

“बहुत बड़-बड़कर बातें न कर, दुष्ट राक्षस! अभी तो तूने उजले बाज्र को तीर का निशाना नहीं बनाया, इसलिये उसके पंख उखाड़ने की बात न कर! मुझे तो यह मालूम नहीं कि मैं कैसा सूरमा हूँ, इसलिये तुझे मेरी खिल्ली उड़ाने का कोई हक नहीं! आ, जरा अपनी ताकत आजमा सें। जो जीत जायेगा, वही अपनी डींग हांक लेगा।”

इस तरह वे दोनों मिड़ गये और उनकी तलवारें इतने जोर से टकराईं कि धरती कांपने और गूंजने लगी।

भयंकर राक्षस का पलड़ा हलका रहा—किसान के बेटे इवान ने तलवार के एक ही वार से उसके तीन सिर काट डाले।

“जरा ठहर जाओ, किसान के बेटे इवान!” भयंकर राक्षस चिल्लाया। “मुझे जरा दम ले लेने दो!”

“दम लेने की बात मत कर, दुष्ट राक्षस! तेरे तीन सिर हैं और मेरा एक। जब तेरा भी एक ही सिर रह जायेगा, तब हम दम लेने की बात सोचेंगे।”

वे फिर से मिड़े, फिर से उनकी तलवारें टकराने लगीं।

किसान के बेटे इवान ने उसके बाक़ी तीन सिर भी काट दिये। फिर उसने उसके शरीर के टुकड़े किये, उन्हें किशमिशी नदी में फेंका, रसमरी पुल के नीचे उसके छः सिर छिपाये और खुद झोंपड़ी में आकर सो रहा।

सुबह को सबसे बड़ा भाई वापस आया। इवान ने उसे देखा तो पूछा—

“कहो भाई, कुछ नजर आया?”

“नहीं भाइयो, मेरे पास तो मक्खी तक भी नहीं फटकी।” उसने जवाब दिया।

इवान यह सुनकर खामोश रहा।

अगले दिन मंझला भाई पहरा देने गया। उसने इधर चक्कर लगाया, उधर चक्कर लगाया, सभी ओर नजर डाली और यह समझ लिया कि सब कुछ ठीक-ठाक है। वह भी भाइयों के नीचे जाकर लेट रहा और सो गया।

इवान ने उसपर भी मरोसा नहीं किया। जब आधी रात बीत गई तो उसने कपड़े पहने, अपनी तेज तलवार ली और किशमिशी नदी की ओर चल दिया। वह रसमरी पुल के नीचे छिपकर प्रतीक्षा करने लगा।

अचानक नदी के पानी में भारी खलबली मच गई, बलूत वृक्षों पर उक्राव चीखने लगे - नौ सिरोंवाला भयंकर राक्षस आ रहा था। जैसे ही वह रसमरी पुल पर पहुंचा वैसे ही उसका घोड़ा लड़खड़ाने और उसके कंधे पर बैठा हुआ काला कौआ पंख फड़फड़ाने लगा और घोड़े के पीछे-पीछे आनेवाले काले कुत्ते के रोंगटे खड़े हो गये। राक्षस ने अपना चाबुक ऊपर उठाया और उसे जोर से घोड़े की बगल, कौवे के पंखों और कुत्ते के कानों पर सटकारता हुआ बोला -

“मेरे घोड़े, तू क्यों लड़खड़ा रहा है? काले कौवे, तू क्यों पंख फड़फड़ा रहा है? काले कुत्ते, तेरे रोंगटे क्यों खड़े हो गये हैं? क्या तुम्हें ऐसा लग रहा है कि किसान का बेटा इवान यहीं कहीं है? वह तो अभी पैदा भी नहीं हुआ। अगर पैदा हो भी गया है तो मेरे सामने वह राई बराबर है! मैं तो उसे एक उंगली से ही दूसरी दुनिया में भेज दूंगा।”

इतना सुनकर किसान का बेटा इवान उछलकर रसमरी पुल के नीचे से सामने आया और बोला -

“एक जरा, बहुत बढ़-चढ़कर बातें न कर, दुष्ट राक्षस! आ, दो-दो हाथ कर लें और फिर देखेंगे कि कौन किसे दूसरी दुनिया में भेजता है!”

इवान दुष्ट राक्षस पर झपटा और उस पर दमिश्की इस्पात की तेज तलवार से उसने एक और फिर दूसरा बार किया और राक्षस के छः सिर काट डाले। राक्षस ने भी जोरदार प्रहार किया और किसान का बेटा इवान घुटनों तक जमीन में धंस गया। मगर किसान के बेटे इवान ने रेत से मुट्ठी भरी और बुझ्मन की अंगारे-सी दहकती आंखों में झोंक दी। राक्षस जब अपनी आंखों से रेत निकालने और उन्हें साफ करने लगा तो इवान ने उसके बाक़ी तीन सिर भी काट डाले। फिर उसने राक्षस की लाश के टुकड़े किये और उन्हें किशमिशी नदी में फेंक दिया। उसने राक्षस के नौ सिरों को रसमरी पुल के नीचे छिपाया, झोंपड़ी में लौटा और बिस्तर पर लेटकर ऐसे सो रहा, मानो कुछ हुआ ही न हो।

सुबह को मंझला माई घर लौटा।

“कहो माई, तुम्हें रात को वहां कुछ नजर आया?” इवान ने पूछा।

“नहीं,” उसने जवाब दिया। “कोई मक्खी या मच्छर तक भी मेरे पास नहीं फटका।”

“अगर यही बात है तो चलो मेरे साथ, मेरे भाइयो। मैं तुम्हें मक्खी और मच्छर दिखाता हूँ।” इवान ने कहा।

इवान अपने भाइयों को रसमरी पुल के नीचे ले गया और उसने उन्हें दोनों राक्षसों के सिर दिखाये।

“यह देखो,” उसने कहा। “रातों को यहां ऐसी मक्खियां और ऐसे मच्छर घूमा करते हैं। तुम्हें मेरे भाइयो, लड़ने-भिड़ने से क्या मतलब, तुम तो घर में आराम से अलाबघर पर लेटे रहा करो!”

दोनों भाइयों पर घड़ों पानी पड़ गया।

“हमें तो नींद ने घर दबाया था,” वे बोले।

तीसरी रात को खुब इवान पहरा देने के लिये जाने को तैयार हुआ। उसने कहा - “मैं आज बहुत ही मयानक लड़ाई लड़ने जा रहा हूँ। मेरे भाइयो, तुम आज रात भर न सोना, मेरी ओर कान लगाये रहना। जैसे ही तुम्हें मेरी सीटी सुनाई दे, वैसे ही मेरे घोड़े को मेरे पास भेज देना और खुब भी भागते हुए मेरी मदद को आ जाना।”

इतना कहकर किसान का बेटा इवान किशमिशी नदी की ओर चला गया और रसमरी पुल के नीचे खड़ा होकर इन्तजार करने लगा।

जैसे ही आधी रात गुजरी कि जमीन कांपने और हिचकोले खाने लगी, नदी के पानी में जोर की खलबली मच गई, तेज हवा सांघ-सांघ करने लगी और बलूत के वृक्षों पर उक्राव चिल्लाने लगे। बारह सिरोंवाला भयंकर राक्षस किशमिशी नदी की ओर आ रहा था। उसके बारह के बारह सिर सीटियां बजा रहे थे और सभी से आग की लपटें निकल रही थीं। इस राक्षस के घोड़े के बारह पंख थे, उसके बाल तांबे के थे और अयाल और दुम लोहे की। राक्षस जैसे ही रसमरी पुल पर पहुंचा, उसका घोड़ा लड़खड़ाने और उसके कंधे पर बैठा हुआ काला कौआ पंख फड़फड़ाने लगा और पीछे-पीछे आते हुए काले कुत्ते के रोंगटे खड़े हो गये। भयंकर राक्षस ने फ़ौरन घोड़े की बगल, काले कौवे के पंखों और कुत्ते के कानों पर चाबुक सटकारा और चिल्लाया -

“मेरे घोड़े, तू क्यों लड़खड़ा रहा है? काले कौवे, तू क्यों पंख फड़फड़ा रहा है? काले कुत्ते, तेरे रोंगटे क्यों खड़े हो गये हैं? क्या तुम्हें ऐसा लग रहा है कि किसान का बेटा इवान यहीं कहीं है? वह तो अभी पैदा भी नहीं हुआ। अगर पैदा हो भी गया है तो मेरे सामने वह राई बराबर ही तो है! मैं तो बस एक बार सीटी बजाऊंगा और उसकी धूल तक भी नहीं मिलेगी।”

इतना सुनकर किसान का बेटा इवान रसमरी पुल के नीचे से निकला।

“दुष्ट राक्षस, बहुत बढ़-चढ़कर बातें न कर। कहीं ऐसा न हो कि फिर शर्म से सिर झुकाना पड़े।”

“ओह, तो तुम हो किसान के बेटे इवान? किसलिये यहां आये हो?”

“बुष्ट राक्षस, मैं आया हूं तुझे देखने, तेरी ताकत आजमाने।”

“मेरी ताकत आजमाने! तुम मेरे सामने मक्खी के समान हो!”

किसान के बेटे इवान ने उसे जवाब दिया—

“मैं न तो तुम्हें क्रिस्ते-कहानियां सुनाने और न तुम से सुनने ही आया हूं। बुष्ट राक्षस, मैं आया हूं तुम्हें मौत के घाट उतारने, मले लोगों को तुमसे निजात दिलाने।”

किसान के बेटे इवान ने अपनी तेज तलवार हवा में लहराई और राक्षस के तीन सिर काट डाले। मगर राक्षस ने अपने सिर पकड़ लिये, उनपर अपनी आग उगलती उंगली रगड़ी और उन्हें फिर से गर्दनों पर टिका दिया। वे उसी क्षण ऐसे जम गये मानो कभी काटे ही न गये हों।

इसी बीच इवान की हालत बहुत खस्ता हो गई। राक्षस ने सीटियां बजाकर उसके कान बहरे कर दिये, अपनी आग उगलती जीभों से उसका तन झुलस दिया, उसपर चिंगारियां बरसाई और उसे धरती में घुटनों तक धंसा दिया।

“किसान के बेटे इवान, शायद तुम कुछ आराम करना चाहोगे?”

“तुम आराम की बात न करो। अपना तो यह उसूल है—लड़ो तो जान हथेली पर रखकर, करो न अपनी चिन्ता रत्ती भर!” इवान ने कहा।

इतना कहकर उसने जोर से सीटी बजाई और अपना बायां बस्ताना जोर से उस झोंपड़ी पर दे मारा जहां उसके भाई थे। दस्ताने ने सभी खिड़कियों के शीशे तोड़ डाले, मगर दोनों भाई गहरी नींद सोये रहे और उन्हें कुछ भी सुनाई न दिया।

किसान के बेटे इवान ने अपनी सारी ताकत बटोरी और फिर एक बार तलवार का पहले से जोरदार वार किया। उसने राक्षस के छः सिर काट डाले। मगर बुष्ट राक्षस ने उन्हें पकड़ लिया, उनपर अपनी आग उगलती उंगली रगड़ी और उन्हें गर्दनों पर टिका लिया। वे फिर तेजी से ऐसे जम गये मानो काटे ही न गये हों। इसके बाद वह किसान के बेटे इवान पर झपटा और उसे कमर तक जमीन में धंसा दिया।

इवान ने महसूस किया कि हालत खस्ता हो रही है। उसने बायां बस्ताना उतारा और झोंपड़ी पर दे मारा। दस्ताना छत तोड़कर नीचे जा गिरा, मगर दोनों भाई सोये ही रहे। उन्हें कुछ भी सुनाई न दिया।

किसान के बेटे इवान ने तीसरी बार अपनी तलवार लहराई और मर्यादक राक्षस के नौ सिर काट डाले। मगर राक्षस ने उन्हें पकड़ लिया और उनके ऊपर अपनी आग उगलती उंगली रगड़ी, उन्हें गर्दनों पर टिकाया और वे फिर से वहां जम गये। इसके

बाद वह किसान के बेटे इवान पर झपटा और उसने उसे कंधों तक धरती में धंसा दिया। मगर इवान ने अपना टोप उतारा और उसे झोंपड़ी पर दे मारा। टोप के लगने से झोंपड़ी हिलने और झूलने लगी और लगभग जमीन से ही जा लगी। तभी जाकर भाइयों की आंख खुली। उन्हें इवान के घोड़े की जोरदार हिनहिनाहट सुनाई दी। वह जिन जंजीरों से जकड़ा हुआ था, उन्हें तोड़ने की कोशिश कर रहा था।

दोनों भाई अस्तबल की ओर भागे। उन्होंने घोड़े को खोल दिया और खुद भी उसके पीछे बौड़ चले।

इवान का घोड़ा सरपट दौड़ता हुआ अपने मालिक के पास पहुंचा और भयंकर राक्षस पर सुम-प्रहार करने लगा। भयंकर राक्षस ने सीटी बजाई, सी-सी की और घोड़े पर चिंगारियों की वर्षा कर दी।

किसान का बेटा इवान जमीन में से बाहर निकला और उसने भयंकर राक्षस की आग उगलती हुई उंगली झटपट काट डाली। इसके बाद उसने उसके सिर काटने शुरू किये, यहां तक कि उसका एक भी सिर बाक़ी न रह गया। फिर उसने राक्षस के शरीर के छोटे-छोटे टुकड़े कर दिये और उन्हें किशमिशी नदी में फेंक दिया।

इसी समय दोनों बड़े भाई भागते हुए वहां पहुंचे।

“ओह, कैसे लोग हो तुम दोनों!” इवान ने कहा। “तुम्हारी इस नींद के कारण मैं तो अपनी जान से लगभग हाथ धो बैठा था।”

दोनों भाई उसे झोंपड़ी में ले गये। उन्होंने उसे नहलाया-धुसाया, खिलाया-पिलाया और उसके सोने के लिये बिस्तर लगा दिया।

इवान तड़के ही उठा और कपड़े पहनने लगा।

“इतने सवेरे ही तुम क्यों उठ गये?” भाइयों ने पूछा। “ऐसी जोरदार मुठभेड़ के बाद तो तुम्हें आराम करना चाहिये।”

“नहीं,” इवान ने कहा, “मुझ से आराम की बात मत करो। किशमिशी नदी के तट पर कहीं मेरी पेटी खो गयी है। मैं उसे ढूँढ़ने जा रहा हूं।”

“उसकी क्या जरूरत है!” भाइयों ने जवाब दिया। “जब हम नगर में जायेंगे, तो तुम वहां नई पेटी खरीद लेना।”

“नहीं, मुझे वह पुरानी पेटी ही चाहिये।”

और इवान अकेला ही किशमिशी नदी की ओर चल दिया। मगर वह पेटी की खोज करने के लिये नहीं रुका। वह रसभरी पुल को लांघकर दूसरे किनारे पर पहुंचा और भयंकर राक्षसों के पत्थर के बने महल में लुके-छिपे जा घुसा। वह एक खुली हुई

खिड़की के पास खड़ा होकर बातचीत सुनने लगा। वह यह जानना चाहता था कि वहाँ कोई नई साजिश तो नहीं रची जा रही।

उसने भीतर झाँका और पाया कि भयंकर राक्षसों की तीनों बीवियाँ और राक्षसों की बूढ़ी माँ बैठी हुई हैं। वे आपस में बातचीत कर रही थीं।

पहले राक्षस की बीवी ने कहा—

“मैं किसान के बेटे इवान से अपने पति का बदला लेकर रहूँगी! वह और उसके भाई जब घर लौटते होंगे तो मैं उनके लिये दिन की गर्मी असह्य बना दूँगी और खुद कुआँ बन जाऊँगी। प्यास से बेहाल होकर वे पानी पीने के लिये आयेंगे और पहला घूंट पीते ही मर जायेंगे!”

“यह तुम्हें अच्छी बात सूझी है!” बूढ़ी राक्षसी ने कहा।

दूसरे राक्षस की बीवी बोली—

“मैं उनके आगे-आगे मागकर सेब का पेड़ बन जाऊँगी। उनमें से हरेक सेब खाना चाहेगा, मगर मुँह में डालते ही दूसरी दुनिया में पहुँच जायेगा।”

“तुम्हें भी अच्छी बात सूझी है!” बूढ़ी राक्षसी ने कहा।

तीसरे राक्षस की बीवी बोली—

“और मैं उनकी आँखों में नीब की धुमारी ला दूँगी। मैं मागकर उनके आगे-आगे जाऊँगी और रेशमी तकियों समेत नर्म-नर्म कालीन बन जाऊँगी। तीनों भाई लेटकर आराम करना चाहेंगे और आन की आन में झुलसकर रह जायेंगे!”

“तुमने भी अच्छी तरकीब सोची है,” बूढ़ी राक्षसी ने कहा।

“फिर भी अगर तुम तीनों उन्हें मार डालने में नाकाम रहोगी, तो मैं खुद एक अतिकाय सूररनी बनकर उन तीनों को निगल जाऊँगी।”

किसान का बेटा इवान उनकी बातें सुनने के बाद जल्दी से अपने माइयों के पास लौट गया।

“मिल गई तुम्हें पेटी?” माइयों ने उससे पूछा।

“हां, मिल गई।”

“इसके लिये इतना वक्त बरबाद करने में क्या तुक थी?”

“हां, तुक थी, मेरे माइयो!”

इसके बाद तीनों भाई सफ़र के लिये तैयार हुए और घर की ओर चल दिये।

अपने घोड़े बढ़ाते हुए उन्होंने मैदान लांघे, खरागाहें पार कीं। गर्मी ऐसी जोरों की थी कि कुछ न पूछिये। उन्होंने अनुभव किया कि अगर वे पानी नहीं पियेंगे, तो उनका

दम निकल जायेगा। उन्होंने इधर-उधर नज़र दौड़ाई तो उन्हें निकट ही एक कुआँ नज़र आया जिसकी सतह पर चांदी का एक डोल तैर रहा था। दोनों बड़े माइयों ने इवान से कहा—

“इवान, आओ थोड़ी देर रुककर ठण्डा पानी पियें और अपने घोड़ों को भी पानी पिलायें।”

“मगर कौन जाने, इस कुएं में कैसा पानी है?” इवान ने जवाब दिया।

इतना कहकर वह घोड़े से नीचे कूदा और तलवार निकालकर कुएं पर चार करने लगा। उसके ऐसा करने पर कुएं से मयानक शोर और चीख-पुकार सुनाई दी। अचानक धुंध छा गई, गर्मी का जोर कम हो गया और उनकी प्यास बुझ गई।

“अब देखा तुमने, मेरे माइयो, कैसा पानी था इस कुएं में,” इवान ने कहा।

वे अपने घोड़े बढ़ाते गये, बढ़ाते गये। इसकी तो राम जाने कि समय बहुत गुज़रा था थोड़ा, मगर तभी उन्हें सेबों का एक पेड़ दिखाई दिया जिस पर बड़े-बड़े और लाल-लाल सेब लटके हुए थे।

दोनों बड़े भाई घोड़ों पर से कूब पड़े और सेब तोड़ने ही वाले थे। मगर इवान उनसे भी तेज़ निकला और वह अपनी तलवार निकालकर सेब के पेड़ की जड़ें काटने लगा। सेब का पेड़ चीखने-चिल्लाने और शोर मचाने लगा।

“देखा तुमने, मेरे माइयो, कैसा था यह सेब का पेड़? इसके सेब हमें मज़ा देने के लिये नहीं थे,” इवान ने कहा।

और वे तीनों फिर अपने घोड़ों पर सवार होकर चल दिये।

वे बहुत देर तक घोड़े दौड़ाते रहे और बहुत थक गये। उन्होंने अपने इर्दगिर्द नज़र डाली तो उन्हें मैदान में नर्म-सा और सुन्दर कालीन दिखाई दिया जिस पर रेशमी तकिये लगे हुए थे।

“आओ, कालीन पर लेटकर ज़रा सुस्ता लें,” दोनों बड़े माइयों ने कहा।

“नहीं, मेरे माइयो, तुम इस कालीन को नर्म और आरामदेह नहीं पाओगे,” इवान ने उनसे कहा।

यह सुनकर दोनों बड़े भाई बहुत बिगड़े।

“तुम कौन होते हो हमें यह बतानेवाले कि हम क्या करें और क्या न करें?” उन्होंने कहा।

मगर इवान ने कुछ भी जवाब न दिया। उसने अपनी पेटी उतारी और कालीन पर फेंक दी। वह जलकर राख हो गई।

“तुम्हारा भी यही हाल हुआ होता,” इवान ने अपने भाइयों से कहा।

उसने निकट जाकर अपनी तलवार से क्लासीन और तकियों के टुकड़े करने शुरू कर दिये। इवान ने उन्हें तार-तार कर बुर फेंक दिया और कहा -

“तुम्हें मुझपर बिगड़ना नहीं चाहिये था, मेरे भाइयो! कारण कि कुआं, सेबों का पेड़ और क्लासीन वास्तव में वे नहीं थे जो नजर आते थे। वे तीनों राक्षसों की बीवियां थीं। वे हमारी जान लेना चाहती थीं, मगर उन्हें सफलता नहीं मिली और उल्टे वे अपनी ही जान से हाथ धो बैठीं!”

तीनों माई घोड़े बढ़ाते गये। उन्होंने लम्बी मंजिल तय की या छोटी, यह तो राम जाने। पर अचानक आकाश एकदम स्याह हो गया, हवा चीखने-चिंघाड़ने और धरती कांपने-कराहने लगी। तभी उन्होंने एक अतिकाय सूअरनी को अपने पीछे भागते आते देखा। उसने अपने बड़े-बड़े जबड़े फाड़े और वह इवान तथा उसके भाइयों को निगल ही जाने वाली थी। मगर ये तीनों भी मोले-माले नहीं थे। उन्होंने अपने सफ़री थैलों में से एक-एक पुड़ा नमक निकाला और सीधे सूअरनी के खुले हुए मुंह में झोंक दिया।

सूअरनी की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उसने समझा कि किसान का बेटा इवान और उसके दोनों माई उसके मुंह में आ गये हैं। वह रुककर नमक को चबाने लगी। मगर यह महसूस कर कि वह नमक खा रही है, फिर से उनके पीछे भागी।

वह तेजी से भागी आ रही थी, उसके बाल खड़े थे और वह बांत पीस रही थी। ऐसा लगता था कि वह अब पहुंची कि पहुंची।

यह देखकर इवान ने अपने भाइयों से कहा कि वे अलग-अलग दिशाओं में मुड़ जायें। उनमें से एक बायीं ओर, दूसरा बायीं ओर और खुद इवान सामने की ओर अपना घोड़ा बौड़ाने लगा।

सूअरनी पास आकर रुक गई। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह सबसे पहले किसका पीछा करे।

वह सोचती और अपनी थूथनी इधर-उधर घुमाती हुई देख रही थी कि इसी बीच इवान ने उसे उठाकर अपनी पूरी ताकत से जमीन पर दे मारा। सूअरनी धूल बनकर धूल में ही मिल गई और धूल हवा में बिखर गई।

इसके बाद इन इलाकों में न राक्षस नजर आये और न अजब-हे या सांप। लोगों को सदा-सदा के लिये डर से निजात मिल गई।

जहां तक इवान का सवाल है, तो वह अपने भाइयों के साथ अपने माता-पिता के पास लौट आया और वे लोग खूब सुख-चैन से रहने लगे।



किसी जमाने में कहीं दो माई रहते थे। एक गरीब था और दूसरा अमीर।

एक दिन क्या हुआ कि गरीब का ईंधन चुक गया। अलायघर गर्म करने के लिये उसके पास कुछ नहीं था। उसके झोंपड़े में बहुत ठंड थी।

उसने जंगल में जाकर कुछ लकड़ी काटी, मगर उसे सादकर घर लाने के लिये उसके पास घोड़ा नहीं था।

“मैं अपने माई के पास जाकर उससे घोड़ा मांग लाता हूं,” उसने सोचा।

तो वह अपने माई के पास गया। अमीर माई को उसके आने पर कोई खुशी न हुई। वह बोला -

“खैर, इस बार तो तुम घोड़ा ले जा सकते हो। मगर यह ध्यान रखना कि बोझ बहुत ज्यादा न हो। हां, फिर इस तरह की फ़रमाइशें लेकर मेरे पास मत आना। तुम आज एक चीज मांग रहे हो तो कल दूसरी मांगोगे। अगर यही सिलसिला जारी रहा तो मैं जल्द ही सड़कों पर भीख मांगता नजर आऊंगा।”

गरीब माई घोड़े को घर ले गया और केवल वहीं जाकर उसे याद आया कि वह घोड़े का साज मांगना तो भूल ही गया।

“अब फिर से माई के पास जाने में कोई तुक नहीं। वह साज तो देगा ही नहीं,” उसने मन ही मन सोचा।

चुनांचे उसने स्लेज को घोड़े की दुम के साथ खूब कसकर बांध दिया और उसे जंगल की ओर हांक ले चला।

लौटते हुए स्लेज एक ठूठ में अटक गई। गरीब आदमी का इस ओर ध्यान नहीं गया और उसने घोड़े को चाबुक मार दिया।

घोड़ा था बड़ा तेज। वह तेजी से आगे की ओर बढ़ा और लीजिये, हुआ यह कि उसकी दुम ही उखड़ गयी!

अमीर भाई ने जब यह देखा कि उसके घोड़े की दुम गायब हो गई है तो वह अपने गरीब भाई को भला-बुरा कहने और कोसने लगा।

“तुमने मेरे घोड़े का सत्यानास कर दिया है!” वह चिल्लाया। “यह मत समझो कि मैं तुम्हारा ऐसे ही पिंड छोड़ दूंगा!”

अमीर भाई ने गरीब के खिलाफ मुकदमा दायर कर दिया।

थोड़ा वक्त गुजरा या बहुत, यह तो राम जाने। आखिर दोनों भाइयों को अदालत में बुलाया गया।

दोनों नगर की ओर चल दिये। वे चलते गये, चलते गये। गरीब सोच रहा था -

“खुद तो कभी अदालत का मुंह नहीं देखा, मगर यह कहावत जरूर सुनी है - ‘सबल सदा निर्बल को पछाड़ता है और मुकदमे में गरीब अमीर से हारता है।’ मुझे अवश्य ही अपराधी ठहराया जायेगा।”

इसी समय वे दोनों एक पुल को पार कर रहे थे। पुल की रेलिंग नहीं थी। इसलिये गरीब भाई का पांव फिसला और वह नीचे जा गिरा। अब संयोग की बात कि इसी समय एक व्यापारी जमी हुई नदी पर से स्लेज दौड़ाता हुआ अपने पिता को डाक्टर के पास लिये जा रहा था। गरीब आदमी सीधा स्लेज में लेटे हुए बीमार बूढ़े पर जा गिरा। बूढ़े का तो उसी क्षण दम निकल गया, पर गरीब भाई को जरा भी चोट नहीं आई।

व्यापारी ने गरीब भाई को पकड़ लिया और गुस्से से उबलते हुए कहा -

“चलो मेरे साथ अदालत में!”

इस तरह वे तीनों, दोनों भाई और व्यापारी, अब एकसाथ नगर की ओर चल दिये।

गरीब आदमी का दिल बिल्कुल ही बैठ गया।

“अब तो सजा जरूर ही मिलेगी,” उसने सोचा।

अचानक उसे सड़क पर एक पत्थर पड़ा दिखाई दिया। उसने उसे उठाकर एक चिथड़े में लपेटा और अपने कोट के अन्दर छिपा लिया।

“जहां सत्यानास, वहां सवा सत्यानास,” उसने सोचा। “अगर जज ने बेइन्साफी की और मुझे मुजरिम ठहराया तो उसे भी मैं दूसरी दुनिया में पहुंचा दूंगा।”

वे जज के सामने पहुंचे। अब गरीब भाई के खिलाफ एक नहीं, दो मुकदमे थे। जज ने मुकदमे की कार्रवाई शुरू की और पूछ-ताछ करने लगा।

गरीब भाई जब-तब जज पर नजर डालता, चिथड़े में लिपटा हुआ पत्थर निकालता और फुसफुसाता -

“मैं न्याय मांगने आया, पर साथ आज त्याग लाया!”

उसने यह एक बार कहा, दूसरी बार कहा और फिर तीसरी बार भी कहा। जज ने यह देखा तो मन ही मन सोचा -

“कहीं यह देहाती मुझे सोने का डला तो नहीं दिखा रहा?”

उसने एक बार फिर देखा तो उसके मन में लालच आ गया।

“अगर यह चांदी ही हो तो भी खासी बड़ी रकम मेरे हाथ लग जायेगी।”

और उसने फ़ैसला यह सुनाया कि दुम के फिर से उग आने तक दुमकटा घोड़ा गरीब भाई के ही पास रहे।

व्यापारी से उसने कहा -

“रही यह बात कि इसने तुम्हारे पिता को मार डाला है, तो यह भी उसी पुल के नीचे बर्फ पर खड़ा हो जाये और तुम्हें पुल पर से उसी तरह छलांग लगाकर इसकी हत्या करनी चाहिये।”

बस, मुकदमा खत्म हो गया। अमीर भाई ने गरीब से कहा -

“चलो ऐसे ही सही, तुम मुझे दुमकटा घोड़ा ही दे दो।”

“अरे, नहीं भाई,” गरीब ने जवाब दिया। “जज ने जो फ़ैसला किया है, वही ठीक है। फिर से दुम उगने तक मैं तुम्हारे घोड़े को अपने ही पास रखूंगा।”

अब अमीर भाई उसे कह-सुनकर राजी करने लगा।

“मैं तुम्हें तीस रूबल देने को तैयार हूं, तुम सिर्फ मुझे मेरा घोड़ा लौटा दो,” उसने कहा।

“चलो, ऐसे ही सही। लाओ रकम।”

अमीर भाई ने तीस रूबल दे दिये और इस तरह बात खत्म हो गई।

अब व्यापारी भी मिन्नत-समाजत करने लगा -

“सुनो, भाई, मैं तुम्हारा क्रूर माफ़ करता हूं। मेरा बाप तो अब किसी तरह से भी वापस आने का नहीं।”

“न, न, अब तो तुम्हें मेरे साथ पुल पर चलना ही होगा। जज के फ़ैसले के मुताबिक तुम्हें पुल से मुझ पर कूदना ही होगा।”

“मैं तुम्हारी जान नहीं लेना चाहता। आओ दोस्ती कर लें। मैं तुम्हें एक सौ रुबल देने को तैयार हूँ,” व्यापारी ने गिड़गिड़ाकर कहा।

गरीब आदमी ने व्यापारी से भी एक सौ रुबल ले लिये। वह वहाँ से जाने ही को था कि जज ने उसे अपने पास बुलाकर कहा—

“अब लाओ, वह दो जिसका तुमने वादा किया था।”

गरीब आदमी ने कोट के नीचे से पोटली निकाली, चिपड़ा हटाया और जज को वह पत्थर दिखाया।

“मैंने आपको यही दिखाते हुए यह कहा था, ‘मैं न्याय मांगने आया, पर साथ आज क्या लाया!’ अगर आप कोई दूसरा फ़ैसला करते तो मैंने इस पत्थर से आपकी जान ले ली होती।”

“शुक्र है मैंने इस बेहाती के हक में ही फ़ैसला कर दिया, वरना मैं अब ज़िन्दा न होता,” जज ने सोचा।

गरीब भाई खूब खुशी मनाता और गीत गाता हुआ घर की ओर चल दिया।

लुढ़कता मटर

उकड़नी लोक-कथा



किसी ज़माने में कहीं एक आदमी रहता था। उसके छः बेटे थे और एक थी बेटी—अल्योन्का। एक दिन क्या हुआ कि बेटे खेत जोतने के लिये गये। उन्होंने अपनी बहन से कहा कि वह खेत में उनके लिये खाना ले आये।

“मुझे यह बता दो कि तुम लोग किस जगह होगे ताकि मैं वहीं पहुँच जाऊँ।” बहन ने कहा।

भाइयों ने जवाब दिया—

“हम अपनी झोंपड़ी से उस जगह तक एक हलरेखा बना देंगे जहाँ हम जोताई करेंगे। हलरेखा के साथ-साथ चलकर तुम हमारे पास पहुँच जाओगी।”

इतना कहकर वे चले गये।

अब हुआ यह कि उसी खेत के पासवाले जंगल में एक अजगर रहता था। उसने आकर भाइयों की बनाई हुई हलरेखा को पाट दिया और अपने घर की ओर ले जानेवाली एक नई हलरेखा बना दी। अल्योन्का अपने भाइयों का खाना लेकर चली तो इसी झूठी हलरेखा के साथ-साथ चलती गई। वह सीधी अजगर के अहाते में जा पहुँची। अजगर ने उसे फ़ौरन पकड़ लिया।

शाम हुई तो भाई घर लौटे। उन्होंने अपनी माँ से कहा—

“हम दिन भर हल चलाते रहे। तुमने हमारे लिये खाने को कुछ क्यों नहीं भेजा?”

“भेजा कैसे नहीं?” मां ने जवाब दिया। “मैंने तो तुम्हारा खाना देकर अल्योन्का को खेत में भेज दिया था और यही सोच रही थी कि वह तुम लोगों के साथ ही घर लौटेगी। कहीं वह रास्ता तो नहीं भूल गई?”

“हम अभी जाकर उसकी खोज करते हैं,” भाइयों ने कहा।

और इस तरह वे छः के छः अजगर की बनाई गई हलरेखा पर चलते हुए उसके अहाते में जा पहुंचे। वे अन्दर गये, उन्होंने इधर-उधर नज़र दौड़ाई तो उन्हें अपनी बहन सामने नज़र आई।

“मेरे प्यारे भाइयो, अजगर के आने पर मैं तुम्हें कहां छिपाऊंगी? वह तुम्हें हड़प जायेगा!” बहन ने दुखी होते हुए कहा।

वे अभी बात कर ही रहे थे कि अजगर आ धमका।

“आदम बू, आदम बू! एक नहीं अनेक।” अजगर फुंकारा। “हां, बताओ तो भले लोगो, हम दोस्ती करेंगे या लड़ाई?”

“लड़ाई!” वे सभी चिल्लाये।

“तो आओ, लोहे के आंगन में चलें।”

इस तरह वे लोहे के आंगन में गये। मगर लड़ाई ज्यादा देर नहीं चली। अजगर ने उन पर एक ही ऐसा वार किया कि वे सब फ़र्श में धंस गये। अजगर ने उन्हें बाहर निकाला तो उनकी मुश्किल से ही सांस आ-जा रही थी। उसने उन्हें एक गहरे तहख़ाने में फेंक दिया।

मां-बाप अपने बेटों के लौटने का इन्तज़ार करते रहे, करते रहे, मगर बेसूद।

एक दिन मां कपड़े धोने के लिये नदी पर गई। उसने इधर-उधर देखा तो मटर के एक छोटे से दाने को अपनी ओर लुढ़कते पाया। उसने उसे उठाकर खा लिया। समय आने पर उनके घर एक बेटा हुआ। मां-बाप ने उसका नाम रखा – लुढ़कता मटर।

लुढ़कता मटर बड़ा होने लगा। वह बढ़ता गया, बढ़ता गया। उम्र में छोटा होने पर भी क्रद में बहुत बड़ा और हट्टा-कट्टा हो गया।

एक दिन लुढ़कता मटर और उसका बाप कुआं खोदने लगे। वे खोदते गये, खोदते गये कि उनके बेलचे एक विराट चट्टान से जा टकराये। बाप चट्टान को उठाने में मदद देने के लिये लोगों को बुलाने गया। मगर लोगों के आने के पहले ही लुढ़कते मटर ने उसे उठाकर बाहर फेंक दिया था। लोगों ने आकर देखा तो वे हैरान भी हुए और डरे भी। उन्होंने महसूस किया कि लुढ़कता मटर उन सब से कहीं अधिक ताक़तवर



है। वास्तव में वे इतने डर गये कि उन्होंने लुढ़कते मटर को मार डालने का इरादा कर लिया। मगर लुढ़कते मटर ने चट्टान को हवा में उछाला और फिर हाथों में लोक लिया। उसकी ताकत का यह करिश्मा देख वे सिर पर पांव रखकर भाग गये।

बाप-बेटा जमीन खोदते रहे। वे खोदते रहे, खोदते रहे कि लोहे का एक बहुत बड़ा टुकड़ा उनके हाथ लग गया। लुढ़कते मटर ने उसे बाहर निकालकर छिपा दिया।

एक दिन लुढ़कते मटर ने अपने मां-बाप से पूछा —

“क्या मेरे और माई-बहन नहीं थे?”

“क्या बतायें तुम्हें, बेटा,” उन्होंने जवाब दिया। “तुम्हारी एक बहन और छः माईं थे, मगर...” तब उन्होंने लुढ़कते मटर को सारा क्रिस्ता कह सुनाया।

“मैं उन्हें खोजने जाता हूँ,” लुढ़कते मटर ने कहा।

मां-बाप ने रोकने के लिये उसकी बहुत भिन्नत-समाजत की।

“तुम मत जाओ बेटे,” वे बोले। “तुम्हारे माईं गये थे और वे छः के छः वहीं रह गये। फिर तुम तो हो भी अकेले ही। तुम लौटकर नहीं आ सकोगे।”

“नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता! मैं जरूर जाऊंगा। अपने मां जनमे माईं-बहन को जरूर छुड़ाकर लाऊंगा!”

उसने लोहे का वह टुकड़ा लिया जो उसे जमीन में से मिला था और लुहार के पास गया।

“जितनी भी बड़ी मुमकिन हो, मुझे एक तलवार बना दो,” उसने लुहार से कहा।

लुहार ने इतनी बड़ी और ऐसी मारी तलवार बना दी कि कई लोग मिलकर उसे लुहारखाने से उठाकर लाये। मगर लुढ़कते मटर ने उसे उठाया, हवा में लहराया और आकाश तक ऊंचा उछाल दिया।

“मैं अब लम्बी नींद सोऊंगा,” उसने अपने बाप से कहा। “बारह दिन बाद जब तलवार उड़ती हुई वापस आये तो मुझे जगा देना।”

वह बारह दिन तक सोया रहा। तेरहवें दिन तलवार धूँ-धूँ की आवाज़ करती हुई नीचे आती दिखाई दी। बाप ने लुढ़कते मटर को जगाया। उसने उठकर अपनी मुट्ठी ऊंची की। तलवार उससे टकराई और दो टुकड़े होकर जमीन पर जा गिरी।

“यह तलवार लेकर मैं अपनी बहन और माइयों की खोज करने नहीं जा सकता,” लुढ़कते मटर ने कहा। “मेरे पास कोई दूसरी ही तलवार होनी चाहिये।”

टूटी हुई तलवार लेकर वह फिर लुहार के पास गया।

“इन टुकड़ों से मुझे एक नई तलवार बना दो,” उसने कहा। “ऐसी तलवार जो मेरी ताकत के मुताबिक हो!”

लुहार ने पहले से भी बड़ी तलवार बना दी। लुढ़कते मटर ने उसे आकाश तक ऊंचा उछाल दिया और फिर जाकर बारह दिन के लिए सो रहा। तेरहवें दिन तलवार धूँ-धूँ की आवाज करती हुई नीचे आती दिखाई दी तो धरती कांपने लगी। मां-बाप ने लुढ़कते मटर को जगाया। वह फौरन उछलकर खड़ा हुआ। उसने अपनी मुट्ठी ऊपर की, तलवार उससे टकराई, मगर वह टूटी नहीं, केवल जरा सी मुड़ी ही।

“हां, इस तलवार को लेकर मैं अपनी बहन और भाइयों की खोज करने जा सकता हूँ,” लुढ़कते मटर ने कहा। “मां, मेरे लिये कुछ रोटियां सेंक दो और रस्क बना दो। मैं जल्द ही यहां से चल दूंगा।”

उसने रस्कों से थैला भरा, मां-बाप से विदा ली और घर से चल दिया।

अजगर की बनाई गई हलरेखा अब बिल्कुल हल्की-हल्की नजर आ रही थी। वह उसी पर चलता हुआ एक जंगल में जा पहुंचा। वह चलता गया, चलता गया और आखिर एक बहुत बड़े अहाते के करीब पहुंचा जिसके चारों ओर बाड़ लगी हुई थी। वह अहाते को लांघकर वहां बने हुए आलीशान मकान में गया। वहां उसे अपनी बहन, अल्योन्का, तो मिल गई, मगर अजगर की न तो सुरत नजर आई और न कहीं उसकी कोई आवाज ही सुनाई दी।

“नमस्ते, सुन्वरी!” लुढ़कते मटर ने कहा।

“नमस्ते, सूरमा! तुम यहां क्यों आये हो? अजगर अभी आ जायेगा और तुम्हें हड़प जायेगा।”

“हो सकता है कि न हड़प पाये। यह बताओ कि तुम कौन हो?”

“मैं अपने मां-बाप की इकलौती बेटा हूँ और उन्हीं के पास रहती थी। अजगर मुझे उठा लाया। मेरे छः भाइयों ने मुझे आजाद कराने की कोशिश की, मगर उन्हें सफलता नहीं मिली।”

“तुम्हारे भाई कहां हैं?”

“अजगर ने उन्हें तहखाने में फेंक दिया था। मुझे मालूम नहीं कि वे ज़िन्दा हैं या मर गये।”

“सुमकिन है मैं तुम्हें निजात दिला दूँ,” लुढ़कते मटर ने कहा।

“यह तुम्हारे बस की बात नहीं है! मेरे भाई भी ऐसा नहीं कर पाये थे। फिर वे तो छः थे और तुम अकेले हो!”

“तो क्या हुआ!” लुढ़कते मटर ने जवाब दिया।

और वह खिड़की के पास बैठकर अजगर का इन्तज़ार करने लगा।

इसी समय अजगर वापस आया और नाक से सूँ-सूँ करता हुआ बोला—

“आदम बू! आदम बू!”

“बेशक तुम्हें आदम बू आ रही होगी,” लुढ़कते मटर ने कहा। “यह रहा आदमशाब!”

“अहा, भले मानस! तुम क्या चाहते हो, लड़ना या दोस्ती करना?”

“लड़ना!” लुढ़कते मटर ने जवाब दिया।

“तो आओ, चलें लोहे के आंगन में!”

“चलो!”

वे लोहे के आंगन में गये। वहां अजगर ने कहा—

“पहले तुम वार करो!”

“न, तुम करो!” लुढ़कते मटर ने कहा।

उनकी तलवारें टकराईं। अजगर ने लुढ़कते मटर पर ऐसा जोरवार वार किया कि वह टखनों तक लोहे के छलियान में घँस गया। मगर लुढ़कता मटर बाहर निकल आया, उसने अपनी तलवार सहलाई और अजगर पर जवाबी वार किया। अब अजगर घुटनों तक फ़र्श में घँस गया। मगर वह बाहर निकल आया और उसने लुढ़कते मटर पर फिर से वार किया तो वह घुटनों तक फ़र्श में घँस गया। मगर लुढ़कता मटर किसी तरह बाहर निकल आया और उसने दूसरा वार किया जिससे अजगर कमर तक फ़र्श में चला गया। लुढ़कते मटर ने तीसरा वार किया और अजगर को वहीं मार डाला।

तब वह तहखाने की ओर गया। वह बहुत गहरा और अंधेरा था। उसने अपने भाइयों को बाहर निकाला जो बिल्कुल मुर्दे जैसे हुए पड़े थे। लुढ़कता मटर अपने भाइयों, अल्योन्का और अजगर के घर में जमा सारा सोना-चांदी लेकर वहां से रवाना हो गया। मगर उसने एक बार भी यह नहीं कहा कि वह उनका भाई है।

वे बहुत देर तक चले या थोड़ी देर तक, यह कोई नहीं जानता। आखिर वे एक नौउम्र बलूत के नीचे आराम करने के लिये बैठ गये। लुढ़कता मटर अपनी मुठमेड़ के बाद इतना थक गया था कि गहरी नींद सो गया। उसके छहों भाइयों ने आपस में सलाह की—

“लोगों को जब यह पता चलेगा कि हम छः होते हुए भी अजगर से नहीं निपट पाये, जबकि इस छोकरे ने अकेले ही उसका काम तमाम कर दिया, तो वे हमारी खिल्ली उड़ावेंगे। इसके अलावा सारे माल-मते का मालिक भी यही होगा।”

वे सलाह-मशविरा करते और सोचते-विचारते रहे। आखिर उन्होंने यह फैसला किया कि लुढ़कता मटर जब तक सोया हुआ है और कुछ महसूस नहीं कर सकता, हमें छाल की रस्सियां बटकर उसे बलूत के साथ बांध देना चाहिये। जंगली जानवर आयेंगे और इसे हड़प जायेंगे। उन्होंने इस फैसले को फौरन अमली शक्ति दी। लुढ़कते मटर को वृक्ष के साथ बांधकर वे चलते बने।

इस बीच लुढ़कता मटर सोया रहा और उसने कुछ भी महसूस नहीं किया। वह एक दिन और एक रात सोया रहा और जब उसकी आंख खुली तो उसने अपने को वृक्ष से बंधा पाया। मगर उसने जोर का एक झटका दिया, बलूत को जड़ समेत उखाड़ लिया और उसे कंधे पर रखकर घर की ओर चल दिया। वह झोंपड़ी के करीब पहुंचा तो उसने भाइयों को अपनी मां से यह कहते सुना -

“क्या तुम्हारा कोई और बच्चा भी हुआ था?”

“हां, हुआ था। उसका नाम है लुढ़कता मटर। वह तुम्हें आजाब कराने गया था।”

तब भाइयों ने कहा -

“तो वह लुढ़कता मटर ही होगा जिसे हम बलूत के साथ बांध आये हैं! हमें जाकर उसे खोलना चाहिये।”

मगर इसी समय लुढ़कते मटर ने उस बलूत को हवा में लहराया, जिसे वह उठाये हुए था, और इतने जोर से झोंपड़ी पर दे मारा कि वह लगभग जमीन से जा लगी।

“अगर तुम ऐसे हो तो यहीं रहो!” वह बोला। “मैं जाता हूं दुनिया का चक्कर लगाने।”

और अपनी तलवार कंधे पर रखकर वह चल दिया।

वह चलता गया, चलता गया। आखिर उसे दो पहाड़ दिखाई दिये, एक दायीं ओर, दूसरा बायीं ओर। उनके बीच एक आदमी अपने हाथ-पैर उनपर टिकाये खड़ा था और उन्हें अलग कर रहा था।

“नमस्ते!”

“नमस्ते!”

“तुम क्या कर रहे हो, भले मानस?”

“रास्ता बनाने के लिये पहाड़ों को हटा रहा हूं।”

“तुम जा कहां रहे हो?”

“जहां मेरी किस्मत का सितारा चमक सके।”

“मैं भी वहीं जा रहा हूं! तुम्हारा नाम क्या है?”

“पहाड़ हिलाऊ। तुम्हारा क्या नाम है?”

“लुढ़कता मटर। चलो, इकट्ठे चलें।”

“चलो!”

सो वे इकट्ठे ही चल दिये। वे चलते गये, चलते गये कि उन्हें जंगल में एक आदमी दिखाई दिया। वह बलूत वृक्षों को जड़ से उखाड़ रहा था। ऐसा करने के लिये उसका केवल एक बार ही हाथ हिलाना काफी होता था।

“नमस्ते!” लुढ़कते मटर और पहाड़ हिलाऊ ने कहा।

“नमस्ते!”

“तुम क्या कर रहे हो?”

“वृक्ष उखाड़ रहा हूं ताकि चलने में सुभीता हो।”

“तुम कहां जा रहे हो?”

“जहां मेरी किस्मत का सितारा चमक सके।”

“हम भी वहीं जा रहे हैं। क्या नाम है तुम्हारा?”

“बलूत उखाड़। और तुम्हारे क्या नाम हैं?”

“लुढ़कता मटर और पहाड़ हिलाऊ। चलो, हम इकट्ठे चलें!”

“चलो!”

सो वे तीनों इकट्ठे ही चल दिये। वे चलते गये, चलते गये। आखिर उन्हें नदी-तट पर बहुत ही लम्बी मूंछोंवाला एक आदमी खड़ा दिखाई दिया। वह तो जैसे ही अपनी एक मूंछ को घुमाता वैसे ही नदी का पानी दो हिस्सों में बंट जाता। बीच में से जमीन निकल आती जिसपर चलते हुए नदी को पार किया जा सकता था।

“नमस्ते!” इन तीनों ने कहा।

“नमस्ते!”

“भले मानस, तुम क्या कर रहे हो?”

“नदी पार करने के लिये पानी को रोक रहा हूं।”

“तुम कहां जा रहे हो?”

“जहां मेरी किस्मत का सितारा चमक सके।”

“हम भी वहीं जा रहे हैं। तुम्हारा क्या नाम है?”

“नदी रोक। और तुम लोगों के क्या नाम हैं?”

“लुढ़कता मटर, पहाड़ हिलाऊ और बलूत उखाड़। चलो, हम इकट्ठे ही चलें।”

“चलो!”

इस तरह वे इकट्ठे ही चल दिये। उनका रास्ता बड़े मजे से कट रहा था - पहाड़ हिलाऊ रास्ते में पड़नेवाले पहाड़ों को एक तरफ हटा देता, बलूत उखाड़ जंगल में से रास्ता बना देता और नदी रोक सामने आनेवाली नदी में से राह बना देता।

चलाचल, चलाचल वे एक जंगल में पहुंचे। वहां उन्हें एक छोटी-सी झोंपड़ी नजर आई। वे अन्दर गये तो झोंपड़ी को खाली पाया।

“हम रात इसी झोंपड़ी में गुजार सकते हैं,” लुढ़कते मटर ने कहा।

सो उन्होंने रात झोंपड़ी में बिताई। अगली सुबह को लुढ़कते मटर ने कहा -

“पहाड़ हिलाऊ, तुम यहीं रहकर खाना पकाओ और हम तीनों शिकार को जाते हैं।”

सो वे चले गये। पहाड़ हिलाऊ ने बहुत-सी चीजें उबालीं, भूनीं, पकायीं और आराम करने के लिये लेट गया। अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई।

“दरवाजा खोलो!” किसी ने पुकारकर कहा।

“मैं तुम्हारा नौकर नहीं हूं कि दरवाजा खोलूं!” पहाड़ हिलाऊ ने जवाब दिया।

दरवाजा खुला और फिर वही आवाज सुनाई दी -

“मुझे उठाकर बहलीज के पार ले जाओ!”

“बड़े आये घन्ना सेठ! खुद ही लांघ लो बहलीज।” पहाड़ हिलाऊ ने जवाब दिया।

अचानक एक बहुत ही छोटे-से बूढ़े ने बहलीज पार की। उसकी दाढ़ी इतनी लम्बी थी कि वह पांच फुट तक फर्श पर घिसटती जाती थी। इस छोटे-से बूढ़े ने पहाड़ हिलाऊ को सामनेवाली जुल्फ से पकड़ा और उसे दीवार में लगी एक कील पर लटका दिया। फिर उसने वह सभी कुछ खा लिया जो खाने के लिए तैयार किया गया था, पीने के लिए जो कुछ था, सब पिया और पहाड़ हिलाऊ की पीठ पर से खाल की लम्बी-सी पट्टी उतारकर चलता बना।

कील पर लटका हुआ पहाड़ हिलाऊ दायें-बायें होता और इधर-उधर हिलता-डुलता रहा। आखिर उसने अपने को छुड़ा लिया, मगर जुल्फ खोकर। अब वह फिर से खाना पकाने लगा। वह अभी खाना पका ही रहा था कि उसके दोस्त लौट आये।

“अब तक खाना नहीं पका?” उन्होंने हैरान होकर पूछा।

“मुझे नींद आ गई थी और खाना पकाने का ध्यान ही नहीं रहा था,” पहाड़ हिलाऊ ने जवाब दिया।

खैर, सबने पेट भर कर खाना खाया और सो रहे। अगली सुबह को लुढ़कते मटर ने कहा -

“बलूत उखाड़, आज तुम घर पर रहो और हम तीनों शिकार पर जायेंगे।”

वे चले गये। बलूत उखाड़ ने बहुत-सी चीजें उबालीं, भूनीं, पकायीं और फिर आराम करने के लिए लेट गया। अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई।

“दरवाजा खोलो!” किसी ने पुकार कर कहा।

“मैं तुम्हारा नौकर नहीं हूं कि दरवाजा खोलूं,” बलूत उखाड़ ने जवाब दिया।

“मुझे उठाकर बहलीज के पार ले जाओ!” फिर वही आवाज सुनाई दी।

“बड़े आये घन्ना सेठ! खुद ही लांघ लो बहलीज!” बलूत उखाड़ ने जवाब दिया।

इसी समय एक बहुत ही छोटा-सा बूढ़ा झोंपड़ी में आया। उसकी दाढ़ी इतनी लम्बी थी कि पांच फुट तक फर्श पर घिसटती जाती थी। उसने बलूत उखाड़ को सामनेवाली जुल्फ से पकड़ा और कील पर लटका दिया। इसके बाद जो कुछ खाने के लिए था, सब खाया और जो कुछ पीने के लिए था, सब कुछ पी लिया। फिर उसने बलूत उखाड़ की पीठ से खाल की लम्बी-सी पट्टी उतारी और चलता बना।

बलूत उखाड़ दायें-बायें होता, हिलता-डुलता और पानी से बाहर निकली हुई मछली की तरह तड़पता रहा और आखिर वह कील से निकल कर नीचे गिर पड़ा। वह फौरन फिर खाना पकाने के काम में जुट गया।

उसके दोस्त लौटे तो बड़े हैरान हुए।

“अब तक खाना नहीं पका?” उन्होंने पूछा।

“जरा झपकी आ गई थी,” उसने जवाब दिया।

मगर पहाड़ हिलाऊ चुप रहा। उसे तो सारी हकीकत मालूम थी।

तीसरे दिन नदी रोक घर पर रहा। उसकी भी वही बुर्गीति हुई।

तब लुढ़कते मटर ने कहा -

“तुम सभी लोग खाना पकाने में बहुत सुस्त हो! पर खैर, कोई बात नहीं। कल तुम लोग शिकार पर जाओगे और मैं घर पर रहूंगा।”

उन्होंने ऐसा ही किया भी। अगली सुबह को उसके सभी दोस्त शिकार पर गये और लुढ़कता मटर झोंपड़ी में रहा। उसने बहुत-सी बढ़िया चीजें उबालीं, पकायीं और भूनीं और फिर लेटकर आराम करने लगा। अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई।

“दरवाजा खोलो!” कोई चिल्लाया।

“जरा रुको, मैं आ रहा हूं।” लुढ़कते मटर ने जवाब दिया।

उसने दरवाजा खोला तो अपने सामने एक बहुत ही छोटे-से बूढ़े को खड़े पाया। उसकी दाढ़ी इतनी लम्बी थी कि पांच फुट तक जमीन पर घिसट रही थी।

“मुझे उठाकर बहलीज के पार ले जाओ!” छोटे-से बूढ़े ने कहा।

लुढ़कते मटर ने बूढ़े को उठाया और उसे झोंपड़ी के अन्दर ले गया। बूढ़ा उसपर झपटने लगा।

“तुम्हें क्या चाहिये?” लुढ़कते मटर ने पूछा।

“तुम्हें अभी पता चल जायेगा कि मुझे क्या चाहिये,” छोटे-से बूढ़े ने कहा और लुढ़कते मटर की जुल्फ की ओर हाथ बढ़ाया। वह उसे पकड़ ही लेनेवाला था कि लुढ़कते मटर ने चीखकर कहा—“तो, ऐसे हो तुम!” इतना कहकर उसने उसे दाढ़ी से पकड़ लिया।

अब लुढ़कते मटर ने एक कुल्हाड़ा लिया, इस छोटे-से बूढ़े को घसीटकर एक बलूत के पास ले गया, बलूत को दो हिस्सों में चीरा और बूढ़े की दाढ़ी को उसमें ऐसे फंसा दिया कि निकल न पाये।

“चूँकि तुम ने मुझे बालों से पकड़ने की कमीनी हरकत की,” उसने छोटे-से बूढ़े से कहा, “इसलिए अब तुम्हें मेरे लौटने तक यहीं बैठे रहना होगा।”

वह झोंपड़ी में लौटा। उसके मित्र शिकार से लौट आये थे।

“खाना तैयार है?” उन्होंने पूछा।

“हां, बहुत देर से,” लुढ़कते मटर ने जवाब दिया।

जब वे खाना खा चुके तो लुढ़कते मटर ने कहा—

“मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें बहुत ही अद्भुत नजारा दिखाता हूँ।”

लुढ़कता मटर उन्हें बलूत के पास ले गया। मगर यह क्या हुआ! वहां न तो बलूत का वृक्ष था और न ही वह छोटा-सा बूढ़ा! वह तो बलूत को जड़ समेत उखाड़कर अपने साथ ले गया था।

तब लुढ़कते मटर ने अपने दोस्तों को सारा किस्सा कह सुनाया। दोस्तों ने भी यह माना कि उस छोटे-से बूढ़े ने उन्हें बालों से पकड़कर कील पर टांग दिया था और वह उनकी पीठों से खाल उतार ले गया था।

“अगर वह ऐसा ही है तो चलो, हम खलकर उसकी तलाश करें।” लुढ़कते मटर ने कहा।

छोटा-सा बूढ़ा जब बलूत को घसीट कर ले गया था तो जमीन पर वृक्ष के निशान रह गये थे। चारों दोस्त इन्हीं निशानों के साथ-साथ चलते गये।

वे चलते गये, खलते गये और आखिर एक ऐसी गहरी खोह के पास पहुंचे जिसका तल ही नजर नहीं आता था।

“पहाड़ हिलाऊ, तुम उतर जाओ इस खोह में!” लुढ़कते मटर ने कहा।

“नहीं, मैं नहीं उतरूंगा।”

“तो तुम उतरो, बलूत उखाड़!”

मगर न तो बलूत उखाड़ और न ही नबी रोक इसके लिए राजी हुए।

“अगर यही बात है तो मैं खुद नीचे उतरता हूँ!” लुढ़कते मटर ने कहा। “आओ, रस्सा लपेट लें!”

उन्होंने अपने गिर्द रस्सा लपेट लिया और लुढ़कते मटर ने उसका एक सिरा अपने हाथ के गिर्द बांध लिया।

“अब मुझे नीचे उतारो!” उसने कहा।

वे उसे नीचे उतारने लगे। उन्हें इस काम में बहुत ही समय लग गया। कारण कि खोह के तल तक पहुंचना तो मानो दूसरी दुनिया में पहुंचने के बराबर था। आखिर वह नीचे पहुंच ही गया। लुढ़कता मटर इधर-उधर चलने-फिरने और देखने-भालने लगा। आखिर उसे एक बड़ा-सा महल दिखाई दिया। वह महल के अन्दर गया। उसमें हर चीज लौ बे रही थी, चमक-चमक रही थी। वह सोने और कीमती पत्थरों का बना हुआ था। लुढ़कता मटर एक के बाद एक कमरे को लांघता गया। अचानक उसने एक ऐसी सुन्दर राजकुमारी को अपनी ओर भागते हुए आते देखा कि जिसकी खूबसूरती के बारे में न तो कल्पना से लिखा जाये और न जबान से कहा जाये।

“ओह, भले मानस, तुम यहां क्यों आये हो?” राजकुमारी ने पूछा।

“मैं लंबी दाढ़ीवाले एक बहुत ही छोटे-से बूढ़े को ढूँढ़ रहा हूँ,” लुढ़कते मटर ने जवाब दिया।

“ओह,” राजकुमारी ने कहा, “छोटा-सा बूढ़ा बलूत में से अपनी दाढ़ी निकालने की कोशिश कर रहा है। उसके पास मत जाओ। वह तुम्हें मार डालेगा। बहुत लोगों की जान ले चुका है वह!”

“मेरी जान नहीं ले सकेगा वह,” लुढ़कते मटर ने कहा। “मैंने ही उसकी दाढ़ी बलूत में फंसाई थी। मगर तुम कौन हो और यहां कैसे हो?”

“मैं राजकुमारी हूँ। छोटा-सा बूढ़ा मुझे मेरे घर से उठा लाया है और यहां बन्दी बनाये हुए है।”

“कोई बात नहीं, मैं तुम्हें आजाद करा दूंगा। मुझे उस बूढ़े के पास ले चलो।”

राजकुमारी उसे छोटे-से बूढ़े के पास ले गई। लुढ़कते मटर ने देखा कि राजकुमारी ने सच ही कहा था। बूढ़ा वहां बैठा था और उसने अपनी दाढ़ी बलूत में से निकाल ली थी। लुढ़कते मटर को देखकर वह गुस्से से चिल्लाया—

“किसलिये तुम यहां आये हो? लड़ने या दोस्ती करने?”

“मैं तुम से दोस्ती नहीं करना चाहता,” लुढ़कते मटर ने कहा। “लड़ने आया हूं।”

तो उनकी तलवारें टकराईं। वे खूब जोर-शोर से और देर तक एक दूसरे पर वार करते रहे। आखिर लुढ़कते मटर का एक भरपूर वार पड़ा और उसकी तलवार बूढ़े के तन के आरपार हो गई। वह वहीं ढेर हो गया।

तब लुढ़कते मटर और राजकुमारी ने सारा सोना और हीरे-मोती समेटे और उस खोह के मुंह की ओर चल दिये जहां से लुढ़कता मटर नीचे उतरा था।

वे खोह के मुंह के पास पहुंचे तो लुढ़कते मटर ने अपने दोस्तों को पुकार कर पूछा -

“मेरे भाइयो, तुम अपनी जगह पर हो?”

“हां, अपनी जगह पर ही हैं!” दोस्तों ने जवाब दिया।

तब लुढ़कते मटर ने एक बोरी रस्से के साथ बांधी और अपने दोस्तों से कहा कि वे उसे ऊपर खींच लें।

“यह तुम्हारे लिये है!” उसने पुकार कर कहा।

दोस्तों ने बोरी ऊपर खींच ली और फिर से रस्सा नीचे लटका दिया। लुढ़कते मटर ने दूसरी बोरी बांध दी।

“यह भी तुम्हारे लिये है!” उसने फिर पुकार कर कहा।

इसी तरह उसने तीसरी बोरी भी उन्हें दे दी। उस छोटे-से बूढ़े का जो भी माल-मत्ता उसके हाथ लगा था, वह सब कुछ उसने उन्हें दे दिया।

इसके बाद उसने राजकुमारी को रस्से के साथ बांधा।

“यह मेरी है!” उसने चिल्लाकर कहा।

तीनों दोस्तों ने राजकुमारी को ऊपर खींच लिया। केवल लुढ़कता मटर ही नीचे रह गया। वे अब सलाह करने लगे।

“उसे ऊपर खींचने की हमें क्या जरूरत पड़ी है? अगर हम उसे वहीं रहने दें तो राजकुमारी भी हमारे ही हाथ लग जायेगी। आओ, उसे थोड़ा-सा ऊपर खींचकर फिर छोड़ दें। वह गिरकर दूसरी दुनिया में पहुंच जायेगा।”

मगर लुढ़कते मटर ने उनके इरादे को मांप लिया। रस्से के साथ एक बड़ा-सा पत्थर बांधकर वह चिल्लाया -

“अब मुझे ऊपर खींच लो!”

दोस्तों ने रस्से को थोड़ा-सा ऊपर खींचा और फिर छोड़ दिया। पत्थर धड़ाम से नीचे जा गिरा।

“तो ऐसे हैं मेरे दोस्त!” लुढ़कते मटर ने अपने मन में कहा। और वह खोह के नीचे की दुनिया का चक्कर लगाने चल दिया। वह चलता गया, चलता गया। अचानक आकाश में भारी घटा घिर आई, मूसलधार बारिश होने लगी और ओले गिरने लगे। लुढ़कते मटर ने एक बलूत के नीचे पनाह ली। अचानक उसे वृक्ष के ऊपर बने हुए घोंसले से उक्ताब के बच्चों की चीं-चीं सुनाई दी। लुढ़कता मटर वृक्ष के ऊपर चढ़ गया और उसने उक्ताब के बच्चों को अपनी गर्म जाकेट से ढक दिया। थोड़ी देर बाद बारिश बन्द हो गई तो इन बच्चों का बाप, एक बड़ा-सा उक्ताब घोंसले में आया। उसने देखा कि बच्चे गर्म जाकेट से ढके हुए हैं। उसने उनसे पूछा -

“किसने तुम्हें ढका है, मेरे बच्चों?”

और बच्चों ने जवाब दिया -

“अगर आप उसे न खाने का वचन दें, तो हम बतायें।”

“तुम चिन्ता नहीं करो। नहीं खाऊंगा।”

“वृक्ष के नीचे बैठे हुए उस आदमी को देख रहे हैं न? उसी ने हमें ढका था।”

इतना सुनकर उक्ताब लुढ़कते मटर के पास गया।

“जो चाहो मांग लो। मैं तुम्हारी हर मनोकामना पूरी करूंगा,” उसने कहा।

“पहली बार ऐसा हुआ है कि मेरी अनुपस्थिति में मेरे बच्चे बारिश में बहे नहीं हैं।”

“मुझे मेरी दुनिया में पहुंचा दो,” लुढ़कते मटर ने कहा।

“क्ल्लासा मुश्किल काम करने को कहा है तुमने मुझे,” उक्ताब ने जवाब दिया।

“मगर हो ही क्या सकता है! तुमने जो कहा है, मैं उसे पूरा करने की कोशिश करूंगा। हम अपने साथ छः पीपे मांस के और छः पीपे पानी के ले लेते हैं। जब भी मैं अपना सिर दायीं ओर करूं, तुम मेरे मुंह में मांस का एक टुकड़ा डाल देना और जब मैं अपना सिर बायीं ओर घुमाऊं तो मुझे पानी पिला देना। जैसा मैंने कहा है अगर तुम वैसा ही नहीं करोगे तो मैं कभी वहां तक नहीं पहुंच पाऊंगा, रास्ते में ही जमीन पर गिर जाऊंगा।”

उन्होंने मांस से भरे छः पीपे लिये और छः पीपे पानी से भरे हुए। लुढ़कता मटर उक्ताब की पीठ पर सवार हो गया और वे उड़ चले! वे उड़ते रहे, उड़ते रहे। उक्ताब ने जब-जब अपना सिर दायीं ओर घुमाया, लुढ़कते मटर ने तब-तब उसके मुंह में मांस का टुकड़ा डाल दिया और जब उसने बायीं ओर को सिर घुमाया तो उसे पानी पिला दिया।

बहुत वक्त गुजर गया, मगर वे अभी भी उड़ते जा रहे थे। इन्सानों की दुनिया में पहुंचने के लिए अब थोड़ा ही फासला बाकी रह गया था। उक्राब ने मांस के लिये दायीं ओर सिर घुमाया, मगर अब मांस का एक भी टुकड़ा बाकी नहीं बचा था। इसलिए लुढ़कते मटर ने अपनी टांग का एक टुकड़ा काटा और उक्राब के मुंह में डाल दिया। इस तरह वे धरती पर पहुंच गये। तब उक्राब ने पूछा -

“तुमने मुझे अभी क्या खाने को दिया था? यह तो बहुत मजेदार था।”

“अपने मांस का टुकड़ा,” अपनी टांग की ओर इशारा करते हुए लुढ़कते मटर ने जवाब दिया।

तब उक्राब ने मांस का वह टुकड़ा थूक दिया। वह दूर तक उड़कर जादुई पानी लाया। जैसे ही उन्होंने मांस के काटे हुए टुकड़े को उस जगह पर टिकाकर थोड़ा-सा जादुई पानी छिड़का वैसे ही टांग फिर से भली-चंगी हो गई।

इसके बाद उक्राब वापस अपने घर चला गया और लुढ़कता मटर अपने तीनों बोस्तों की खोज में खल पड़ा।

तीनों बोस्त राजकुमारी के पिता के महल में जा पहुंचे थे और वहां रहते हुए आपस में लड़ा-झगड़ा करते थे। उनमें से प्रत्येक राजकुमारी से शादी करना चाहता था, दूसरे को सौंपने को तैयार नहीं था।

लुढ़कते मटर ने उन्हें महल में ही पाया। उसे देखते ही उन सब का तो बम निकल गया। उन्होंने सोचा कि वह उनकी जान ले लेगा। मगर लुढ़कते मटर ने कहा -

“जब मेरे सगे भाइयों ने ही मुझे छोड़ा दिया था तो मुझे तुम से तो उम्मीद ही क्या हो सकती थी! तुम्हें माफ़ करने के सिवा कोई चारा नहीं है।”

उसने उन्हें माफ़ कर दिया और खुद राजकुमारी से शादी कर ली। वह अब तक उसके साथ प्यार-मुहब्बत और हंसी-खुशी की ज़िन्दगी बसर कर रहा है।

ईमानदारी और बेईमानी

उक्राबनी लोक-कथा



किसी समय का जिक्र है कि कहीं दो भाई रहते थे। उनमें से एक अमीर था और दूसरा गरीब। एक बार वे इकट्ठे हुए और आपस में बातचीत करने लगे। गरीब भाई ने कहा -

“बेशक ज़िन्दगी बहुत कड़वी है फिर भी बेईमानी की तुलना में ईमानदारी की ज़िन्दगी बसर करना कहीं बेहतर है।”

“वाह, क्या बात कही है!” अमीर भाई चिल्लाया। “अब दुनिया में ईमानदारी नाम की कोई चीज़ बाकी ही नहीं रही, सिर्फ़ बेईमानी ही बेईमानी है। ईमानदारी से तुम्हारा कुछ भला नहीं होगा।”

मगर गरीब भाई अपनी बात पर डटा रहा।

“नहीं भाई,” उसने कहा, “मैं तो यही समझता हूँ कि ईमानदार होना ही बेहतर है।”

“अगर ऐसी ही बात है तो आओ, शर्त हो जाये,” अमीर भाई ने कहा। “हमें जो तीन आदमी सबसे पहले मिलेंगे, हम उन्हीं से यह पूछेंगे कि उनकी इस बारे में क्या राय है। अगर वे कहेंगे कि तुम ठीक कहते हो तो मेरे पास जो कुछ है, वह सब तुम्हारा

हो जायेगा। अगर वे यह कहेंगे कि मैं ठीक कहता हूँ तो जो कुछ तुम्हारे पास है, वह सब मैं ले लूंगा।”

“मुझे मंजूर है!” गरीब भाई राजी हो गया।

वे सड़क पर चल दिये। वे चलते गये, चलते गये और आखिर एक आदमी से उनकी मुलाकात हुई जो उस जगह से लौट रहा था जहां उसने फसल के मौसम में लगातार कड़ी मेहनत की थी।

“नमस्ते, भले मानस!” उसके पास आकर उन दोनों भाइयों ने कहा।

“नमस्ते!”

“हम तुम से कुछ पूछना चाहते हैं।”

“पूछो!”

“दुनिया में ईमानदारी की ज़िन्दगी बिताना बेहतर है या बेईमानी की?”

“भले लोगो, आज की दुनिया में ईमानदारी है ही कहां!” उस आदमी ने जवाब दिया। “अब मुझे ही ले लो। मैंने हर दिन बहुत बहुत देर तक और कड़ी मेहनत से काम किया, मगर कमाया लगभग कुछ भी नहीं। मेरी ज़रा-सी कमाई का कुछ हिस्सा भी मालिक ने हड़प लिया। यह है ईमानदारी का नतीजा! ईमानदारी से बेईमानी कहीं अच्छी है!”

“देखा तुमने? क्या कहा था मैंने तुम से, भाई?” अमीर भाई ने कहा। “मेरी बात सही है और तुम्हारी ग़लत।”

गरीब भाई को बड़ा दुःख हुआ, मगर करता तो क्या! वे आगे चल दिये। वे चलते गये, चलते गये और आखिर उन्हें एक व्यापारी मिला।

“नमस्ते, हुजूर!” दोनों भाइयों ने कहा।

“नमस्ते!”

“हम आप से कुछ पूछना चाहते हैं।”

“पूछो!”

“दुनिया में ईमानदारी की ज़िन्दगी बिताना बेहतर है या बेईमानी की?”

“अरे, बाह रे भोले लोगो! ईमानदारी की ज़िन्दगी में क्या रखा है! अगर कोई माल बेचना हो तो सौ बार झूठ बोलने की ज़रूरत पड़ती है, छल-कपट करना पड़ता है। ऐसा न करने का मतलब होगा कुछ भी न बेच पाना।”

इतना कहकर वह अपने रास्ते चल दिया।

“देखा तुमने, दूसरी बार भी मेरी ही बात सही निकली है।”

गरीब आदमी का दिल और भी बैठ गया। मगर वह करता भी तो क्या! चुनांचे वे आगे चल दिये। वे चलते गये, चलते गये और आखिर एक जमींदार से उनकी मुलाकात हुई।

“नमस्ते, श्रीमान जी!” दोनों भाइयों ने कहा।

“नमस्ते!”

“हम आप से कुछ पूछना चाहते हैं।”

“पूछो!”

“दुनिया में ईमानदारी की ज़िन्दगी बिताना बेहतर है या बेईमानी की?”

“अरे, बाह रे भले मानसो! आज की दुनिया में ईमानदारी है ही कहां! अगर मैं ईमानदारी की ज़िन्दगी बिताता तो मेरे ये ठाठ-बाट...” अपनी बात पूरी किये बिना ही जमींदार ने अपना घोड़ा आगे बढ़ा दिया।

“हां, तो मेरे भाई! चलो, अब घर चलें। जो कुछ तुम्हारे पास है, वह अब तुम मेरे हवाले कर दो!”

गरीब आदमी अपने घर की ओर चला जा रहा था, मन ही मन बहुत दुखी होता हुआ। उसकी जो थोड़ी-सी जमा-पूंजी थी, वह अमीर भाई ने ले ली और केवल झोंपड़ी ही उसके पास रहने दी।

“तुम क़िल्हाल यहां रह सकते हो,” उसने कहा। “अभी मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है। मगर जल्द ही तुम्हें अपने रहने के लिए कोई दूसरी जगह तलाश करनी होगी।”

गरीब आदमी परिवार के साथ झोंपड़ी में बैठा हुआ था। उनके पास खाने के लिए रोटी का एक टुकड़ा तक नहीं था। वह कहीं जाकर कुछ कमा भी नहीं सकता था, क्योंकि उस साल फसल ही नहीं हुई थी। गरीब आदमी ने अपने को बश में किया, मगर बच्चे मूख से रोने-चिल्लाने लगे। तब गरीब आदमी ने एक बोरी ली और आटा मांगने के लिए अपने भाई के पास गया।

“भाई, मुझे कुछ आटा या अनाज दे दो,” उसने कहा। “घर में खाने के लिए कुछ नहीं है और बच्चों का मूख के मारे बुरा हाल है।”

अमीर भाई ने कहा—

“मैं तुम्हें आटा दे सकता हूँ, पर इसके लिए तुम्हें अपनी एक आंख निकलवानी होगी।”

गरीब आदमी ने कुछ देर सोच-विचार किया, मगर इसके सिवा चारा ही क्या था।

“मुझे मंजूर है,” उसने कहा। “निकाल लो मेरी आंख, भगवान तुम्हारा भला करे। मगर ईसा मसीह के नाम पर मुझे कुछ आटा अवश्य दे दो।”

चुनांचे अमीर ने गरीब भाई की एक आंख निकाल ली और उसे सड़ा हुआ कुछ आटा दे दिया। गरीब आदमी आटा लेकर घर लौटा। उसकी बीवी की जैसे ही अपने पति पर नजर पड़ी वैसे ही वह कलेजा थामकर रह गई।

“यह तुम्हें क्या हुआ है? तुम्हारी एक आंख कहां गई?”

“भाई ने निकाल ली,” उसने जवाब दिया।

गरीब आदमी ने अपनी पत्नी को सारा किस्सा कह सुनाया। वे रोये-धोये, चीखे-चिल्लाये, मगर फिर उसी आटे से पेट की आग बुझाने लगे।

एक सप्ताह या शायद इससे कुछ अधिक समय बीता और वह आटा खत्म हो गया। गरीब आदमी ने फिर से बोरी उठाई और अपने भाई के पास पहुंचा।

“मेरे भाई, प्यारे भाई, मुझे कुछ आटा और दे दो,” वह बोला। “जो आटा तुमने कुछ दिन पहले दिया था वह तो खत्म हो गया।”

“अगर दूसरी आंख निकाल लेने दोगे तो आटा दे दूंगा,” अमीर भाई ने जवाब दिया।

“दोनों आंखें गंवाकर मैं इस दुनिया में कैसे रहूंगा, मेरे भाई! मेरी एक आंख तो तुम निकाल ही चुके हो! रहम करो, अंधा किये बिना ही मुझे कुछ आटा दे दो।”

“नहीं, मैं मुफ्त आटा नहीं दूंगा,” उसने जवाब दिया। “एक आंख और निकाल लेने दो, तभी दूंगा।”

गरीब आदमी करता भी तो क्या!

“निकाल लो, भगवान तुम्हारा भला करे,” उसने कहा।

चुनांचे अमीर भाई ने चाकू लिया, अपने गरीब भाई की दूसरी आंख भी निकाल ली और उसकी बोरी आटे से भर दी। गरीब आदमी बोरी उठाकर घर की ओर चल दिया।

वह जगह जगह ठोकर खाता, रास्ता टटोलता और एक के बाद एक बाड़ से टकराता बड़ी मुश्किल से आटा लिये हुए घर पहुंचा। उसकी बीवी ने उसे देखा तो सिर पीटकर रह गई।

“अरे बबक़िस्मत आदमी, आंखों के बिना तुम इस दुनिया में कैसे रहोगे!” वह चिल्लाई। “शायद हमें किसी और जगह से कुछ आटा मिल जाता, मगर अब...”

बेचारी औरत ऐसे जार-जार रोई कि उसके मुंह से एक शब्द भी न फूट सका।

अंधा बोला—

“रोओ मत, बीवी! दुनिया में मैं अकेला ही अंधा नहीं हूँ। मुझ जैसे और भी बहुतरे हैं। वे भी आंखों के बिना काम चला लेते हैं।”

मगर एक बोरी आटा तो परिवार के लिए बहुत नहीं होता। वह जल्द ही खत्म हो गया।

“बीबी, मैं अपने भाई के पास अब नहीं जाऊंगा,” अंधे ने कहा। “मुझे गांव के बाहर सड़क के किनारे वाले चिनार के नीचे दिन भर के लिए पहुंचा दो। शाम को आकर तुम मुझे घर लिवा लाना। उस रास्ते से बहुत-से बटोही और घुड़सवार गुजरते हैं। कोई न कोई मुझे जरूर रोटी का एकाध टुकड़ा दे देगा।”

अंधे की बीवी उसे वहां ले गई जहां उसने कहा था। वह उसे चिनार के नीचे बिठाकर घर वापस आ गई।

अंधा वहां बैठा रहा। किसी राहगीर ने उसे एक पैसा दिया, तो किसी ने दो। शाम होने को थी, मगर उसकी बीवी को आने में देर हो गयी। अंधा थक गया था, इसलिए वह अकेला ही घर की ओर चल दिया। वह गलत दिशा में मुड़ गया और घर पहुंचने के बजाय तथा यह जाने बिना ही कि किधर जा रहा है, आगे ही आगे चलता गया। अचानक उसे अपने सभी ओर वृक्षों की सर-सर, मर-मर सुनाई दी। अंधे को यह समझने में देर न लगी कि वह किसी जंगल में पहुंच गया है और उसे यहीं रात बितानी होगी। मगर इस डर से कि कहीं जंगली जानवर उसे न खा जायें, वह जैसे-तैसे एक वृक्ष पर चढ़ गया और वहां निश्चल-सा बैठ रहा।

आधी रात हुई तो अचानक इसी जगह और इसी वृक्ष के नीचे भूत-प्रेत उड़ते हुए आये। उनके सरदार ने पूछना शुरू किया कि वे क्या कुछ करते रहे हैं।

“मैंने दो बोरी आटे के लिए एक भाई को अंधा करवा दिया है,” एक भूत ने कहा।

“तुमने अच्छा किया, मगर बहुत अच्छा नहीं,” भूत-प्रेतों के सरदार ने कहा।

“वह कैसे?”

“वह ऐसे कि अंधा ज्यों ही इस वृक्ष के नीचे पड़ी हुई ओस आंखों पर मलेगा, वैसे ही उसकी आंखों की रोशनी लौट आयेगी।”

“मगर यह तो न किसी ने सुना है और न कोई जानता ही है। इसलिये वह अंधा ही रहेगा।”

भूत-प्रेतों के सरदार ने अब दूसरे भूत से पूछा कि उसने क्या कारगुजारी की है।

“मैंने एक गांव का सारा पानी सुखा दिया है। वहां पानी की एक बूंद तक बाक़ी नहीं रही। इसलिये अब वहां के लोगों को चालीस कोस की दूरी से पानी लाना पड़ता है और बहुत से लोग रास्ते में ही ढेर हो जाते हैं,” दूसरे प्रेत ने जवाब दिया।

“तुमने अच्छा किया, मगर बहुत अच्छा नहीं।”

“सो कैसे?”

“वह ऐसे कि अगर गांव के सबसे पासवाले नगर में पड़ी बड़ी चट्टान को हटा दिया जाये तो उसके नीचे से सभी की जरूरतें पूरी करने के लिए काफ़ी पानी मिलने लगेगा।”

“मगर यह तो न किसी ने सुना है और न कोई जानता ही है। इसलिये पानी चट्टान के नीचे ही रहेगा।”

“और तुमने क्या किया है?” सरदार ने तीसरे मृत से पूछा।

“मैंने एक राज्य के राजा की इकलौती बेटी को अंधा कर दिया है। हकीम-वैद्यों के किये कुछ न होगा।”

“तुमने अच्छा किया, मगर बहुत अच्छा नहीं।”

“सो कैसे?”

“वह ऐसे कि अगर इस वृक्ष के नीचे पड़ी हुई ओस उसकी आंखों पर मल दी जाये तो उनकी रोज़नी लौट आयेगी।”

“मगर यह तो न किसी ने सुना है और न कोई जानता ही है। इसलिये वह अंधी ही रहेगी।”

वृक्ष के ऊपर बैठा हुआ अंधा सारी बातें सुन रहा था। जैसे ही मृत-प्रेत उड़े वैसे ही वह वृक्ष से नीचे उतरा। उसने अपनी आंखों पर ओस मली। फ़ौरन ही उसे नज़र आने लगा। तब उसने सोचा – “अच्छा अब चलकर लोगों की मदद करता हूं।” उसने उस प्याले में ओस इकट्ठी की जो उसके पास था और वहां से चल दिया।

वह उस गांव के निकट पहुंचा जहां पानी नहीं था। उसने देखा कि एक बुढ़िया बहंगी पर दो बाल्टियां लटकाये चली जा रही है। उसने बुढ़िया को नमस्कार किया और कहा –

“दादी, मुझे ज़रा सा पानी पिला दो!”

“अरे, बेटे! यह पानी मैं लगभग चालीस कोस से ला रही हूं। आधा तो रास्ते में ही गिर गया। फिर मेरा तो परिवार भी बहुत बड़ा है। पानी के बिना उसका बुरा हाल हो जायेगा।”

“तुम्हारे गांव में मेरे पहुंचते ही सब के लिए काफ़ी पानी हो जायेगा।”

बुढ़िया ने उसे पानी पिलाया। अब उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। वह जल्दी-जल्दी गांव पहुंची और उसने लोगों से इस आदमी की चर्चा की। किसी को विश्वास हुआ और किसी को नहीं, मगर सभी उसके स्वागत को आये। उन्होंने सिर झुकाकर उसे नमस्कार किया और कहा –

“बयालु और भले आदमी, हमें ज़ालिम मौत के पंजे से छुटकारा दिलाओ!”

“अच्छी बात है,” उसने जवाब दिया। “पर तुम लोग मेरी मदद करो। मुझे अपने पासवाले नगर में ले चलो।”

वे उसे वहां ले आये। अब वह उस चट्टान को खोजने लगा। वह खोजता रहा, खोजता रहा और आखिर वह चट्टान मिल गई। सब ने मिलकर उसे हटाया। चट्टान के हटते ही उसके नीचे से पानी की धारा फूट निकली। इतना पानी निकला, इतना पानी निकला कि सभी ताल-तलैयां, सभी नद-नाले किनारों तक भर गये। लोग बहुत खुश हुए, उन्होंने इस व्यक्ति को बहुत बहुत धन्यवाद दिया, बहुत-सा रुपया और ढेरों उपहार भेंट किये।

अब यह व्यक्ति घोड़े पर सवार होकर चल दिया। वह घोड़े को बढ़ाता और राहगीरों से उस राज्य का रास्ता पूछता चला गया जिसके राजा की बेटी अंधी हो गई थी। उसे बहुत वक्त लगा या थोड़ा यह तो राम जाने, पर आखिर वह वहां पहुंच गया।

राजा के महल के दरवाजे पर जाकर उसने नौकरों से कहा –

“मैंने सुना है कि आपके राजा की बेटी बहुत बीमार है। शायद मैं उसका इलाज कर सकता हूं।”

“अरे, तुम क्या इलाज करोगे उसका! यहां बड़े-बड़े हकीम-वैद्यों के किये भी कुछ न हुआ। तुम मला क्या करोगे।”

“फिर भी आप लोग राजा को खबर तो कर दें!”

वे राजा को खबर देना नहीं चाहते थे, मगर यह व्यक्ति ज़िब करता गया, ज़िब करता गया। आखिर कोई चारा न देख कर वे मान गये। राजा ने उसे फ़ौरन महल में बुलवाया –

“तुम मेरी बेटी का इलाज कर सकते हो?” राजा ने पूछा।

“हां, कर सकता हूं।” उसने जवाब दिया।

“अगर तुम उसे मला-चंगा कर दोगे तो मैं तुम्हें मुंह मांगा इनाम दूंगा।”

इस भले मानस को राजकुमारी के कमरे में पहुंचाया गया। उसने वह ओस राजकुमारी की आंखों पर मली जो अपने साथ लाया था। राजकुमारी को फिर से

नज़र आने लगा। तब राजा को कितनी खुशी हुई यह बयान से बाहर है। उसने इस व्यक्ति को इतनी दौलत दी कि उसे घर से जाने के लिए घोड़ा-गाड़ियों की जरूरत पड़ी।

इसी बीच उसकी पत्नी बुद्ध-सागर में गोते खाती रही, रोती-तड़पती रही। उसे पति का कुछ अता-पता नहीं था। वह सोचती कि उसका पति अब इस दुनिया में नहीं रहा। अचानक वह घर आ पहुंचा और खिड़की को खटखटाते हुए चिल्लाया -

“बीवी, दरवाजा खोलो!”

उसने पति की आवाज़ पहचान ली और बहुत खुश हुई। उसने मागकर दरवाजा खोला और उसे झोंपड़ी के अन्दर ले गई। वह तो यही समझती थी कि उसका पति अंधा है।

“जरा रोशनी करो!” वह बोला।

उसने रोशनी की। वह पति की ओर देखते ही खुशी से ताली बजाकर चिल्लाई -

“तुम्हारी नज़र लौट आई! मगवान तुम्हारा मला हो! यह सब कैसे हुआ? बताओ तो!”

“जरा ठहरो बीवी, पहले धन-दौलत अन्दर ले आये।”

वे ठेरो ठेरो दौलत अन्दर ले आये। अमीर भाई की दौलत अब इसके मुक्काबले में थी ही क्या!

चुनांचे वे बहुत अमीर होकर खूब मजे की खिन्गी बिताने लगे। अमीर भाई को भी इसकी खबर मिली तो मागा हुआ आया -

“भाई, यह सब कैसे हुआ कि तुम्हारी नज़र लौट आई और तुम ऐसे धनी भी हो गये?”

इस भाई ने कुछ भी नहीं छिपाया और सारा क्रिस्ता कह सुनाया।

अमीर भाई ने अब और भी अधिक अमीर होना चाहा। जैसे ही रात हुई वैसे ही वह भागता हुआ चुपके-चुपके उस जंगल में जा पहुंचा और उसी वृक्ष पर चढ़कर बैठ रहा। अचानक आधी रात को सभी भूत-प्रेत और उनका सरदार उड़ते हुए इसी वृक्ष के नीचे इकट्ठे हुए। भूत-प्रेत बोले -

“यह क्या क्रिस्ता है! न तो कभी किसी ने इनके बारे में सुना था और न ही कोई जानता था और फिर भी अंधा भाई आँखोंवाला हो गया है, चट्टान के नीचे से पानी बह निकला है और राजकुमारी भली-चंगी हो गई है। कहीं किसी ने चोरी-चोरी हमारी बातें तो नहीं सुनी हैं? आओ, उसे ढूँढ़ें!”

वे तलाश करने लगे। उसी वृक्ष पर चढ़े तो वहां अमीर भाई को बैठे पाया। उन्होंने उसे पकड़ कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

मेड़िया, कुत्ता और बिल्ला

उक्रड़नी लोक-कथा



किसी समय कहीं एक किसान रहता था। उसके पास एक कुत्ता था। जब तक वह जवान था अपने मालिक के घर की रखवाली करता रहा। लेकिन जब बूढ़ा हो गया तो मालिक ने उसे भगा दिया। कुत्ता मैदानों में घूमता, चूहे और अन्य जो भी छोटे-मोटे जानवर हथ्ये चढ़ जाते, उन्हें पकड़ता और खा लेता।

एक रात को उसने एक मेड़िये को अपनी ओर आते देखा।

“कहो भाई कुत्ते, क्या हालचास है?”

कुत्ते ने शिष्टतापूर्वक जवाब दिया कि खुदा का शुक्र है। तब मेड़िये ने पूछा -

“किधर जा रहे हो?”

“जब मैं जवान था,” कुत्ते ने बताया, “मेरा मालिक मुझको बहुत चाहता था। मैं उसके घर की रखवाली जो करता था। मगर जब मैं बूढ़ा हो गया तो उसने मुझे घर से निकाल दिया।”

“और कोई बात नहीं, कुत्ते! तुम्हें भूख लगी होगी?”

“हां, भूख तो लगी है,” कुत्ते ने जवाब दिया।

“तो चलो मेरे साथ। मैं तुम्हें भर पेट खिलाऊंगा।”

चुनांचे कुत्ता मेड़िये के साथ चल दिया। वे एक मैदान में से जा रहे थे। मेड़िये ने चरागाह में मेड़ों का एक रेवड़ देखा तो कुत्ते से बोला -

“जरा जाकर देखो कि चरागाह में कौन-से जानवर चर रहे हैं।”

कुत्ते ने जाकर देखा और झटपट आकर बोला -

“भेड़ें हैं।”

“भाड़ में जायें कम्बल भेड़ें! उन्हें खाने से दांतों में ऊन ही ऊन चिपक जायेगा और पेट रहेंगे खाली के खाली! चलो, आगे चलें कुत्ते!”

सो वे आगे चल दिये। वे चलते गये, चलते गये और तब भेड़िये को मैदान में कलहंसों का एक झुण्ड दिखाई दिया।

भेड़िये ने कुत्ते से कहा -

“जरा जाकर देखो तो कि चरागाह में वे कौन-से जानवर हैं।”

कुत्ते ने जाकर देखा और झटपट आकर बोला -

“कलहंस हैं।”

“भाड़ में जायें कम्बल कलहंस! अगर हम उन्हें खायेंगे तो हमारे दांतों में पंख ही पंख चिपक जायेंगे और पेट रहेंगे खाली के खाली!”

चुनांचे वे आगे चल दिये। वे चलते गये, चलते गये और तब भेड़िये को चरागाह में एक घोड़ा नजर आया। उसने कुत्ते से कहा -

“जरा जाकर देखो कि चरागाह में वह कौन-सा जानवर चर रहा है।”

कुत्ता गया और झटपट आकर बोला -

“घोड़ा है।”

“इसे हम खायेंगे!” भेड़िये ने कहा।

सो वे घोड़े की ओर दौड़े। भेड़िये ने जमीन पर अपने पंजे रगड़े और दांत टिकटिकाये ताकि वह पूरी तरह आग बबूला हो जाये।

तब उसने कुत्ते से कहा -

“कुत्ते, यह बताओ कि क्या मेरी कुंज जोर से हिल रही है?”

कुत्ते ने देखा और कहा कि वास्तव में ही जोर से हिल रही है।

“और अब यह बताओ कि मेरी आंखें अंगारा हो गई या नहीं?”

“हो गई हैं,” कुत्ते ने जवाब दिया।

तब भेड़िया झपटा और उसने घोड़े को अयास से पकड़कर जमीन पर नीचे गिरा दिया और उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। भेड़िये और कुत्ते ने घोड़े के मांस को मजे ले-लेकर खाना शुरू किया। भेड़िया जवान था और उसने जल्द ही अपना पेट भर लिया। मगर कुत्ता तो बूढ़ा था, इसलिए दांतों से काटता रहा, काटता रहा और फिर भी बहुत

ही कम खा पाया। तभी दूसरे कुत्ते दौड़ते हुए यहां आ पहुंचे और उन्होंने इस बूढ़े कुत्ते को दूर भगा दिया।

कुत्ता फिर से आगे चल दिया। तब उसने अपने ही जैसा एक बूढ़ा बिल्ला अपनी तरफ आते देखा। बिल्ला खूहों की तलाश में मैदान में घूम रहा था।

“कहो भाई बिल्ले, क्या हाल-चाल है?” कुत्ते ने कहा। “किधर जा रहे हो?”

“जिधर भी रास्ता ले जाये। अब मैं जवान था तो चूहे पकड़कर अपने मालिक की सेवा करता था। अब जब मैं बूढ़ा हो गया हूं, मेरी फुर्ती जाती रही और नजर कमजोर हो गई तो मालिक ने मुझे खिलाना-पिलाना बन्द कर दिया और घर से निकाल बाहर किया। अब मैं दुनिया की छाक छानता फिर रहा हूं।”

“तो मेरे साथ चलो, भाई बिल्ले,” कुत्ते ने कहा। “मैं तुम्हें भर पेट खाने को दूंगा।”

कुत्ते ने वही कुछ करने की ठान ली थी जो भेड़िये ने किया था।

चुनांचे कुत्ता और बिल्ला एक साथ चल दिये।

वे चलते गये, चलते गये और तब कुत्ते को चरागाह में भेड़ों का रेवड़ नजर आया। उसने बिल्ले से कहा -

“भाई, जरा जाकर देखो कि चरागाह में वे कौन-से जानवर हैं।”

बिल्ला गया, उसने देखा और झटपट आकर बताया -

“भेड़ें हैं।”

“भाड़ में जायें कम्बल भेड़ें! हम अगर उन्हें खायेंगे तो दांतों में ऊन ही ऊन चिपक जायेगा और पेट रहेंगे खाली के खाली। आओ, आगे चलें!”

सो वे आगे चल दिये। चलते गये, चलते गये और तब कुत्ते को मैदान में कलहंसों का एक झुण्ड दिखाई दिया।

उसने बिल्ले से कहा -

“भाई, जरा भागकर जाओ और देखकर आओ कि मैदान में वे कौन-से जानवर हैं!”

बिल्ला गया और उसने झटपट आकर बताया -

“कलहंस हैं।”

“भाड़ में जायें कम्बल कलहंस। उन्हें खाने से हमारे दांतों में पंख ही पंख चिपक जायेंगे और पेट रहेंगे खाली के खाली।

सो वे आगे चल दिये। वे चलते गये, चलते गये और तब कुत्ते को चरागाह में एक घोड़ा दिखाई दिया। उसने बिल्ले से कहा -

“माई बिल्ले, जरा भागकर जाओ और देखकर आओ कि चरागाह में वह कौन-सा जानवर चर रहा है।”

बिल्ला गया और उसने झटपट आकर बताया -

“घोड़ा है।”

“तो हम इसे मारेंगे, पेट भर कर खायेंगे और कुछ बचा भी पायेंगे।”

चुनांचे कुत्ते ने जमीन पर अपने पंजे रगड़ने और बांत तेज करने शुरू किये ताकि वह आग-बबूला हो जाये।

तब उसने बिल्ले से कहा -

“माई बिल्ले, जरा देखो तो कि मेरी पूंछ जोर से हिल रही है?”

“नहीं,” बिल्ले ने जवाब दिया। “जोर से नहीं हिल रही।”

वह फिर से जमीन पर अपने पंजे रगड़ने लगा ताकि सचमुच ही बहुत गुस्से में आ जाये।

उसने फिर बिल्ले से कहा -

“माई बिल्ले, अब मेरी घुम जोर से हिल रही है न? कहना कि जोर से हिल रही है!”

बिल्ले ने देखा और कहा -

“हां, बहुत ही ज़रा सी।”

“अब देखते जाना, हम जल्द ही घोड़े को घर दबायेंगे।” कुत्ते ने कहा।

और वह फिर से जमीन पर पंजे रगड़ने लगा।

“माई बिल्ले, जरा देखो तो मेरी आंखें लाल लाल हो गईं?” उसने कुछ देर बाद कहा।

“नहीं तो,” बिल्ले ने जवाब दिया।

“यह झूठ है! तुम्हें यही कहना चाहिए कि अंगारा हो गई हैं।”

“खैर, अगर तुम ऐसा ही चाहते हो तो मैं कह सकता हूं कि हो गई हैं,” बिल्ले ने कहा।

तब कुत्ता लाल-पीला होता हुआ घोड़े पर झपटा। मगर घोड़े ने दुलत्ती खलाई और उसकी लात कुत्ते के सिर पर आकर लगी। कुत्ता जमीन पर गिर गया और उसकी आंखें बाहर निकल आईं। बिल्ला भागकर उसके पास गया और बोला -

“आह, माई कुत्ते, अब तुम्हारी आंखें सचमुच अंगारों जैसी हो गई हैं!”



उकड़नी लोक-कथा

कभी किसी जमाने में कहीं एक जागीरदार रहता था, बड़ा ही अमीर और बड़ा ही घमंडी। कुछ इने-गिने लोगो से ही वह कोई वास्ता रखता था। जहां तक किसानों का सवाल था, उन्हें तो बिल्कुल ही खातिर में न लाता - उनसे उसे मिट्टी की बू जो आती थी। उसने अपने नौकरों को हुक्म दे रखा था कि अगर वे लोग नज़दीक आने की हिमाकृत करें, तो उन्हें दूर भगा दिया जाये।

एक दिन किसान इकट्ठे होकर जागीरदार के बारे में चर्चा करने लगे।

“मैंने जागीरदार साहब को बहुत नज़दीक से देखा है, खेत में मेरी उनसे मुलाक़ात हुई थी,” एक ने कहा।

“मैंने कल बाड़ के ऊपर से झांका तो जागीरदार साहब को बरामदे में काँफ़ी पीते पाया।”

तभी एक और किसान उनके पास आया जो सबसे अधिक ग़रीब था। उनकी बातें सुनकर वह हंसने लगा।

“यह भी कौन-सी बड़ी बात है! बाड़ के ऊपर से तो कोई भी जागीरदार को देख सकता है। मैं तो अगर चाहूं तो उसके साथ खाना भी खा सकता हूं!”

“अरे हटाओ भी!” पहले दोनों किसान बोले। “जैसे ही वह तुम्हें देखेगा, वैसे ही कान पकड़ कर बाहर निकालने का हुक्म दे देगा। वह तो तुम्हें घर के पास भी नहीं फटकने देगा।”

पहले दोनों किसान इस तीसरे किसान की खिल्ली उड़ाने और उस पर फटियां कसने लगे।

“यों ही डींग हांकते हो!” वे बोले।

“नहीं, ऐसा कुछ नहीं है!”

“अच्छा, अगर ऐसी बात है तो हो जाये शर्त। अगर तुम जागीरदार साहब के साथ खाना खा लोगे तो हम तुम्हें गेहूं की तीन बोरियां और बैलों की जोड़ी देंगे। अगर तुम ऐसा नहीं कर पाओगे, तो तुम्हें हमारा कहा करना होगा।”

“संजूर है।”

यह किसान जागीरदार के अहाते में पहुंचा। जागीरदार के नौकर-खाकरों ने जैसे ही उसे देखा वे भागकर घर से बाहर आये और लगे उसे वहां से खदेड़ने।

“जरा रुको,” किसान बोला। “मैं जागीरदार साहब के लिए एक खुशखबरी लेकर आया हूं।”

“क्या खुशखबरी लाये हो?”

“और किसी को नहीं, केवल जागीरदार साहब को बताऊंगा।”

चुनांचे जागीरदार साहब के नौकर अपने मालिक के पास गये और जो कुछ किसान ने कहा था, वह कह सुनाया।

जागीरदार को जिज्ञासा हुई। कारण कि किसान कुछ मांगने नहीं, बल्कि देने आया था। हो सकता है कि वह कोई बड़े काम की बात बताना चाहता हो...

“उसे अन्दर ले आओ!” उसने नौकरों से कहा।

नौकरों ने किसान को अन्दर भेज दिया। जागीरदार ने बाहर आकर उससे पूछा—

“क्या खबर लाये हो?”

किसान ने नौकरों की ओर देखा।

“हुजूर, मैं आप से एकान्त में बात करना चाहता हूं,” उसने कहा।

अब जागीरदार की जिज्ञासा चरम बिन्दु पर आ पहुंची—जाने क्या कहना चाहता है किसान? उसने नौकरों से जाने को कहा।

जैसे ही वे दोनों अकेले रह गये वैसे ही किसान ने धीरे से कहा—

“श्रीमान जी, मुझे यह बताने की कृपा करें कि घोड़े के सिर के बराबर सोने के डले की क्या कीमत होगी?”

“तुम यह किसलिए जानना चाहते हो?” जागीरदार ने कहा।

“इसका भी कारण है।”

जागीरदार की आंखें चमक उठीं और उत्तेजना से उसके हाथ कांपने लगे।

“यों ही तो यह मुझ से ऐसा प्रश्न नहीं पूछ रहा,” उसने मन ही मन सोचा। “जरूर कहीं कोई खजाना उसके हाथ लग गया है।”

जागीरदार ने किसान से बात निकलवाने की कोशिश की।

“मले मानस, जरा यह तो बताओ कि तुम किसलिए यह जानना चाहते हो?” उसने फिर पूछा।

किसान ने आह भर कर कहा—

“अगर आप नहीं बताना चाहते, तो न सही। अच्छा तो मैं अब चलता हूं, जाकर खाना खाना है।”

जागीरदार अब अपना घमंड भूल गया। वह लालच से बुरी तरह कांपने लगा था।

“मैं इस किसान को उत्सू बनाकर इससे सोना निकलवा लूंगा,” उसने मन ही मन सोचा। फिर वह किसान से बोला—“सुनो तो मले मानस, तुम्हें घर जाने की ऐसी क्या जल्बी है? अगर तुम्हें भूख लगी है तो तुम यहीं मेरे साथ खाना खा सकते हो।”

इतना कहकर उसने अपने नौकरों को आवाज दी—

“ऐ नौकरो, जल्दी से खाना लगाओ। शराब रखना मत भूलना!”

नौकरों ने झटपट मेज सजा दी, शराब और खाने की चीजें लाकर रख दीं। जागीरदार किसान की ओर कमी एक और कमी दूसरी चीज बढ़ाता हुआ कहने लगा—

“मले मानस, खूब खाओ-पियो! जरा भी तफल्फु न करो!”

किसान खाता और पीता रहा। जागीरदार उसकी तइतरी में खाने की चीजें रखता जाता था, उसका जाम भरता जाता था।

किसान ने जब खूब पेट भर कर खा लिया तो जागीरदार ने कहा—

“अच्छा, अब तुम जाओ और घोड़े के सिर के बराबर सोने का डला ले आओ! तुम्हारी बनिस्बत वह मेरे कहीं ज्यादा अच्छी तरह काम आयेगा। तुम्हें इनाम में एक रुबल दूंगा।”

“नहीं श्रीमान जी, मैं वह सोने का डला नहीं लाऊंगा!”

“वह क्यों?”

“क्योंकि वह तो मेरे पास है ही नहीं।”

“है ही नहीं?! तो तुम उसकी कीमत क्यों पूछ रहे थे?”

“बस, जिज्ञासावश!”

जागीरदार अब आम-बबूला हो उठा। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा उठा और वह पैर पटकने लगा।

“निकल यहां से उल्लू कहीं के!” वह चिल्लाया।

किसान ने जवाब दिया—

“श्रीमान जी, मैं ऐसा उल्लू नहीं हूं, जैसा आप समझते हैं। आपके यहां मैंने बढ़िया दाखत का मजा लिया है और शर्त में गेहूं की तीनों बोरियां और गोल सींगोंवाले बैलों की एक जोड़ी जीती है। ऐसा करना किसी उल्लू के बस की बात नहीं!”

इतना कहकर वह चलता बना।

जादुई बेला

बेलोरूसी लोक-कथा



कभी किसी जगह एक संगीतज्ञ रहता था। वह बचपन से ही बांसुरी बजाने लगा था। बेल चराते हुए वह कोई सरकंडा तोड़ लेता, उसकी बांसुरी बनाता और बजाने लगता। बेल घास चरना बन्द कर देते, कान खड़े कर लेते और बहुत ध्यान से बांसुरी की धुन सुनने लगते। उसकी बांसुरी को सुनकर जंगल के पक्षी चहचहाना बूल जाते और बलबलों के मेड़क तक भी अपना टर्क-टर्क का राग बन्द कर देते।

रात को वह धोड़े चराने जाता—चरागाह में बड़ा ही मजा आता। लड़के-लड़कियां गाते, हंसी-मजाक करते। जवानी के दिन जो ठहरे! रात होती प्यारी और गर्म-गर्म, जमीन से भाप निकलती होती। सौन्दर्य का राज्य होता।

ऐसे में यह संगीतज्ञ अपनी बांसुरी पर कोई तान छेड़ देता। लड़के-लड़कियां आन की आन में चुप हो जाते मानो किसी ने उन्हें ऐसा करने का आदेश दे दिया हो। तब प्रत्येक को ऐसा लगता जैसे किसी ने उनके दिल पर कोई मरहम-सा रख दिया हो, मानो किसी अव्यक्त शक्ति ने उनका मन जकड़ लिया हो और वह उन्हें निर्मल नीलाकाश में सितारों की ओर खींचे लिए जा रही हो।

रात के चरबाहे बांसुरी की तान सुनते तो न हिलते न डुलते। उनको अपने थके-हारे अंगों और मूखे पेटों की सुष-बुध न रहती।

वे बैठे हुए सुनते रहते।

हरेक यही चाहता कि वह उम्र भर इसी तरह बैठा रह कर इस प्यारी धुन को सुनता रहे।

बांसुरी की धुन बन्द हो जाती, मगर कोई भी अपनी जगह से न हिलता-डुलता। उन्हें डर लगता कि कहीं उनके हिलने-डुलने से वह जादुई आवाज डर-सहम न जाये जो झुरमुटों और जंगलों में से बुलबुल के मधुर तराने की तरह गूँजती हुई दूर आकाश को छू लेती है।

बांसुरी फिर से बज उठती, इस बार कोई दर्दिली तान छेड़ती हुई। सभी के मन में उदासी घर कर लेती... काफ़ी रात गये किसान, औरतें और मर्द अपने मालिक के खेतों से वापस लौटते, इस मधुर तान को सुनते, वहीं ठिठक जाते और इसे सुनते रहते। इसे सुनते हुए उनकी अपनी जिन्दगी उनके सामने तस्वीर बन कर खड़ी हो जाती - उनकी गरीबी और दुख-मुसीबतें, जालिम जागीरदार और क़ाजी तथा जागीरदार के कारिन्दे उनकी आंखों के सामने उभरने लगते। उनका मन इतना भारी हो जाता कि वे ऊँचे-ऊँचे विलाप करके अपना मन हल्का करना चाहते मानो किसी सगे-सम्बन्धी की मृत्यु हो गई हो या बेटे को लाम पर भेजा जा रहा हो।

मगर तभी दर्दमयी धुन खुशी की तान में बदल जाती। सुननेवाले अपनी बरांतियां, हेंगें और कांटे फेंक देते, कमर पर हाथ रखते और लगते नाचने।

धरती पर नाचते मर्द और औरतें, घोड़े और पेड़-पौधे और आकाश में नृत्य करते सितारे और बावल। सारी दुनिया ही नाचती और खुशी मनाती।

ऐसी थी बांसुरी बजानेवाले की जादुई ताकत। वह लोगों के दिलों को मनमाने नाच नचवा सकता था।

संगीतज्ञ जब बड़ा हो गया तो उसने अपने लिए एक बेला बना लिया और उसे बजाता हुआ दुनिया का चक्कर लगाने लगा। वह जहां भी जाता, बेला बजाता, लोग उसको खिलाते-पिलाते, सबसे प्यारे अतिथि की तरह उसका आदर-सत्कार करते और चलते समय उसे कुछ तोहफ़े भी देते।

संगीतज्ञ बहुत अर्से तक इसी तरह दुनिया में घूमता रहा। मले लोग उसका संगीत सुनकर झूम उठते और जालिम जागीरदारों को जैसे सांप सूँघ जाता। वह जहां भी जाता वहीं भू-दास जागीरदारों का हुक्म बजाना बन्द कर देते। इसलिए संगीतज्ञ जागीरदारों की आंखों में कांटा बनकर छटकने लगा।

खुनांचे जागीरदारों ने उसे इस दुनिया से चलता कर देने का इरादा बना लिया। उन्होंने कभी एक आदमी को और कभी दूसरे को संगीतज्ञ की हत्या करने या उसे डुबो

देते के लिए राखी करने की कोशिश की। मगर उन्हें ऐसा कोई आदमी न मिला। साधारण लोग उसे प्यार करते थे और गुमाश्ते डरते थे। वे उसे जादूगर समझते थे।

तब जागीरदारों ने पिशाचों से सांठ-गांठ की। यह तो सर्वविदित है कि पिशाच और जागीरदार तो एक ही बैली के चट्टे-बट्टे होते हैं।

एक दिन संगीतज्ञ जंगल में से जा रहा था। पिशाचों ने उसे खा जाने के लिए बारह भूखे भेड़िये भेज दिये। भेड़िये उसका रास्ता रोककर खड़े हो गये और उसे अपने दांत दिखाने लगे। उनकी आंखें अंगारों की तरह बहक रही थीं। संगीतज्ञ के हाथों में तो कोई हथियार नहीं था, बस डिब्बे में बन्द बेला ही था। "तो अब आखिरी घड़ी आ पहुंची," उसने मन ही मन सोचा।

संगीतज्ञ ने डिब्बे में से बेला निकाला ताकि मौत से पहले उसे एक बार फिर बजा ले। वह वृक्ष के तने के साथ टेक लगाकर खड़ा हो गया और उसने तारों पर कमान फेरी।

बेला एक जीवित प्राणी के समान गा उठा और सारे जंगल में स्वर-सहुरियां गूँज उठीं। झाड़ियों और वृक्षों ने दम साध लिया, पत्तों ने हिलना-डुलना बन्द कर दिया। और भेड़िये आश्चर्य से मुंह बाये जहां के तहां खड़े रह गये। वे कान लगाकर संगीत सुनने लगे और उन्हें अपनी पेट की आग की सुध ही न रही।

संगीतज्ञ ने जब धुन बजाना बंद किया तो भेड़िये मानो उनींद-से जंगल में बहुत दूर चले गये।

संगीतज्ञ आगे चल दिया। सूर्य जंगल में छिप चुका था, केवल वृक्षों की चोटियां ही ऐसे चमक रही थीं मानो किसी ने उन पर सोना मढ़ दिया हो। ऐसा गहरा सन्नाटा था कि पत्ता भी हिले तो उसकी सरसराहट सुनाई दे।

संगीतज्ञ नदी-तट पर बैठ गया, उसने बेला निकाला और बजाने लगा। इतना बढ़िया बेला बजाया उसने कि धरती और आकाश ने कान लगा दिये। वे तो मानो सदा-सदा के लिए इस संगीत को सुनने को तैयार थे। तभी उसने नृत्य की प्यारी-सी पोल्का धुन बजानी शुरू की। इर्दगिर्द सभी कुछ मानो नाचने लगा। जाड़े में बर्फ़ के तूफ़ान की भांति सितारे तेजी से घूमने लगे, आकाश में बादल तैरने लगे और मछलियों ने नदी में वह ऊधम मचाया कि नदी पतीले में उबलते हुए पानी की तरह बुदबुद-बुदबुद करने लगी।

जल-देवता भी अपने को वज्र में न रख पाया और लगा नाचने। ऐसे चक्कर लगाये उसने कि पानी किनारे तोड़ बह चला। पिशाच डर गये और नदी की गहराइयों से निकल मागे। वे सभी गुस्से से लाल-पीले हो रहे थे, दांत पीसते थे मगर संगीतज्ञ का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते थे।

तभी संगीतज्ञ ने देखा कि जल-देवता लोगों पर मुसीबत बरपा कर रहा है, खेतों और बगीचों में जल-भल एक कर रहा है। उसने बेला बजाना बन्द किया, उसे डिब्बे में रखा और आगे चल दिया।

वह चलता गया, चलता गया और अचानक दो युवा जागीरदार दौड़ते हुए उसकी ओर आये।

“हमारे यहां आज बॉल-नृत्य है,” वे बोले। “तुम यहां बेला बजाओ, हम तुम्हें इसके लिए छासी बढ़िया रकम देंगे।”

संगीतज्ञ सोचने लगा। काली रात घिर आई थी, सोने के लिए कहीं कोई ठिकाना नहीं था और जेब भी खाली थी।

“अच्छी बात है,” उसने कहा। “बजा दूंगा बेला!”

युवा जागीरदार बेलावादक को महल में ले गये। वहां अनगिनत युवा जागीरदार और जागीरदारिनें जमा थीं। मेज पर एक बड़ा-सा और गहरा प्याला रखा हुआ था। जागीरदार और जागीरदारिनें दौड़कर बारी-बारी से उसकी तरफ़ जाते, उसमें उंगली डुबोकर आंखों पर लगाते।

संगीतज्ञ भी प्याले के पास गया। उसने भी उंगली डुबोकर आंखों पर लगाई। ऐसा करते ही उसे यह विचार दिवा कि वहां जागीरदार और जागीरदारिनें नहीं, बल्कि शैतान और चुड़ैलें जमा हैं, वहां महल नहीं, जहन्नम है।

“ओह, तो यह बात है!” संगीतज्ञ ने सोचा। “कैसे बढ़िया बॉल-नृत्य के लिए मुझे बुलाकर लाये हैं! खैर, कोई बात नहीं, अभी तुम्हारे लिए धुन बजाता हूं।”

धुनांचे उसने अपने बेले को सुर किया और उसके सजीव तारों पर कमान फेरी। उसके इर्बगिर्द का जहन्नम धूस-मिट्टी होकर रह गया और चुड़ैलें तथा शैतान न जाने कहां गायब हो गये और फिर कभी नज़र न आये।

बिज्जू और लोमड़ी मांद में क्यों रहते हैं

बेलोरूसी लोक-कथा



कहते हैं कि कभी ऐसा वक़्त भी था जब दरिन्दों और चौपायों के पूंछें नहीं थीं। सिर्फ़ दरिन्दों के महाराजा बबर के ही पूंछ थी।

पूंछों के बिना जानवरों का बुरा हाल रहता था। जाड़ा तो वे जैसे-तैसे गुज़ार लेते, मगर गर्मियों में भक्षियों और कीड़ों के कारण उनका नाक में दम रहता। उनसे पिंड छुड़ाते तो कैसे? गोभक्षियां और घुड़भक्षियां बहुत-से जानवरों की तो जान तक ले लेतीं। वे चाहे चीखते-चिल्लाते रहते, मगर सब बेसूद ही जाता।

दरिन्दों और चौपायों के महाराजा बबर को उनकी इस मुसीबत का पता चला। उसने यह आदेश दिया कि सभी दरिन्दे उसके पास आकर पूंछें ले जायें।

महाराजा के दूत दरिन्दों को बुलाने के लिए सभी विशाओं में दौड़ पड़े। उन्होंने हवा की चाल से जाकर तुरहियां बजाकर और डोंड़ी पीट-पीटकर मुनादी की। उन्होंने भेड़िये को देखा तो उसे महाराजा का हुक्म सुनाया, सांड और बिज्जू को देखा तो उन्हें भी महाराजा का आदेश बताया। लोमड़ी, मार्टन, खरगोश, सांभर और जंगली सूअर — सभी को जरूरी सूचना पहुंचा दी गई।

केवल भालू ही बाक़ी रह गया। हरकारे उसे देर तक दूढ़ते रहे और आखिर उसे मांद में गहरी नींद सोया हुआ पाया। उन्होंने उसे शकशोरा, जगाया और कहा कि वह पूंछ लेने के लिए जल्दी से जाये।

मगर भालू और जल्दी करे, ऐसा तो कभी नहीं हुआ ! वह मजे-मजे चलता गया, ढीली-ढाली चाल से, सभी ओर देखता और शहद की गंध पाता हुआ। अचानक उसने अपने सामने लाइम वृक्ष के खोखले तने में मधुमक्खियों का छत्ता देखा। उसने सोचा - "महाराजा के महल तक पहुंचने का रास्ता तो बहुत सम्बा है। मुझे कुछ खा-पीकर ताकत जुटा लेनी चाहिए !"

भालू वृक्ष पर चढ़ गया। उसने देखा कि कोटर में शहद ही शहद भरा पड़ा है। उसने खुश होते हुए गुर्-गुर की और लगा शहद समेटने और मुंह भरने। जब पूरी तरह जी भर गया तो उसने अपने पर नजर डाली। उसने पाया कि उसकी छाल शहद से बुरी तरह चिपचिपी हो गयी है और उस पर जहां-तहां छत्ते के टुकड़े चिपक गये हैं।

"ऐसी सूरत लेकर मैं महाराजा के सामने भला कैसे जा सकता हूं ?" उसने सोचा। चुनांचे भालू नदी की ओर चल दिया। वहां उसने अपनी छाल को अच्छी तरह धोया और फिर उसे सुखाने के लिए पहाड़ी पर जाकर लेट रहा। धूप बहुत ही प्यारी-प्यारी थी। भालू को पता भी न चला कि कैसे वह मीठी नींद में खरटे लेने लगा।

इसी बीच जानवर महाराजा के महल में जमा होने लगे। सबसे पहले आई लोमड़ी। उसने अपने इर्दगिर्द नजर डाली तो उसे महल के सामने पूंछों का ढेर नजर आया। उनमें लम्बी पूंछें भी थीं और छोटी भी, घने बालोंवाली और बिना बालों की भी।

लोमड़ी ने महाराजा बबर को प्रणाम किया।

"हे महाप्रतापी महाराजाधिराज !" लोमड़ी ने कहा। "मैंने ही सबसे पहले आपके हुक्म की तामील की है। इसलिए मैं आप से प्रार्थना करती हूं कि आप मुझे अपनी मनपसन्द पूंछ चुन लेने दें।"

महाराजा की बसा से, वह कोई भी पूंछ क्यों न चुन ले !

"ठीक है," उसने कहा। "तुम जो भी चाहो, वह पूंछ चुन सकती हो।"

लोमड़ी ने पूंछों के सारे ढेर को उलट-पलट कर देखा और सबसे लम्बी और घने बालोंवाली पूंछ चुनकर झटपट वहां से चसती बनी ताकि कहीं महाराजा का इरादा न बदल जाये।

लोमड़ी के बाद गिलहरी फुदकती हुई आई। उसने अपने लिए जो पूंछ चुनी वह लोमड़ी की पूंछ के समान ही बढ़िया, मगर छोटी थी। गिलहरी के बाद मार्टन आया और वह भी बहुत खूबसूरत और घने बालोंवाली पूंछ लेकर चसता बना।

सांभर ने सबसे लम्बी पूंछ चुनी जिसके सिरे पर बालों का मोटा-सा गुच्छा था।

उसने ऐसा इसलिए किया कि गोमक्खियों और घुड़मक्खियों को उड़ा सके। बिज्जू ने चौड़ी और मोटी-सी पूंछ झपट ली।

घोड़े ने ऐसी पूंछ चुनी जिसमें बाल ही बाल थे। उसने वह पूंछ लगाई और अगल-बगल फटकारी।

यह देखकर कि पूंछ बढ़िया काम करती है और अब मक्खियों की शामत आ जायेगी, घोड़ा खुशी से हिनहिना उठा और चरागाह की ओर सरपट भाग गया।

सबसे बाद में खरगोश दौड़ता हुआ आया।

"तुम अब तक कहां रहे ?" महाराजा ने पूछा। "मेरे पास तो अब छोटी-सी ही पूंछ बाक़ी रह गई है।"

"मेरे लिये तो यही काफ़ी है, धन्यवाद," खरगोश ने खुश होकर कहा। "वास्तव में तो यही स्यादा अच्छी है। मेड़िये या कुत्ते से बचकर भागते समय यह मेरे लिए मुश्किल पैदा नहीं करेगी।"

खरगोश ने यह छोटी-सी पूंछ ठीक जगह पर लगा ली, पहले एक और फिर दूसरी छलांग लगाई और बहुत ही खुश होता हुआ घर की ओर भाग गया।

जानवरों का महाराजा सारी पूंछें बांट चुका था। अब वह जाकर खैन से सो रहा।

जहां तक भालू का सम्बन्ध है, तो शाम होने पर ही उसकी नींद टूटी। फ़ौरन याद आया कि उसे तो पूंछ लेने के लिए जल्दी से महाराजा के महल में पहुंचना था। उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई तो देखा कि सूरज जंगल के पीछे नीचे-नीचे होता हुआ छिपता जा रहा है। अब वह हाथों-पैरों के बल लगा तेजी से दौड़ने। बेचारा ऐसे दौड़ा, ऐसे दौड़ा कि जल्द ही पसीने से तर-ब-तर हो गया। वह महाराजा बबर के महल में पहुंचा तो वहां न तो उसे कोई पूंछ दिखाई दी और न कोई जानवर ही... "अब क्या करूं ?" भालू सोचने लगा। "सभी पूंछोंवाले होंगे, केवल मैं ही पूंछ के बिना..."

चुनांचे भालू अपने जंगल की ओर वापस चल दिया, गुस्से से उबलता हुआ। वह धीरे-धीरे वापस चला जा रहा था कि एक ठूठ पर उसे बिज्जू बैठा दिखाई दिया। वह इधर-उधर हिलता-डुलता हुआ अपनी खूबसूरत पूंछ को देख देखकर निहाल हो रहा था।

"सुनो तो बिज्जू," भालू बोला, "तुम्हें क्या जरूरत है इस पूंछ की ? तुम इसे मुझे दे दो !"

"वाह, चाचा भालू, यह भी तुम ने खूब कही !" बिज्जू ने हैरान होते हुए कहा।

"ऐसी खूबसूरत पूंछ भला कौन देना चाहेगा ?"

"अगर तुम खुशी से नहीं दोगे तो मैं जबरदस्ती ले लूंगा।" भालू गुस्से से गुराया और उसने अपना मारी-भरकम पंजा बिज्जू की पूंछ पर रख दिया।

“मुंह धो रखो!” बिज्जू चिल्लाया और पूरा जोर लगाकर मालू की गिरफ्त से बच निकला और सिर पर पैर रखकर भाग चला।

मालू ने देखा कि उसके पंजे के साथ बिज्जू की कुछ फ़र और पूंछ का सिरा चिपका रह गया है। उसने फ़र तो फेंक दी और दुम के सिरे को लगाकर कोटर में बाक़ी बचे शहद को ख़त्म करने चल दिया।

बिज्जू का तो डर के मारे ऐसा बुरा हाल था कि बयान से बाहर। वह कहीं भी क्यों न छिपा रहता, उसे हर बम ऐसा ही लगता कि मालू आया कि आया और वह उसकी बची-बचायी पूंछ छीन ले जायेगा। इसलिये उसने ज़मीन के अन्दर बड़ा-सा बिल बना लिया और वहीं रहने लगा। उसकी पीठ का घाव भर गया और उसकी जगह काली-सी धारी रह गई। तब से अब तक इस धारी का रंग हल्का नहीं हुआ।

एक बार लोमड़ी कहीं भागी जा रही थी। अचानक उसे बिल नज़र आया। उसके भीतर से किसी के जोरदार खरटि सुनाई दे रहे थे मानो कोई खूब पीकर सो रहा हो। लोमड़ी बिल के अन्दर घुस गई। वहां उसने बिज्जू को सोये हुए देखा।

“अरे पड़ोसी, यह क्या मामला है? क्या घरती पर तुम्हारे लिये जगह नाकाफ़ी है कि ज़मीन के नीचे आ घुसे हो?” लोमड़ी ने हैरान होकर पूछा।

“हां, प्यारी लोमड़ी,” बिज्जू ने गहरी सांस ली, “तुमने ठीक ही कहा है, मेरे लिये जगह नाकाफ़ी है। अगर खाने की खोज न करनी होती तो मैं रात को भी यहां से बाहर न निकलता।”

बिज्जू ने लोमड़ी को सारा क़िस्सा कह सुनाया कि क्यों उसके लिए घरती पर जगह नाकाफ़ी है। “अरे,” लोमड़ी ने सोचा। “अगर मालू ने बिज्जू की पूंछ छीन लेने की कोशिश की, तो मेरी पूंछ तो उससे सौ गुना ज्यादा खूबसूरत है...”

चुनांचे वह ऐसी जगह की तलाश में दौड़ी जहां मालू से अपने को बचा सके। वह रात भर इधर-उधर दौड़ती रही, मगर कहीं भी उसे छिपने का ठिकाना न मिला। आख़िर सुबह होते-होते वह बिज्जू के समान ही एक बिल बनाकर उसमें घुस गई, उसने घने बालोंवाली पूंछ अपने गर्द लपेटी और चैन की नींद सो रही।

तभी से बिज्जू और लोमड़ी बिल में ही रहते चले आ रहे हैं और मालू पूंछ के नाम पर एक फुंदना-सा लगाये हुए ही घूम रहा है।

बसीली ने अजगर को कैसे जीता

बेलोरूसी लोक-कथा



ऐसा कभी हुआ या नहीं, यह सच है या झूठ-आइये, इस फेर में न पड़कर वह मुझे जो इस कहानी में कहा गया है।

तो कहानी यह है।

कभी, किसी देश में एक बहुत ही भयानक अजगर कहीं से आ गया। उसने अंगल के बीच एक पहाड़ के शमन में एक गहरी-सी खोह बना ली और आराम करने के लिए लेट गया।

उसने बहुत देर तक आराम किया या थोड़ी देर, यह तो राम जाने। मगर जैसे ही वह उठा, वैसे ही सब को सुनाते हुए चिल्लाया -

“सुनो लोगो, पुरुषो और नारियो, बूढ़ो और जवानो! तुम में से प्रत्येक हर दिन मेरे लिये कोई न कोई मेंट लेकर आये - कोई गाय, कोई भेड़ या कोई सूअर! जो कोई ऐसा करेगा, वह खिन्दा रहेगा और जो ऐसा नहीं करेगा, मैं उसे खा जाऊंगा!”

लोग डर-सहम गये और वे अजगर के पास मेंटें ले-लेकर आने लगे। यह सिलसिला काफ़ी अर्से तक चलता रहा। आख़िर वह दिन आया जब उनके पास ले जाने के लिये कुछ भी बाक़ी न रहा। उनकी हालत बिल्कुल ख़स्ता हो गई। मगर अजगर ऐसा था कि मेंट पाये बिना एक दिन भी न रह सकता था। तब वह कभी एक और कभी दूसरे गांव में उड़-उड़कर जाने और लोगों को पकड़कर अपनी खोह में ले जाने लगा।

लोग बहवास-से घूमते चार-चार रोते, जान बचाने की फ़िक्र करते, मगर अजगर से बचने का कोई उपाय न ढूँढ़ पाते।

इसी समय वसीली नाम का एक व्यक्ति इस देश में आ पहुँचा। उसने देखा कि लोग मुंह लटकाये और परेशानहाल घूम रहे हैं, हाथ मलते और आँसू बहाते हैं।

“क्या मुसीबत आ गई है तुम लोगों पर?” उसने पूछा। “तुम सभी इस तरह फूट-फूटकर क्यों रो रहे हो?”

लोगों ने उसे अपनी बर्बदारी कहानी कह सुनाई।

“शान्त हो जाओ,” वसीली ने उन्हें तसल्ली दी। “मैं तुम्हें अजगर से बचाने की कोशिश करूँगा।”

वह एक मोटा-सा सोंटा लेकर उस जंगल में आ पहुँचा जहाँ अजगर रहता था।

अजगर ने उसे देखा तो अपनी हरी हरी आँखों को इधर-उधर घुमाते हुए पूछा—

“तुम यह सोंटा लिये हुए यहाँ किसलिये आये हो?”

“तुम्हारी पिटाई करने,” वसीली ने कहा।

“अरे बाह!” अजगर ने हैरान होकर कहा। “बेहतर यही है कि सिर पर पैर रखकर यहाँ से भाग जाओ वरना बाद में पछताओगे। मैं जैसे ही फूँक मारूँगा वैसे ही तुम अपने पैरों पर छड़े नहीं रह सकोगे, उड़कर तीन कोस दूर जा गिरोगे।”

वसीली हंसकर बोला—

“बहुत बढ़-बढ़कर बातें न कर रे, काकमगोड़े। बहुत देखे हैं मैंने तेरे जैसे! देखेंगे कि कौन हम दोनों में से ज्यादा जोर से फूँक मारता है। अच्छा, मार तो फूँक।”

अजगर ने इतने जोर से फूँक मारी कि वृक्षों के पत्ते झड़कर नीचे गिर गये और वसीली घुटनों के बल छह पड़ा। उठकर छड़े होते हुए वह बोला—

“अरे, यह तो कुछ भी नहीं! यह भी कोई फूँक मारना हुआ? इससे तो मूर्तियों को भी हंसी आ सकती है। लो, अब मैं फूँक मारता हूँ। हाँ, मगर तुम अपनी आँखों पर पट्टी बांध लो वरना तुम्हारी पुतलियाँ निकलकर बाहर जा गिरेंगी।”

अजगर ने आँखों पर रुमाल बांध लिया। वसीली उसके पास गया और उसने अपना सोंटा घुमाकर इतने जोर से अजगर के सिर पर मारा कि उसकी आँखों से चिंगारियाँ फूट निकलीं।

“क्या तुम सचमुच ही मुझसे ताकतवर हो?” अजगर बोला। “अच्छा, आओ हम एक और चीज आजमाकर देखें। देखें तो कि हम दोनों में से कौन जल्दी पत्थर तोड़ सकता है?”

अजगर ने एक सौ पूड की चट्टान उठाई और उसे पंजों से ऐसे दबाया कि वह चूर-चूर हो गई और धूल का बादल ऊपर उठ गया।

“इसमें तो अचाने की कोई बात नहीं है,” वसीली ने हंसकर कहा। “तुम इसे ऐसे दबाओ कि चट्टान में से पानी निकल आये।”

अजगर डर गया। उसे लगा कि वसीली सचमुच ही उससे ताकतवर है। उसने वसीली के सोंटे की ओर देखा और बोला—

“ओ चाहो मांग लो। मैं तुम्हें मुंहमांगी चीज दूँगा।”

“मुझे कुछ भी नहीं चाहिए,” वसीली ने जवाब दिया। “मेरा घर भरा-पूरा है। तुम से कहीं ज्यादा धन-दौलत है मेरे पास।”

“अरे, रहने दो!” अजगर ने विश्वास नहीं किया।

“विश्वास नहीं करते तो चलो, चलकर देख लो।”

वे एक छकड़े पर सवार होकर चल दिये।

इसी समय अजगर को मूँच सताने लगी। उसने जंगल के छोर पर बेलों का एक गुंड देखा और वसीली से बोला—

“जाकर एक बेल पकड़ लाओ, हल्का-सा नाश्ता हो जायेगा।”

वसीली जंगल में जाकर साइम वृक्षों की छाल उतारने लगा। अजगर इन्तजार करता रहा, करता रहा और आखिर उसे खोजने के लिए खुद जंगल में पहुँचा।

“इतनी देर क्यों लगा दी तुम ने?”

“छाल उतार रहा हूँ।”

“इसका क्या करोगे?”

“रस्सी बटूँगा ताकि खाने के लिए पाँच बेल एक बार ही पकड़ लूँ।”

“हमें पाँच बेलों का क्या करना है? हमारे लिये तो एक ही काफ़ी है।”

अजगर ने एक बेल को गर्दन से पकड़ा और उसे छकड़े के पास खींच ले गया।

“अब आओ और इस बेल को मूँचने के लिए जोड़ी लकड़ी ले आओ,” अजगर ने वसीली से कहा।

वसीली जंगल में जाकर बसूत के नीचे बैठ गया, उसने एक सिगरेट बनाई और इत्मीनान से कश लगाने लगा।

अजगर ने बहुत देर तक इन्तजार किया और जब सब का प्यासा छलक उठा तो वसीली को खोजने गया।

“इतनी देर क्यों लगा दी?” उसने पूछा।

“मैं तो बलूत के कोई दसेक वृक्ष गिरा लेना चाहता हूँ। इसीलिए उनमें से सबसे मोटे वृक्ष चुन रहा हूँ।”

“दस बलूतों का हमें क्या करना है? हमारे लिये तो एक ही काफ़ी है,” अजगर ने सबसे मोटे बलूत को नीचे गिरा लिया।

अजगर ने बैल को मूना और वसीली को साय देने के लिये निमन्त्रित किया।

“तुम खुद ही खाओ,” वसीली ने कहा। “मैं तो घर जाकर ही खाऊंगा। मेरा क्या बनेगा एक बैल से! मेरे लिए तो वह ऊंट के मुँह में जीरे के बराबर ही रहेगा!”

अजगर ने बैल को खाने के बाद होंठ चाटे। वे छकड़ा बढ़ाते गये और जल्द ही वसीली के घर के करीब जा पहुँचे। बच्चों ने अपने पिता को दूर से आते देखा तो खुशी से चिल्लाये –

“पिताजी आ रहे हैं! पिताजी आ रहे हैं!”

मगर अजगर नहीं समझ पाया कि बच्चे क्या चिल्ला रहे हैं। इसलिये उसने पूछा –

“क्या चिल्ला रहे हैं बच्चे?”

“वे खुश हैं कि मैं तुम्हें उनके खाने के लिए घर लिये जा रहा हूँ। उन्हें बहुत मूख लगी है।”

इस समय तक अजगर बहुत भयभीत हो चुका था। इसलिए वह छकड़े से कूदा और सिर पर पैर रखकर भागा। मगर वह रास्ता भूल गया और दलदल में जा फँसा। दलदल इतनी गहरी थी, इतनी गहरी थी कि उसके तल का कहीं अता-पता न था। अजगर इसमें धँसता गया, धँसता गया और उसी में डूब गया। ऐसे उसका अन्त हुआ।



पीलीष्का

बेलोरूसी लोक-कथा



किसी जमाने में कहीं एक पति-पत्नी रहते थे। उनका कोई बच्चा नहीं था। पत्नी हर समय दुखी होकर कहती रहती – “पालने में किसे मुलाऊं, किसको लाड़ लड़ाऊं, गोब खिलाऊं?”

पति एक दिन जंगल में गया और किसी वृक्ष तें एक कुन्दा काटकर पत्नी के पास लाया और बोला –

“सो, इसे पालने में मुलाओ।”

पत्नी ने कुन्दे को पालने में रखा और लगी उसे मुलाने और लोरी गाने –

“पालने में साल मेरे भूसो, गोरे बदन और काली आंखोंवाले बनकर फूलो-फलो!”

उसने एक दिन पालना मुलाया, दूसरे दिन मुलाया और तीसरे दिन उसमें एक नन्हा-सा बेटा लेटा हुआ पाया!

पति-पत्नी की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उन्होंने बेटे का नाम पीलीष्का रखा और बड़े ध्यान से उसका पालन-पोषण करने लगे। पीलीष्का जब बड़ा हो गया तो उसने अपने पिता से कहा –

“पिताजी, मुझे सोने की नाव और चांदी के चप्पू बना दो। मैं मछलियां पकड़ने के लिए जाना चाहता हूं।”

पिता ने उसे सोने की नाव और चांदी के चप्पू बना दिये और मछलियां पकड़ने के लिए झील पर भेज दिया।

और बेटा जो मछलियां पकड़ने लगा तो खूब खोर-शोर से। वह दिन को मछलियां पकड़ता और रात को भी। वह तो घर भी न लौटता। मछलियां भी उसके कांटे में खूब ही फंसतीं! मां खुद उसके लिये खाना लेकर आती। वह झील के तट पर आकर पुकारती -

“प्यारे बेटे पीलीप्का, आओ, तट पर आओ, कचौड़ी और समोसे खाओ!”

पीलीप्का तट पर आता, पकड़ी हुई मछलियों को तट पर गिराता, कचौड़ियां-समोसे खाता और फिर झील के बीच में लौट जाता।

अब खुईल बाबा-यागा हड्डिले पैरोंवासी, हर दिन ही यह सुन पाती कि कैसे पीलीप्का की मां है उसे बुलाती।

उसने उसे मौत के घाट उतारने की सोची। उसने बोरी और कुरेबनी ली, झील पर आई और चिल्लाई -

“प्यारे बेटे पीलीप्का, आओ, तट पर आओ, कचौड़ी और समोसे खाओ!”

पीलीप्का ने सोचा कि उसकी मां बुला रही है और वह चप्यु चलाता हुआ तट की ओर बढ़ आया। बाबा-यागा ने कुरेबनी में उसकी नाव को फंसाया, तट पर घसीटा और पीलीप्का को पकड़ कर बोरी में बन्द कर लिया।

“अहा!” वह चिल्लाई। “अब तू मछलियां नहीं पकड़ पायेगा।”

बोरी को कंधे पर लादकर वह उसे जंगल के झुरमुट में ले गई। मगर घर उसका बहुत दूर था, वह जल्द ही थक गई, आराम करने के लिये बैठी तो उसकी आंख लग गई। पीलीप्का बोरी से बाहर निकला, उसने उसमें मारी पत्थर मर बिये और फिर से झील पर चला गया।

बाबा-यागा जब आगी तो उसने बोरी उठाई और आहें भरती और कराहती हुई उसे घर ले गई। वह उसे घर लाई और अपनी बेटी से बोली -

“मेरे खाने के लिए इस मछुए को मून दे!”

उस ने बोरी को फर्श पर झाड़ा, मगर उसमें से तो केवल पत्थर ही निकलकर बाहर गिरे।

बाबा-यागा आग-बबूला हो उठी।

“अभी मजा चखाती हूं तुझे, मुझे धोखा देने का!” वह खोर से चिल्लाई और भागती हुई फिर झील पर पहुंची। उसने पीलीप्का को पुकारा -

“प्यारे बेटे पीलीप्का, आओ, तट पर आओ, कचौड़ी और समोसे खाओ!”

पीलीप्का ने यह सुना तो जवाब दिया -

“मैं तुम्हें जानता हूं, पहचानता हूं। तुम मेरी मां नहीं, बाबा-यागा हो। मेरी मां की आवाज तो बहुत बारीक है।”

बाबा-यागा पुकारती रही, पुकारती रही, मगर पीलीप्का ने कान नहीं दिया।

“और, कोई बात नहीं,” बाबा-यागा ने अपने आपसे कहा। “मैं अपनी आवाज को बारीक कर लूंगी।”

वह भागती हुई लुहार के पास गई।

“लुहार, लुहार, मेरी खान को नुकीली और पतली कर दो,” उसने कहा।

“अच्छी बात है,” लुहार ने जवाब दिया, “इसे मेरी निहाई पर रख दो,” और लुहार अपना हथौड़ा लेकर उसे धमाधम पीटने लगा, यहां तक कि वह बिल्कुल पतली हो गई।

इसके बाद वह फिर झील पर गई और बारीक-सी आवाज में उसने पीलीप्का को आवाज लगाई -

“प्यारे बेटे पीलीप्का, आओ, तट पर आओ, कचौड़ी और समोसे खाओ!”

पीलीप्का ने यह आवाज सुनी तो सोचा कि मां उसे बुला रही है। वह नाव को तट की ओर ले आया। बाबा-यागा ने उसे पकड़कर बोरी में बन्द कर लिया।

“अब दे तू मुझे धोखा!” बाबा-यागा खुशी से चिल्लाई। उसने रास्ते में कहीं भी साँस न ली और सीधे उसे घर ले गई। बोरी को झटककर उसने पीलीप्का को बाहर निकाला और अपनी बेटी से कहा -

“यह रहा वह धोखेबाज! मट्टी जलाकर इसे खाने के लिए मून लो।”

इतना कहकर वह खुद कहीं बाहर चली गई।

बेटी ने मट्टी जलाई। वह एक फावड़ा लाई और बोली -

“फावड़े पर लेट जाओ। मैं तुम्हें मट्टी में मूनुंगी।”

पीलीप्का अपनी टांगें ऊपर को करके फावड़े पर लेट गया।

“ऐसे नहीं!” बाबा-यागा की बेटी चिल्लाई। “अगर तुम टांगें ऊपर को किये रहोगे, तो मैं तुम्हें मट्टी में नहीं झोंक पाऊंगी।”

पीलीप्का ने टांगें नीचे सटका लीं।

“ऐसे नहीं!” बाबा-यागा की बेटी फिर चिल्लाई।

“तो कैसे लेटूँ?” पीलीप्का ने पूछा। “खुद लेट कर दिखाओ!”

“निरे उल्टू हो तुम तो!” बाबा-यागा की बेटी बोली। “देखो, ऐसे लेटा जाता है!”

इतना कहकर वह फावड़े पर लेट गई। पीलीप्का ने फावड़ा उठाया और उसे जलती हुई भट्टी में झोंक दिया। इसके बाद उसने भट्टी बन्द की और बाबा-यागा का ऊखल उसके मुंह के सामने रख दिया ताकि उसकी बेटी कूदकर बाहर न निकल सके।

वह भागकर झोंपड़ी से बाहर निकला तो बाबा-यागा को सामने से आते देखा। पीलीप्का एक ऊंचे और घने वृक्ष पर चढ़कर शाखाओं के बीच छिप गया।

बाबा-यागा झोंपड़ी में आई, उसने इधर-उधर सूंघा-सांघी की तो उसे भुने हुए मांस की गन्ध आई। उसने भुने हुए तन को बाहर निकाला, मांस खाया और हड्डियों को आंगन में फेंककर उनपर लोटने और कहने लगी -

“हड्डियों पर मैं लेटूंगी, मैं लोटूंगी मैं लोटूंगी। मैंने पीलीप्का का मांस खाया है, उसका लहू पिया है।”

पीलीप्का ने वृक्ष पर से जवाब दिया -

“इन हड्डियों पर तुम लेटो-लेटो, बेशक लोटो-लुढ़को। तुमने अपनी बेटी का मांस खाया है, उसका लहू पिया है।”

बाबा-यागा ने पीलीप्का के शब्द सुने तो गुस्से से लाल-पीली हो उठी। वह भागकर वृक्ष के पास गई और उसे दांतों से काटने लगी। वह काटती रही, काटती रही, उसके सारे दांत टूट गये, मगर वृक्ष जहां का तहां खड़ा रहा, हमेशा की तरह तना हुआ और मजबूत।

बाबा-यागा भागी भागी गई लुहार के पास।

“लुहार, लुहार,” वह चिल्लाई, “मुझे एक इस्पाती कुल्हाड़ा बना दो! अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो मैं तुम्हारे बच्चे खा जाऊंगी।”

लुहार डर गया और उसने कुल्हाड़ा बना दिया।

बाबा-यागा कुल्हाड़ा लेकर वृक्ष की ओर भागी और उसे काटने लगी।

पीलीप्का बोला -

“कुल्हाड़े, वृक्ष पर नहीं, पत्थर पर पड़!”

बाबा-यागा ने कहा -

“कुल्हाड़े, पत्थर पर नहीं, वृक्ष पर पड़!”

पीलीप्का ने बोहराया -

“कुल्हाड़े, वृक्ष पर नहीं, पत्थर पर पड़!”

अब कुल्हाड़ा अचानक एक पत्थर से टकराया, बिल्कुल मुड़ गया और कुन्द हो गया।



बाबा-यागा गुस्से से चिल्लाई, उसने कुल्हाड़ा उठाया और उसे तेज कराने के लिए लुहार के पास लौटी।

पीलीप्का ने इधर-उधर नजर डाली तो पाया कि वृक्ष एक ओर को झुकने लगा है। बाबा-यागा ने उसे लगभग काट डाला था। चुनांचे इससे पहले कि बेर हो जाये, उसे अपनी जान बचाने के लिए झटपट कुछ न कुछ करना था।

इसी समय हंसों का एक झुंड उड़ता हुआ उसके ऊपर से गुजरा ! उसने पुकार कर कहा -

“हंसो, हंसो, शोर न मचाओ, एक-एक अपना पंख गिराओ। उड़कर माता-पिता तक जाऊं, फिर मैं इसका एहसान चुकाऊं !”

हंसों ने एक-एक पंख गिरा दिया और पीलीप्का ने उन सबको जोड़ कर आधा पंख बना लिया।

तभी हंसों का दूसरा झुंड उड़ता हुआ आया। पीलीप्का ने पुकारकर उनसे भी कहा -

“हंसो, हंसो, शोर न मचाओ, एक-एक अपना पंख गिराओ ! उड़कर माता-पिता तक जाऊं, फिर मैं इसका एहसान चुकाऊं !”

दूसरे झुंड के हंसों ने भी एक-एक पंख गिरा दिया।

इसके बाद हंसों का तीसरा और फिर चौथा झुंड आया। सभी हंस अपना एक-एक पंख गिराते गये।

पीलीप्का ने अपने लिये पंखों की एक जोड़ी बनाई और हंसों के पीछे-पीछे उड़ चला।

तभी बाबा-यागा लुहारखाने से भागती हुई आई और वृक्ष को फिर से काटने लगी। उसने इतने जोर से कुल्हाड़ा चलाया कि उसके परखचे उड़ने लगे।

वह काटती गई, काटती गई और वृक्ष चर-र-र करता हुआ उसके ऊपर आ गिरा और वह वहीं की वहीं बेर हो गई।

पीलीप्का हंसों के साथ उड़ता हुआ घर पहुंचा। मां-बाप ने उसे देखा तो उनकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उन्होंने झटपट मेज पर तरह-तरह के खाने सजाये और उसे खिलाने-पिलाने लगे।

हंसों को उन्होंने जई खिलाई, बस खत्म कहानी भाई।

वन-देव हिस्सी की चक्की

कारेलियाई लोक-कथा



किसी जमाने में कहीं दो भाई रहते थे, एक गरीब था, दूसरा अमीर। अमीर भाई अपने पड़ोसियों के साथ तो बहुत अच्छी तरह से पेश आता, उनकी मदद करने को तैयार रहता, मगर अपने भाई के साथ ऐसा बर्ताव करता मानो उसे जानता ही न हो। उसे डर रहता कि वह उस से कहीं कुछ मांगने न आ जाये।

गरीब भाई तो खुद भी कभी उस के पास कुछ मांगने के लिए नहीं आया था। मगर एक बार क्या हुआ कि कोई त्योहार आ गया। गरीब के घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं था। गरीब की बीवी अपने पति से बोली—

“हम त्योहार कैसे मनायेंगे? जाकर अपने भाई से कुछ मांस मांग लाओ। मैंने कल उसे जानवर काटते देखा था।”

गरीब भाई अपने अमीर भाई के पास जाना नहीं चाहता था और उसने अपनी बीवी से भी यही कहा। मगर इसके सिवा कोई चारा भी तो नहीं था।

सो वह अपने धनी भाई के पास जाकर बोला—

“भाई, थोड़ा-सा मांस उधार दे दो। त्योहार के दिन हमारे घर में कुछ भी तो नहीं है।”

अमीर भाई ने जानवर का खुर उसकी ओर फेंकते हुए चित्लाकर कहा—

“लो, लो इसे और जाओ हिस्सी के पास!”

गरीब अपने अमीर भाई के घर से निकला और मन ही मन सोचने लगा—

“उसने तो खुर मुझे नहीं, वन-देव हिस्सी के लिए दिया है। सो, मैं उसे ही वे आता हूँ।”

और वह वन की ओर चल दिया।

वह बहुत देर तक जंगल में चलता रहा या थोड़ी देर तक, यह तो राम जाने। पर चलते-चलते उसकी कुछ लकड़हारों से मुलाकात हुई।

“तुम कहां जा रहे हो?” लकड़हारों ने पूछा।

“वन-देव हिस्सी के पास, उसे यह खुर देने,” गरीब आबमी ने जवाब दिया।

“तुम लोग बता सकते हो कि उसकी झोंपड़ी कहां है?”

लकड़हारों ने जवाब दिया—

“तुम नाक की सीछ में चलते जाओ, रास्ते से बिल्कुल नहीं भटकना। इस तरह तुम उसकी झोंपड़ी तक पहुंच जाओगे। मगर बहुत ध्यान से हमारी एक बात सुनो। हिस्सी अगर खुर के बदले में चांदी देना चाहे, तो मत लेना। अगर वह सोना दे, तो उससे भी इन्कार कर देना। तुम तो उससे केवल चक्की ही मांगना।”

गरीब आबमी ने इस नसीहत के लिए लकड़हारों को धन्यवाद दिया, उन्हें नमस्कार किया और अपनी राह बढ़ चला।

वह बहुत दूर चला या थोड़ी दूर, यह तो राम जाने, पर आखिर उसे एक झोंपड़ी नज़र आई। वह अन्दर गया तो उसने क्या देखा कि स्वयं हिस्सी वहां विराजमान है।

हिस्सी ने उसकी ओर देखा और बोला—

“लोग अक्सर उपहार लेकर आने के वादे करते हैं, मगर बहुत कम ही उन्हें पूरा करते हैं। तुम क्या लेकर आये हो?”

“यह खुर।”

हिस्सी की खुशी का पारावार न रहा।

“तीस बरस हो गये मुझे मांस खाये हुए,” उसने कहा। “अल्दी से दो मुझे खुर।”

वन-देव ने खुर लेकर खाया।

“तो अब तुम्हें इसके बदले में कुछ देना भी चाहिए,” उसने कहा। “बहुत लोग क्या इस खुर की कीमत? अच्छा, यह तो दो मुट्ठी भर चांदी।”

“मुझे चांदी नहीं चाहिए,” गरीब ने कहा।

तब हिस्सी ने सोना निकाला और उसे दो मुट्ठी भर सोना देना चाहा।

“मुझे सोना भी नहीं चाहिए,” गरीब आदमी ने कहा।

“तब तुम्हें क्या चाहिए?”

“तुम्हारी चक्की।”

“नहीं, मैं तुम्हें यह चक्की नहीं दे सकता,” हिस्सी बोला। “धन-दौलत जितनी चाहो, ले लो।”

मगर गरीब आदमी दौलत लेने के लिए राजी न हुआ और चक्की लेने की ही रट लगाये रहा।

“अब जब मैं खुर खा ही चुका हूँ तो उसकी कीमत भी अदा करनी ही होगी,” वन-देव बोला। “चलो, ऐसा ही सही। तुम ले जाओ मेरी चक्की। मगर यह जानते हो कि इसका करोगे क्या?”

“नहीं, मैं तो नहीं जानता। बता दीजिये।”

“देखो, यह कोई साधारण चक्की नहीं है। यह तुम्हें मुंहमांगी चीज दे सकती है। तुम्हें केवल इतना ही कहना चाहिए—‘पीसो, मेरी चक्की!’ और जब यह चाहो कि वह अपना काम बन्द कर दे तो कहो—‘बस, मेरे लिए काफी है!’ तब वह रुक जायेगी। अच्छा, तुम अब जाओ!”

गरीब आदमी ने हिस्सी को धन्यवाद दिया और घर की ओर रवाना हो गया। वह बहुत देर तक जंगल में चलता रहा। रात घिर आई, मूसलधार बारिश होने लगी, हवा उसके कानों में सीटियां बजाती रही और वृक्षों की शाखाएँ उसके चेहरे पर आकर लगती रहीं। जब वह घर लौटा तो सुबह हो चुकी थी।

“तुम सारा दिन और सारी रात कहां गायब रहे?” उसकी बीवी ने पूछा। “मैं तो यह सोचने लगी थी कि अब तुम कमी लौट कर नहीं आओगे।”

“खुद वन-देव हिस्सी के घर होकर आया हूँ,” गरीब आदमी ने जवाब दिया। “देखो तो मैं उससे क्या उपहार लेकर आया हूँ!”

इतना कहकर उसने थैले में से चक्की निकाली।

“पीसो, मेरी चक्की!” उसने कहा। “आज त्योहार के मौके पर हमें खाने के लिए बढ़िया-बढ़िया चीजें दो।”

चक्की लगी घूमने। मेज पर आटे, अनाज, चीनी, मांस और मछली, यानी जो कुछ भी आदमी चाह सकता है, वे सभी चीजें जमा होने लगीं। गरीब आदमी की बीवी बोरियां और शोले ले आई और उसने उन्हें ठसाठस भर लिया। तब चक्की पर उंगली मारते हुए गरीब आदमी ने कहा—“बस, मेरे लिए काफी है!” चक्की फौरन रुक गई।



गरीब आदमी के परिवार ने भी गांव के दूसरे लोगों के समान ही मजे से त्योहार मनाया। उस दिन से इनकी ज़िन्दगी बेहतर होने लगी। उसकी बीबी और बच्चों के लिए बढ़िया कपड़े और जूते हो गये और उन्हें किसी चीज़ की जरूरत नहीं रही।

एक दिन गरीब आदमी ने चक्की से कहा कि वह उसके घोड़े के लिए बहुत-सी जई पीस दे। चक्की ने ऐसा कर दिया। उसका घोड़ा घर के पास खड़ा होकर जई खाने लगा।

इसी समय अमीर भाई ने अपने नौकर को कहा कि वह घोड़ों को झील पर ले जाकर पानी पिला साये।

नौकर घोड़ों को झील की ओर ले चला। मगर जब वे गरीब भाई के घर के पास से गुजरे तो घोड़े रुक गये और गरीब आदमी के घोड़े के साथ जई खाने लगे।

अमीर भाई ने अपने घर से यह देखा तो बाहर ओसारे में आकर चिल्लाया —

“ए नौकर! घोड़ों को वापस ले जाओ! वे वहां कूड़ा-करकट खा रहे हैं!”

नौकर उन्हें वापस ले गया।

“मालिक, घोड़े वहां कूड़ा-करकट नहीं, बल्कि बढ़िया जई खा रहे थे,” नौकर ने कहा। “आपके भाई के पास जई और बाक़ी सभी चीज़ें भी ढेरों ढेर हैं।”

अब अमीर भाई को ज़िज़ासा हुई।

“मैं अभी जाकर देखता हूं कि मेरा भाई यकायक कैसे अमीर हो गया। यह कैसे हुआ?” वह बोला और अपने भाई के पास गया।

“तुम यकायक अमीर कैसे हो गये?” उसने पूछा। “यह सभी दौलत कहां से आ गई?”

गरीब भाई ने उसे सारा हाल सच-सच कह सुनाया।

“हिस्सी ने मेरी मदद की है,” उसने कहा।

“क्या मतलब?” अमीर भाई ने पूछा।

“वही जो मैं कह रहा हूं। तुमने त्योहार के मौक़े पर जानवर का खुर देकर कहा था कि जाओ हिस्सी के पास। मैंने ऐसा ही किया। मैंने हिस्सी को खुर दे दिया और उसने बदले में मुझे यह अद्भुत चक्की दी। यही चक्की मुझे मुंहमांगी चीज़ें देती है।”

“मुझे दिखाओ तो वह चक्की!”

“अच्छी बात है।”

गरीब भाई ने अपनी चक्की को हुक्म दिया कि वह उन्हें खाने की सभी तरह की बढ़िया चीज़ें जुटा दे। चक्की फ़ौरन घूमने लगी और मेज़ पर कचौड़ियों, तरह-तरह के मुने हुए मांसों और अन्य बढ़िया चीज़ों के ढेर लग गये।

मारे अचम्भे के अमीर भाई की आंखें फटी की फटी रह गई।
 “चक्की मुझे बेच दो,” अमीर भाई ने गिड़गिड़ाकर कहा।
 “नहीं, मैं नहीं बेचूंगा। खुद मुझे इसकी जरूरत है।”
 मगर अमीर भाई ने फिर कहा—
 “तुम चाहे जितनी भी कीमत ले लो, मगर इसे मेरे हाथों बेच दो।”
 “नहीं, मैं नहीं बेचूंगा।”
 अमीर भाई ने जब यह महसूस किया कि गरीब भाई किसी तरह भी मानने को तैयार नहीं है, तो उसने दूसरी चाल खली।
 “अरे, बड़े ही कृतघ्न हो तुम! जरा बताओ तो कि तुम्हें खुर किसने दिया था?”
 “तुम ने।”
 “और अब यह चक्की मुझे देते हुए अपना बिल छोटा करते हो! अच्छा, अगर बेचना नहीं चाहते तो कुछ समय के लिए इसे उधार ही दे दो।”
 गरीब भाई ने इस पर सोच-विचार किया।
 “चलो, ऐसा ही सही,” उसने कहा। “तुम कुछ समय के लिए इसे ले सकते हो।”
 अमीर भाई की तो बाछें खिल गईं। उसने चक्की उठाई और घर को भाग चला। उसने तो यह तक न पूछा कि जब इसे बन्द करना हो तो क्या किया जाये।
 अगली सुबह को वह चक्की लेकर जहाज में जा सवार हुआ।
 “आजकल मछली नमकीन बनाई जा रही है,” उसने सोचा, “इसलिये नमक महंगा है। मैं नमक का व्यापार करके मात्सामाल हो जाऊंगा।”
 समुद्र में काफ़ी दूर जाकर उसने चक्की से कहा—
 “पीसो, मेरी चक्की! मुझे नमक दो, जितना अधिक, उतना ही बेहतर।”
 चक्की ने धूमना शुरू किया और उससे बहुत ही साफ़ और सफ़ेद नमक निकलने लगा।
 अमीर आदमी खुशी से भतवाला होता हुआ नमक को देखने और अपने मुनाफ़े का अनुमान लगाने लगा। इतना अधिक नमक जमा हो गया था कि उसे चक्की को बन्द कर देना चाहिए था, मगर वह तो जब-तब यही दोहराता रहा—
 “पीसो, मेरी चक्की, पीसो! रुको नहीं!”
 नमक का बज्जन इतना अधिक हो गया था कि जहाज पानी में नीचे ही नीचे धंसता जाता था। मगर अमीर आदमी के तो मानो होश-हवास ही ठिकाने न रहे थे। वह

लगातार यही दोहराता जा रहा था—

“पीसो, मेरी चक्की, पीसो!”

इसी बीच पानी जहाज के दोनों ओर चढ़ आया था और उसकी यह हालत हो गई थी कि डूबा, बस डूबा। अब अमीर भाई की अक्स ठिकाने आई।

“पीसना बन्द करो, चक्की!” वह चिल्लाया।

मगर चक्की पहले की तरह ही धूमती गई।

“पीसना बन्द करो, चक्की! पीसना बन्द करो!” अमीर आदमी फिर चिल्लाया, मगर चक्की लगातार धूमती ही गई।

अमीर भाई ने चक्की को उठाकर समुद्र में फेंक देना चाहा, मगर वह ऐसा न कर पाया। चक्की तो मानो डेक के साथ चिपक गई थी। “बचाओ!” अमीर भाई चिल्लाया। “मुझे बचाओ!”

मगर वहां तो कोई भी ऐसा नहीं था जो उसे बचाता, उसकी मदद को आता।

जहाज डूब गया और अमीर भाई समुद्र के गहरे तल में पहुंच गया।

और चक्की का क्या हुआ? सुनने में आया है कि समुद्र-तल में भी वह लगातार धूमती जा रही है और नमक बनाती जा रही है। मानें या न मानें, यही कारण है कि समुद्र का पानी खारा है।

बेटों ने बाप का खजाना कैसे पाया

मोल्दावियाई लोक-कथा



एक बार का जिक्र है कि कहीं एक आदमी रहता था जिसके तीन बेटे थे। वह बड़ा ही मेहनती व्यक्ति था। वह कभी काम से जी न चुराता और सुबह से शाम तक कड़ा श्रम करता। यकान का तो वह नाम ही नहीं जानता था और हर चीज बढ़िया ढंग से और ठीक वक्त पर करता।

रही बेटों की बात, तो वे तीनों लम्बे-तइंगे, हट्टे-कट्टे और सुन्दर-सुघड़ जवान थे, मगर काम से जी चुराते थे।

बाप खेत, बगीचे और घर में काम करता, मगर बेटे वृक्षों की छाया में निकम्मे बैठे रहकर गप-शप करते या नदी पर मछलियां पकड़ने चले जाते।

“तुम लोग कभी काम क्यों नहीं करते? अपने पिता का हाथ क्यों नहीं बंटाते?” उनके पड़ोसी पूछते।

“हमें काम करने की क्या पड़ी है!” बेटे जवाब देते। “पिताजी हमारा खूब ध्यान रखते हैं, खुद ही सारा काम-काज निपटा लेते हैं।”

इसी तरह साल के बाद साल गुजरता गया।

बेटे पूरी तरह जवान हो गये और पिता बुढ़ा गया, क्षीणकाय हो गया। उसमें पहले की भाँति काम करने की ताकत न रही। घर के इर्दगिर्द जो बगीचा था, उसका

बुरा हाल हो गया और खेतों में झाड़-झंखाड़ नजर आने लगे। बेटों ने यह सब कुछ देखा, मगर काम करने को तैयार न हुए।

“बेटो, तुम निकम्मे क्यों बैठे रहते हो?” पिता उनसे कहता। “मैं जब जवान था तो मैंने काम किया और अब तुम्हारी बारी है।”

“काम करने के लिए तो सारी उम्र पड़ी है,” बेटे जवाब देते।

बूढ़े आदमी को इस बात से बहुत ही दुख होता कि उसके बेटे ऐसे कामचोर हैं। वह इसी ग्राम में घुल-घुलकर बीमार पड़ गया और उसने चारपाई पकड़ ली।

अब तक परिवार पर बहुत ही गरीबी आ गई थी। बगीचे में बिछुआ और दूसरी झाड़ियां इतनी ऊंची-ऊंची हो गई थीं कि उनमें से घर भी बड़ी मुश्किल से नजर आता था।

एक दिन बूढ़े ने बेटों को अपने पास बुलाकर कहा —

“बेटो, अब मेरी आखिरी घड़ी नज़दीक आ गई है। मेरे बिना अब तुम कैसे ज़िन्दगी गुजारोगे? तुम्हें काम करना न तो पसन्द ही है और न तुम उसका ढंग ही जानते हो।” दुख से बेटों के दिल भर आये और वे रोने लगे।

“पिताजी, मरने से पहले हम से कुछ कहिये, हमें कोई आखिरी नसीहत बीजिये,” सबसे बड़े बेटे ने प्रार्थना की।

“अच्छी बात है,” पिता ने कहा। “मैं तुम्हें एक राज बताता हूँ। तुम्हें यह तो मालूम ही है कि तुम्हारी दिवंगता माँ और मैं हमेशा कड़ी मेहनत करते रहे हैं। अनेक वर्षों तक थोड़ी-थोड़ी रकम बचाकर हमने तुम लोगों के लिए कुछ पूंजी जोड़ी है — सोने से भरा हुआ बर्तन। उस बर्तन को मैंने घर के आसपास ही कहीं गाड़ दिया है, पर मुझे याद नहीं कि कहाँ। तुम उस खजाने को ढूँढ़ लो और तब तुम्हें गरीबी का कभी मुंह नहीं देखना पड़ेगा, तुम्हें किसी तरह के अमावों का शिकार नहीं होना पड़ेगा।”

इतना कहकर उसने अपने बेटों से धिवा ली और इस दुनिया से कूच कर गया।

बेटों ने बाप को बफ़नाया, उसका मातम मनाया। कुछ दिन बाद सबसे बड़े बेटे ने कहा —

“भाइयो, हम इस हद तक गरीब हो गये हैं कि हमारे पास रोटी खरीबने तक के पैसे नहीं रहे। याद है न, मरने से पहले पिताजी ने क्या कहा था? आओ, हम सोने से भरे हुए बर्तन की तलाश करें।”

भाइयों ने अपने फावड़े लिये और घर के करीब ही छोटे-छोटे गढ़े खोदने लगे। वे खोदते रहे, खोदते रहे, मगर सोने से भरा हुआ बर्तन उन्हें नहीं मिला।

तब मंझला माई बोला -

“भाइयो ! अगर हम इसी तरह से खोदेंगे, तो पिताजी का छोड़ा हुआ खजाना कभी नहीं ढूँढ़ पायेंगे। आओ, अपने घर के इर्दगिर्द की सारी जमीन खोद डालें !”

माई राजी हो गये। उन्होंने फिर से अपने फावड़े उठाये और सारी जमीन खोद डाली, मगर सोने से भरा हुआ बर्तन फिर भी नहीं मिला।

“ए भाइयो, आओ हम इस सारी जमीन को एक बार फिर खोदें, पहले से ज्यादा गहरी !” सबसे छोटे माई ने कहा। “बहुत भुमकिन है कि पिताजी ने सोने से भरा हुआ बर्तन बहुत गहरा दबा दिया हो।”

माई मान गये। वे पिता के खजाने को खोजने के लिए बहुत ही उत्सुक जो थे ! उन्होंने फिर से खुदाई शुरू की।

बड़ा माई खोदता जा रहा था, खोदता जा रहा था कि अचानक उसका फावड़ा किसी बड़ी और सख्त-सी चीज से जा टकराया। उसका दिल धड़क उठा, वह खुशी से झुक उठा और उसने अपने भाइयों को आवाज दी -

“जल्दी से यहां आओ ! मुझे पिताजी का खजाना मिला गया है !”

मंझला और छोटा माई भाग कर उसके पास गये, उसकी मदद करने लगे।

वे पसीना बहाते रहे, बहाते रहे। आखिर जमीन में से सोने से भरा हुआ बर्तन नहीं, एक भारी पत्थर निकला।

उन्हें बहुत दुख हुआ। वे बोले -

“इस पत्थर का क्या किया जाये ? इसे यहीं छोड़ने में तो कोई तुक नहीं ! इसे ले जाकर खड्ड में फेंक देते हैं !”

उन्होंने ऐसा ही किया। पत्थर को फेंककर वे फिर से जमीन की खुदाई करने लगे। वे दिन भर काम करते रहे, उन्हें खाने-पीने और आराम करने की भी सुध-बुध न रही। उन्होंने सारी जमीन एक बार फिर से खोद डाली। जमीन तो बहुत बढ़िया और नर्म-नर्म हो गई, मगर सोने से भरा हुआ बर्तन उन्हें फिर भी नहीं मिला।

“हां तो, भाइयो,” सबसे बड़े माई ने कहा, “अब जब हमने जमीन खोद ही डाली है तो इसे यों ही छोड़ देना तो ठीक न होगा। आओ, यहां अंगूर के पौधे ही लगा दें !”

“यह तो अच्छा खयाल है,” दोनों छोटे भाइयों ने सहमति प्रकट की। “इस तरह कम से कम हमारी मेहनत तो बेकार नहीं जायेगी।”

चुनांचे उन्होंने वहां अंगूर के पौधे लगा दिये और उनकी खूब देखभाल करने लगे।

कुछ अरसा बीता तो वहां अंगूरों का एक बढ़िया और बड़ा-सा बगीचा बन गया जिसमें पके हुए मीठे अंगूरों के गुच्छे नजर आने लगे।

भाइयों ने ढेरों ढेर अंगूर बटोरे। जरूरत के अंगूर अपने पास रखकर उन्होंने उनका बड़ा हिस्सा बेच दिया और काफ़ी रकम कमाई।

तब बड़े माई ने कहा -

“हमने बेकार ही जमीन नहीं छोदी। हमें उसमें से वह खजाना मिल गया है जिसकी मरने से पहले पिताजी ने हमसे चर्चा की थी।”

बासिल सुंदर स्वरूप और सूर्य सहोदरा इत्याना

मोल्दावियाई लोक-कथा



हकीकत तो हकीकत है,
कहानी तो कहानी है।
हकीकत की कहानी ही
हमें तो अब सुनानी है॥

किसी जमाने में कहीं एक आदमी अपनी बीबी के साथ रहता था। उनकी एक बेटी थी, सुबह की भांति सुन्दर और प्यारी। वह चुस्त भी बहुत थी और हाथों से काम करने में भी ऐसी तेज जैसे वसन्ती हवा। जिस किसी ने भी उसके हाथों की फुर्ती, आंखों की चमक और गुलाब की तरह खिले हुए गाल देखे, उसी के मन पर जीवन भर के लिए उसकी छाप अंकित हो गई। उसे देखते ही जवानों के दिल धड़कने लगते।

एक सुहाने दिन यह सुन्दरी दो घड़े लेकर पानी लाने के लिए कुएं पर गई। जब घड़े भर गये तो उसका मन हुआ कि कुछ देर कुएं के पास बैठे। वहां बैठे-बैठे उसने कुएं में झांककर देखा और वहां उसे बासिल का पौधा उगा हुआ दिखाई दिया। उसने न कुछ सोचा, न विचारा और पौधे को तोड़कर सूँघा। उसकी गंध से ही वह गर्भवती हो गई।

लड़की के माता-पिता को जब इस बात का पता चला तो वे उसे डांटने-फटकारने और भला-बुरा कहने लगे। दुनिया अब उसके लिए प्यारी जगह न रही। लड़की ने फ़ैसला किया कि वह घर से भाग जायेगी। मगर कहाँ? जहाँ भी उसके पैर ले जायें।

उसने चुपचाप तैयारी की और चोरी-चोरी घर से भाग निकली। कुछ ही समय बाद उसका कहीं कोई अता-पता और नाम-निशान बाक़ी न रहा।

चोट खाया हुआ दिल और उस में दहशत लिए वह कहीं भी रुके बिना चलते-चलते एक घने जंगल में पहुँची। वहां उसे एक गुफा नज़र आई। उसने सोचा कि मैं वहां थोड़ा आराम करूंगी। उसने भीतर कदम रखा ही था कि उसे अपनी ओर एक बहुत ही बूढ़ा व्यक्ति आता दिखाई दिया, खांसता और आहें भरता हुआ। उसका कूबड़ निकला हुआ था, टांगें टेढ़ी-मेढ़ी थीं, घुटनों को छूती हुई थी दाढ़ी, कंधों तक पहुँच रही थी मूँछें और एड़ियों को छू रहे थे बाल।

“तुम कौन हो और यहां कैसे आई हो?” बूढ़े ने अपनी घनी बरौनियों को, जो उसकी आंखों को पूरी तरह ढके हुए थीं, बैसाखी से ऊपर उठाते पूछा।

लड़की बूढ़े का सवाल सुनकर सिसकने और रोने लगी। आखिर उसने उसे सारा किस्सा कह सुनाया और बताया कि वह उसकी गुफा में कैसे पहुँची है।

बूढ़े ने चुपचाप उसकी वास्तान सुनी। उसने लड़की को पत्थर की बेंच पर बिठाया और उसे तसल्ली दी।

सूरज की तन झुलसाती गर्मी के बाद जैसे बरसात से धरती को ठंडक मिलती है, वैसे ही दुख-मुसीबत के दिनों में नौजवानों के लिए बुजुर्गों के शब्द मरहम का काम करते हैं। बूढ़े के सहानुभूति भरे शब्दों से लड़की को चैन मिला और वह कुछ समय तक उसकी गुफा में रहने को राजी हो गई।

इस तरह वे दोनों एक साथ रहने लगे। लड़की का दुख-दर्द कम हो गया और बूढ़े को बुढ़ापे का सहारा मिल गया।

हर सुबह को तीन बकरियां गुफा में आतीं। बूढ़ा उन्हें ब्रुह लेता। वे दोनों ब्रुह पीते और सन्तुष्ट हो जाते।

वक्त तेज़ी से गुज़रता गया। आखिर लड़की ने एक बच्चे को जन्म दिया, ऐसा मोटा, गुबगुबा और प्यारा था वह कि उसे देखकर सूरज भी मुस्करा दिया। और बूढ़ा, उसकी खुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं था! उसके पैर तो मानो बरबस नाचने लगे, उसे अपने दिल में जवानी की सी उमंग महसूस हुई।

बच्चे के जन्म लेते ही उन्होंने उसे सुबह की ओस से नहलाया ताकि उस पर किसी की बुरी नज़र का असर न हो। उन्होंने जलती हुई मशाल और इस्पाती तलवार उसके ऊपर से वारी ताकि दुख-मुसीबतों में उसका बाल भी बांका न हो और वह हमेशा सूरज की तरह निर्मल और चमकता रहे। तब मां ने उसे वीर और दिलेर बनाने के लिए जादू-

टोना किया। बूढ़े ने गुफा के अन्दरे कोनों को टटोला और वहां से एक तलवार और मारी डंडा निकाला। ये उसके जबानी के दिनों की बची-बचायी निशानियां थीं। उसने ये दोनों चीजें बच्चे को भेंट कर दीं ताकि वे उसके काम आयें।

नामकरण के समय चाया-पिया बहुत कम गया, मगर हंसी-खुशी ने इसकी कमी पूरी कर दी। उन्होंने बच्चे के स्वास्थ्य और सुख-सौभाग्य की मंगल कामना की। बूढ़े ने लड़के का नाम बासिल रखा। यह वही पौधा था जो उसकी मां ने कुएं पर तोड़ा था। मां ने इस नाम के साथ फ्रेट क्रूमोस यानी सुंदर स्वरूप जोड़ दिया। उसे अपना प्यारा बेटा बहुत ही सुंदर प्रतीत हुआ।

वस्तु उड़ता चला गया। बूढ़ा परलोक सिधार गया और लड़का बड़ा हो गया। वह अब शिकार पर जाता और मां की मनचाही चीजें लेकर आता। जैसे-जैसे वह और बड़ा होता गया वैसे-वैसे मां की जिन्दगी में खुशियां बढ़ती गईं। कारण कि बेटा अपने शब्दों से भी और कामों से भी उसे खुशी देता, उसका मन बहलाता।

बासिल सुन्दर स्वरूप जब मर्द हो गया तो घर से बहुत दूर, बसूतों के झुण्डों और घने जंगलों में शिकार के लिए जाने लगा। वह इतनी दूर तक जाता कि नजर उसे मुश्किल से ही देख पाती।

एक दिन बासिल किसी घाटी के सिरे पर जा पहुंचा। जब उसने दूरी पर नजर दौड़ाई तो उसे एक बहुत बड़ी हरी-हरी झील दिखाई दी जिसमें सूरज तैर रहा था।

मगर जब वह निकट पहुंचा तो उसने पाया कि वह झील नहीं, सोने और मोतियों का महल है जो असीम घने जंगल के बीच खड़ा हुआ चमक रहा है।

उसने अपनी जिन्दगी में कभी ऐसा दिलकश नजारा नहीं देखा था। उसने अपनी तलवार और डंडे को ठीक से कसा और महल की ओर चल दिया। उसे बहुत दूर नहीं जाना पड़ा और जल्द ही वह वहां पहुंच गया। महल की खिड़कियां और दरवाजे खुले पड़े थे, मगर न तो महल में और न उसके आसपास ही कहीं कोई आदमी नजर आ रहा था। सुन्दर बासिल ने एक के बाद एक कमरे का और ऐसे सारे महल का चक्कर लगाया। वह आंगन में आया और उसने अपने इर्दगिर्द नजर डाली, मगर उसे कहीं कोई आदमी दिखाई न दिया। तब अचानक उसे मारी घूं-घूं और मन-मन तथा शाखाओं के चटखने की आवाज सुनाई दी। और लो! उसे जंगल की ओर से सात मयानक अजगर आते दिखाई दिये। उनमें से प्रत्येक के -

गधे के से छुर थे
बकरी का सा सिर था
मेड़िये के से जबड़े थे
आंखों में जहर था।

वे छसांगें-सी लगाते हुए चल रहे थे और अपने कंधों पर तीन आदमियों को उठाये ला रहे थे जिनके हाथ-पैर बंधे थे। वे सभी एकसाथ महल में घुसे, उन्होंने एक बहुत बड़े कड़ाहे के नीचे आग जलाई और जब पानी उबलने लगा तो अपने एक क़ैदी को उसमें फेंक दिया। उन्होंने उसे उबाला और झटपट खा गये, हड्डियां तक भी बाक़ी नहीं छोड़ीं। फिर उन्होंने बाक़ी दो के साथ भी यही कुछ किया। ऐसे जल्दी-जल्दी और बेताबी से उन्होंने उन्हें खाया कि उनके जबड़ों की चपर-चपर सुनाई दे रही थी।

बासिल दरवाजे के पीछे छिपा हुआ उन्हें देख रहा था। उसने जो वृश्य देखा तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। मयानक अजगर तीनों आदमियों की आखिरी बोटी तक हड़प गये थे। तभी उनमें से एक मुड़ा और उसकी बासिल पर नजर पड़ी। वह तो ऐसे उछल पड़ा मानो बिज्जू ने उसे डंक मार दिया हो।

“सभी मागकर आंगन में चलो! वहां एक और भी है जो कड़ाहे में जाने का इन्तज़ार कर रहा है!”

इतना सुनकर सभी अजगर उछले और दरवाजे की तरफ़ दौड़े। मगर बासिल ने तभी म्यान से तलवार निकाल ली और जो भी अजगर दहलीज़ को पार करता, वह छट से उसी के सिर को घड़ से अलग कर देता। उनके सिर गोभी के कल्लों की तरह फ़र्श पर सुड़कने लगे। इस तरह बासिल ने छः अजगरों का सफ़ाया कर दिया। मगर सातवें अजगर के सामने उसकी दास न गसी। उसकी चौड़ी तलवार बिल्कुल बेकार रही। उसने तलवार की तेज धार वाली तरफ़ से अजगर की गर्दन पर वार किया, तलवार की उल्टी तरफ़ से सिर पर जोर की चोट की और तलवार को उसके बिल के आर-पार करने की कोशिश की, मगर सब बेसूद! तब बासिल ने न सोचा, न विचारा और अपना मारी डंडा निकालकर सिर के ऊपर घुमाया और अजगर की कनपटी पर इस जोर से बे मारा कि उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया। अजगर बुरी तरह से बल खाता और दर्द से तिलमिलाता हुआ पीछे हटने लगा। हर क्रबम पर उसका सिर दीवारों से जा टकराता। आखिर वह महल के अन्तिम कमरे में जा पहुंचा। वहां उसने फ़र्श पर का एक चोर-दरवाजा खोला और काई तथा मकड़ियों के जालों से ढके हुए जीने से नीचे

सुड़क चला। बासिल भी उसके पीछे-पीछे गया। उन्होंने लोहे के बारह दरवाजे पार किये और आखिर तल में पहुंच गये। अजगर दीवार के साथ चिपक गया, उसकी आंखें इधर-उधर घूम रही थीं, वह दांत बाहर निकाले हुए था और ऐसे लगता था कि डर के मारे उसका दिल निकलकर बाहर आ गिरेगा।

मगर बासिल ने उसके साथ कुछ नहीं किया। उसने दरवाजा बन्द किया, सांकेलें चढ़ाई, ताला लगाया और सीढ़ियों से ऊपर लौट आया। उसने लौटते हुए बारह के बारह दरवाजे बन्द कर दिये, आखिरी दरवाजे में ताला लगाया और चाबी अपने कोट की जेब में रख ली। इसके बाद यह सोचकर खुश होता हुआ कि मैंने बड़ा नेक काम किया है, घर की ओर चल दिया।

बहुत ही खुश होता हुआ वह गुफा में लौटा और उसने अपनी मां से कहा—

“मां, मैंने एक बहुत बड़ा और सुन्दर महल खूँड लिया है। अब हम उसी में रहेंगे।”

मां की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। मां-बेटा गुफा से निकलकर सोने और मोतियों के महल में जा पहुंचे और वहीं रहने लगे।

बासिल ने कहा—

“यह सारा महल हमारा है। मगर कभी भूलकर भी आखिरी कमरे का दरवाजा मत खोलना, क्योंकि एक आखिरी अजगर अब भी वहां बन्द है।”

“तुम मुझ पर पूरा मरोसा कर सकते हो, मेरे बेटे,” मां ने जवाब दिया। “उस कम्बल ने तुम्हें खाने की कोशिश की थी, इसलिए मैं जानती हूं कि मुझे उस दरवाजे का ताला क्यों बन्द रखना चाहिये।”

मां ने चाबी लेकर उसे एक रुमाल में लपेटा, रुमाल को दस गांठें लगायीं और उसे कहीं इतनी दूर छिपाकर रख दिया कि सदियों तक खूँडते रहने पर भी वह किसी के हाथ न लगे।

अब मानो कल्पवृक्ष से मां-बेटे को जीवन के सभी वरदान, सभी नेमते मिलने लगीं। महल शानदार था, इर्दगिर्द का प्राकृतिक सौन्दर्य अनुपम और शिकार मन माना।

उन्होंने इस तरह एक-दो नहीं, बल्कि हंसी-खुशी के बहुत-से वर्ष बिताये। मगर जिस तरह बसन्त अपने साथ अचानक प्यारी-प्यारी गर्मी लेकर आता है, इसी भांति धरती पर बहुत-से आकस्मिक तूफान भी आते हैं जो हर चीज को तबाह-बरबाद कर देना चाहते हैं।

सातों अजगर एक अन्य राज्य से यहां आकर बसे थे। उनकी धाय थी क्लोआन्त्सा चुइस, जिसकी सूरत थी मानो तारकोल सनी, उसका दिल था बिल्कुल काला, एक

नज़र में दुनिया को झुलसानेवाला। क्लोआन्त्सा अजगरों के वापस आने का इन्तज़ार करती रही। वे आम तौर पर कुछ समय के बाद अपनी धाय से मिलने जाते थे। मगर जब वे बहुत समय तक उसके पास नहीं गये तो उसके मन को तरह-तरह की आशंकाओं और चिन्ताओं ने आ घेरा। वह बुरी तरह परेशान हो उठी। वह आग में झुलसते हुए सांप की तरह बेचैन हो उठी और पागलों की तरह भागती हुई यह जानने के लिए महल में पहुंची कि मामला क्या है।

जब उसे पता चला कि अजगरों के साथ क्या बीती है तो उसने सिर धाम लिया और कुछ बेर तक तड़पती-कराहती और बुखी होती रही। तब वह गुस्से से लाल-पीली होकर बासिल की मां पर झपटी, उसे चाबी देने के लिए मजबूर किया और जिस कोठरी में अजगर बन्द पड़ा रहा था, उसे वहां धकेल दिया। उसने अजगर को मुक्त किया और उसे अपने पीछे-पीछे आने को कहा। उसने बाहर जाते हुए बारह के बारह दरवाजे बन्द किये और उनमें ताले लगा दिये।

क्लोआन्त्सा और अजगर ने बैठकर सलाह की कि वे बासिल से कैसे बदला लें, उसे कैसे मौत के घाट उतारें।

“तुम्हें उसे लड़ाई की चुनौती देनी चाहिए,” जावूगरनी ने अजगर से कहा।

“नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता, मुझे डर लगता है। ताकत में वह मुझ से कहीं बढ़-बढ़कर है। मैं तो यही समझता हूं कि उसकी नज़र पड़ने से पहले ही हमें यहां से भाग जाना चाहिए वरना हमारा बुरा हाल होगा।”

“अगर ऐसी ही बात है तो तुम मुझ पर विश्वास करो,” क्लोआन्त्सा ने कहा। “मैं उसकी ऐसी हालत कर दूंगी कि वह खुशी से सांप के बिल में जा घुसेगा, खुद अपनी मौत खूँडता फिरेगा।”

इतना कहकर उसने अजगर को छिपा दिया और खुद लट्टू की तरह घूमने लगी। इस तरह उसने बासिल की मां का रूप धारण कर लिया। उसमें सक्त बीमार होने का ढोंग किया और ऐसा नाटक रचा कि मानो दर्द के मारे उसकी जान निकली जा रही है। वह अब बासिल के लौटने का इन्तज़ार करने लगी।

एक दिन गुबरा और फिर दूसरा। बासिल शिकार से लौटा। जैसे ही उसने बहलीज लांघी वैसे ही क्लोआन्त्सा आहें भरने और कराहने लगी।

“मेरे बेटे, मेरे प्यारे बेटे, बहुत बुरा हाल है मेरा। तुम तो ऐसे गये कि जल्दी से लौट कर मेरी सुध भी नहीं ली। इधर मैं सक्त बीमार पड़ गई और कोई मेरी सुध-सार लेनेवाला यहां नहीं था। आह, अगर कहीं से पत्नी के दूध की बूंद मिल जाये,

केवल एक बूंद ही, तो मेरी बीमारी फौरन दूर हो जाये और मैं फिर से अपने पैरों पर खड़ी हो जाऊं।”

बासिल ने बहुत दुखी होते हुए मां की बीमारी का हाल सुना। उसने एक बर्तन लिया और मां रुपी क्लोआन्त्सा से यह कहकर कि मैं जल्द ही लौट आऊंगा, पक्षी के दूध की खोज में चल दिया।

वह चलता गया, दर कूच दर मंजिल, लांघ गया पहाड़ों और घाटियों को और आखिर एक महल के पास पहुंचा जिसके इर्दगिर्द ऊंची बाड़ थी। उसने फाटक पर दस्तक दी। अन्दर से एक लड़की ने कहा—

“अगर तुम भले आदमी हो, तो अन्दर आ जाओ, अगर बुरे हो, तो अपनी राह लो वरना मेरे कुत्ते तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे।”

“सुन्दरी, एक भला आदमी ही आपके फाटक पर खड़ा है,” बासिल सुन्दर स्वरूप ने जवाब दिया।

बासिल के सामने फाटक खुल गया और उसे एक बढ़िया मकान नज़र आया। मकान के दरवाजे और खिड़कियां खुली थीं।

“नमस्ते,” उसने अन्दर बाखिल होते हुए कहा।

“नमस्ते,” लड़की ने जवाब दिया। ओह, कितनी प्यारी थी वह लड़की! उसके रूप के सामने सूरज, चांद और उषा की उजली किरणें भी हेच थीं।

लड़की के सम्मुख सिर झुकाते हुए बासिल ने कहा—

“मैं बहुत लम्बा रास्ता तय करके आया हूं और इतना ही लम्बा रास्ता अभी मुझे और तय करना है। क्या मैं यहां एक रात गुज़ार सकता हूं?”

“बड़ी खुशी से,” लड़की ने जवाब दिया। वह ब्यालु और अतिधिसत्कारी लड़की थी। उसने उसे अरीवार क्रासीन पर बिठाया और सभी तरह के बढ़िया खाने मेज पर लगाये।

मेज पर बैठे और खाते-पीते हुए वे बातचीत करते रहे। तब बासिल सुन्दर स्वरूप ने लड़की को बताया कि मैं किसलिए घर से इतनी दूर आया हूं। उसने पूछा—

“आप नहीं जानतीं कि पक्षी का दूध मैं कहां पा सकता हूं?”

“मैंने तो अपने जीवन में ऐसी खुराक और ऐसे इलाज की कभी चर्चा भी नहीं सुनी,” लड़की ने जवाब दिया। “पर चूंकि तुम एक भले आदमी हो, इसलिए मैं वह जानने की कोशिश करूंगी जो तुम जानना चाहते हो। कुछ देर बाद मैं अपने भाई तेजस्वी सूर्य के पास आऊंगी और उससे इसके बारे में पूछूंगी। अगर और कोई नहीं, तो वह यह अवश्य जानता है कि कौन कौन-सी चीजें दुनिया में कहां मिलती हैं।”

इस तरह सूरज की बहन इत्याना कोसिन्जाना से बासिल सुन्दर स्वरूप की मेंट हुई।

कुछ देर बाद जब इत्याना के थके-हारे मेहमान को नींद ने घर दबाया और वह गहरी नींद सो गया तो वह अपने भाई सूर्य के पास गई। उसने भाई से पूछा कि क्या उसे मालूम है कि पक्षी का दूध किस जगह मिल सकता है।

“बहुत दूर, बहुत ही दूर जाना होगा इसके लिए, प्यारी बहन। रास्ते में कई सप्ताह लग जायेंगे। लगातार पूरब की ओर चलते जाना चाहिए, तांबे के पहाड़ के परे तक। मगर दुध हासिल करना फिर भी मुमकिन नहीं, क्योंकि वह पक्षी वास्तव में एक अमृतपूर्व राक्षस है। उसका हर पंख बादल के समान बड़ा है और जो कोई भी उसे अपने आस-पास मिल जाता है, वह उसे उठाकर अपने घोंसले में ले जाता है और उसके बच्चे उस व्यक्ति के टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं।”

डर और दुख ने इत्याना के मन को दबोच लिया। वह जानती थी कि बासिल का अब क्या अन्त होनेवाला है। वह तो सीधे मौत के मुंह में पहुंच जायेगा। उसने तय कर लिया कि वह उसकी मदद करेगी। अगली सुबह को वह अपने अस्तबल से बारह पंखोंवाला घोड़ा निकाल लाई और बासिल को पेश करते हुए बोली—

“नेक नौजवान, तुम यह घोड़ा ले लो। यह तुम्हारे काम आयेगा और तुम्हें सुरक्षित रखेगा। मगर बेशक किस्मत तुम्हारा साथ दे या न दे, तुम लौटते हुए मेरे घर पर जरूर ठहरना।”

सुन्दर बासिल का तो मन हुआ कि वह इस रूपवती और ब्यालु लड़की के कदमों पर अपना विल निकालकर रख दे। उसने बहुत स्नेह से उसे धन्यवाद दिया, घोड़े पर सवार हुआ और चल दिया।

वह घोड़े पर चढ़ दूर चला।

पर्वत क्या रोकें राह भला!

लांघा खेतों-बलिहानों को।

नदियों और मैदानों को॥

आखिर उसे दूरी पर तांबे की दीवार-सी दिखाई दी। वह जैसे-जैसे नज़दीक आता गया, दीवार अधिकाधिक ऊंची होती गई और आखिर एक पहाड़ी और फिर एक बहुत बड़े पहाड़ में बदल गई। जब वह तांबे के पहाड़ के दामन में पहुंचा तो देखा कि उसकी

छोटी आकाश को सहारा बिये हुए है। इतने ऊँचे पहाड़ तो वास्तव में ही इने-गिने हैं ! बासिल ने उसे बहुत दूर से देखा, नीचे से ऊपर तक उसने उसका जायजा लिया और तभी उसे काले बादल जैसे बड़े-बड़े पंखोंवाला एक अतिकाय पक्षी बैठा दिखाई दिया। यह पक्षी आकाश में चक्कर काटता उड़ता रहा, उड़ता रहा, फिर एक दिशा को मुड़ा और आँखों से ओझल हो गया।

बासिल ने घोड़े की लगामें कसीं और उसे पहाड़ पर बौड़ाना शुरू किया। घोड़े के सुम ठपाठप बज उठे। वह एक के बाद एक चट्टान को लाँघता हुआ बासिल सुन्दर स्वरूप को सबसे ऊँची छोटी पर ले गया। बासिल ने अपने इर्दगिर्द नजर डाली तो उसे एक अद्भुत दृश्य दिखाई दिया। ताँबे के घोंसलों में राक्षस-पक्षी के बच्चे बैठे थे। अभी उनके पंख नहीं निकले थे, मगर उनमें से प्रत्येक साँड के आकार का था और वे सभी भूख के मारे जोर-जोर से चीख रहे थे। बासिल ने आसपास देखा। उसे ताँबे की चट्टान में एक बड़ी-सी बरार नजर आई। वह घोड़े समेत वहीं छिप कर बैठ गया। कुछ देर बाद राक्षस-पक्षी लौटा। वह एक के बाद एक घोंसले में जाकर अपने बच्चों को दूध पिलाने लगा। जब वह उस घोंसले में गया, जिसके करीब बासिल छिपा हुआ था, तो उसने अपनी हिम्मत बटोरकर बर्तन आगे बढ़ा दिया और पक्षी ने उसमें भी कुछ दूध गिरा दिया। तब वह उछलकर घोड़े पर सवार हुआ और अपनी प्यारी जान को बचाकर घोड़े को सरपट उड़ा ले चला। तभी एक बच्चा फिर से चिल्लाया और राक्षस-पक्षी ने घूमकर देखा तो उसे बासिल दिखाई दे गया। वह शैतान की तरह उसकी ओर झपटा, मगर उसके बराबर नहीं पहुँच सका। कारण कि उसके तो दो ही पंख थे, जबकि बासिल के घोड़े के दो बारह। इसलिए वह कहीं अधिक तेजी से उड़ सकता था।

वह घोड़े पर चढ़ दूर चला।
पर्वत क्या रोकें राह मला !
साँघा खेतों-खलिहानों को।
नदियों और मैदानों को॥

आखिर वह इत्याना कोसिन्धाना के घर पहुँच गया। उसने बासिल का हार्दिक स्वागत किया। और उससे कुछ देर रुककर आराम करने को कहा।

सुन्दर बासिल खा-पीकर सो रहा। मगर इत्याना ने, जो मामले की तह तक पहुँची हुई थी, पक्षी का दूध छिपाकर बासिल के बर्तन में गाय का साधारण दूध डाल दिया।

बासिल कुछ देर बाद जागा और अपना बर्तन उठाते हुए बोला -

“तुम सचमुच ही बहुत मेहरबान हो, मेरी बहन ! तुम्हारे यहाँ आराम करने में बड़ा मजा है, मगर मुझे घर जाना चाहिए क्योंकि बीमार माँ मेरा इन्तजार कर रही है।”

“वीर युवक, मैं कामना करती हूँ कि तुम हंसी-खुशी घर पहुँचो। हाँ, फिर भी कभी यहाँ जरूर आना।”

बासिल ने उसे नमस्कार किया, बिदा ली और अपने घोड़े को उड़ा ले चला। जब वह अपने महल तक पहुँचा तो क्लोअन्त्सा ने ऐसे कराहना और छटपटाना शुरू किया मानो बर्तन के मारे उसकी जान निकली जा रही हो।

“हाय, मैं मरी। हाय मेरी जान गई !” वह चिल्लाने लगी।

मगर जब सुन्दर बासिल ने बहलीज लांघी तो वह बोली -

“प्यारे बेटे, तुम्हें देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है ! कब से मैं तुम्हारी राह देख रही हूँ ! क्या तुम दूध ले आये ?”

“हाँ, ले आया हूँ,” बासिल ने जवाब दिया और बर्तन उसकी ओर बढ़ा दिया।

क्लोअन्त्सा ने बर्तन को मुँह लगाया और सारा दूध पी गयी। “धन्यवाद, प्यारे बेटे ! मेरी तबीयत तो सुधरने लगी है,” उसने कहा।

वह लेट गई और उसने ऐसे जाहिर किया मानो सो रही हो। मगर वास्तव में उसकी पलक तक नहीं झपकी। वह सोचती रही कि सुन्दर बासिल को अब ऐसी किस जगह पर भेजे कि उसका नाम-निशान ही बाक़ी न रहे। वह सोचती रही, सोचती रही और फिर से छटपटाने, आहें मरने और कराहने लगी। उसने ऐसा ढोंग किया कि मानो अब तो उसे पहले से भी कहीं ज्यादा तकलीफ़ हो।

“ओह, बेटे, मेरे प्यारे बेटे !” वह चिल्लाई। “बीमारी ने मुझे फिर से घर दबाया है। पर मैंने सपने में देखा है कि अगर मैं अंगली सूअर के बच्चे का मांस खा लूँ, तो स्वस्थ हो जाऊँगी।”

“तो मैं जाकर अंगली सूअर के बच्चे का मांस ले आता हूँ, माँ। मैं तो तुम्हें तन्वुस्त देखना चाहता हूँ,” सुन्दर बासिल ने कहा।

वह उछलकर घोड़े पर सवार हुआ और चल दिया। बहुत समय तक वह घोड़े को बौड़ता रहा, बौड़ता रहा और आखिर इत्याना कोसिन्धाना के घर पहुँचा।

“मेहमान के आने से खुशी हुई ?” उसने पूछा।

“बेशक,” इत्याना ने जवाब दिया। “मैं तुम्हारा हार्दिक स्वागत करती हूँ।”

तब सुन्दर बासिल आराम करने के लिए बैठ गया और उसने इत्याना को बताया कि मुझ पर कौनसी नई मुसीबत आ पड़ी है।

“क्या तुम्हें मालूम है कि मुझे जंगली सूअर का बच्चा कहाँ मिल सकता है?” उसने पूछा। “मेरी माँ फिर से बीमार हो गई है। उसका कहना है कि केवल जंगली सूअर के बच्चे का मांस ही उसकी जान बचा सकता है।”

“नहीं, मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानती। मगर तुम यहां कुछ देर रुककर आराम करो और शाम होने पर मैं अपने माई सूरज से इसकी जानकारी प्राप्त कर लूंगी। उसे तो अवश्य ही यह मालूम होगा, क्योंकि वह आकाश से सभी कुछ देख सकता है और कोई भी चीज उसकी नज़र से छिपी नहीं रहती।”

सुन्दर बासिल इत्याना के घर में रात बिताने के लिए ठहर गया। जब शाम हुई तो इत्याना का माई सूर्य भी अपनी किरणें एक ओर को रख कर आराम करने के लिए आ गया।

इत्याना ने अपने माई से पूछा —

“मैंने किसी को जंगली सूअरों की चर्चा करते सुना है। तुम्हें मालूम है कि वे दुनिया के किस भाग में होते हैं?”

“बहुत दूर, बहुत दूर, उत्तर में होते हैं, मेरी बहन,” सूर्य ने जवाब दिया। “वे फूले हुए चरागाहों के पार, घने जंगलों में होते हैं।”

“भूतने के लिए जंगली सूअर का बच्चा कैसे हासिल किया जा सकता है?”

“यह तो असम्भव है, मेरी बहन। इतने घने हैं वे जंगल कि इन्सान की बात दूर, वहां तो मेरी किरणें भी नहीं पहुंच पातीं। मैं भी उन्हें केवल दोपहर के समय देख पाता हूं जब वे वलवल में लोटने-पोटने के लिए जंगल के छोर पर आते हैं। उनके दांत बहुत तेज होते हैं और उनके नखबीक जाने का मतलब है अपने टुकड़े-टुकड़े करवाना।”

इत्याना कोसिन्धाना ने बासिल को यह सभी कुछ कह सुनाया। अब बासिल को यह मालूम हो गया था कि उसकी मंजिल कहाँ है और उसे कैसे छतरे से बो-बार होना है, वह अपने घोड़े पर सवार हुआ और चल दिया। उसने पहाड़ लांघे और लांघी घाटियां, उसने नदियां फाँबीं और खड्ड पीछे छोड़े, वह छुले मैदानों में से गुजरा और आखिर एक बहुत बड़े और घने जंगल में पहुंचा। इस जंगल में जहन्नुम का सा अंधेरा था। बासिल का बारह पंखोंवाला घोड़ा सबसे ऊँचे वृक्ष से भी ऊपर उठ गया और तब बासिल को वह वलवल नज़र आया जिसकी इत्याना ने चर्चा की थी। लगभग दोपहर का

वक्त था। जंगल से सूअरों की खुर-खुर सुनाई दी। तभी सूअर कीचड़ में लोटने-पोटने के लिए भागकर बाहर आने लगे।

बासिल ने सूअर का एक अच्छा-सा बच्चा चुन लिया, उसे पकड़ा, उसके साथ घोड़े पर सवार हुआ और यह जा और वह जा। मगर सूअरों ने उसे देख लिया था और वे ज़मीन पर अपनी धूँधनियां रगड़ते हुए उसके पीछे दौड़े। मगर बासिल का घोड़ा उनसे कहीं तेज था, वरना उसका काम तमाम हो जाता। छैर, घोड़े की फुर्ती ने उसे मयानक बरिन्बों के तेज दांतों से बचा दिया। अब घोड़ा अठखेलियां करता और मस्ती में झूमता हुआ जाने लगा और खुब बासिल भी खुशी से गीत गुनगुनाने लगा। उसे इस बात की खुशी थी कि उसका यह साहसी कारनामा भी सिरें चढ़ गया था।

वापसी पर वह पहले की भाँति फिर इत्याना कोसिन्धाना के घर ठहरा। बासिल जब खाने-पीने में मस्त था और मजे में ऊँघ रहा था, इत्याना ने जंगली सूअर के बच्चे की जगह साधारण सूअर का बच्चा लाकर रख दिया। बासिल को तो किसी खीज का सान-गुमान भी नहीं हुआ और इत्याना ने उसे बहुत ही मैत्रीपूर्ण ढंग से विदा किया।

क्लोआन्त्सा ने जब बासिल को लौटते देखा तो ऐसे जोर से दांत पीसे कि उसके मुँह से बिंगारियां फूट निकलीं। मगर उसे अपने गुस्से को दबाना और यह बिखाना पड़ा कि वह बहुत सक्त बीमार है। बासिल ने जब उसके कमरे में प्रवेश किया तो वह बोली —

“ओह, मेरे बेटे, मेरे प्यारे बेटे, शुक्र है भगवान का कि तुम लौट आये और मेरी आँखों को तुम्हें फिर से देखना नसीब हुआ! तुम अगर कुछ दिन और न आते, तो मुझे कभी जिन्दा न पाते। इस सूअर के बच्चे को जल्दी से मार कर मुझे उसका मांस खिलाओ।”

बासिल ने सूअर के बच्चे को मारकर उसे कोयलों पर भूना और जब उसका रंग गुलाबी हो गया तो उसे क्लोआन्त्सा को खाने को दिया।

“मेरी तबीयत अब बेहतर हो गई है,” जाबूगरनी ने कहा और ऐसे जाहिर किया कि उसे सबमुच स्वास्थ्यलाभ हुआ है। “मेरी नज़र भी अब पहले की तरह धुंधली नहीं रही।”

मगर सारा मांस खा लेने के बाद वह फिर से कराहने और जोर-जोर से हाय-वाय करने लगी। उसने बड़ी दर्दभरी आवाज़ में कहा —

“ओह, मेरे प्यारे, मेरे बदकिस्मत बेटे, बहुत दूर-दूर की यात्रायें कर तुमने बड़े बुद्ध उठाये हैं। पर अगर तुम वास्तव में ही मुझे स्वस्थ देखना चाहते हो तो तुम्हें एक बार फिर सफ़र पर जाना होगा। मेरी तबीयत फिर से खराब हो गई है। अगर तुम मृत-अमृत जल नहीं लाओगे तो मैं जिन्दा नहीं रह सकूंगी।”

“तो मैं जरूर जाऊंगा, मां,” सुन्दर बासिल ने जवाब दिया और वह फिर से रवाना हो गया।

वह मंजिल दर मंजिल बढ़ता गया। उसका मन बहुत खिन्न और परेशान था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कहां जाये और कैसे मृत-अमृत जल लाये। निराश और उदास वह इल्याना कोसिन्जाना के घर पहुंचा और बहुत दुखी होते हुए उसने अपनी व्यथा सुनाई—

“प्यारी बहन,” उसने इल्याना से कहा, “मजबूरी मुझे फिर से अनजानी राहों की छाक छानने के लिए घर से निकाल साई है। मां की बीमारी किसी तरह भी दूर नहीं हो रही। अब उसने मुझ से मृत-अमृत जल लाने को कहा है। क्या तुम्हें मालूम है कि वह कहां मिल सकता है और मैं उसे कैसे हासिल कर सकता हूं?”

“तुम कुछ देर यहां रुककर आराम करो। हो सकता है कि मैं इस बार भी तुम्हारी मदद कर सकूं,” इल्याना ने जवाब दिया।

उस वक्त मुटपुटा हो चुका था जब वह अपने माई सूर्य के पास गई। वह उसी समय अपने सफ़र से सौटा था। “मेरे प्यारे माई सूरज,” उसने कहा, “तुम्हें तो आकाश से सभी कुछ नजर आता है। क्या तुम नहीं जानते कि मृत-अमृत जल कहां मिल सकता है?”

“बहुत दूर, बहुत ही दूर, मेरी बहन,” सूर्य ने जवाब दिया, “नौ तिया सत्ताईस देशों और नौ तिया सत्ताईस सागरों के पार खेतों की रानी के देश में। मगर जो भी मृत-अमृत लेने गये हैं, उनमें से कभी कोई लौटकर नहीं आया। कारण कि उस देश की सीमा पर एक भयानक अजगर पहरा देता है। वह लोगों को उस देश में दाखिल तो होने देता है, मगर बाहर नहीं निकलने देता। वह अमृत पीता है और जो वीर अमृत को खोजते हुए उस देश में पहुंचते हैं, उन्हें मार डालता है। बहुत अरसे से मैं उनकी हड्डियां सुखा रहा हूं।”

सुन्दर बासिल को अब यह मालूम था कि उसकी मंजिल कहां है और किस मुसीबत से उसका पाला पड़नेवाला है। मगर वह डरा-घबराया नहीं। उसने अपनी पेट्टी में लगी हुई चौड़ी तलवार और भारी डंडे को ठीक किया, इल्याना से विदा ली, उछलकर घोड़े पर सवार हुआ और अपने रास्ते चल दिया। उसका रास्ता बहुत लम्बा था और वह लगातार अपना घोड़ा ढौड़ाता रहा। उसने मैदान और सीमायें पार कीं, नदियां और सागर सांघे। उसने नौ तिया सत्ताईस सागर और नौ तिया सत्ताईस देश पीछे छोड़े और एक ऐसे शानदार राज्य में पहुंचा जैसा कि उसने पहले कभी नहीं देखा था। इस राज्य का प्राकृतिक सौन्दर्य तो बाक़ी सभी राज्यों से कहीं बढ़-बढ़कर था। यहां न तो कोई टहनी

ही सूखी हुई थी और न घास की कोई पत्ती ही। सभी पेड़-पौधे बहुत तेजी से बढ़ते थे, उनपर खूब फूल आते थे और वे फलों से लद जाते थे।

बासिल सुन्दर स्वरूप ने उस देश का चक्कर लगाया। और जो कुछ उसने देखा, उससे उसका बिल बाग-बाग हो गया। घूमते-घूमते वह ऐसी दो चट्टानों के पास पहुंचा जिनमें से दो झरने झरझर करते बह रहे थे।

“यही होगा अमृत,” बासिल ने सोचा। पूरी तरह यकीन करने के लिए उसने एक तितली पकड़ी, उसके टुकड़े-टुकड़े करके उन्हें एक निर्झर के पानी में डुबोया। उसके टुकड़े जुड़ गये और वह पहले की तरह पूरी तितली हो गई। फिर उसने उसे दूसरे निर्झर के जल में डुबोया तो वह जिन्दा हो गई।

बासिल तो खुशी से फूला न समाया। उसने दो मशकें मृत-अमृत जल से भरीं और घोड़े को घर की ओर मोड़ दिया। मगर वह इस राज्य की सीमा तक पहुंचा ही था कि उसके इर्दगिर्द के वृक्ष उसी भांति चटकने और सांघ-सांघ करने लगे जैसा कि आंधी-तूफ़ान के समय होता है। आकाश में अंधेरा छा गया और तभी बासिल ने गुस्से से अपनी दुम इधर-उधर पटकते हुए दस सिरोंवाले एक अजगर को अपने सामने खड़ा पाया।

बासिल ने अपने एक हाथ में डंडा संभाला और दूसरे में तलवार। जब अजगर ने अपनी एक गर्दन उसकी ओर बढ़ाई तो उसने उसके सिर पर भारी डंडे से जोरदार प्रहार किया और तलवार से उसकी गर्दन काट डाली। उसने दूसरा और तीसरा सिर भी ऐसे ही काट डाला। अजगर ने अब यह महसूस किया कि उसके सिर पर मौत मंडरा रही है, इसलिए वह आकाश में ऊंचा उड़ चला। मगर बासिल का घोड़ा और भी अधिक ऊंचा उड़ा और बासिल ने अजगर के दस के दस सिर काटकर उसे जमीन पर गिरा दिया।

बासिल अब बिना किसी बाधा के अपना घोड़ा बढ़ाता गया और आखिर वह इल्याना के घर पहुंचा। जोरदार लड़ाई और लम्बे सफ़र के बाद वह बहुत थक गया था और इसलिए आराम करने के लिए लेट गया। इसी समय इल्याना ने उन दोनों मशकों की जगह साधारण पानी से भरी हुई दो मशकें रख दीं। जाहिर है कि बासिल के विमारा में तो मूलकर भी यह बात नहीं आई कि इल्याना भी, जिसने उसकी इतनी मदद की थी, कोई ऐसी गड़बड़ कर सकती है। उसने अच्छी तरह आराम किया, फिर अपने घोड़े पर सवार हुआ और घर की ओर चल दिया।

जब क्लोआन्त्सा ने उसे वापस आते देखा तो वह जल-मुनकर कोयला हो गई, उसका बिल जहर से भर गया। उसने थोड़ा-सा पानी पीकर यह जाहिर किया कि उसकी

तबीयत बेहतर हो गई है और फिर वह यह सोचने लगी कि बासिल को कैसे दूसरी दुनिया में पहुंचाये।

लम्बे सफ़र से थके-हारे बासिल को उसने थोड़ा आराम करने दिया और फिर उसे अपने पास बुलाकर प्यार से घूमा और बोली -

“मेरे प्यारे बेटे, मेरे बिल के टुकड़े बासिल, तुमने बहुत लम्बे सफ़र किये हैं, बहुत-से रास्तों-राहों की धूल फांकी है। शायद तुम अपनी बहुत-सी ताक़त खर्च कर बैठे हो! आओ, बैठें तो, तुम इस रेशमी रस्सी को तोड़ सकते हो या नहीं?”

इतना कहकर उसने रेशमी रस्सी निकाली और उसके गिर्द बांध दी।

“हां तो, मेरे लाइसे, ” उसने कहा, “अपना पूरा जोर लगाओ ताकि यह पता चल सके कि इतनी बड़ी दुनिया में घूमते और अनजाने रास्तों पर भटकते हुए तुम अपनी सारी ताक़त तो खो नहीं बैठे?”

बासिल ने अपना तन अकड़ाया और रस्सी पर जोर डाला। वह कई जगह से टुकड़े-टुकड़े हो गई।

“अच्छा, अब मैं यह आश्वासन कर देती हूं कि तुम दो रस्सियां तोड़ सकते हो या नहीं?” जुड़ेल ने उसे दो रस्सियों से बांध दिया।

मगर बासिल ने पहले की भांति दो रस्सियां भी तोड़ डालीं।

“ओह, तुम में अभी तक एक वीर की शक्ति बाक़ी है। मगर अब हम यह देखेंगे कि तुम ने कुछ शक्ति खोई भी है या नहीं?” जुड़ेल ने कहा और उसे तीन रेशमी रस्सियों से बांध दिया।

बासिल ने अपनी पेशियों को फुलाया, रस्सियों पर जोर डाला, मगर वह उन्हें तोड़ नहीं पाया। उसने फिर से कोशिश की, फिर से पेशियां फुलाई और रस्सियों पर जोर डाला, मगर वे उसके तन में घुसती और उसे अधिक जोर से कसती चली गईं। उसने तीसरी बार कोशिश की और अपना पूरा जोर लगाया, रेशमी रस्सियां उसके मांस को चीरती हुई हड्डियों तक जा पहुंचीं, मगर टूटीं नहीं।

क्लोआन्त्सा खुशी से एक टांग पर कूदने, लट्टू की तरह घूमने और शोर मचाने लगी -

“अजगर, तुम कहां छिपे हुए हो? आओ निकल कर। जल्दी से आकर बासिल का काम तमाम कर डालो!”

अजगर खुशी से सूं-सां करता हुआ उस जगह से बाहर निकला जहां वह छिपा हुआ था। उसने एक चौड़ी सी तलवार ली और करमकल्ले की तरह बासिल के टुकड़े-

टुकड़े कर डाले। फिर उसने टुकड़ों को इकट्ठा किया, उन्हें दो थैलों में भरा, काठी के साथ लटकाया और घोड़े को चाबुक मारते हुए वह चिल्लाया -

“ए गन्धे घोड़े! जहां से इसे खिन्वा लाया था, वहीं अब इसकी लाश ले जा!”

घोड़ा उड़ चला, बिल्कुल मृत-प्रेत की तरह। उसके सुमों के नीचे धरती बज रही थी। वह इल्याना के घर की ओर चल दिया। कारण कि वहीं तो उसने जन्म लिया था, वहीं पाला-पोसा गया था, बड़ा हुआ था और वहीं उसकी देख-भाल हुई थी। वह फाटक के सामने जाकर रुक गया।

इल्याना बाहर आई। मगर वहां उसे लम्बे सफ़र के बाद आराम करने और पनाह पाने के लिए प्रार्थना करनेवाला कोई घुड़सवार नज़र नहीं आया। इसके बजाय उसने अपने घोड़े को खड़े पाया, पसीने से तर-ब-तर और खून के धब्बों से सना हुआ। इल्याना बहुत दुखी होकर घोड़े की ओर लपकी, उसने बैसे नीचे उतारकर उन्हें खोला और उनमें से उसे बासिल सुन्दर स्वरूप के तन के टुकड़े मिले।

“ओह, बासिल, बेचारे बबक़्रिस्मत बासिल!” वह चिल्लाई। “तो उन्होंने तुम्हें मार डाला!”

इतना कहकर उसने बासिल के तन के टुकड़े जोड़ने शुरू किये और उन्होंने पहले जैसी शक्ल ले ली।

इतना करने के बाद वह अपने भण्डार में गई और वहां से मृत-अमृत जल, जंगली सूअर का बच्चा और पक्षी का दूध निकाल लाई। जहां से मांस के टुकड़े गायब थे, वहां उसने सूअर के मांस के टुकड़े जमा दिये। इसके बाद उसने उसके ऊपर मृत जल छिड़का। अलग-अलग टुकड़े आपस में जुड़ गये। फिर उसने उसे अमृत में स्नान कराया और वीर युवक खिन्वा हो गया। उसने गहरी सांस लेकर कहा -

“ओह, कितनी गहरी नींद सोया रहा हूं मैं!”

“अगर मैं यहां न होती तो तुम तो सब के लिए सोये रहते और कभी पलक न खोलते,” पक्षी के दूध का बर्तन उसके होठों से लगाते हुए वह बोली।

सुन्दर बासिल दूध पीने लगा और हर घूंट के साथ उसमें नई ताक़त आती गई। अब वह सारा दूध पी चुका तो पहले की तुलना में कहीं अधिक ताक़तवर हो गया। अब वह अपने डंडे के एक ही बार से घटान को चूर चूर कर सकता था।

वह ज़मीन से उठा, अपने को झकझोर कर उसने कमजोरी दूर की और यह याद आते ही कि अजगर ने उसके साथ कैसा बर्ताव किया था, झटपट अपना डंडा उठाया और महल की ओर चल दिया।

मूसलधार बारिश के समान बासिल के दिल में बदले की भावना भी बहुत तेज थी। वह चलता गया, चलता गया; अपने पैरों पर उसने ज़रा भी तरस नहीं छाया। आखिर वह महल में जा पहुंचा। चुड़ैल और अजगर मेज़ पर बैठे दावत उड़ा रहे थे और बासिल की मां पास खड़ी हुई चीजें परोस रही थी।

जब उन्होंने बासिल को खाने के कमरे में आते देखा तो उन दोनों कुष्ठ आत्माओं को अपने पैरों तले की ज़मीन छिसकती-सी लगी। मगर बासिल ने उन्हें भयभीत होने का भी अवसर नहीं दिया। उसने एक हाथ से चुड़ैल को और दूसरे से अजगर को पकड़ा और उन्हें घसीटता हुआ आंगन में ले गया। वहां उसने उनके टुकड़े टुकड़े कर डाले। फिर उसने तांबे का चूल्हा जलाया और उन्हें भून डाला ताकि न तो धरती पर, न जल में, न खुले मैदानों और मोतियों से भरे सागर में या नीलाकाश में ही जहां उकाब उड़ानें भरते हैं, कहीं उनका नाम-निशान बाक़ी न रहे।

ऐसा करने के बाद बासिल ने बड़े प्यार से अपनी मां को गले लगाया, उसे चूमा और तसल्ली दी।

बहुत जल्दी उन्हें और भी बड़ी खुशी नसीब हुई। बासिल सुन्दर स्वरूप ने इल्याना को सिन्धुना से अनुरोध किया कि वह उसकी पत्नी बनना स्वीकार कर ले। इल्याना राज़ी हो गई।

मेहमान आये अनगिनत, जाने-पहचाने भी और अनजाने भी। खूब ही बढ़िया दावत उड़ाई उन्होंने। मेहमानों की आवभगत कर रहा था खुद इल्याना का भाई यानी सूरज। वह लगातार जाम खनखनाता हुआ सभी के लिए सुख-सौभाग्य की कामना कर रहा था, सभी के साथ अपनी खुशियां बांट रहा था।

शादी के बाद बासिल और इल्याना प्यार-मुहब्बत और सुख-शान्ति का जीवन बिताने लगे। अगर उनका बेहान्त नहीं हुआ, तो वे आज भी जिन्दा होंगे और जीवन के मजे लूट रहे होंगे।

समझदार ज़रनियार

आज़रबैजानी लोक-कथा



जानते हो मैं तुम्हें किसके बारे में कहानी सुनाऊंगा? एक सौबागर के बारे में, जिसका नाम था ममब। वह मिसार का रहनेवाला था, अनजाने देशों की यात्रा और सभी तरह के मालों का व्यापार किया करता था।

एक बार उसने बहुत ही दूर के किसी देश में जाने का इरादा बनाया। उसने सभी तरह के बहुत-से माल खरीदे, कई नौकर अपने साथ लिये, परिवार से विदा ली और अपना कारवां लेकर चल दिया।

वह एक जगह और फिर दूसरी जगह गया और आखिर एक ऐसे नगर में पहुंचा जिसका उसने पहले नाम तक नहीं सुना था।

ममब ने अपनी लम्बी यात्रा के बाद यहां आराम करने का इरादा किया और वह अपने नौकरों-चाकरों के साथ एक सराय में जाकर ठहर गया।

वह जब खा-पी रहा था तो एक अजनबी उसके पास आया और बोला —

“ए सौबागर, चूंकि तुम इस शहर के तौर-तरीके नहीं जानते, इसलिए जरूर बहुत दूर से यहां आये होंगे।”

“क्या तौर-तरीके हैं इस शहर के?” ममब ने पूछा।

“मैं तुम्हें बताता हूं। यहां आनेवाला हर सौबागर हमारे शाह को कोई बढ़िया

तोहफ़ा पेश करता है। बदले में शाह सौदागर को अपने महल में बुलाकर उसके साथ शतरंज की बाजी खेलता है।”

अब क्या किया जाये? ममद सोच में पड़ गया। चाहे-अनचाहे उसे शाह के पास जाना ही होगा। चुनांचे सब से बढ़िया कपड़े चुनकर और उन्हें सोने के पाल में सजाकर वह महल की ओर चल दिया।

शाह ने तोहफ़े लिये और सौदागर से पूछा कि वह किस नगर से आया है, किन चीजों का व्यापार करता है और कहां-कहां की यात्रा कर चुका है। ममद ने सब कुछ सच सच बताया। शाह ने सुनने के बाद कहा—

“आज रात को मेरे महल में आना, हम शतरंज की बाजी खेलेंगे।”

शाम को ममद महल में गया। शाह बिसात बिछाये हुए उसका इन्तज़ार कर रहा था।

“मेरी शर्तें ये हैं, सौदागर,” शाह ने कहा, “मेरे पास सधी हुई एक बिल्ली है। वह शाम से सुबह तक यानी पूरी रात जलती हुई सात मोमबत्तियों को अपनी पूंछ पर टिकाये रह सकती है। अगर हमारी बाजी के दौरान वह उन्हें ज्यों का त्यों टिकाये रहेगी तो तुम्हारी सारी बौलत मेरी हो जायेगी और मैं अपने आदमियों को हुक्म दूंगा कि वे तुम्हें बन्दी बनाकर काल-कोठरी में डाल दें। अगर बिल्ली अपनी जगह से ज़रा भी हिल गई तो मेरा सारा खजाना तुम्हारा हो जायेगा और तुम मेरे साथ मनमाना बर्ताव कर सकोगे।”

अब बेचारा सौदागर क्या करता? भागना असम्भव था, विरोध करने का सबाल ही नहीं उठता था। शाह की शर्तें मानने के सिवा कोई चारा नहीं था। अब वहां बैठा हुआ अपने को कोस रहा था कि क्यों इस नगर में आ फंसा।

“घन-बौलत की बात तो एक तरफ़, यहां तो आदमी जान से भी हाथ धो सकता है,” उसने सोचा।

शाह ने अपनी सधी हुई बिल्ली को बुलाया जो अपनी पूंछ फैलाकर शाह के सामने बैठ गई।

“चिराग़ लाये जायें!” शाह ने हुक्म दिया।

नौकर फ़ौरन सात मोमबत्तियां ले आये और वे बिल्ली की पूंछ पर रख दी गईं।

शाह ने मोहरे उठाये और खेल शुरू हुआ।

मोहरे चलता हुआ सौदागर बिल्ली पर नज़र डालता रहा। बिल्ली तो बिल्कुल बुत बनी बैठी थी, न हिलती थी, न डुलती थी।

इस तरह एक दिन और एक रात बीती, फिर दो दिन और दो रातें बीतीं और ममद शाह के साथ शतरंज खेलता रहा और बिल्ली पहले की तरह बुत बनी बैठी रही। आखिर ममद बिल्कुल थक गया।

“मैं अब और नहीं खेल सकता!” वह चिल्लाया। “आप जीत गये, जहांपनाह!”

शाह तो इसी चीज का इन्तज़ार कर रहा था। उसने अपने नौकरों को बुलाकर कहा—

“सौदागर का सारा माल और सोना मेरे पास ले आओ। रहा सौदागर, तो उसके हाथ-पैर बांधकर उसे काल-कोठरी में फेंक दो!”

तो शाह के नौकरों ने ममद को पकड़कर उसके साथ वही कुछ किया जैसा कि शाह ने हुक्म दिया था।

काल-कोठरी में पड़ा हुआ ममद अपने को मला बुरा कहता कि क्यों मैंने इस शहर के पास से ही गुज़र जाने की अक्लमन्दी की। वह दबी ज़बान से शाह और उसकी सधी हुई बिल्ली को भी गालियां देता रहा।

मगर हम ममद को यहीं छोड़कर उसकी बीबी ज़रनियार की चर्चा करते हैं।

ज़रनियार घर बैठी अपने पति के लौटने का इन्तज़ार कर रही थी। मगर वह न तो आया और न उसके आने की कोई खबर ही मिली।

“शायद उस पर कोई मुसीबत आ गई है,” उसने सोचा।

बहुत समय तक वह इसी तरह की चिन्ताओं में घुलती रही। आखिर एक दिन ममद का नौकर लौटा। उसका चेहरा धूल-मिट्टी से सना हुआ था और कपड़े तार-तार हुए पड़े थे। वह भागता हुआ आया और बोला—

“मालकिन, मालकिन! बहुत दूर-दराज देश के एक शाह ने मालिक को कैद कर लिया है और सारा माल-मत्ता और सोना छीन लिया है। मैं अकेला बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाकर भाग आया हूं। अब हम क्या करें?”

ज़रनियार ने नौकर से कहा कि जो कुछ बीती है, उसका सारा हाल सुनाये। पूरा हाल सुनने के बाद उसने हुक्म दिया कि ढेर सारे चूहे पकड़कर एक बहुत बड़े बक्से में बन्द कर दिये जायें। तब उसने कुछ सोना-चांदी लिया, मर्बाना कपड़े पहने, फ़र की ऊंची टोपी के नीचे अपने लम्बे बाल छिपाये और कारवां का सरदार बनकर अपने पति को छुड़ाने चल दी।

वह रास्ते में न तो कहीं रुकी और न उसने किसी तरह की बेर होने दी। आखिर वह उस शहर में पहुंच गई जहां उसका पति काल-कोठरी में पड़ा मुसीबत के दिन काट रहा था।

उसने अपने कुछ नौकरों को तो यह हुक्म दिया कि वे सराय में उसका इन्तज़ार करें और कुछ को उसने अपने साथ शाह के महल में चलने को कहा।

तब उसने ठाले हुए सोने का बड़ा-सा थाल लिया, उसमें बहुत-से बहुमूल्य उपहार रखे और महल की तरफ़ चल दी। उसके नौकर चूहों से भरा हुआ सन्तूक उठाये उसके पीछे-पीछे आये।

महल के करीब पहुंचने पर जरनियार ने अपने नौकरों से कहा -

“जब मैं शाह के साथ शतरंज खेलूंगी तो तुम एक-एक करके बैठक में चूहे छोड़ते जाना।”

नौकर सन्तूक के साथ बैठक के दरवाजे पर रुक गये और जरनियार अन्दर गई। उसने शाह से कहा -

“शाहशाह, आपकी उम्र बराबर हो! आपके मुल्क के तौर-तरीकों के मुताबिक़ मैं आपकी ख़िदमत में क़ीमती तोहफ़े लेकर आया हूँ।”

शाह ने उसे मर्ब समझा, उसकी बड़ी इच्छत की और तरह-तरह के बढ़िया पकवान उसके सामने पेश किये। फिर उसने जरनियार को शतरंज की बाज़ी खेलने के लिए कहा।

“शाहशाह, आपकी शर्तें क्या हैं?” जरनियार ने पूछा।

शाह ने जवाब दिया -

“जब तक मेरी सधी हुई बिल्ली अपनी जगह से नहीं हिलती, हम खेलते रहेंगे।”

“और अगर आपकी सधी हुई बिल्ली अपनी जगह से हिल गई, तो?” जरनियार ने पूछा।

“तब मैं अपनी हार मान लूंगा और आप मेरे साथ मनमाना बर्ताव कर सकेंगे।”

“ठीक है,” जरनियार ने कहा। “ऐसा ही सही!”

शाह ने अपनी सधी हुई बिल्ली बुलाई। बिल्ली आई और बड़ी शान से शाह के सामने क़ालीन पर बैठ गई। तब शाह के नौकर सात मोमबत्तियां लिए हुए आये और उन्हें बिल्ली की पूंछ पर टिका दिया।

अब शाह ने जरनियार के साथ शतरंज की बाज़ी शुरू की। शाह खेलता हुआ मुस्कराता रहा और इस बात का इन्तज़ार करता रहा कि जवान सौदागर कब अपनी हार मानता है।

जरनियार के नौकरों ने अब सन्तूक खोला और एक घूहा शाह की बैठक में मेज दिया।

बिल्ली ने जैसे ही चूहे को देखा वैसे ही उसकी आंखों में चमक आ गई और उसने

मानो अपनी जगह से हिलना चाहा। मगर शाह ने उस पर ऐसी कड़ी नज़र डाली कि वह जहां की तहां ही बैठी रह गई मानो पत्थर हो गई हो।

कुछ ही देर में जरनियार के नौकरों ने बैठक में बहुत-से चूहे छोड़ दिये। चूहे फ़र्श पर इधर-उधर दौड़ने और दीवारों के साथ उछलने-कूबने लगे। सधी हुई बिल्ली के लिए अब अपने को क़ाबू में रखना नामुमकिन हो गया। उसने जोर से म्याऊं की और अचानक उछलकर छड़ी हो गई (जिससे सातों मोमबत्तियां फ़र्श पर गिर गयीं) और कमरे में इधर-उधर भागती हुई चूहों का पीछा करने लगी। शाह खीखता-बिल्साता रहा, मगर उसकी सधी हुई बिल्ली ने उसकी कुछ परवाह न की।

अब जरनियार ने अपने नौकरों को आवाज़ दी। वे भागकर बैठक में आये। उन्होंने शाह की मुक़द़े कस लीं और लगे उस पर तड़ातड़ कोड़े बरसाने। आखिर शाह रहम की भीख़ मांगने लगा और बोला -

“मैं अपने सभी क़ैदियों को रिहा कर दूंगा और उनका सारा माल, सारी बौलत वापस कर दूंगा। आप लोग सिर्फ़ मेरी जान बख़्श दें!”

जरनियार के नौकर उसे कोड़े लगाते रहे और शाह गला फाड़-फाड़कर बिल्साता रहा। उसके नौकरों ने शाह की चीख-पुकार सुनी मगर वे उसकी मदद को नहीं आये। वे खुद उसके जुल्म और सासब से तंग आ चुके थे।

अब जरनियार ने अपने पति और अन्य सभी क़ैदियों को आज़ाद करने का हुक्म दिया और शाह को काल-कोठरी में डलवा दिया।

इसके बाद जरनियार और ममब अपने शहर मिसार लौट आये। वे अपने देश में रहते हुए हंसी-खुशी का जीवन बिताते, मौज मनाते और खाते-पीते रहे। आपको भी ऐसा ही करना चाहिए।

आसमान से तीन सेब गिरे हैं। एक मेरे लिए है, दूसरा इस कहानी को सुनाने वाले और तीसरा सुननेवाले के लिए है।

कामचोर शहीदुल्ला

आज़रबैजानी लोक-कथा

बहुत पुराने ज़माने की बात है कि कहीं शहीदुल्ला नाम का एक आदमी रहता था, एकदम आलसी और कामचोर।

उसके बीबी-बच्चे अक्सर फ़ाँके करते और नये कपड़े छरीबने का तो सपना तक न देख पाते।

शहीदुल्ला की बीबी अब कामचोरी के लिए उसे डाँटती-फटकारती तो वह कहता—

“तुम कोई फ़िक्र, कोई ग्रम न करो! बेशक हम आज गरीब हैं, मगर जल्द ही अमीर हो जायेंगे।”

“वह कैसे?” उसकी बीबी हैरान होकर पूछती। “यह हो ही कैसे सकता है जब तुम उंगली तक नहीं हिसाते और इसी तरह निठले बैठे रहकर हर दिन गुज़ार देते हो?”

मगर शहीदुल्ला फिर यही दोहराता—

“थोड़ा सब्र करो! वह दिन जरूर आयेगा जब हम मालामाल हो जायेंगे।”

बीबी-बच्चे इन्तज़ार करते रहे, मगर कोई तब्दीली न हुई और वे गरीब के गरीब ही बने रहे।

“अब इन्तज़ार करना बिल्कुल बेकार है,” बीबी ने कहा। “अगर यही हालत रही तो हम मूर्खों मर जायेंगे!”



चुनाचे शहीदुल्ला ने किसी अक्लमन्द आदमी के पास जाकर यह पूछने का फ़ैसला किया कि मैं गरीबी से कैसे अपना पिंड छुड़ा सकता हूँ। उसने सफ़र की तैयारी की और रवाना हो गया।

शहीदुल्ला तीन दिन और तीन रातों तक चलता रहा। रास्ते में उसे एक भेड़िया मिला, दुबला-पतला, हड्डियाँ निकली हुई।

“कहाँ जा रहे हो, भले मानस?” भेड़िये ने पूछा।

“किसी अक्लमन्द आदमी के पास यह जानने के लिए जा रहा हूँ कि मैं अमीर कैसे बन सकता हूँ,” शहीदुल्ला ने जवाब दिया।

भेड़िये ने उसकी पूरी बात सुनने के बाद कहा—

“तुम जा तो रहे ही हो, मेहरबानी कर उस अक्लमन्द आदमी से यह भी पूछ लेना कि मैं क्या करूँ। बात यह है कि पिछले तीन साल से मेरे पेट में सत्त बर्द रहता है। मैं दिन-रात इसी से परेशान रहता हूँ। शायद वह यह बता सके कि कैसे मैं इससे निजात पा सकता हूँ।”

“अच्छी बात है,” शहीदुल्ला ने कहा, “मैं पूछ लूँगा।”

वह आगे चल दिया।

वह तीन दिन और तीन रातों तक चलता रहा। आखिर उसे सड़क के किनारे सेब का एक पेड़ नज़र आया।

“कहाँ जा रहे हो, भले मानस?” सेब के पेड़ ने पूछा।

“किसी अक्लमन्द आदमी के पास यह जानने के लिए कि कामकाज किये बिना मर्दे की ज़िन्दगी कैसे गुज़ारी जा सकती है।”

“मेहरबानी कर उससे यह भी पूछ लेना कि मैं क्या करूँ,” सेब के पेड़ ने कहा। “हर वसन्त में मुझ पर फल आते हैं, मगर वे झोरन ही मुरझाकर गिर जाते हैं और मुझ पर फल कभी नहीं लगते। उस अक्लमन्द आदमी से पूछना कि ऐसा क्यों होता है।”

“अच्छी बात है, मैं पूछ लूँगा,” शहीदुल्ला ने जवाब दिया और वह आगे बढ़ चला। वह फिर तीन दिन और तीन रातों तक चलता रहा। आखिर एक गहरी झील के तट पर पहुँचा।

अचानक एक बड़ी-सी मछली पानी में से सिर बाहर निकालकर बोली—

“भले मानस, कहाँ जा रहे हो?”

“किसी अक्लमन्द आदमी के पास, उसकी सलाह और मदद लेने।”

“मेहरबानी कर मेरी ओर से भी कुछ पूछ लेना। पिछले सात साल से मेरे गले में ससत दर्द रहता है। उससे कहना कि इसका इलाज बता दे।”

“अच्छी बात है, पूछ लूंगा,” शहीबुल्ला ने कहा और आगे चल दिया।

वह तीन दिन और तीन रातों तक चलता रहा। आखिर गुलाब की झाड़ियों के एक झुरमुट के करीब पहुंचा। वहां उसे एक झाड़ी के नीचे लम्बी सफेद बाड़ी वाला एक बुजुर्ग बैठा दिखाई दिया।

शहीबुल्ला को देखते ही उसने पूछा—

“तुम क्या चाहते हो, शहीबुल्ला?”

शहीबुल्ला तो हक्का-बक्का रह गया।

“आप मेरा नाम कैसे जानते हैं?” उसने पूछा। “शायद आप ही वह अक्लमन्द आदमी हैं मैं जिसकी तलाश में हूँ?”

“हां, मैं ही हूँ वह आदमी,” बूढ़े ने जवाब दिया। “जल्दी से बताओ कि तुम मुझ से क्या चाहते हो?”

शहीबुल्ला ने उसे बताया कि वह क्यों आया है और क्या चाहता है।

“इसके अलावा तुम मुझसे और कुछ नहीं पूछना चाहते?” अक्लमन्द आदमी ने पूछा।

“हां, पूछना तो है,” शहीबुल्ला ने जवाब दिया और उसने भेड़िये, सेब के पेड़ और मछली की तकलीफों का जिक्र किया।

तब अक्लमन्द आदमी ने कहा—

“मछली के गले में एक बहुत बड़ा हीरा फंसा गया है। हीरा निकाल लेने पर मछली का दर्द दूर हो जायेगा। सेब के पेड़ के नीचे चांदी से भरा एक बर्तन बसा हुआ है। इस बर्तन को जैसे ही वहां से निकाल लिया जायेगा, वैसे ही उस पेड़ के पत्ते मुरझाना बन्द कर देंगे और उसपर फल लगना शुरू हो जायेगा। जहां तक भेड़िये का सम्बन्ध है, तो उसे उस कामचोर को हड़प जाना चाहिए जो सबसे पहले उसके सामने आ जाये। उसके पेट का दर्द तभी दूर होगा।”

“और मेरी प्रार्थना?” शहीबुल्ला ने पूछा।

“तो तो स्वीकार की जा चुकी है। अब जाओ!” बुजुर्ग ने जवाब दिया।

शहीबुल्ला की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उसने अक्लमन्द आदमी से और कुछ भी नहीं पूछा और घर की ओर चल दिया।

चलाचल, चलाचल वह उस झील के तट पर पहुंचा जहां वह मछली बेसत्री से उसका इन्तजार कर रही थी।

“तो अक्लमन्द आदमी ने मेरे लिए क्या सलाह दी है?” उसने पूछा।

“तुम्हारे गले में एक बड़ा-सा हीरा फंसा हुआ है। उसके निकलते ही तुम्हारा दर्द दूर हो जायेगा,” शहीबुल्ला इतना कहकर चलने को तैयार हुआ।

“मले मानस, मुझपर तरस जाओ,” मछली धिलसाई। “उस हीरे को मेरे गले से निकाल लो! इससे मेरा दर्द दूर हो जायेगा और तुम्हें हीरा मिल जायेगा!”

“ओह, मुझे क्या लेना है इस पचड़े में पड़कर!” शहीबुल्ला ने कहा। “मैं तो जंगली हिलाये बिना ही मासामाल हो जाऊंगा!” इतना कहकर वह अपनी राह चल दिया।

चलाचल, चलाचल वह सेब के पेड़ के पास पहुंचा। उसे देखते ही पेड़ की सभी शाखाएं झूलने लगीं, उसके पत्ते सरसराने लगे।

“कहो तो, अक्लमन्द आदमी ने मेरी तकलीफ का क्या इलाज बताया है?” उसने पूछा।

“उसने कहा है कि तुम्हारी जड़ों के नीचे चांदी से भरा हुआ एक बड़ा-सा बर्तन बसा पड़ा है। उसे बाहर निकालना जरूरी है। तब तुम्हारे फूल नहीं मुरझायेंगे और तुम पर सेब लगने शुरू हो जायेंगे।”

इतना कहकर शहीबुल्ला ने आगे जाना चाहा।

तब सेब के पेड़ ने भिड़गिड़ाकर कहा—

“शहीबुल्ला, मेहरबानी कर मेरी जड़ों के नीचे से चांदी से भरी हुई हांडी निकाल लो। इस तरह तुम्हारा भी मसा हो जायेगा, तुम्हें चांदी मिल जायेगी!”

“ओह नहीं, मैं यह मुसीबत उठाने को तैयार नहीं हूँ। अक्लमन्द ने कहा है कि मैं तो हर सूरत में अमीर हो जाऊंगा।” शहीबुल्ला इतना कहकर आगे चल दिया।

वह चलता गया, चलता गया और आखिर हड़ीले भेड़िये से उसकी मुलाकात हुई। वह तो शहीबुल्ला को देखते ही बेसत्री से कांपने लगा।

“हां, तो अक्लमन्द आदमी ने मेरे लिए क्या सलाह दी है? मुझे झटपट बता दो, इन्तजार न कराओ!...”

“जो कामचोर सब से पहले सामने आ जाये, उसे ही हड़प जाओ। तुम्हारे पेट का दर्द फौरन शायब हो जायेगा,” शहीबुल्ला ने कहा।

मेड़िये ने शहीबुल्ला को घन्यवाद दिया और फिर यह पूछा कि रास्ते में उसने क्या कुछ देखा, क्या कुछ सुना। शहीबुल्ला ने मछली और सेब के पेड़ के साथ हुई अपनी मुलाकातों का विवरण किया और यह बताया कि उन्होंने उससे क्या प्रार्थना की थी।

“मगर मैंने उनकी बातों पर कान नहीं दिया। कारण कि मैं तो हर सूरत अमीर हो जाऊंगा,” उसने कहा।

मेड़िये ने यह सब सुना और बहुत खुश हुआ।

“अब मुझे कामचोर की तलाश करने की जरूरत नहीं,” उसने कहा। “वह तो खुद ही मेरे पास आ गया है। दुनिया में शहीबुल्ला से बढ़कर बेवकूफ और कामचोर ढूंढ़े नहीं मिलेगा।”

वह शहीबुल्ला पर झपटा और उसे पूरे का पूरा ही हड़प गया।

यों किस्सा तमाम हुआ कामचोर शहीबुल्ला का।

आकाश से तीन सेब गिरे हैं। एक है कहानी सुनानेवाले के लिए, दूसरा सुननेवाले के लिए और तीसरा बाक़ी सभी के लिए।

अनाइत

आर्मीनियाई लोक-कथा



१

वसन्त की एक सुहानी सुबह को राजा बाचे का इकलौता बेटा बाचाघान अपने छज्जे में खड़ा था। बगीचे में सभी तरह के पक्षी चहचहा और गा रहे थे, मगर बुलबुल तो बुलबुल ठहरी, कोई भी उसकी बराबरी नहीं कर पा रहा था। जैसे ही उसने अपनी तान छोड़ी, बाक़ी सभी परिन्हे खामोश हो गये। वे ध्यान से उसे सुनने लगे ताकि उसके गाने का राज्ञ जान सकें। कोई पक्षी उसकी चहक की नक़ल करता, कोई उसके तराने की और कोई उसके तीखेपन की। फिर वे तीनों सीखी हुई तानों को मिलकर बोहराते। मगर बाचाघान इनकी ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा था, क्योंकि उसका बिल बहुत परेशान था।

उसकी मां, राजा की बेगम अशख़ेन उसके पास आई और बोली—

“प्यारे बेटे, मुझे साफ़ दिखाई दे रहा है कि तुम दुख-सागर में गहरे गोते लगा रहे हो। तुम अपने दुख को हम से न छिपाओ और अपनी उदासी की वजह बताओ।”

“जिन्दगी की रंगीनियों में मुझे दिलचस्पी नहीं है, मां,” वाचाघान ने जवाब दिया। “मैं तो अकेला ही किसी एकान्त जगह में जाना चाहता हूं जैसे, मिसाल के लिए, आत्सिक गांव।”

“सच? मगर क्या तुम इसलिए तो वहां नहीं जाना चाहते कि तुम्हारी समझदार अनाइत वहां रहती है?”

“आपको उसका नाम कैसे मालूम हुआ?”

“हमारे बगीचे में रहनेवाली बुलबुलों ने मुझे उसके बारे में बताया है। मेरे बेटे, मेरे प्यारे वाचाघान, तुम्हें यह याद रखना चाहिए कि तुम एक अफ़ग़ान राजा के बेटे हो। राजा के बेटे की बुलहन भी किसी राजा की ही बेटी या कोई राजकुमारी होनी चाहिए, साधारण किसान की बेटी नहीं। जार्जिया के राजा की तीन बेटियां हैं, तुम उनमें से कोई एक चुन सकते हो। गूगर के राजकुमार की एक बहुत प्यारी बेटी है। वह अपने पिता की सारी उपजाऊ ज़मीन की भी वारिस होगी। सुनिक के राजकुमार की बेटी भी कुछ कम सुन्दर नहीं है। फिर हमारे सेनापति की बेटी वारसेनिक भी है जिसका पालन-पोषण राजा और मैंने किया है। क्या वह तुम्हारे प्यार के लायक नहीं है?”

“मां, मगर मुझे तो सिर्फ़ अनाइत ही चाहिए!”

इतना कहकर वाचाघान बगीचे में भाग गया।

२

वाचाघान अपने जीवन की बीस बहारें देख चुका था। वह जर्द चेहरेवाला नौजवान था, कमज़ोर-सा।

“वाचाघान, मेरे बेटे,” उसके पिता उससे कहते, “मेरी तो सारी उम्मीदें तुम्हीं पर हैं। तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए, क्योंकि ऐसा ही जिन्दगी का तौर-तरीका है।”

मगर वाचाघान राजा की बात पर कान न देता। वह भोर होते ही शिकार के लिए पहाड़ों में चला जाता और काफ़ी रात गये ही घर लौटता। बहुत-से राजकुमारों ने उसके साथ दोस्ती करनी चाही, मगर वह उनसे कन्नी काट जाता और शिकार पर जाते हुए सिर्फ़ अपने बहादुर और जांचे-परखे नौकर वाघीनाक और अपने वफ़ादार शिकारी कुत्ते ज़ांगी को ही साथ ले जाता। शिकार के वक़्त रास्ते में मिलनेवाला कोई भी आदमी यह नहीं बता सकता था कि उनमें से राजकुमार कौनसा है और नौकर कौनसा। कारण



कि वे दोनों ही शिकारी की साधारण पोशाक पहने होते , उनके एक कंधे पर तीर-कमान लटकता होता और पेटी के साथ चौड़ा खंजर ।

जंगलों-पहाड़ों में इस तरह घूमना वाचाघान के लिए अच्छा रहा । वह अधिक ताकतवर , दृष्ट-पुष्ट हो गया और उसमें मर्दों का सा बांकपन आ गया ।

एक दिन वाचाघान और वाघीनाक आत्सिक गांव में घूम रहे थे । वे एक झरने के करीब आराम करने के लिए बैठ गये । उसी समय गांव की कुछ लड़कियां पानी भरने के लिए वहां आईं । वाचाघान को प्यास लगी थी और इसलिए उसने लड़कियों से पानी मांगा । उनमें से एक ने अपना बर्तन भर कर उसकी ओर बढ़ाया , मगर तभी एक दूसरी लड़की ने उसके हाथ से बर्तन छीनकर पानी गिरा दिया । उसने फिर से बर्तन में पानी मरा और फिर उसे गिरा दिया । वाचाघान का गला सूखा जा रहा था , उसे सख्त प्यास लगी थी , मगर वह लड़की तो जैसे उसे तंग करने पर तुली हुई थी । वह बर्तन में पानी भरती और फिर उसे उड़ेल देती । केवल छठी बार उसे भरने पर ही उसने वह बर्तन वाचाघान की ओर बढ़ाया ।

वाचाघान एक ही सांस में सारा पानी पी गया ।

“तुमने पहली बार ही मुझे पानी क्यों नहीं दिया ?” उसने लड़की से पूछा । “तुम मुझे तंग करना या खिझाना चाहती थीं ?”

“हमारे यहां अजनबियों को तंग नहीं किया जाता ,” लड़की ने जवाब दिया । “मगर आप थके हुए थे और आपको पसीना आया हुआ था । ठंडे पानी से आपको नुकसान हो सकता था । इसीलिए मैंने पानी देने से पहले कुछ समय बीत जाने दिया ।”

लड़की के जवाब ने वाचाघान को आश्चर्यचकित और उसके रूप ने उस पर जादू कर दिया ।

“तुम्हारा नाम क्या है ?” वाचाघान ने उससे पूछा ।

“अनाइत ,” लड़की ने जवाब दिया ।

“तुम्हारा पिता कौन है ?”

“मेरा पिता गांव का चरवाहा है । उसका नाम अरान है । मगर आप यह क्यों पूछ रहे हैं ?”

“क्या यह कोई गुनाह है ?”

“अगर गुनाह नहीं , तो आप भी मुझे यह बतायें कि आप कौन हैं और कहां से आये हैं ।”

“सच बोलूं या झूठ ?”

“जैसा उचित समझे ।”

“हां, केवल सब ही, और सब यह है कि मैं तुम्हें यह नहीं बता सकता कि मैं कौन हूं। मगर मैं वादा करता हूं कि जल्द ही तुम्हें यह बता दूंगा।”

“अच्छी बात है। लाइये, मेरा बर्तन लौटा दीजिये।”

राजकुमार को नमस्ते कह और अपना बर्तन लेकर अनाइत चली गई।

शिकारी घर लौट आये। बाघीनाक ने, जो विश्वसनीय नौकर था, सारी घटना महारानी को कह सुनाई। इस तरह बाघाधान की भां को इस राज का पता चला।

३

बाघाधान अनाइत के सिवा किसी से भी शादी करने को राजी न हुआ। आखिर राजा और रानी मान गये और उन्होंने बाघीनाक तथा अपने दो बरबारियों को शादी तय करने के लिए भेजा।

चरवाहे अरान ने उनका हार्दिक स्वागत किया और उनके बैठने के लिए एक कालीन बिछा दिया।

“कितना सुन्दर कालीन है,” बाघीनाक ने कहा। “घर की मालकिन ने इसे बुना होगा?”

“मेरी बीवी को मरे बस बरस हो चुके हैं,” अरान ने कहा। “मेरी बेटी अनाइत ने ही इसे बुना है।”

“ऐसा खूबसूरत कालीन तो राजा के महल में भी नहीं है। हमें इस बात की बहुत खुशी है कि आपकी बेटी इतनी बढ़िया बुनकर है,” बरबारियों ने कहा। “उसकी ख्याति तो राजा तक पहुंच गई है। हम राजा की ओर से विवाह का प्रस्ताव लेकर आये हैं। उनकी इच्छा है कि आप उनके इकलौते बेटे और राज सिंहासन के उत्तराधिकारी के साथ अपनी बेटी की शादी कर दें।”

बरबारियों को तो यह आशा थी कि अरान अविश्वास से अपना सिर हिलायेगा या फिर खुशी के मारे उछल पड़ेगा। मगर उसने ऐसा कुछ नहीं किया। उसने अपना सिर झुका लिया और उसकी तर्जनी कालीन के बेल-बूटों पर घूमने लगी।

तब बाघीनाक ने पूछा—

“मेरे भाई अरान, तुम उदास क्यों हो गये? हम तुम्हारे पास कोई बुरी खबर तो नहीं, शुभ समाचार ही लेकर आये हैं। हम सबबस्ती तो तुम्हारी बेटी तुम से नहीं लेना चाहते। उसकी शादी तुम्हारी इच्छा पर ही निर्भर करती है।”

“मेरे प्यारे मेहमानो,” अरान ने जवाब दिया, “मैं अपनी बेटी को मजबूर नहीं करूंगा। अगर वह राजकुमार से शादी करने को राजी होगी तो मैं कोई आपत्ति नहीं करूंगा।”

इसी समय अनाइत मेहमानों के लिए रसीले फल लेकर आई। उसने मेहमानों को नमस्कार किया, थाली में फल रखकर उनके सामने पेश किये और फिर कालीन बुनने बैठ गई। बरबारी उसकी उंगलियों की फुर्ती देखकर आश्चर्यचकित होने लगे।

“अनाइत, तुम अकेली ही क्यों काम कर रही हो?” बाघीनाक ने पूछा। “मैंने सुना है कि तुम्हारी तो बहुत-सी चेसियां हैं।”

“हां, सो तो हैं,” अनाइत ने जवाब दिया। “मगर मैंने उन्हें अंगूर बटोरने के लिए भेज दिया है।”

“मैंने सुना है कि तुम अपनी शिष्याओं को लिखना-पढ़ना भी सिखाती हो।”

“हां, सिखाती हूं,” अनाइत ने जवाब दिया। “अब तो हमारे चरवाहे भी रेबड़ चराते हुए एक दूसरे को लिखना-पढ़ना सिखाते हैं। हमारे जंगलों में सभी वृक्षों के तनों पर कुछ न कुछ लिखा हुआ है। गढ़ की दीवारों, चट्टानों और शिखरों पर कोयले से अक्षर लिखे हैं। एक आवमी पहले एक अक्षर लिखता है, उसके बाद दूसरा और इसी तरह यह क्रम चलता जाता है। हमारे सभी पहाड़ों और खड्डों में अक्षर ही अक्षर नजर आते हैं।”

“हमारे यहां शिक्षा को इतना अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता,” बाघीनाक ने कहा। “शहरी लोग सुस्त हैं। पर यदि तुम हमारे पास आकर रहने लगोगी, तो सभी को पढ़ा-लिखा कर समझदार बना दोगी। जरा कालीन बुनना बन्द करो, अनाइत, मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहता हूं। देखो तो, राजा ने तुम्हारे लिए क्या उपहार भेजे हैं!”

इतना कहकर बाघीनाक ने बहुत-से क्रीमती हीरे और रेशमी कपड़े निकालकर सामने रख दिये।

अनाइत ने इन चीजों पर एक सरसरी नजर डाली।

“राजा मुझ पर इतने मेहरबान क्यों हैं?” उसने पूछा।

“बात यह है कि किसी झरने के पास राजा के बेटे बाघाधान से तुम्हारी मुलाकात हुई थी और तुम ने उसे पानी पिलाया था। तुम उसे बहुत अच्छी लगीं। अब हम राजा के आदेशानुसार तुम से यह प्रार्थना करने आये हैं कि तुम बाघाधान से शादी कर लो। यह अंगूठी, यह गलहार, ये कंगन और बाक्री सभी चीजें तुम्हारे लिए ही हैं।”

“तो जिस शिकारी से मेरी मुलाकात हुई थी, वह राजा का बेटा था?”

“हां।”

“वह अच्छा नौजवान है। मगर क्या उसे कोई हुनर भी आता है?”

“वह तो राजा का बेटा है, अनाइत। राजा की सारी प्रजा उसकी नौकर है। उसे हुनर सीखकर क्या लेना है?”

“यह सब सही है, मगर किस्मत के रंग बड़े निराले होते हैं। जो आज मालिक है, कल नौकर भी हो सकता है। हर आदमी को, चाहे वह राजा, राजकुमार या साधारण आदमी हो, कोई न कोई हुनर अवश्य आना चाहिए।”

दरबारियों को अनाइत के शब्द सुनकर हैरानी हुई, मगर चरवाहा अरान अपनी बेटी से बहुत खुश हुआ।

“तो आप राजकुमार से केवल इसीलिए शादी करने से इन्कार करती हैं कि उसे कोई हुनर नहीं आता?” दरबारियों ने पूछा।

“हां। ये सभी उपहार वापस ले जाइये। राजकुमार से कहिये कि वह मुझे पसन्द है, मगर मैं क्षमा चाहती हूं कि उससे शादी नहीं कर सकती। मैंने कसम खाई है कि उस आदमी से शादी नहीं करूंगी जो कोई हुनर नहीं जानता।”

राजा के वृत्तों ने देखा कि अनाइत अपने फ़ैसले पर अटल है और इसलिए उन्होंने बहुत जोर नहीं दिया।

अनाइत का फ़ैसला सुनकर राजा और रानी को बहुत खुशी हुई। अब वाचाघान उससे शादी करने की बात विमर्श से निकाल देगा। मगर वाचाघान ने कहा—

“अनाइत ठीक कहती है। अन्य सभी लोगों की भांति मुझे भी जरूर कोई हुनर सीखना चाहिए।”

राजा ने अपने दरबारियों की एक सभा बुलाई जिसमें विचार किया गया कि राजकुमार कौनसा हुनर सीखे। सभी ने एकमत से यह कहा कि राजकुमार के लिए कमलाब बनाने का हुनर सीखना ही सबसे अधिक उपयुक्त होगा।

चुनांचे ईरान से एक बढ़िया कारीगर फ़ौरन लाया गया। राजकुमार ने एक वर्ष में यह हुनर सीख लिया। बढ़िया सुनहरे तारों का उपयोग कर उसने बहुत कीमती कमलाब तैयार किया और वाघीनाक को यह कमलाब देकर अनाइत के पास भेजा।

कमलाब पाकर अनाइत ने कहा—

“कहावत है कि जिसके हाथ में हुनर, उसे गरीबी का क्या डर! राजकुमार से कहना कि मैं उससे शादी करने को तैयार हूं। यह क़ालीन उसे मेरी ओर से उपहार स्वरूप दे दीजिये।”

फ़ौरन शादी की तैयारियां शुरू हो गईं। सात दिन और सात रातों तक जशन मनाया जाता रहा, खूब धूमधाम रही।

४

मगर शादी के फ़ौरन बाद वाचाघान का बफ़ादार दोस्त और नौकर वाघीनाक कहीं गायब हो गया। बहुत अरसे तक उसकी खोज की गई और आखिर उन्हें उसके मिलने की बिल्कुल उम्मीद न रही। इसी बीच राजा और उसकी रानी बूढ़े हो गये और परलोक सिंघार गये। वाचाघान राजा बना।

एक दिन अनाइत ने अपने पति से कहा—

“मैं देखती हूं कि आपको अपने राज्य की बहुत कम जानकारी है। लोग आपको सचाई नहीं बताते। वे तो आपको यही विश्वास दिलाते हैं कि सब कुछ ठीक-ठाक है। मगर हो सकता है कि वास्तव में बिल्कुल ऐसा न हो। बहुत अच्छा हो कि अगर आप कभी तो मिचारी, कभी व्यापारी और कभी सौदागर के मेस में अपने देश का चक्कर लगाया करें।”

“तुम्हारी बात बिल्कुल सही है, अनाइत,” वाचाघान ने जवाब दिया। “जब मैं शिकार के चक्कर में जंगलों और देहातों में फिरा करता था, तब लोगों के जीवन को कहीं अच्छी तरह जानता था। मगर अब मला मैं यह कैसे कर सकता हूं? मेरी गैरहाजिरी में राज का काम-काज कौन संभालेगा?”

“मैं संभालूंगी,” अनाइत ने कहा और साथ में यह भी जोड़ा, “किसी को भी इस बात की कानों कान खबर नहीं होनी चाहिये कि आप यहां नहीं हैं।”

“ठीक है। तो मैं कल ही अपने सफ़र पर चल दूंगा। अगर मैं बीस दिन तक वापस न आऊं तो समझ लेना कि या तो मैं जिन्दा नहीं हूं या फिर किसी मुसीबत में फंस गया हूं।”

५

इस तरह राजा वाचाघान एक साधारण किसान का मेस बनाकर अपने राज्य में घूमने लगा। उसने बहुत कुछ देखा, बहुत कुछ सुना और आखिर घूमता-घामता कुछ समय बाद पेरोज शहर में पहुंचा।

इस शहर के बीचोंबीच एक बड़ा-सा चौक और बाजार था जिसके चारों ओर शिल्पियों और सौदागरों की दुकानें थीं।

एक दिन वाचाघान चौक में बैठा था। तभी उसने एक बहुत ही बूढ़े व्यक्ति के पीछे-पीछे लोगों की भारी भीड़ आती देखी। बूढ़ा बहुत ही धीरे-धीरे चल रहा था।

उसके सामने का रास्ता साफ़ किया जा रहा था और उसके कदम रखने के लिए ईंटें रख दी जाती थीं।

वाचाधान ने एक राहगीर से पूछा कि यह बूढ़ा कौन है।

“यह कैसे हो सकता है कि तुम इन्हें नहीं जानते!” राहगीर ने हैरानी जाहिर की। “वह तो सबसे बड़े महंत हैं और ऐसे धर्मात्मा हैं कि इस डर से जमीन पर पैर तक नहीं रखते कि कहीं कोई कीड़ा-मकोड़ा इनके पैर तले आकर कुचला न जाये।”

तभी चौक में एक कालीन बिछाया गया और बड़ा महंत आराम करने के लिए उसपर बैठ गया। वाचाधान मीढ़ को चीरकर आगे निकल गया ताकि बूढ़े के करीब हो सके और उसके शब्दों को सुन पाये। बड़े महंत की नजर बड़ी पैनी थी। वाचाधान को देखते ही वह ताड़ गया कि यह कोई अजनबी है।

“तुम कौन हो और क्या काम करते हो?” बड़े महंत ने पूछा।

“मैं बहुत दूर का रहनेवाला एक मजदूर हूँ,” वाचाधान ने जवाब दिया। “मैं काम की तलाश में यहां आया हूँ।”

“तो चलो मेरे साथ। मैं तुम्हें काम दूंगा और अच्छी मजदूरी भी।”

वाचाधान ने सिर हिलाकर सहमति प्रकट की। बड़े महंत ने अपने सहायकों, अपने जैसे महंतों के साथ कुछ कानाफूसी की। वे सभी फ़ौरन असम-अलग दिशाओं में चले गये।

वे कुछ देर बाद सभी तरह की रसब उठाये हुए पल्लेदारों के साथ लौटे। इसके बाद बड़ा महंत कालीन से उठा और चौक से चल दिया। वाचाधान चुपचाप उसके पीछे-पीछे हो लिया। चलते-चलते वे नगर के फाटकों पर पहुंचे।

यहां बड़े महंत ने लोगों को आशीर्वाद दिया और वे अपने-अपने रास्ते चले गये। केवल महंत, पल्लेदार और वाचाधान ही बाक़ी रह गये।

शहर जब काफ़ी पीछे रह गया तो वे एक ऊंची दीवार के पास पहुंचे जिसमें एक फाटक था। बड़े महंत ने एक बड़ी-सी चाबी लगाकर फाटक खोला।

अन्दर एक बड़ा-सा मैदान था जिसके मध्य में एक मठ था और उसके इर्बगिर्ब कोठरियां थीं। पल्लेदारों ने बंडल नीचे रख दिये। बड़ा महंत पल्लेदारों और वाचाधान को मठ के दूसरी ओर ले गया और लोहे का दरवाजा खोलकर बोला -

“भीतर चले जाओ, वहां तुम्हें काम मिल जायेगा।”

वे हतप्रभ से चुपचाप अन्दर चले गये। उन्होंने अपने को एकदम अंधेरे भूमिगत तहखाने में पाया, बड़े महंत ने पीछे से दरवाजे में ताला लगा दिया। यह जान कर कि बाहर जाने का रास्ता बन्द कर दिया गया है, वे आगे को चलते गये।

वे बहुत देर तक चलते रहे कि आखिर यकायक दूरी पर मद्धिम-सी रोशनी दिखाई दी। वे उसी तरफ़ बढ़े और कुछ ही देर बाद पत्थर की एक गुफा के पास जा पहुंचे जिसमें से आहें-कराहें और चीख-पुकार सुनाई दे रही थी। इन आवाजों की ओर कान लगाये और हैरान होते हुए उन्होंने अपने इर्बगिर्ब नजर डाली। इसी समय इस गलियारे के अन्धेरे में एक छाया की सी झलक मिली। यह छाया जैसे-जैसे पास आती गई, वैसे वैसे एक ठोस शक्ल धारण करती गई। वाचाधान उसकी ओर बढ़ा -

“तुम कौन हो, इन्सान या शैतान?” उसने ऊंची आवाज़ में पूछा। “अगर इन्सान हो, तो यह बताओ कि हम कहां हैं।”

छाया नखबीक आकर रुक गई, वह कांप रही थी। यह इन्सान ही था, मगर इतनी बुरी हालत में कि कल्पना से बाहर। वह तो चलती-फिरती लाश था, धंसी हुई आंखें, गालों की उमरी हुई हड्डियां और सारे जिस्म की हड्डी-हड्डी निकली हुई। उसने सिसकते हुए कहा -

“चलो मेरे साथ। मैं तुम्हें सभी कुछ दिखा देता हूँ।”

उसके पीछे-पीछे चलते हुए उन्होंने एक तंग-सा बालान लांघा और दूसरी गुफा में पहुंचे। वहां बहुत-से नंग-धड़ंग लोग भयानक यातनाओं से पीड़ित दिखाई दिये। तीसरी गुफा में बहुत बड़े-बड़े कड़ाहे रखे थे जिनमें खाना पकता लगता था। वाचाधान ने एक कड़ाहे पर झुककर देखा और भयभीत होकर फ़ौरन पीछे हट गया। उसने अपने साथियों से कुछ भी नहीं कहा। इसके बाद वे एक अन्य गलियारे में पहुंचे। यहां बहुत ही मद्धिम-सी रोशनी में सैकड़ों लोग काम कर रहे थे, पीले जर्द चेहरोंवाले। कुछ कड़ाई कर रहे थे, कुछ बुनाई और कुछ सिलाई।

लाश से मिलते-जुलते इस व्यक्ति ने कहा -

“जो दुष्ट महंत चकमा देकर तुम्हें यहां लाया है, हमें भी वही इसी तरह से यहां लाया था। मालूम नहीं कि यहां रहते हुए मुझे कितने बरस हो गये। कारण कि यहां न तो दिन होता है, न रात, हमेशा और हर समय ऐसा ही झुटपुटा-सा रहता है। मैं तो सिर्फ़ इतना जानता हूँ कि मेरे साथ आनेवाले सभी भगवान के घर जा चुके हैं। महंत लोग कारीगरों को भी यहां ले आते हैं और कोई विशेष धन्धा न जाननेवाले साधारण लोगों को भी। कारीगरों से तो काम करवा-करवाकर वे उनकी जान निकाल लेते हैं और बाक़ियों को काटकर उन भयानक कड़ाहों में, जो तुमने देखे हैं, उबलने के लिए

डाल देते हैं। वह शैतान का बच्चा बूढ़ा बड़ा महंत अकेला ही नहीं है, सभी महंत उसकी मदद करते हैं।”

वाचाघान ने इस व्यक्ति को अब बहुत घोर से देखा। उसने पहचान लिया कि वह उसका बकादार नौकर बाघीनाक ही है। मगर उसने बाघीनाक से कुछ नहीं कहा। उसे डर था कि उनके पुनर्मिलन की खुशी से कहीं वह पतला-सा घागा टूट न जाये जो बाघीनाक को ज़िन्दगी के साथ बांधे हुए था।

७

बाघीनाक के जाने के बाद वाचाघान ने अपने साथ आये लोगों से पूछा कि वे कौन हैं और क्या काम कर सकते हैं। एक ने बताया कि वह दर्जी है और दूसरे ने कहा कि वह जुलाहा है। बाक़ी कोई हुनर नहीं जानते थे, मगर वाचाघान ने उन्हें अपने सहायक बनाने का फैसला कर लिया।

कुछ ही देर बाद उन्हें पैरों की आहट सुनाई दी। एक महंत सशस्त्र लोगों की भीड़ के साथ उनके सामने आया। महंत के चेहरे पर दुष्टता और जुल्म की छाप अंकित थी।

“तुम नये लोग हो?” महंत ने पूछा।

“हां, महाराज,” वाचाघान ने जवाब दिया, “दयानिधि, हम आपके सेवक हैं।”

“तुम में से कौन ऐसे हैं जो कोई धंधा जानते हैं?”

“सभी!” वाचाघान ने जवाब दिया। “हम बहुत ही कीमती कमखाब बनाना जानते हैं जो सोने से सौ गुना ज्यादा कीमती होता है।”

“क्या यह मुमकिन है?”

“आप खुद अपनी आंखों से देख लेंगे।”

“अच्छी बात है, देख लूंगा अपनी आंखों से। अब यह बताओ कि तुम्हें किन औजारों और सामग्री की जरूरत है। चीजें पाते ही वहां जाकर काम शुरू कर देना जहां बाक़ी लोग काम करते हैं।”

“हम वहां काम नहीं कर सकेंगे। हम लोग यहां ज्यादा अच्छी तरह से काम कर सकेंगे। हमारी खुराक के सम्बन्ध में यह निवेदन है कि हम मांस नहीं खाते और अगर हमें मांस खाने के लिए मजबूर किया गया, तो हम जी न सकेंगे।”

“खैर, कोई बात नहीं,” महंत ने कहा। “तुम लोगों को रोटी और फल मिल जायेंगे। अगर तुम्हारा काम तुम जैसा कहते हो, उससे घटिया हुआ, तो मैं तुम लोगों के टुकड़े-टुकड़े करवा दूंगा और तुम्हारे भरने के पहले तुम्हें तरह-तरह की यातनायें भी दिलवाऊंगा।”

महंत ने उनके लिए कुछ फल और रोटी भिजवाई। उन्होंने बाघीनाक और कुछ अन्य लोगों को भी उनमें से हिस्सा दिया और इसके बाद वाचाघान काम करने बैठ गया। उसने बड़ी जल्दी बहुत ही शानदार कमखाब का एक टुकड़ा तैयार किया और उसमें इन मयानक गुफाओं के, जहां वह आ फंसा था, रोंगटे खड़े करनेवाले सभी वृंश्य दिखा दिये, मगर ऐसे कि कोई जानकार ही उन्हें समझ सके।

महंत को वाचाघान की कारीगरी देखकर बहुत खुशी हुई।

वाचाघान ने कहा—

“मैंने तो निवेदन किया था कि हम जो कमखाब तैयार करते हैं, वह सोने से सौ गुना अधिक मूल्यवान होता है। यह जान लीजिये कि वास्तव में यह उससे भी दुगुनी कीमत का है। कारण कि इसके नमूनों में कुछ तावीज बनाये गये हैं। कुछ की बात है कि आम लोग उनका मूल्य नहीं आंक सकते। केवल बुद्धिमती महारानी अनाइत ही उनका मतलब समझ सकती है।”

लालची महंत डंग रह गया। उसने इस तरह चोरी-छिपे उस कमखाब को बेचना चाहा कि कोई अन्य व्यक्ति उसके नक़्के में हिस्सा न बंटा सके। इसलिए उसने बड़े महंत से इसकी खर्चा तक नहीं की, उसे दिखाया तक नहीं और कमखाब लेकर अनाइत के महल की ओर चल दिया।

८

अनाइत वेश का शासन बहुत अच्छे ढंग से चला रही थी और सभी लोग सन्तुष्ट थे। किसी को इस बात का गुमान तक नहीं हुआ कि राजा कहीं दूर गया हुआ है। मगर खुद अनाइत बहुत चिन्तित थी। वाचाघान के लौटने के निश्चित समय से बस दिन अधिक बीत चुके थे, मगर वाचाघान वापस नहीं आया था। अनाइत रात को सोती तो उसे मयानक सपने आते, दिन को उसे अजीब-सी परछाइयां दिखाई देतीं। वाचाघान का शिकारी कुत्ता ख़ांगी लगातार भूंकता या हूंकता। उसका घोड़ा कुछ भी न खाता और उस बछेड़े की मांति बर्बमरी आवाज़ में हिनहिनाता जिसकी मां खो गयी हो। मूर्तियां मुर्तों की मांति कु-कु-डू-कू करतीं और मुर्से शाम के वक़्त तीतरों की तरह चीखते।

नदी का पानी धीरे-धीरे बबी-बबी आवाज से बहता, न उछल-कूद करता, न कल-छल की आवाज। आम तौर पर निडर रहनेवाली अनाइत अब डरी-सहमी रहती। उसे तो अपनी छाया से भी डर लगता।

एक सुबह अनाइत को सूचना दी गई कि एक सौदागर कोई बहुत कीमती माल लेकर आया है।

अनाइत ने अजनबी को अन्दर लाने का हुक्म दिया।

बड़ा ही मयानक चेहरा था इस अजनबी का। उसने झुककर महारानी को प्रणाम किया और चांदी की थाली उसकी ओर बढ़ाई। थाली में सुनहरे कमछाब का एक टुकड़ा रखा हुआ था। अनाइत ने कढ़ाई की ओर ध्यान दिये बिना ही उसे बेचा।

“कितनी कीमत है इस कमछाब की?” उसने पूछा।

“महारानी जी, अगर सिर्फ कारीगरी और इसमें लगे माल को ही ध्यान में रखा जाये तो यह सोने से तीन सौ गुना अधिक महंगा है। इसके अलावा इसे यहां लाने के लिए मैंने जो मेहनत की, जो जोश दिखाया, उसकी कीमत आप खुद ही लगा लें।”

“मगर यह इतना महंगा क्यों है?”

“बयालु महारानी, इस में ऐसी शक्ति छिपी है जिसकी कोई कीमत हो ही नहीं सकती। जरा इसकी कढ़ाई को ध्यान से देखिये। ये मामूली आकृतियां नहीं, ताबीज हैं। इस कमछाब से सुसज्जित कपड़े पहननेवाला व्यक्ति कभी दुख-मुसीबत का शिकार नहीं होगा।”

“सच!” इतना कहकर अनाइत ने कमछाब को खोला। उसे उसमें कोई ताबीज नहीं, मगर बड़ी ही बारीक कढ़ाई में कड़े कुछ अक्षर नजर आये। अनाइत ने चुपचाप उन अक्षरों को पढ़ा—

“मेरी अनुपमा अनाइत, मैं एक जहन्नुम में बन्बी बना हुआ हूं। इस कमछाब को तुम्हारे पास लानेवाला व्यक्ति इस जहन्नुम के शैतान पहरेदारों में से एक है। घाघीनाक यहां मेरे साथ है। पेरोज शहर के पूर्व में ऊंची दीवारों से घिरा हुआ एक मठ है। इसकी भूमिगत काल-कोठरियों में हमारी तलाश करो। तुम्हारी मदद के बिना हम ज़िन्दा न रह सकेंगे। वाचाधान।”

इस संदेश को पढ़कर अनाइत का दिल बहल उठा। उसने यह जाहिर करते हुए कि मुझे यह कढ़ाई बहुत अच्छी लगी है, उस संदेश को दूसरी और तीसरी बार बहुत ध्यान से पढ़ा।

“आप सही कहते हैं,” अनाइत ने कहा। “इन आकृतियों में दिल खुश करने की ताकत छिपी है। आज सुबह ही से मैं बहुत उदास थी, मगर अब मेरा दिल बहुत

खुश है, चहक उठा है। आपका कमछाब वास्तव में ही अमूल्य है। मैं तो इसके लिए अपना आधा राज भी खुशी से दे सकती हूं। पर खैर यह तो आप जानते ही होंगे कि कोई भी कला-कृति खुद उसके रचयिता से बढ़-बढ़कर नहीं होती।”

“भगवान आपकी उन्नत लम्बी करे, महारानी, बिल्कुल सही बात कही है आपने!”

“तो आप उस कारीगर को मेरे पास लाइये, जिसने यह कमछाब बनाया है। मैं उसे और आपको भी इनाम देना चाहती हूं।”

“बयालु महारानी,” सालची महंत ने कहा, “मैं उसे नहीं जानता। मैंने तो हिन्दुस्तान में किसी यहूदी से इस कपड़े को खरीदा था और उसे किसी अरब ने बेचा था। कौन जाने उस अरब ने इसे कहां से खरीदा था!”

“मगर आपने तो अभी कुछ ही देर पहले यह बताया था कि इसमें लगी सामग्री और कारीगर की मेहनत का आपको कितना खर्च देना पड़ा था। इसका तो यह मतलब है कि आपने यह कमछाब खरीदा नहीं, बनवाया है।”

“बहुत ही रहमबिल महारानी, हिन्दुस्तान में मुझे ऐसा ही बताया गया था...”

“बको मत!” अनाइत गुस्से से चिल्लाई। “मुझे मालूम है कि तुम कौन हो। नौकरो, इसे पकड़कर काल-कोठरी में डाल दो!”

६

जब अनाइत का हुक्म बजा साया गया तो उसने अपने बिगुल-बादलों को छतरे का बिगुल बजाने का हुक्म दिया। शहर के लोग चिन्तित-से और आपस में कानाफूसी करते हुए महल के बाहर जमा हो गये। कोई भी यह नहीं जानता था कि मामला क्या है। सिर से पैर तक अस्त्रों-शस्त्रों से लैस अनाइत छज्जे में आई।

“नगर निवासियो!” उसने कहा। “आपके राजा की जान छतरे में है। जिन्हें उनकी ज़िन्दगी प्यारी है, जो उन को प्यार करते हैं, वे मेरे साथ चलें! दोपहर होने तक हमें पेरोज शहर में पहुंच जाना चाहिए।”

घंटे भर में सभी लोग शस्त्रों से लैस हो गये। अनाइत एक बड़िया घोड़े पर सवार हुई और उसने पुकार कर लोगों से कहा—“आइये, मेरे पीछे!” उसने अपना घोड़ा पेरोज की ओर सरपट दौड़ाना शुरू किया। वह रास्ते में कहीं भी नहीं रुकी और उसने अपने हाफते हुए घोड़े को पेरोज के केन्द्रीय चौक में ही जाकर रोका। पेरोज के लोगों ने उसे आकाश से उतरी देवी समझा और उसके सामने सिर झुका दिये।

“यहां का नगरपाल कहाँ है?” अनाइत ने बड़े रोब से पूछा।

“महारानी, मैं हूँ यहाँ का नगरपाल, आपका सेवक,” नगरपाल ने सामने आकर कहा।

“आप बहुत ही सापरवाह हैं। आपको इतना भी मालूम नहीं कि आपके देवताओं के मठ में क्या गुल खिल रहे हैं!”

“हां, महारानी, मुझे वास्तव में ही कुछ मालूम नहीं।” इतना कहकर उसने सिर झुकाया।

“मगर आपको इतना तो मालूम है कि मठ है कहाँ?”

“हां, मालूम है, महारानी!”

“तो मुझे वहाँ से चलिये।”

नगरपाल अनाइत को मठ की ओर ले चला। शहर के लोगों की भीड़ उनके पीछे-पीछे हो ली।

महंतों ने यह समझते हुए कि तीर्थयात्री आये हैं, लोहे के प्रवेश-द्वार खोल दिये। अनाइत अपना घोड़ा बढ़ाती हुई मठ के चौक में आ पहुंची और उसने हुक्म दिया कि मठ के दरवाजे खोल दिये जायें। तभी मामला महंतों की समझ में आया। बड़ा महंत घोड़े पर सवार महारानी की ओर झपटा, मगर अनाइत के समझदार घोड़े ने उसे अपने सुनों से रौंद डाला।

इसी बीच अनाइत के सैनिक आ पहुंचे और उन्होंने बाक़ी महंतों को झटपट ठिकाने लगा दिया। पेरोंज शहर के लोग डरे-सहमे और हतप्रभ-से यह सब कुछ देखते रहे।

“इधर आइये!” अनाइत ने उन्हें पुकारा। “देखिये तो आपके देवताओं के पवित्र स्थान में क्या कुछ छिपा हुआ है!”

मठ के दरवाजों को झटपट तोड़ डाला गया। बहुत ही मयानक वृद्ध देखने को मिला लोगों को।

मृत-प्रेत जैसे नजर आनेवाले लोग काल-कोठरियों से बाहर आने लगे। उनमें से कुछ तो बिल्कुल मौत के किनारे पर थे और बड़े भी नहीं रह सकते थे। बाक़ियों की आंखें सूरज की रोशनी में चौंधिया गई थीं और वे लड़खड़ाते हुए कुचली चींटियों की तरह हिल-डुल रहे थे। सबसे बाद में वाचाधान और वाधीनाक बाहर आये। वे आंखें बन्द करके चल रहे थे ताकि तेज धूप से उनकी आंखें अंधी न हो जायें।

सैनिक काल-कोठरियों में घुस गये और साशों तथा यातना देनेवाले यन्त्रों को निकाल लाये। शर्म से जमीन में गड़े आते शहरी उनका हाथ बंटा रहे थे।

इसके बाद अनाइत उस तम्बू में गई जहाँ वाचाधान और वाधीनाक थे। यह तम्बू जल्बी-जल्बी उनके लिए खड़ा कर दिया गया था। पति-पत्नी पास बैठकर एक दूसरे को देर तक ताकते रहे। वाधीनाक ने रोते हुए अनाइत का हाथ चूमा।

“अनुपमा महारानी,” वह रोते हुए बोला, “आज आपने हमारे प्राण बचा लिये हैं!”

“आज ही नहीं, वाधीनाक,” वाचाधान बोला, “अनाइत ने तो बहुत पहले उस दिन ही हमारी जान की रक्षा की थी जब उसने यह पूछा था कि राजा का बेटा कोई हुनर जानता है या नहीं। तुम्हें याद है कि यह सुनकर तुम कैसे हंसे थे?”

१०

सभी नगरों और गांवों में राजा वाचाधान के मयानक जान जोखिम के कारनामे की खबर फैल गई। दूसरे देशों में भी इसकी खबर पहुंची। सभी ने वाचाधान और अनाइत की तारीफ़ की। लोक-कवियों और माटों ने उनकी प्रशंसा में गाने रचे। कुछ की बात है कि वे गीत तो खो गये, मगर खुशी की बात है कि वाचाधान और अनाइत के बारे में कहानी आज भी कही-सुनी जाती है।

राजा और जुलाहा

आर्मीनियाई लोक-कथा



किसी समय की बात है कि कहीं एक राजा राज करता था।

एक दिन वह अपने सिंहासन पर बैठा था कि किसी दूर देश के राजा का दूत वहां आया। दूत ने मुंह से कुछ भी नहीं कहा, बल्कि चुपचाप राजा के सिंहासन के गिर्द खड़िया से एक घेरा बना दिया और एक ओर हट गया।

राजा बहुत चक्कर में पड़ा।

“इसका क्या मतलब है?” उसने पूछा।

मगर दूत मौन साधे रहा।

राजा चिन्तित हो उठा। उसने अपने वजीरों और सलाहकारों को बुलाया और उनसे कहा कि वे इस घेरे का मतलब स्पष्ट करें।

वजीरों और सलाहकारों ने बहुत ध्यान से इस घेरे को देखा, मगर वे कुछ भी न कह पाये।

राजा को बहुत गुस्सा आया।

“दूब मरो शर्म से!” वह चिल्लाया। “शर्म करो! क्या मेरे देश में एक भी ऐसा आदमी नहीं है जो मेरे सिंहासन के गिर्द बनाये गये इस घेरे का मतलब बता सके?”

जुनाहे राजा ने हुक्म दिया कि उसके राज्य के सभी बुद्धिमान लोगों को एकबारगी बुलाया जाये ताकि वे उसे उस घेरे का मतलब बतायें। राजा ने अपने हुक्म में यह भी कहा कि बुद्धिमान लोग अगर ऐसा नहीं कर पायेंगे तो उनके सिर उड़ा दिये जायेंगे।

वजीर और बुद्धिमानों की खोज करने चल दिये। उन्होंने सभी नगरों और सभी गांवों को छान मारा और हर दरवाजे पर दस्तक दी। आखिर वे एक छोटे से घर के सामने पहुंचे। वे अन्दर गये तो उन्होंने उसे खाली पाया और उन्हें वहां किसी की भी आवाज सुनाई न दी। वहां उन्हें केवल एक पालना लटका हुआ और अपने आप इधर-उधर झूलता दिखाई दिया।

“इसका क्या मतलब हो सकता है?” वजीरों ने हैरत में आकर पूछा। “पालना क्यों झूल रहा है? यहां तो कोई है नहीं।”

वे छड़े-छड़े अचंभा करते रहे और फिर दूसरे कमरे में गये। यहां भी एक पालना था और वह भी झूल रहा था, यद्यपि आसपास कोई भी नहीं था।

वजीरों को यह देखकर बहुत हैरानी हुई और वे मकान की छत पर चढ़ गये। छत पर गेहूं सूख रहा था और उसके ऊपर पक्षी उड़ रहे थे। वे गेहूं के दाने चुगना चाहते थे, मगर उनकी ऐसा करने की हिम्मत न पड़ती थी। कारण कि छत के साथ लगा हुआ सरकंडों का पंखा इधर-उधर घूमता हुआ उन्हें डराकर दूर भगाता जा रहा था।

राजा के दूतों को अब और भी अधिक हैरानी हुई। वे फिर से घर में गये और तीसरे यानी आखिरी कमरे में पहुंचे। वहां एक जुलाहा करघे पर बुनाई कर रहा था।

“तुम्हारे घर में यह कैसा चमत्कार हो रहा है?” राजा के दूतों ने पूछा। “खाली कमरों में पालने अपने आप कैसे झूल रहे हैं? यद्यपि हवा बिल्कुल नहीं है, फिर भी सरकंडों का पंखा क्यों घूमता जा रहा है?”

“यह कोई चमत्कार नहीं है,” जुलाहे ने जवाब दिया। “मैं खुद ही यह सब कुछ कर रहा हूं।”

“तुम हमारा मजाक उड़ा रहे हो!” राजा के वजीरों ने बिगड़कर कहा। “यह भला कैसे हो सकता है जब तुम यहां बैठे हुए कपड़ा बुन रहे हो?”

“यह तो बड़ी सीधी-सादी बात है,” जुलाहे ने जवाब दिया। “मैंने अपने करघे के साथ तीन रस्सियां बांध रखी हैं। एक रस्सी मैंने पहले पालने के साथ बांध रखी है, दूसरी दूसरे पालने के साथ और तीसरी सरकंडों के पंखे के साथ। मेरे बुनाई करने से रस्सियां हिलती हैं और ये पालनों और छत के सरकंडों को भी हिला देती हैं।

राजा के दूतों ने ध्यान से देखा तो पाया कि वास्तव में ही करघे के साथ तीन रस्सियां बंधी हुई हैं। उनमें से दो पालनों की ओर जाती थीं और एक सरकंडों के पंखे की ओर।

“यह तो सचमुच कमाल की बात है!” वे चिल्लाये। “जुलाहा सचमुच ही बहुत बुद्धिमान है। हमें इसी आदमी की जरूरत है! जुलाहे, तुम हमारे साथ राजा के पास चलो। शायद तुम ही एक पहेली को सुलझा सकोगे।”

“पहले आप यह बताये कि वह पहेली क्या है,” जुलाहे ने कहा।

वजीर बोले—

“किसी अजनबी देश के राजा का एक दूत कुछ ही समय पहले हमारे राजा के पास आया। उसने खड़िया से हमारे राजा के सिंहासन के गिर्द एक घेरा बना दिया। न तो बुद्ध राजा, न उसके दरबारी और सलाहकार ही इसका मतलब समझ पा रहे हैं। अगर तुम ऐसा कर सकोगे, तो राजा तुम्हें बहुत-सा इनाम देंगे।”

राजा के दूतों की बात सुनकर जुलाहा गहरी सोच में डूब गया। फिर उसने दो पांसे लिये। इसके बाद वह एक मुर्गी पकड़ने के लिए आंगन में गया।

वजीरों के कुछ भी पल्ले न पड़ा और उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा।

“तुम मुर्गी का क्या करोगे?” उन्होंने पूछा।

“मुझे इसकी जरूरत पड़ेगी,” जुलाहे ने जवाब दिया और उस मुर्गी को एक टोकरी में रख लिया।

इसके बाद वे राजा के महल की ओर चल दिये।

जुलाहा महल में गया, उसने राजा का अभिवादन किया, सिंहासन के गिर्द बने सफेद घेरे, और फिर उस आदमी की ओर देखा जिसने वह घेरा बनाया था और दोनों पांसे उसके सामने फेंक दिये।

उस व्यक्ति ने चुपचाप अपनी जेब से मुट्ठी भर बाजरा निकाला और फर्श पर रख दिया।

जुलाहा हंसा। उसने टोकरी में से मुर्गी निकाली और बिखरे हुए दानों के सामने छोड़ दिया। मुर्गी जल्दी-जल्दी दाने चुगने लगी और कुछ ही देर बाद एक भी दाना बाक़ी न रहा।

अजनबी ने एक भी शब्द नहीं कहा और झटपट वहां से चलता बना।

राजा और उसके दरबारी अधिकाधिक हैरान होते हुए अजनबी और जुलाहे को देख रहे थे। कोई भी अनुमान न लगा पाया था कि यह क्या क्रिस्ता हो रहा है।

“अजनबी का क्या मतलब था?” राजा ने पूछा।

“वह आप से यह कहना चाहता था कि उसके देश का राजा आपके विरुद्ध युद्ध की घोषणा करता है और आपको सभी ओर से घेरने का इरादा रखता है। वह यह भी जानना चाहता था कि आप लड़ेंगे या हथियार फेंकने को तैयार हैं। आपके सिंहासन के गिर्द बनाये गये घेरे का यही मतलब है।”

“हां, अब यह बात तो समझ में आ गई। मगर मैं अभी तक यह नहीं समझ पाया कि तुमने पांसे उसके सामने क्यों फेंके थे।”

जुलाहे ने जवाब दिया—

“मैंने उसे यह बताने के लिए पांसे फेंके थे कि हम उनसे कहीं अधिक शक्तिशाली हैं और वे हम पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते। अगर सीधे-सादे शब्दों में कहा जाये तो मैंने उसे यह समझाया कि हमारे मुक्काबले में तुम बिल्कुल बच्चे हो। अच्छा यही है कि तुम हम से जंग करने के बजाय अपने घर बैठकर खेल खेलो।”

“हां, अब यह बात भी साफ़ हो गई,” राजा ने कहा। “मगर मैं अब भी यह नहीं समझ पा रहा हूं कि अजनबी ने मुट्ठी भर बाजरा फर्श पर क्यों बिखेरा और तुमने टोकरी से मुर्गी निकालकर क्यों छोड़ी।”

“यह बात भी बहुत आसानी से समझ में आ सकती है,” जुलाहे ने कहा। “फर्श पर मुट्ठी भर बाजरा बिखराकर अजनबी यह बताना चाहता था कि उसके राजा की फ़ौज में अनगिनत सैनिक हैं। मैंने मुर्गी को बाजरा चुगने के लिए छोड़कर यह जाहिर किया कि अगर वे हम से जंग शुरू करेंगे तो उनका एक भी सैनिक बाक़ी नहीं बचेगा।”

“वह तुम्हारा मतलब समझ गया?”

“जरूर समझ गया होगा। इसीलिए तो वह झटपट वहां से चलता बना।”

राजा ने जुलाहे को बहुत बढ़िया और कीमती उपहार दिये और कहा—

“जुलाहे, तुम मेरे महल में मेरे पास ही रहो। मैं तुम्हें अपना बड़ा वजीर बना लूंगा।”

“नहीं,” जुलाहे ने जवाब दिया। “मैं आपका वजीर नहीं बनना चाहता। मेरे पास अपने ही बहुत-से काम-काज हैं।”

इतना कहकर वह चला गया।

हिरन-बालक और सुन्दरी येलेना

जार्जियाई लोक-कथा



हो सकता है कि यह सच हो, हो सकता है कि झूठ, मगर कहते हैं कि कभी कहीं एक बहुत ही अमीर राजा रहता था। एक दिन उसने अपने शिकारियों से कहा -

“जाओ, जो भी जानवर तुम्हें सबसे पहले मिला जाये, उसे मार लाओ।”

शिकारी जंगल में गये और उन्हें वन-पथ में सबसे पहले एक हिरनी दिखाई दी। उन्होंने निशाना साधा और वे राजा के आदेशानुसार उसे मारने ही वाले थे कि उन्हें उसके घन से दूध पीता हुआ एक लड़का दिखाई दिया। लड़के ने जब शिकारियों को देखा तो उसने दूध पीना बन्द कर दिया, हिरनी के गले में बाँहें डाल दीं और उसे चूमने और प्यार करने लगा।

शिकारियों को बड़ी हैरानी हुई।

वे लड़के को उठाकर राजा के पास ले गये और उसे सारा किस्सा कह सुनाया।

राजा का भी एक छोटा-सा बेटा था, शिकारियों द्वारा लाये गये लड़के का हमउम्र। राजा ने उन दोनों का एकसाथ ही नामकरण किया और जंगल में मिले बच्चे का नाम हिरन-बालक रखा।

हिरन-बालक का राजकुमार के साथ ही पालन-पोषण हुआ। वे दोनों एक ही कमरे में सोते और एक ही घाय का दूध पीते।

कुछ बालक साल-दर-साल बढ़ते हैं और ये दोनों बढ़ते थे दिन-प्रति-दिन और इसी तरह बारह वर्ष के हो गये। महल में बड़े होते हुए अपने दोनों बेटों को देखकर राजा को बहुत खुशी होती।

एक दिन दोनों लड़के तीर-कमान लेकर मैदानों में गये। राजकुमार ने एक तीर चलाया जो पानी लेकर आती हुई एक बुढ़िया की गागर से जा लगा। गागर का हत्था टूट गया।

बुढ़िया उसकी ओर देखकर बोली -

“शाप तो मैं तुझे नहीं दूंगी, क्योंकि तू मां-बाप का इकलौता बेटा है। मगर यही कहूंगी कि तेरा बिल सुन्दरी येलेना के प्यार में तड़पा करे।”

हिरन-बालक बुढ़िया की बात सुनकर हैरान रह गया -

“क्या मतलब है इसका?”

मगर इसी दिन से राजकुमार को सुन्दरी येलेना के सिवा और किसी चीज की सुध-बुध ही न रही। कारण कि प्यार के बीज उसके दिल में अंकुरित हो गये थे और उसका सुख-चैन जाता रहा था।

अब क्या किया जाये? तीन सप्ताह बीत गये। राजकुमार तो अधमरा-सा घूमता रहता - एक ऐसी सुन्दरी का प्यार उसकी सेहत और शक्ति को चौपट किये जा रहा था जिसे उसने आँखों से भी कभी नहीं देखा था।

एक दिन हिरन-बालक ने राजकुमार से कहा -

“मैं तुम्हारा कोका-भाई क्रसम खाकर कहता हूँ कि या तो तुम्हें सुन्दरी येलेना लाकर दूंगा या फिर ज़िन्दा नहीं रहूंगा।”

फिर वह राजा के पास जाकर बोला -

“पिताजी सुहार को हुक्म दीजिये कि वह मेरे लिए लोहे के पाद-कवच और तीर-कमान बना दे क्योंकि मुझे सुन्दरी येलेना की तलाश में जाना है।”

राजा राखी हो गया। एक कमान और पांच पूड वजन के तीर और एक जोड़ा पाद-कवच हिरन-बालक के लिए बनाये गये और वह और राजकुमार एकसाथ चल दिये।

हिरन-बालक ने अपने धर्म-पिता से विदा लेते हुए कहा -

“पिताजी, आप बिल्कुल चिन्ता न करें। आप हिरन-बालक पर पूरा भरोसा कर सकते हैं। दो बरस तक हमारा इन्तजार करें और यह याद रखें कि या तो हम नाम पैदा करके आयेगे या फिर लौटेंगे ही नहीं।”

इस तरह दोनों भाई वहाँ से चल बिये। चलाचल चलाचल, डर मंजिल, डर कूच वे एक बहुत घने और दुर्गम जंगल में पहुँचे। वे किसी तरह उसमें घुसे और वहाँ उन्होंने एक ऊँचा-सा टीला और उसकी चोटी पर एक विराट मकान देखा जिसके सामने एक प्यारा-सा बगीचा था। इस मकान में पाँच और नौ सिरोंवाले आदमखोर दानव रहते थे।

राजकुमार ने हिरन-बालक से कहा—

“मैं बहुत थक गया हूँ, भैया। आओ, थोड़ा आराम कर लें।”

“ठीक है,” हिरन-बालक राखी हो गया।

राजकुमार वहीं लेट गया और उसने आँखें मूंद लीं।

हिरन-बालक बोला—“तुम यहाँ लेटकर झपकी ले लो और मैं वहाँ बगीचे में से कुछ रसीले फल तोड़ लाता हूँ।”

हिरन-बालक भाई की तरह नहीं, बल्कि पिता की तरह राजकुमार की चिन्ता करता था।

वह बगीचे में गया और सबसे बढ़िया सेबों का पेड़ चुनकर कुछ सेब तोड़ने लगा।

अचानक नौ सिरोंवाला एक दानव भागता हुआ बाहर आया।

“किसने इस बगीचे में पैर रखने की जुर्रत की है?” वह चिल्लाया। “मेरे डर के कारण इस बगीचे के ऊपर तो पक्षी भी पंख नहीं फड़फड़ाते और न जमीन पर चींटियाँ ही रेंगती हैं।”

“मैं हूँ हिरन-बालक जिसने ऐसी जुर्रत की है,” नौजवान ने ऊँची आवाज में जवाब दिया।

यह सुनकर दानव घुस्से और डर से बड़बड़ाता हुआ पीछे हट गया। कारण कि सभी दानवों की भाँति उसे भी यह मालूम था कि हिरन-बालक के आने का मतलब है कि उनकी शामत आई है। वास्तव में दानव तो ऐसे डर गये कि कहीं छिप जाने के लिए सभी दिशाओं में भागने-दौड़ने लगे। मगर हिरन-बालक ने उन सभी को खोज-खोज कर मौत के घाट उतार दिया। केवल पाँच सिरोंवाला एक दानव ही बच रहा जो बरसाती में जा छिपा था।

इसी बीच राजकुमार छाया में मीठी नींद सोया रहा।

सभी दानवों को ठिकाने लगाने के बाद ही हिरन-बालक लौटा और उसने अपने भाई को जगाया। अब वे ही दानवों के घर और उनकी दौलत के मालिक थे।

दोनों भाई बगीचे में घूमते और सैर करते हुए अपना मन बहला रहे थे। इसी समय पाँच सिरोंवाला दानव बाबाखानजोमी बरसाती में बैठा हुआ घरघर काँप रहा था।

आखिर किसी तरह उसने अपने डर पर काबू पाया, उस कोने से बाहर निकला जहाँ वह छिपा बैठा था, बरसाती से नीचे उतरा और उसने हिरन-बालक से प्रार्थना की—

“मुझे मारो नहीं,” उसने कहा, “मैं तुम्हारा भाई बनकर रहूँगा। हमारी सारी दौलत आपकी होगी।”

हिरन-बालक मुस्कराया और पाँच सिरोंवाले दानव ने अपनी बात जारी रखी—

“ऐसी क्या जरूरत आ पड़ी है कि आप अपना घर-बार छोड़कर बुनिया भर में गांव-गांव और बस्ती-बस्ती की धूल छानते फिर रहे हैं?”

हिरन-बालक ने जवाब दिया—

“हमें एक काम पूरा करना है। अगर तुम्हारे सहायता न देने के कारण हम उसे पूरा करने में असफल रहे तो बाक़ी सभी दानवों की भाँति मैं तुम्हें भी मार डालूँगा।”

उसने दानव को बताया—

“हम सुन्दरी येलेना की खोज कर रहे हैं। तुम्हें भी हमारे साथ उसकी खोज करनी होगी।”

बाबाखानजोमी के पास छोटा-सा एक ऐसा घर था जिसे वह जहाँ भी जाता पीठ पर लादकर अपने साथ ले जा सकता था।

दानव ने कहा—

“मेरे इस घर में बैठ जाइये। हम सुन्दरी येलेना की खोज करेंगे। मगर उसे पाना आसान नहीं होगा। बहुत से लोग उसे पाने के लिए बेकरार हैं।”

दोनों भाई उसके घर में जा बैठे। दानव घर को अपनी पीठ पर लाद कर ले चला।

इसी तरह उन्होंने तीन महीने या इससे अधिक समय तक यात्रा की और आखिर वे एक नदी के तट पर पहुँचे।

“मैं थक गया हूँ,” राजकुमार ने हिरन-बालक से कहा, “आओ, यहाँ थोड़ा आराम करें।”

जाहिर है कि बाबाखानजोमी तो और भी ज्यादा थका हुआ था। दोनों भाई उस छोटे-से घर से बाहर निकले और नदी के किनारे बैठकर आराम करने लगे। उन्हें बहुत जोर की प्यास लगी हुई थी। उन्होंने नदी का पानी पीना चाहा, मगर वह तो बहुत ही नमकीन था।

“बहु पानी इतना खारा क्यों है?” हिरन-बालक ने हैरान होकर पूछा।

“यह पानी नहीं, आंसू हैं,” बाबाखानजोमी ने जवाब दिया। “वहां ऊंचाई पर पांच सिरोंवाला एक दानव रहता है। वह भी सुन्दरी येलेना को बहुत चाहता है, मगर येलेना ने उसे ठुकरा दिया है। येलेना के प्रति दानव का प्रेम उसके विल में आग बनकर बहकता है और वह रो-रोकर आंसुओं की नदी बहाता रहता है।”

हिरन-बालक ने आश्चर्यचकित होते हुए यह बात सुनी।

“अगर मैं सुन्दरी येलेना को अपने माई के लिए हासिल न करूं तो मेरा नाम हिरन-बालक नहीं!”

वे नदी के ऊपर, ऊंचाई पर रहेनेवाले दानव के पास गये। हिरन-बालक ने उससे कहा—

“दानव, सच सच बताओ कि क्या तुम सुन्दरी येलेना को बहुत ही प्रेम करते हो?”

दानव धार-धार रोता रहा, उसके आंसू बहते रहे और उनसे नदी बन गई।

“उसे केवल एक बार देख पाने के लिए मैं तो खुशी से अपनी जान भी दे सकता हूं,” उसने जवाब दिया।

“मैं तुम्हें वचन देता हूं कि तुम्हारी यह तमन्ना पूरी हो जायेगी। जब हम सुन्दरी येलेना को लेकर घर लौटेंगे, तो उस समय तुम उसे देख सकोगे।”

इतना कहकर वे आगे चल दिये।

चलाचल चलाचल, दर मंजिल, दर कूच। इसी तरह कुछ महीने बीत गये। यद्यपि वे रास्ते में मिलनेवाले जंगली जानवरों का शिकार कर उन्हें खाते रहे, तथापि उनकी रसब सख्त होती जा रही थी। वे इसी तरह चलते गये, चलते गये और आखिर वृक्षों के एक छोटे-से झुरमुट के पास पहुंचे। सुन्दरी येलेना का अभी तक कोई अता-पता नहीं था।

हिरन-बालक ने कहा—

“सामने एक गांव है। मैं वहां जाकर पूछताछ करता हूं। हो सकता है कोई यह जानता हो कि हम सुन्दरी येलेना की कहां खोज करें।”

बाबाखानजोमी को, उसके छोटे-से घर और राजकुमार को उसके अन्दर छोड़कर हिरन-बालक गांव की ओर चल दिया। वहां उसे भोंपड़ी के पास खड़ी एक बुढ़िया दिखाई दी। हिरन-बालक ने उससे पूछा—

“दादी अम्मा, अपने बच्चों के प्रति सभी माताओं के प्रेम के नाम पर मुझे यह बताओ कि मैं सुन्दरी येलेना को कहां पा सकता हूं?”

बुढ़िया को यह प्रश्न सुनकर बड़ी हैरानी हुई। उसे मालूम था कि सुन्दरी येलेना

के पास पहुंचना कितना कठिन है। उसे आश्चर्य इस बात का था कि यह नौजवान इस विषय की कितने सरस ढंग से चर्चा कर रहा है।

“उसे ढूंढ़ पाना बहुत ही मुश्किल है, बेटा,” बुढ़िया ने कहा। “ऐसा लगता है कि तुम उसके बारे में बहुत ही कम जानते हो। उसको तो महान पवन महाराज भी प्यार करता है और वह उसे हमेशा अपने साथ उड़ा ले जाने की घात में रहता है। इसीलिए उसे नौ तालों में बंद रखा जाता है और वह सूरज की किरण भी कभी नहीं देख पाती—उसके घरवासों को डर है कि उसे हर लिया जायेगा।”

बुढ़िया ने हिरन-बालक को सुन्दरी येलेना का अता-पता बताया।

“उसकी गढ़ी एक बहुत बड़े बाग के बीच में है। बाग के सभी ओर बहुत ऊंची दीवार है। सुन्दरी येलेना अपनी मां और भाइयों के साथ वहां रहती है।”

“मगर हम वहां कैसे पहुंच सकते हैं?” हिरन-बालक ने कहा। “मेरा माई उससे शादी करना चाहता है।”

“यह कोई आसान काम नहीं है,” बुढ़िया ने कहा। “सुन्दरी येलेना के बहुत-से प्रणयार्थी हैं। उसके परिजन यह नहीं चाहेंगे कि वह तुम्हारे माई से शादी करे। वह अपने प्रणयार्थियों को तीन काम करने को कहती है। वह वचन देती है कि जो उन्हें पूरा कर देगा उसी से वह शादी कर लेगी। मगर जो उन कामों को पूरा नहीं कर पाते, येलेना के माई उन्हें मार डालते हैं।”

हिरन-बालक मुस्कराया। उसने सोचा—सुन्दरी येलेना भला ऐसे किस काम की कल्पना कर सकती है जिसे मैं और मेरा माई पूरा नहीं कर सकते? वह उसी जगह लौट आया जहां अपने माई और बाबाखानजोमी को छोड़कर गया था।

हिरन-बालक और राजकुमार फिर से छोटे-से घर में जा बैठे। दानव ने घर को पीठ पर लाद लिया और वे फिर आगे बढ़ चले।

चलाचल, चलाचल, वे सुन्दरी येलेना की गढ़ी के पास जा पहुंचे। हिरन-बालक ने ही सबसे पहले अन्दर जाने की हिम्मत की।

सुन्दरी येलेना की मां जादूगरनी थी। वह आदमी को मार भी सकती थी और उसे ज़िन्दा भी कर सकती थी।

उसने हिरन-बालक पर जो नज़र डाली तो उसपर से अपनी नज़र न हटा सकी। इतना सुन्दर, ऐसा सम्बा-तङ्गा और हृष्ट-पुष्ट जवान था वह।

“तुम कौन हो और यहां किस लिए आये हो?” उसने पूछा।

हिरन-बालक ने जवाब दिया—

“मैं दोस्त हूँ, दुश्मन नहीं।”

“मगर क्या चाहते हो?”

“आपकी सुन्दरी येलेना को अपनी भाभी बनाना।”

सुन्दरी येलेना के तीन भाई थे, मगर इस समय वे तीनों शिकार के लिए जंगल में गये हुए थे।

“तुम यहीं ठहरो,” सुन्दरी येलेना की माँ ने कहा, “और मेरे बेटों की राह देखो। उनसे बातचीत कर लेना और तब सब कुछ तय हो जायेगा।”

घुनाचे हिरन-बालक बाग में बैठकर सुन्दरी येलेना के भाइयों के लौटने का इन्तजार करने लगा।

इसी बीच हिरन-बालक का इन्तजार करते हुए राजकुमार और बाबाखानजोमी को चिन्ता हुई कि कहीं पवन महाराज उससे न भिड़ जाये और उसकी हत्या न कर डाले। इसलिए उन्होंने खुद वहाँ जाकर उसका हालचाल देखना चाहा।

सुन्दरी येलेना के भाई तो शाम होने पर ही घर लौटे। उनमें से एक अपने कंधे पर हिरन लादे हुए था, दूसरा हिरनी तथा तीसरा आग जलाने के लिए वृक्ष का तना।

उन्हें किसी अजनबी की गन्ध आई और उन्होंने अपनी माँ से पूछा—

“माँ, यहाँ कौन है?”

“वह जो दोस्त बनकर आया है, मेरे बेटो। तुम उसका बाल भी बाँका मत करता,” माँ ने जवाब दिया।

इसी बीच बाबाखानजोमी राजकुमार को गद्दी के पास ले आया था। राजकुमार वहाँ खड़ा होकर इस बात का इन्तजार करने लगा कि आगे क्या होता है।

सुन्दरी येलेना के भाई हिरन-हिरनी को साफ़ करने लगे। हिरन-बालक भी उनका हाथ बंटाने लगा। जितनी देर में उन्होंने एक टांग साफ़ की, हिरन-बालक ने बिजली की तेज़ी से बाक़ी सारा हिरन ही साफ़ कर डाला। तीनों भाई उसे आश्चर्य से देखने लगे।

फिर वे खाना खाने बैठे। हिरन-बालक मांस के बड़े-बड़े टुकड़े उठाकर हड़प गया। तीनों भाई फिर उसे आँखें फाड़-फाड़कर देखते रह गये।

वे खा-पीकर सो रहे। अगली सुबह को सुन्दरी येलेना ने कहा—

“अगर राजकुमार मेरे बताये हुए तीनों कामों को पूरा कर देगा, तो मैं उससे शादी कर लूंगी। अगर वह असफल रहा, तो नहीं।”

राजकुमार को सुन्दरी येलेना के सामने लाया गया। सुन्दरी येलेना ने उससे बातचीत की, मगर वह बुत बना खड़ा रहा। उसने मुँह से एक भी शब्द नहीं निकाला, उसकी

समझ में तो यही नहीं आ रहा था कि क्रिस्ता क्या है। मगर हकीकत यह थी कि सुन्दरी येलेना की माँ ने उस पर जादू कर दिया था।

“जाओ यहाँ से!” सुन्दरी येलेना चिल्लाई और उसने राजकुमार को अपने कमरे से बाहर निकाल दिया।

राजकुमार एक शराबी की तरह लड़खड़ाता हुआ बाहर आया। हिरन-बालक ने झटपट उसके पास जाकर कहा—

“क्या पूछा था उसने तुम से?”

“मुझे कुछ मालूम नहीं, मेरे भाई। मैं तो बिल्कुल हतप्रभ हो गया था,” राजकुमार ने जवाब दिया।

हिरन-बालक को बहुत बुरा लगा। उसने सुन्दरी येलेना से अनुरोध किया कि वह उसके भाई को एक और मौका दे।

मगर दूसरी बार भी राजकुमार येलेना के सामने बुत बना खड़ा रहा और मानो सपना-सा देखता हुआ उसके कमरे से बाहर निकला।

हिरन-बालक ने बाबाखानजोमी से इसकी चर्चा की। उन्होंने मिलकर सलाह-मशविरा और यह तय किया कि उन्हें क्या करना है। तब हिरन-बालक फिर से सुन्दरी येलेना के पास गया और उससे प्रार्थना की कि वह राजकुमार को तीसरा मौका दे।

राजकुमार सुन्दरी येलेना के सामने जाकर फिर से बुत बन गया। येलेना की माँ ने उसपर फिर से जादू कर दिया था। मगर बाबाखानजोमी ने वहाँ आकर जादू-टोने का असर खत्म करनेवाला एक तावीज निकालकर उस कमरे में फेंक दिया जहाँ सुन्दरी येलेना राजकुमार से बातें कर रही थी।

अचानक दीवारें झूम गईं और राजकुमार को होश आ गया। जादू टूटने पर उसने सुन्दरी येलेना को देखा, मागकर उसके पास गया और उसका हाथ थामकर बोला—

“तुम मेरी हो! तुम मेरी हो!”

हिरन-बालक और सुन्दरी येलेना को भी बहुत खुशी हुई क्योंकि उसे मालूम था कि उसकी माँ उसके चाहनेवालों पर जादू-टोना कर बेती है ताकि वह शादी न कर पाये। इस तरह वह और राजकुमार मुस्कुराने और खुश होते हुए इकट्ठे बाहर आये।

अगली सुबह को झुल्हा-झुल्हन बगीचे में टहलने लगे। हिरन-बालक निकट खड़ा हुआ उन्हें देखकर खुश हो रहा था। अचानक महान पवन महाराज ने सुन्दरी येलेना को देखा और वह राजकुमार पर झपटा। उसने राजकुमार को ऊपर उठा लिया, उसे

कई चक्कर दिये और फिर जोर से जमीन पर दे मारा। इसके बाद उसने सुन्दरी येलेना को पकड़ा और उसे आकाश में बहुत ऊँचाई पर उड़ा ले गया।

हिरन-बालक ने जब अपने माई को जमीन पर बेजान-सा पड़ा देखा तो उसका तो बिल ही बैठ गया और उसे सुन्दरी येलेना का बिल्कुल ध्यान ही न रहा। अब उसे याद आया कि गांव में जिस बुढ़िया से उसकी मुलाकात हुई थी, उसने उसे महान पवन महाराज के बारे में आगाह कर दिया था। मगर हाय, अब क्या हो सकता था, अब तो बात हाथ से जा चुकी थी!

हिरन-बालक बैठकर आर-बार रोने लगा। तब सुन्दरी येलेना की मां उसके पास आकर बोली -

“रोओ नहीं, मैं तुम्हारे माई को अभी जिन्दा कर देती हूँ। मगर महान पवन महाराज सुन्दरी येलेना को चुरा ले गया है। अब हम उसे कैसे हासिल करें, यह मैं नहीं जानती।”

येलेना की मां ने एक कमाल निकालकर राजकुमार के मुँह पर फेरा और वह फौरन जिन्दा हो गया। वह उठा और उसने आँखें मलते हुए कहा -

“बहुत देर सोया रहा हूँ मैं!”

मगर जब उसने अपने इर्बगिर्ब नज़र डाली तो सुन्दरी येलेना को गायब पाया। वह रोने और सिसकियाँ मरने लगा, क्योंकि उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे।

तब हिरन-बालक बाबाखानजोमी के पास गया और बोला -

“महान पवन महाराज दुल्हन को उठा ले गया है। हमें हर कीमत पर उसे वापस लाना है।”

बानव ने कहा -

“अगर मैं तुम्हारी मदद न कर पाऊँ, तो मुझे यहीं मौत आ जाये। तुम मेरे बायें कान में देखो, तुम्हें वहाँ एक जीन नज़र आयेगा। मेरे बायें कान से तुम्हें एक लगाम और चाबुक मिलेगा। तुम उन्हें निकालकर मेरे मुँह में लगाम डालो और हम फौरन यहाँ से चल देंगे।”

राजकुमार को सुन्दरी येलेना के घर में छोड़कर हिरन-बालक ने बाबाखानजोमी को लगाम पहनायी, उसकी पीठ पर जीन रखकर उसके नौ बन्द कसे और उसके पाँच मुँहों में लगाम की नौ कड़ियाँ डालीं।

“अब मेरी पीठ पर सवार हो जाओ,” बाबाखानजोमी ने कहा, “और ऐसे कसकर

तीन बार मेरी पीठ पर चाबुक मारो कि मेरी पीठ पर से चमड़ी की नौ पट्टियाँ उतर जायें। उसके बाद जमकर बैठे रहो, बरा भी नहीं डरो और मैं हवा की तरह उड़ चलूँगा!”

बाबाखानजोमी ने जो कुछ कहा था वह करने के पहले हिरन-बालक राजकुमार से, अपने माई से विदा लेने गया।

“तुम यहीं हमारा इन्तज़ार करो,” उसने कहा, “हम सुन्दरी येलेना को खोजने जा रहे हैं।”

इसके बाद वह बानव की पीठ पर सवार हुआ और उसने उसकी पीठ पर तीन बार कसकर चाबुक मारा। उसकी पीठ से चमड़ी की नौ पट्टियाँ उधड़ गईं। बानव हुंकारा और उसने जोर से सीटी बजाई, उसने अपने तन से जमीन पर जोर का आघात किया और तेजी से ऊपर को उड़ता हुआ बादलों को चीर गया। आकाश में उड़ते हुए वे बहुत दूर चले गये और जब उन्हें एक मैदान नज़र आया, तभी नीचे उतरे। मैदान में एक बुढ़िया बिछाई वी। हिरन-बालक ने उससे पूछा कि क्या उसे महान पवन महाराज का कुछ अता-पता मालूम है।

बुढ़िया सिसकने और रोने लगी।

“मेरे बेटे, मेरे साल,” वह चिल्लाई, “तुम यहाँ किसलिए आये हो? तुम्हें यहाँ आने की हिम्मत ही कैसे हुई? महान पवन महाराज को अजनबी की गन्ध आ जाती है, उसे मालूम हो जायेगा कि तुम यहाँ हो और तब वह हम सभी को मार डालेगा! अभी कुछ ही देर पहले वह एक ऐसी सुन्दरी को यहाँ लाया है कि इस धरती पर उसका सामी बूढ़े नहीं मिल सकता। पवन महाराज इतने जोर से हुंकार रहा था और ऐसे सीटियाँ बजा रहा था कि बस केवल उसी की आवाज़ सुनाई दे रही थी और उसके इर्बगिर्ब सभी चीजें तहस-नहस होकर पृथ्वी पर गिरती जा रही थीं।”

“मैं इसी सुन्दरी की खोज में यहाँ आया हूँ,” हिरन-बालक ने कहा। “तुम मुझे उसके पास पहुँचने का रास्ता दिखा दो।”

“अच्छी बात है,” बुढ़िया राखी हो गई, मगर वह डर से धर-धर कांप रही थी और बड़ी मृत्तिकल से ही उसकी सांस आ-जा रही थी।

हिरन-बालक नीचे उतरा, उसने जीन, लगाम और चाबुक बानव के कानों में छिपा दिये और बुढ़िया के पीछे-पीछे चल दिया।

बाबाखानजोमी पीछे रह गया। वह इधर-उधर टहलता, हर चीज को देखता-मासता और मनमानी करता रहा। वह तो पवन महाराज के सारे खूबे भी खा गया।

बुढ़िया हिरन-बालक को महान पवन महाराज के क़िले में पहुंचाकर वापस चली गई।

इसी सुबह को पवन महाराज शिकार के लिए बाहर चला गया था। इसलिए सुन्दरी येलेना क़िले में अकेली थी, रो-धो रही थी।

हिरन-बालक येलेना के कमरे के दरवाजे पर पहुंचा, उसे ठोकर लगाकर खोला और उसके अन्दर गया।

“तुम यहां कैसे पहुंचे?” सुन्दरी येलेना ने पूछा। “और मेरे बेचारे बूल्हे का क्या हुआ?”

बेवर-भामी ने आलिंगन किया और चुम्बन लिया।

हिरन-बालक ने उसे सारा हाल कह सुनाया और बोला—

“अब मैं तुम्हें यहां से ले जाने को आया हूँ।”

“ओह, तुम यह नहीं कर पाओगे!” येलेना ने दुखी होते हुए कहा। “बुरा हो इस दुष्ट पवन महाराज का, वह हम दोनों को मार डालेगा।”

हिरन-बालक उसी बुढ़िया के पास वापस गया जिसने उसे पवन महाराज के क़िले में पहुंचाया था और उससे सलाह ली कि वह सुन्दरी येलेना को कैसे वहां से ले जाये और पवन महाराज से कैसे पिंड छुड़ाये।

बुढ़िया ने कहा—

“अभी जाकर सुन्दरी येलेना से कहो कि अगली बार जब पवन महाराज शिकार को जाये, तो वह झटपट घर के एक कोने को फूलों से सजा दे। महाराज जब लौटे तो वह रोनी-सी सूरत बनाकर उसे यह दिखाये कि मैं तुम्हारे बिना बहुत उबास रही हूँ।”

अगली सुबह को पवन महाराज जैसे ही शिकार को गया वैसे ही सुन्दरी येलेना बारा में गई, उसने कुछ फूल चुने और एक बालिका की भांति भकान का एक कोना सजाने के काम में जुट गई।

शाम को जब पवन महाराज घर लौटा तो येलेना को देखकर हैरान रह गया।

“तुम एक बच्चे की तरह फूलों से यह क्या खिलवाड़ कर रही हो?” उसने पूछा।

“तो मैं और क्या करूं?” उसने कहा। “जब तुम घर पर नहीं होते तो किसी तरह मुझे अपना दिल तो बहलाना ही होता है। अगर तुम मुझे केवल इतना बता देते कि तुम्हारी आत्मा किस जगह छिपी रहती है, तो मुझे इतनी उब और ऐसे एकाकीपन की अनुभूति न होती।”

“सुन्दरी, मेरी आत्मा का तुम्हें क्या करना है?” उसने पूछा।

“तुम भी किसी अजीब बात कर रहे हो! अगर मुझे यह मालूम हो कि तुम्हारी आत्मा कहां है, तो मैं तुम्हारी राह देखते हुए उसे घूम और सहला तो सकती हूँ। आखिर मैं तुम्हारी पत्नी हूँ। बता दो न!”

“अच्छी बात है,” महान पवन महाराज ने कहा। “तुम अगर ऐसा ही चाहती हो तो मैं बता देता हूँ।”

वह येलेना को क़िले की छत पर से जाकर बोला—

“पेड़ों के बीच तुम्हें वह हिरन नजर आ रहा है न? तीन आदमी उसके लिए घास काट रहे हैं और वह अकेला ही उसे इतनी जल्दी-जल्दी खाता जाता है कि घास मुश्किल से ही पूरी हो पाती है। इसी हिरन के सिर में तीन छोटे-छोटे डिब्बे रखे हैं और मेरी आत्मा उन्हीं में छिपी हुई है।”

“मगर कोई उस हिरन को मार डालेगा तो?” सुन्दरी येलेना ने पूछा।

“नहीं, उसे तो केवल मेरे ही तीर-कमान से मारा जा सकता है,” पवन महाराज ने कहा। “प्रत्येक डिब्बे में एक पक्षी बन्द है। अगर एक पक्षी को मार दिया जाता है तो मैं पैरों से घुटनों तक पथरा जाऊंगा, अगर दूसरे पक्षी की हत्या कर दी जाती है तो मैं कमर तक पथर हो जाऊंगा और तीसरे पक्षी के मरते ही मैं भी मर जाऊंगा। अब तुम समझ गई कि मेरी आत्मा कहां है?”

अगली सुबह को महान पवन महाराज किसी काम के सिलसिले में बाहर चला गया। सुन्दरी येलेना ने उसका तीर-कमान लेकर हिरन-बालक को दे दिया और उसे यह भी समझा दिया कि पवन महाराज को कैसे मारा जा सकता है।

हिरन-बालक तो खुशी से फूला न समाया। उसने कमान और तीर लिये और जंगल में चला गया जहां हिरन घर रहा था। उसने एक तीर चलाकर हिरन को मार डाला, वह भागकर उसके करीब पहुंचा और उसके सिर के दो टुकड़े कर उसमें से तीनों डिब्बे निकाल लिये।

मगर जैसे ही हिरन मरा वैसे ही पवन महाराज को महसूस हुआ कि कोई मुसीबत आ गई है। वह हड़बड़ा कर घर की ओर भागा।

मगर इसी समय हिरन-बालक ने पहले छोटे-से पक्षी की गर्दन मरोड़ दी और पवन महाराज की टांगें पथरा गईं। तब उसने दूसरे पक्षी की गर्दन मरोड़ी और पवन महाराज का घड़ बेजान हो गया और मुश्किल से ही घिसटता हुआ वह बहलीज तक पहुंच पाया।

पवन महाराज ने सुन्दरी येलेना से कहा—

“तुमने मुझे धोखा दिया है, सुन्दरी येलेना!” और उसने सीढ़ियों पर चढ़ने की कोशिश की। तभी हिरन-बालक ने तीसरे पक्षी को अपने हाथों में पकड़ कर ऊंची आवाज में कहा -

“अब यह लो सजा अपनी काली करतूत की!” उसने तीसरे पक्षी की गर्दन भी मरोड़ दी।

पवन महाराज का रक्त निकल गया और वह जमीन पर गिर पड़ा। हिरन-बालक सुन्दरी येलेना के पास जाकर बोला कि अब हमें यहां से चल देना चाहिए।

“तुम पहले भी कमरे सांघकर दसवें कमरे में जाओ। वहां पवन महाराज का घोड़ा बंधा हुआ है। वह हवा की तरह उड़ता है, पसक झपकते ही हमें घर पहुंचा देगा।”

हिरन-बालक ने पवन महाराज का घोड़ा बंध लिया और तब उसने बाबाखानजोमी को बुलाया। उसने बानव के कानों में से चीन और लगामें निकालीं, उसकी पीठ पर सवार हुआ, सुन्दरी येलेना को घोड़े पर चढ़ाया और वे उड़ चले।

इस तरह सुन्दरी येलेना और राजकुमार का पुनर्मिलन हुआ। बड़ी धूम-धाम से उनकी शादी हुई और हिरन-बालक को सभी ने हार्दिक धन्यवाद दिया।

अब राजकुमार के पिता और हिरन-बालक के धर्म-पिता यानी बड़े राजा का हास सुनिये। उसने तो यह समझ लिया था कि उसके बेटे अब इस दुनिया में नहीं रहे। उसके दुख का पारावार नहीं था। उसने अपने सारे राज्य में मातम मनाने का हुक्म दे दिया और खुद भी रोते-रोते अपने दिन बिताता।

इसी बीच कुल्हन के परिवार में दावत उड़ाने के बाद राजकुमार, हिरन-बालक और सुन्दरी येलेना बाबाखानजोमी की पीठ पर सवे छोटे-से घर में बैठे हुए अपने राज्य की ओर लौट रहे थे।

जब वे उस बानव के पास से गुजरे जिसने येलेना के प्रेम में आंसुओं की नदी बहा रखी थी तो हिरन-बालक ने उससे कहा -

“हां तो, बानव, तुम सुन्दरी येलेना को देखना चाहते हो?”

“आह, हिरन-बालक, कौन मुझे ऐसा करने देगा!” बानव ने कहा।

“वह यहीं है, तुम अगर चाहो तो उसे देख सकते हो!” हिरन-बालक ने जवाब दिया।

बानव सुन्दरी येलेना पर नजर डालते ही उसके रूप की चमक से अंधा हो गया, वह लड़खड़ाकर गिरा और देखते ही देखते उसके प्राण पखेरु उड़ गये।

हिरन-बालक और उसके संगियों ने अपना सफ़र जारी रखा। उन्होंने नौ सिरोंवाले बानवों के घर में रात बिताई और आगे चल दिये।

अभी उनका पांच महीने का सफ़र बाक़ी था। तभी वे एक जंगल के सिरे पर आराम करने के लिए ठहरे।

रात के वक़्त तीन कबूतर अचानक उड़ते हुए आये और वृक्ष की शाखा पर जा बैठे। उनमें से एक ने कहा -

“जब बड़े राजा को यह खबर मिलेगी कि उसका बेटा सुन्दरी येलेना के साथ लौट रहा है, तो वह उसे एक बन्दूक उपहारस्वरूप भेजेगा। बन्दूक चल जायेगी और राजकुमार की जान जाती रहेगी। पर जो कोई भी हमारी यह बात सुनकर इसकी चर्चा करेगा, वह पत्थर बन जायेगा।”

“ऐसा ही होगा!” बाक़ी दो कबूतरों ने इसकी पुष्टि की।

दूसरे कबूतर ने कहा -

“जब बड़े राजा को पता चलेगा कि उसका बेटा निकट आ गया है तो वह राजकुमार के लिए एक घोड़ा लेकर उसका स्वागत करने आयेगा। घोड़ा राजकुमार को गिराकर मार डालेगा।”

“ऐसा ही होगा!” बाक़ी दो कबूतरों ने पुष्टि की और साथ में यह भी जोड़ा -

“पर जो कोई भी हमारी यह बात सुनकर इसकी चर्चा करेगा, वह पत्थर बन जायेगा।”

तीसरे कबूतर ने कहा -

“दुल्हा-दुल्हन जब घर पहुंच जायेंगे तो रात के वक़्त भयानक अजगर ग्बेलेशापी आयेगा और उन दोनों का गला घोटकर उन्हें मार डालेगा। पर जो कोई भी हमारी यह बात सुनकर इसकी चर्चा करेगा, वह पत्थर बन जायेगा।”

इतना कहकर वे तीनों उड़ गये।

हिरन-बालक ने यह सब कुछ सुना, मगर किसी से इसकी चर्चा नहीं की।

सुबह हुई तो ये तीनों बानव के छोटे-से घर में जा बैठे। बानव उन्हें लेकर आगे चल दिया।

बड़े राजा को अब यह पता चला कि उसका बेटा जिन्दा और ठीक-ठाक है तथा सुन्दरी येलेना के साथ घर लौट रहा है, तो उसने उसे एक बन्दूक उपहारस्वरूप भेजी। मगर राजकुमार तो उसे छूने भी न पाया कि हिरन-बालक लपक कर आगे गया, उसने बन्दूक छीनी और बहुत दूर फेंक दी।

“मेरे पिता ने तोहफे में बन्दूक भेजकर मेरा सम्मान किया है मगर हिरन-बालक ने तो मुझे उसे हाथ भी नहीं लगाने दिया,” बहुत ही निराश होते हुए राजकुमार ने मन ही मन सोचा।

वे फिर आगे चल दिये। बूढ़े राजा ने अपने बेटे के लिए घोड़ा भेजा, मगर हिरन-बालक ने उसे घोड़ा छूने भी नहीं दिया, उसे वापस भेज दिया। राजकुमार को इस बात से और भी अधिक दुःख हुआ।

आखिर वे घर पहुँचे। राजा ने उनका खोरबार स्वागत किया और शाही की खुशी मनाने के लिए यहां भी बड़ी दावत की गई।

तब हिरन-बालक ने क्लिसे से बाहर आकर बाबाखानजोमी से कहा—

“तुम ने बफ़ादारी से सेवा की है, इसके लिए धन्यवाद। अब तुम जहां भी चाहो जा सकते हो और सुख-चैन का जीवन बिता सकते हो।”

दानव चल गया, और हिरन-बालक दबे पांव बूल्हे-बुलहन के कमरे की ओर गया। वह दरवाजे पर खड़ा रहकर प्रतीक्षा करने लगा। बूल्हा-बुल्हन सो रहे थे, पर हिरन-बालक जाग रहा था। वह अपनी तलवार तैयार किये हुए सावधान खड़ा था। वह जानता था कि अपने कोका-भाई की ज़िन्दागी को वही बचा सकता है।

आधी रात को ग्वेलेशापी नभूदार हुआ। वह चुपके-चुपके बूल्हा-बुल्हन के पलंग की ओर बढ़ा और अपने जबड़ों को खोलकर उनका गला घोटने ही वाला था कि हिरन-बालक ने अपनी तलवार उठाई और एक ही बार में अजगर का सिर काट डाला। इसके बाद उसने अजगर के टुकड़े करके उन्हें पलंग के नीचे फेंक दिया।

सुबह होने पर बूल्हा-बुल्हन जागे। उन्हें इस बात का आभास तक भी नहीं था कि रात को क्या घटना घटी थी।

मगर जब नौकर-चाकर नवदम्पति का कमरा साफ़ करने आये तो उन्हें पलंग के नीचे से अजगर की सांश के टुकड़े मिले। राजा यह खबर पाकर लाल-पीला हो गया। उसे लगा कि कोई उसका मजाक उड़ा रहा है।

अब इस मामले की चर्चा और इस बात पर बहस होने लगी कि किसने ऐसा किया है। सारा दोष हिरन-बालक के माथे मढ़ दिया गया। उसी ने राजा की भेजी बन्दूक फेंककर और घोड़ा लौटाकर राजकुमार का अपमान किया था। हिरन-बालक ने ही अब उसके पलंग के नीचे अजगर के टुकड़े फेंककर उसका मजाक उड़ाया है!

हिरन-बालक ने कहा—

“मैंने तो आप लोगों का भला ही किया है। अब ऐसा मत कीजिए कि आप लोग हंसी-खुशी का जीवन बितायें और मैं इस दुनिया से चल बसूं!”

मगर वे लोग उससे बहुत नाराज थे। उन्होंने यह बताने की मांग की कि यह क्लिप्सा क्या है और अजगर के टुकड़े कहां से आये।

“अच्छी बात है,” हिरन-बालक ने कहा, “मैं वह सब कुछ बता दूंगा जो आप जानना चाहते हैं। आशा करता हूं कि बाद में आपको इस बात का दुःख नहीं होगा कि आपने उसी आदमी की जान ले ली है जिसने आपको खुशी लौटाने के लिए कोई कोर-कसर नहीं उठा रखी। तो सुनिये। जब हमने जंगल के छोर पर डेरा डाला था तो उसी रात को तीन कबूतर आये और एक शाखा पर बैठकर उन्होंने यह कुछ कहा। पहला कबूतर बोला—‘बूल्हा-बुल्हन जब नजदीक आयेंगे तो बूढ़ा राजा अपने बेटे के लिए एक बन्दूक भेजेगा। बन्दूक चल जायेगी और राजकुमार मारा जायेगा। मगर जो कोई इसकी चर्चा करेगा, पत्थर हो जायेगा।’”

इतना कहते ही हिरन-बालक पैरों से घुटनों तक पथरा गया।

अब वे समझ गये थे कि क्यों उसने पहले यह चर्चा करना नहीं चाहा था। वे उसके चुप रहने के लिए उसकी मिन्नत-समाजत करने और यह कहने लगे—

“हिरन-बालक बस, तुम अब और कुछ मत कहो!”

मगर हिरन-बालक ने जवाब दिया—

“नहीं, अब मैंने कहना शुरू कर दिया है तो पूरी बात कहकर ही रहूंगा। तो आगे सुनिये... दूसरे कबूतर ने कहा—‘बूढ़ा राजा अपने बेटे के लिए एक घोड़ा भेजेगा। राजकुमार उसकी पीठ से गिरकर मर जायेगा। मगर इस बात की चर्चा करनेवाला पत्थर हो जायेगा।’”

और हिरन-बालक कमर तक पथरा गया।

“बस करो! अब आगे कुछ नहीं कहो!” सभी गिड़गिड़ाये।

“नहीं,” हिरन-बालक ने जवाब दिया। “पहले आप लोगों ने मुझ पर विश्वास नहीं किया और अब बहुत देर हो चुकी है। हां तो, तीसरा कबूतर बोला—‘रात के वक्त जब बूल्हा-बुल्हन अपने कमरे में सोते होंगे, ग्वेलेशापी अजगर वहां आयेगा और उनके गले घोटकर उन्हें मार डालेगा...’”

वह इससे अधिक और कुछ न कह पाया और पूरी तरह पत्थर हो गया।

बूढ़ा राजा और राजकुमार फूट-फूट कर रोये, मगर इससे क्या हासिल हो सकता था?

सुन्दरी येलेना कुछ ही समय बाद बच्चे को जन्म देनेवाली थी। इस चीज से भी राजकुमार को कोई खुशी नहीं हो रही थी।

“चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये, मैं हर हालत में अपने सच्चे दोस्त और भाई को जिन्दा करके रहूंगा!” राजकुमार ने मन ही मन सोचा।

उसने लोहे के पाद-कवच पहने और अपना लोहे का डंडा लेकर दुनिया का घूँककर लगाने को निकल पड़ा। वह जगह-जगह मटकता और रास्ते में मिलनेवाले हर आदमी से यह पूछता रहा कि किस तरह वह अपने कोका-भाई को फिर से जिन्दा कर सकता है। एक दिन वह बहुत ही थक-हारकर किसी जंगल के छोर पर आराम करने के लिए बैठ गया। अचानक एक बूढ़ा उस जंगल से बाहर निकला। राजकुमार ने उससे भी वही सवाल किया जो वह दूसरों से करता रहा था।

बूढ़े ने जवाब दिया —

“घर लौट जाओ। तुम्हारे कोका-भाई की जान बचानेवाला तो तुम्हारे घर ही में है।”

मगर राजकुमार के पल्ले कुछ नहीं पड़ा। तब बूढ़े ने फिर से कहा —

“क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि तुम्हारे घर में सुनहरे बालोंवाले बेटे ने जन्म लिया है? अगर अपने कोका-भाई की जान बचाना चाहते हो तो तुम्हें अपने बेटे की बलि देनी होगी। पालने में ही उसकी हत्या कर उसे उबालो और वह पानी अपने कोका-भाई पर डालो। वह जिन्दा हो जायेगा।”

बूढ़े की बात सुनकर राजकुमार अपने घर की ओर लौट चला।

उसने अपने-आप से कहा —

“बच्चे तो और भी हो जायेंगे, मगर हिरन-बालक जैसा दोस्त और भाई कभी नहीं मिलेगा।”

घर लौटने पर उसने पालने में अपना बेटा देखा। उसके सुनहरे घुंघराले बाल चमक-चमक रहे थे और वह आकाश में चमकनेवाले चांद के समान तेजस्वी था।

राजकुमार ने सुन्दरी येलेना को बूढ़े की कही हुई बात बताई। वह फौरन बेटे की बलि देने को राजी हो गई।

“हिरन-बालक को जिन्दा करने के लिए हमें कोई कोर-कसर न उठा रखनी चाहिए। हर कीमत पर हमें दोस्तों के प्रति वफ़ादार रहना चाहिए।”

बूढ़े ने जो कुछ कहा था, उन्होंने बिल्कुल वैसा ही किया। हिरन-बालक हिला-डुला, उसने आँखें खोलीं और जिन्दा हो गया।

सुबह होने पर सुन्दरी येलेना अपने बेटे के पालने के पास गई। बेशक उसने दोस्त के लिए बेटे को क़र्बान किया था, मगर उसके सीने में माँ का दिल था जो बेटे की याद में फटने लगा। अचानक उसे पालने में कुछ हिलता हुआ सा लगा। उसने चादर हटाई तो वहाँ अपने बेटे को जिन्दा, मला-चंगा और हुमकता हुआ पाया।

अब तो सभी की खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

उन्होंने पन्द्रह मेड़े काटीं और उनका सीख-कबाब तैयार किया। चौदह दिन तक वे मौज मनाते और बावत उड़ाते रहे।

भालू ने पाठ पढ़ाया

जार्जियाई लोक-कथा



भालू, मेड़िया और लोमड़ी एक दिन जंगल में मिले। उन्होंने एक-दूसरे के आगे यह रोना रोया कि अक्सर और बहुत असें तक उन्हें मूछे ही घूमना पड़ता है और उनके पेट में चूहे कूबते रहते हैं। वे दुखड़ा रो चुके तो उन्होंने आपस में यह तय किया कि अब जो कुछ भी हासिल करेंगे उसे भाई-बन्दी के नाते आपस में बांट लिया करेंगे। इस तरह वे भाई-बहन बन गये, उन्होंने एक-दूसरे के प्रति वफ़ादारी की कसमें खाई और इकट्ठे शिकार की खोज में चल दिये।

वे चले जा रहे थे शिकार खोजते हुए।

उन्हें एक घायल हिरन मिला गया। उन्होंने झटपट उसकी गर्दन मरोड़ी, उसे खींचकर छाया में घास पर ले गये और सगे उसका बंटवारा करने।

भालू ने मेड़िये से कहा, “तो, तुम इसका बंटवारा करो।”

मेड़िये का मूछ के मारे बुरा हाल था और उसके दांत बज रहे थे।

मेड़िये ने ऐसे बंटवारा किया —

“भालू जी, आप हमारे सिरताज और श्रद्धेय हैं, इसलिए सिर हुआ आपका, धड़ मेरा और टांगें लोमड़ी की, क्योंकि उसे भागना बहुत पसन्द है।”

मेड़िये ने अपनी बात खत्म भी न की थी कि भालू ने मेड़िये के सिर पर पंजे से इतने जोर की छील जमाई कि पहाड़ भी उसकी आवाज से गूँज गये। मेड़िया दर्द से चीख उठा और डेर हो गया।

भालू ने अब लोमड़ी को सम्बोधित किया —

“हां, तो लोमड़ी, अब तुम बंटवारा करो।”

मक्कार लोमड़ी छड़ी हुई और चापलूसी करती हुई बोली —

“सिर आपके लिए क्योंकि आप हमारे सिरताज और राजा हैं, धड़ भी आपके लिए क्योंकि आप सदा पिता-तुल्य हमारी चिन्ता करते हैं और टांगें भी आप ही के लिए हैं क्योंकि आप सदा हमारी मलाई करते हैं।”

“शाबाश, मेरी लोमड़ी,” भालू बोला, “तुम्हें ऐसी समझदारी से और इतना बढ़िया बंटवारा करना किसने सिखाया?”

“श्रीमान जी, आपने मेड़िये का जो हाल किया है, उसे देखने के बाद भी क्या कोई बुद्ध रह सकता है?”

बबर और खरगोश

जार्जियाई लोक-कथा



किसी जंगल में अक्सर जानवर इकट्ठा होते थे। हर बार वहाँ एक बबर आता, किसी एक जानवर को बबोच लेता और वहीं चीर डालता। बबरकिस्मत जानवर हमेशा डरे-सहमे रहते।

एक दिन वे इकट्ठा होकर सोच-विचार करने लगे कि हर दिन और हर घड़ी के डर से कैसे पिंड छुड़ायेँ। बहुत देर तक उन्होंने सोच-विचार किया, हर पहलू पर सौर किया और इस नतीजे पर पहुँचे कि खुद ही बबर को हर दिन एक बलि दे दिया करेंगे और उससे यह अनुरोध करेंगे कि वह हमें हर दिन के डर से निजात दे दे। वे बबर के पास गये और उसे अपना निर्णय बताया।

बबर इस शर्त पर राजी हो गया कि उसे बिल्कुल ठीक समय पर बलि मिल जाया करे।

“वरना मैं तुम सभी को मार डालूँगा!” उसने धमकी दी।

इस तरह उसी दिन से वे किसी न किसी जानवर को बबर के पास पहुँचा आते।

होते-होते एक खरगोश की बारी भी आ गई। वे उसे बबर के पास ले चलने को तैयार हुए। खरगोश बोला—

“जब मेरी बारी आ ही गई है, तो जाना तो होगा ही। पर मुझे अकेले ही जाने दो। मैं खुद वहाँ जाऊँगा और बबर से पिंड छुड़ाने की कोशिश करूँगा। हो सकता है कि मुझे अपनी जान बचाने और इस मुसीबत से तुम्हें छुटकारा दिलाने में कामयाबी मिल जाये।”

जानवर हँस दिये।

“छोटा मुँह बड़ी बात! कौसी दून की हांकी है इस मेंने और डरपोक खरगोश ने!”

बबर बेहद मूखा था और खरगोश ने जान-बूझकर डर कर दी। गुस्से से बबर की आँखों से चिंगारियाँ निकल रही थीं और वह दाँत पीस रहा था। वह बेसब्री से बलि का इन्तजार करता हुआ अब खुद जाकर सभी जानवरों को ठिकाने लगाने की सोच रहा था। ठीक इसी समय खरगोश नजर आया। बबर ने भयानक दृष्टि से उसे देखते हुए पूछा—

“तुम्हें इतनी देर करने की जुरत कैसे हुई?”

“जंगली जानवरों के महाराजा,” खरगोश ने नम्रता से उत्तर दिया, “मुझे आपके पास एक खरगोश को पहुँचाने का काम सौंपा गया था। मैं उसे लेकर आ रहा था कि रास्ते में एक और बबर हम पर झपटा और वह खरगोश को एक गहरे गढ़े में घसीट ले गया।”

“कहाँ है वह, दिखाओ तो उसे मुझे!” बबर ने गरजकर कहा।

खरगोश उसे एक कुएं के पास ले गया और बोला—

“महाराज, वह यहाँ है। मगर इसमें अकेले झाँकते हुए मुझे डर लगता है। आप मुझे अपने पंजों में उठा लें और तब मैं आपको उसे दिखा दूँगा।”

बबर ने उसे पंजों में उठा लिया और उन्होंने कुएं में झाँका। पानी में उनकी परछाईं प्रकट हुई—पंजों में खरगोश को उठाये हुए बबर, जो नीचे से ऊपर को देख रहा था।

बबर आग-बबूला हो उठा। उसने खरगोश को एक ओर को फेंका और अपने प्रतिद्वन्दी को उसके किए की सजा देने और उससे अपनी बलि छीन लेने के लिए खुद कुएं में कूब पड़ा। मगर कुआँ बहुत गहरा था और वह उसमें डूब गया।

यह समाचार सुनकर जानवरों की खुशी का कोई ठिकाना न रहा—उन्हें ऐसे जालिम दुश्मन से निजात जो मिल गई थी! उन्होंने खरगोश को हार्दिक धन्यवाद दिया।

सोने की कौड़ीवाला अल्तीन-साका

बश्कीरी लोक-कथा



किसी वक्त का जिक्र है कि एक बूढ़ा और एक बुढ़िया कहीं रहते थे। उनका इकलौता बेटा था जिसे सब कोई सोने की कौड़ीवाला अल्तीन-साका कहते थे। ऐसा इसलिए कि उसके पास सोने की एक कौड़ी थी। अल्तीन-साका दूसरे लड़कों से बढ़-चढ़कर कौड़ियां खेलता था, कोई भी उसे मात नहीं दे सकता था।

एक दिन क्या हुआ कि बूढ़ा अपने घोड़ों को पानी पिलाने के लिए झील पर ले गया। उसने अपने घोड़ों को पानी की ओर हांका, मगर उन्होंने अपने अयाल और पूंछें हिलाईं, सुम पटके, जोर से हिनहिनाये और झील से पीछे हटने के लिए अड़ गये: कोई उनके अयाल खींच रहा था, उनकी यूथनियों को झटक रहा था और उन्हें पानी नहीं पीने दे रहा था।

“जाने वहां क्या है?” बूढ़े ने मन हो मन मोचा। “मैं खुद वहां जाकर देखता हूं।”

मगर उसके पानी पर झुकते ही किसी ने अचानक उसकी दाढ़ी पकड़ ली। बूढ़े ने अपनी दाढ़ी छुड़ाने की कोशिश की, मगर उसे कामयाबी न मिली।

उसने इधर-उधर नजर डाली तो पाया कि बूढ़ी चुड़ैल उबीर उसकी दाढ़ी पकड़े हुए है।

“मेरी दाढ़ी छोड़ दो, मुझे जाने दो, उबीर!” बूढ़े ने बिल्लाकर कहा। “तुम अगर मुझे छोड़ दोगी तो मैं तुम्हें मेड़ों का रेवड़ भेंट कर दूंगा।”

“मुझे तुम्हारी मेड़ों का क्या करना है?” उबीर ने कहा।

“तो घोड़ों का झुंड दे दूंगा।”

“तुम्हारे घोड़ों का मैं क्या करूंगी?”

“तो मैं तुम्हें क्या दूँ?”

“वही, जो तुम्हारे खेमे में सिर्फ एक ही है।”

बूढ़ा बेहद डरा हुआ था। इसलिए उसने यह सोचा तक भी नहीं कि उसके खेमे में क्या चीज सिर्फ एक ही है।

“अच्छी बात है,” उसने कहा, “तुम्हें वही मिल जायेगी, तुम बस मुझे छोड़ दो।”

उबीर ने यह कहते हुए उसे छोड़ दिया –

“याद रखना, मैं तुम्हें कहीं भी आ दूंगी। मुझ से कोई नहीं छिप सकता!”

घर लौटने पर ही बूढ़े को इस बात का एहसास हुआ कि उबीर उससे क्या पाना चाहती है। उसका अभिप्राय उसके बेटे, उसके प्यारे अल्तीन-साका से था। कारण कि उसके घर में बेटा ही इकलौता था।

बूढ़े को बहुत दुःख, बहुत अफ़सोस हुआ, मगर उसने अपनी बीबी या बेटे से इसकी बिल्कुल चर्चा न की।

“यहां की जमीन निकम्मी है, चलो हम किसी दूसरी जगह जाकर डेरा डालें,” उसने केवल इतना ही कहा।

चुनांचे उन्होंने किसी दूसरी जगह जाकर खेमा गाड़ दिया। मगर अगले दिन अल्तीन-साका को अपनी सोने की कौड़ी न मिली।

“मेरी सोने की कौड़ी कहां गई?” उसने पूछा।

बूढ़े ने जवाब दिया –

“हम शायद वहीं छोड़ आये हैं जहां हमारा पुराना डेरा था। मगर तुम वहां हरगिज न जाना, क्योंकि उबीर तुम्हें पकड़ लेगी।”

बूढ़े ने अल्तीन-साका को जो कुछ बीती थी, सारी घटना कह सुनाई।

अल्तीन-साका ने बहुत ध्यान से अपने पिता की बात सुनकर कहा –

“मैं उबीर से नहीं डरता। वह मुझे कभी नहीं पकड़ पायेगी। मैं वहां वापस जा रहा हूं, मगर मुझे केवल इतना बता दें कि मैं किस घोड़े पर सवारी करूं।”

पिता ने उसे समझाने-बुझाने की कोशिश की, मगर अल्तीन-साका अपनी बात पर

अड़ा रहा। वह उबीर से नहीं डरता और इसलिए वह जायेगा और अरुण जायेगा। किसी तरह भी उसके इरादे को बदलना मुमकिन नहीं था।

सो पिता ने कहा -

“अगर तुम यही चाहते हो, तो ऐसा ही सही। अब घोड़ों के झुंड के पास जाओ, वहां अपना फंदा घुमाओ और लगाम हिलाओ। ओ भी घोड़ा भागकर सबसे पहले तुम्हारे पास आये, तुम उसी पर सवार हो जाना।”

अल्तीन-साका घोड़ों के झुंड के करीब पहुंचा, उसने अपना फंदा घुमाया और लगाम हिलायी। तभी एक झबरीला और मोंडी-सी चमड़ीवाला बछेड़ा भागता हुआ उसके पास आया।

अल्तीन-साका ने उसे खदेड़ दिया और फिर पिता के पास जाकर पूछा -

“पिताजी, मैं किस घोड़े पर सवारी करूं?”

“क्या मैंने तुम से कहा नहीं था कि अपना फंदा घुमाओ और लगाम हिलाओ!” पिता ने उत्तर दिया।

अल्तीन-साका फिर मैदान में गया जहां घोड़े खर रहे थे। उसने फंदा घुमाया और लगाम हिलायी। फिर से वही बछेड़ा भागता हुआ आया।

“लगता है कि मुझे इसी बछेड़े पर सवार होना पड़ेगा,” अल्तीन-साका ने अपने मन में कहा।

उसने बछेड़े को हाथ लगाया तो उसकी गन्धी और झबरीली चमड़ी उतर कर गिर गई। अल्तीन-साका ने लगाम डाली तो बछेड़ा मजबूत और चुस्त बन गया। वह उसे बाड़े से बाहर ले गया तो वह एक हट्टे-कट्टे और शानदार घोड़े में बदल गया। वह उसपर सवार हुआ तो उसने झुंड में सभी घोड़ों से बढ़िया और सुन्दर घोड़े का रूप धारण कर लिया।

घोड़े ने अल्तीन-साका से पूछा -

“किछर जाने की ठानी है तुम ने, अल्तीन-साका?”

“अपने पुराने डेरे पर, अपनी सोने की कौड़ी लाने के लिए,” अल्तीन-साका ने जवाब दिया।

“उबीर वहां तुम्हारा इन्तजार कर रही है,” घोड़े ने कहा। “वह तुम से यह कहेगी कि तुम घोड़े से नीचे उतरकर अपनी कौड़ी उठा लो। मगर तुम उसकी बात पर काम नहीं लेना। कारण कि अगर तुम मेरी पीठ से नीचे उतरोगे, तो वह तुम्हें खा जायेगी। तुम बाज की तरह जल्दी से नीचे को झुककर अपनी कौड़ी उठा लेना।”

अल्तीन-साका उछलकर घोड़े पर सवार हुआ और उसने पुराने डेरे की ओर अपना घोड़ा बढ़ा दिया। वहां पहुंच कर उसने इधर-उधर देखा तो उबीर को अलाब के पास बैठी हुई हाथ तापते पाया।

अल्तीन-साका ने कहा -

“नानी, मुझे मेरी सोने की कौड़ी लौटा दो।”

“तुम्हारी कौड़ी नीचे जमीन पर पड़ी है, बेटे,” उबीर ने जवाब दिया। “अपने घोड़े से उतरकर उसे उठा लो। मेरी पीठ में इतना दर्द है कि मैं उठ नहीं सकती।”

अल्तीन-साका का घोड़ा जमीन पर झुक गया, अल्तीन-साका ने अपनी सोने की कौड़ी उठाई और घोड़े को सरपट दौड़ा ले चला। उबीर पुस्ते से चीखती हुई उठी। उसने एक बार झूका तो एक मोटा-सा काला घोड़ा उसकी बगल में आकर खड़ा हो गया, दूसरी बार झूका तो लगामें नमूदार हो गईं। उबीर उछलकर अपने घोड़े पर सवार हुई और अल्तीन-साका के पीछे अपना घोड़ा तेजी से दौड़ाने लगी।

अल्तीन-साका का कुम्भेत घोड़ा और उबीर का मजबूत काला घोड़ा दोनों ही हवा से बातें कर रहे थे। उबीर अल्तीन-साका के बहुत नजदीक पहुंच गई थी और उसे पकड़ ही लेनेवाली थी कि उसके घोड़े ने ठोकर खाई, वह जोर से हिनहिनाया और बुरी तरह लंगड़ाता हुआ पीछे रह गया।

उबीर ने लगामें खींचीं और अगल-बगल खोर की एड़ लगाई, मगर घोड़ा अधिकाधिक धीमा होता गया। उबीर तो आपे से बाहर हो गई। उसका पारा इतना चढ़ा कि वह अपने घोड़े को खा गई और पैदल अल्तीन-साका के पीछे दौड़ने लगी।

उबीर दौड़ती गई, दौड़ती गई, अपने अगल-बगल और पीठ पर मुक्के मारकर अपनी रफ्तार बढ़ाती गई। वह कुम्भेत घोड़े के बराबर आ पहुंची और उसने उसकी बायीं टांग को काट छाया। मगर कुम्भेत घोड़ा अपनी तीन टांगों पर ही सरपट दौड़ता रहा। उबीर भी पीछे न रही। वह फिर से कुम्भेत के बराबर आ पहुंची और उसने उसकी बायीं टांग काट छापी। घोड़े ने अपनी बची-बचायी शक्ति बटोरी और अल्तीन-साका को उबीर से दूर रखने के लिए बढ़ता चला गया। मगर अब उसकी ताकत जवाब दे गई थी और एक झील के किनारे आकर उसने कहा -

“मैं अब और नहीं दौड़ सकता। मैं उबीर से बचने के लिए झील में आ छिपता हूं और तुम झटपट उस बसूत वृक्ष पर आ चढ़ो। जब मेरी टांगों के घाव ठीक हो जायेंगे तो मैं तुम्हें आगे ले चलूंगा।”

इतना कहकर घोड़ा झील में गोता लगा गया। अल्तीन-साका झटपट झील के तट

वाले बलूत पर चढ़ गया और उसने अपने को सबसे ऊपरवाली शाखाओं के बीच छिपा लिया।

उबीर दौड़ती हुई आई। अल्तीन-साका को बलूत वृक्ष पर छिपा देखकर वह चिल्लाई -

“बच्चू, अब तुम मुझ से बचकर कहां जाओगे! मैं तुम्हें नीचे घसीटकर हड़प जाऊंगी!”

उसने धूका तो एक कुल्हाड़ा उसके सामने आ गया। तब उसने अपना एक बांत उखाड़कर उस पर कुल्हाड़े को साम देना शुरू किया और उसे खूब अच्छी तरह से तेज कर लिया। अब वह सगी बलूत पर कुल्हाड़े बरसाने। वृक्ष के टुकड़े कट-कटकर इधर-उधर गिरने लगे।

एक लोमड़ी यह आवाज सुनकर मागती हुई आई।

“नानी, तुम बलूत का वृक्ष क्यों काट रही हो?” लोमड़ी ने पूछा।

“तुम्हें नजर नहीं आ रहा कि यहां कौन बैठा है?” उबीर ने जवाब दिया। “मैं बलूत के वृक्ष को काटूंगी और सोने की कौड़ीवाले अल्तीन-साका को पकड़कर खा जाऊंगी।

लोमड़ी ने ऊपर की ओर नजर दौड़ाई और बलूत की चोटी पर एक सुन्दर नौजवान को बैठे हुए देखा। उसे नौजवान पर बया आ गई और वह बोली -

“नानी, तुम बूढ़ी हो! तुम्हें अपने आपको इस तरह धकाना नहीं चाहिए। साओ, मैं काट दूँ बलूत का वृक्ष।”

“नहीं, नहीं!” उबीर ने कहा। “मैं खुद इस वृक्ष को काटूंगी और अल्तीन-साका को खाऊंगी।”

मगर लोमड़ी भी आसानी से माननेवाली नहीं थी। वह बोली -

“मैं बलूत को काट दूंगी और तब उसे खा लेना।”

उबीर ने लोमड़ी को अपना कुल्हाड़ा दे दिया, बलूत के नीचे जा लेटी और लेटते ही सो गई। वह खरटि से रही थी और उसकी नाक तथा मुंह से चिंगारियां और धुआं निकल रहा था।

उबीर सोई रही और इसी बीच लोमड़ी ने कुल्हाड़ा और वह बांत झील में फेंक दिया जिससे चुड़ैल ने कुल्हाड़ा तेज किया था। उसने वृक्ष के सभी टुकड़े उठाये, उन्हें उनकी जगह पर टिकाया, उन टुकड़ों पर धूका और उन्हें चाटा: वे टुकड़े फौरन जहां के तहां अच्छी तरह चिपक गये और वृक्ष फिर पहले जैसा ही हो गया।

तब लोमड़ी ने अल्तीन-साका को नमस्कार किया और वहां से भाग गई।

उबीर आगी, उसने बलूत पर नजर डाली और बोली -

“यह क्या मामला है! बलूत तो फिर ऐसे पूरे का पूरा खड़ा है मानो मैंने इसे छुआ ही न हो!”

अब वह लोमड़ी को कोसने और सभी तरह की गालियां देने लगी।

उसने फिर से धूका और एक कुल्हाड़ा नमूदार हो गया। अपने मुंह से एक और बांत उखाड़कर वह कुल्हाड़े को तेज करने लगी। कुल्हाड़ा तेज करते हुए वह ऊपर को देखती और अल्तीन-साका से कहती रही -

“मैं बलूत को काट गिराऊंगी, तुमको खा जाऊंगी!”

जब उसका कुल्हाड़ा तेज हो गया तो उबीर फिर से बलूत को काटने लगी। टुकड़े उड़-उड़कर सभी ओर गिरने लगे। वृक्ष कांपने और डोलने लगा। कुल्हाड़े का एक और बार पड़ेगा और वह नीचे आ गिरेगा!

सभी अचानक एक और लोमड़ी दौड़ी हुई आई।

“क्या कर रही हो, नानी?” उसने उबीर से पूछा।

“बलूत को काट रही हूँ।”

“किसलिए?”

“सोने की कौड़ीवाले इस अल्तीन-साका को पकड़ना और खाना चाहती हूँ।”

लोमड़ी ने कहा -

“तुम्हें अपने को इतना अधिक कष्ट नहीं देना चाहिए। साओ, मैं काट दूँ बलूत को।”

“नहीं, नहीं,” उबीर बड़बड़ाई, “मैं खुद ही कर लूंगी यह काम। मैं स्वयं ही अल्तीन-साका को खाना चाहती हूँ।”

“सो तो तुम खाओगी ही,” लोमड़ी ने जवाब दिया। “मैं तो सिर्फ बलूत को काट दूंगी।”

“नहीं!” उबीर चिल्लाई। “मैं तुम्हें अपना कुल्हाड़ा नहीं दूंगी। यहां एक और लोमड़ी भी आई थी जिसने मदद करने का वचन दिया था, मगर धोखा देकर भाग गई।”

“किस रंग की थी वह लोमड़ी?” इस लोमड़ी ने पूछा।

“लाल रंग की।”

“तुम्हें लाल लोमड़ियों पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए, नानी,” लोमड़ी

ने कहा। "सभी लाल लोमड़ियां झूठी होती हैं। सिर्फ हम काली लोमड़ियों पर ही एतबार किया जा सकता है।"

उबीर ने ध्यान से देखा। हां, वह वास्तव में ही काली लोमड़ी थी। चुनांचे उसने उसे अपना कुल्हाड़ा दे दिया और जाकर लेट रही। वह प्रौरन खरटि लेने लगी और उसके मुंह तथा नाक से चिंगारियां और धुआं निकलने लगा।

काली लोमड़ी ने उबीर का कुल्हाड़ा और दांत झील में फेंक दिया, वृक्ष के टुकड़ों को उनकी जगह पर टिकाया, उनपर धूका और उन्हें चाटा। बस कमास ही हो गया, वे वृक्ष के साथ चिपक गये और वृक्ष फिर से पहले जैसा हो गया।

इसके बाद लोमड़ी ने अल्तीन-साका को नमस्कार किया और भाग गई।

कुछ ही देर बाद उबीर आगी। वह बलूत को देखकर चिल्लाई -

"अरे, यह क्या मामला है? बलूत फिर से जैसे का तैसा हो गया!"

उबीर ने धूका और फिर से एक कुल्हाड़ा नमूदार हो गया। उसने अपने मुंह से तीसरा दांत निकाला और लगी कुल्हाड़े को तेज करने। जब कुल्हाड़ा अच्छी तरह से तेज हो गया तो वह फिर से बलूत को काटने लगी। काम करते हुए वह अल्तीन-साका और लोमड़ी को कोसती जाती थी, उन्हें गन्दी से गन्दी गालियां देती जाती थी।

आखिर बलूत आघा कट गया और अल्तीन-साका ने नीचे देखकर अपने आप से कहा।

"अब उबीर मुझे पकड़ लेगी।"

तभी अचानक एक सफ़ेद लोमड़ी भागती हुई बलूत के पास आई और उबीर से बोली -

"नानी, लाओ मैं बलूत को काटने में तुम्हारी मदद कर दूँ।"

"अगर अपनी जान की ख़तर चाहती हो, तो भाग जाओ यहाँ से!" उबीर चिल्लाई।

"लोमड़ियां मुझे पहले ही दो बार धोखा देकर भाग गई हैं।"

"वे किस रंग की थीं, नानी?" लोमड़ी ने पूछा।

"एक लाल थी और दूसरी काली," उबीर ने जवाब दिया।

"तुम्हें लाल और काली लोमड़ियों पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए, नानी," लोमड़ी ने कहा। "वे बहुत ही झूठी होती हैं। बस, हम सफ़ेद लोमड़ियों पर ही भरोसा किया जा सकता है। मैं तुम्हें धोखा नहीं दूंगी, तुम्हारी मदद करूंगी।"

उबीर ने लोमड़ी पर विश्वास किया और कुल्हाड़ा उसे पकड़ाकर ख़ुब सो रही। लोमड़ी ने कुल्हाड़े और दांत को, जिससे थुईल ने कुल्हाड़ा तेज किया था, झील में फेंक

दिया, झटपट वृक्ष के टुकड़े उठाये, उन्हें उनकी जगह पर टिकाया, उन पर धूका और उन्हें चाटा। वे जहाँ के तहाँ चिपक गये।

लोमड़ी ने अल्तीन-साका से कहा -

"सोने की कौड़ीवाले अल्तीन-साका, मैं तीन बार तुम्हारी मदद कर चुकी हूँ। मैंने अपनी ख़ास को पहले काले और फिर सफ़ेद रंग से रंगा ताकि उबीर मुझे पहचान न पाये। अब मैं तुम्हारे लिए और कुछ नहीं कर सकती।"

वह अल्तीन-साका को नमस्कार कर भाग गई।

उसके जाने के कुछ ही देर बाद उबीर जाग गई।

"यह मैं क्या देख रही हूँ!" वह चिल्लाई। "यह तो ऐसे लगता है मानो मैंने वृक्ष को छुआ ही न हो!"

उसने धूका और एक कुल्हाड़ा नमूदार हुआ। उसने अपना आखिरी दांत उखाड़ा और कुल्हाड़े को तेज करने लगी। अब कुल्हाड़ा तेज हो गया तो वह बलूत को काटने और साथ ही साथ यह बढ़ावदाने लगी -

"अब मैं और किसी से मदद नहीं लूंगी! अब मैं खुद ही यह काम करूंगी!"

बलूत के टुकड़े इधर-उधर गिरने लगे, वह हिलने-डोलने और चूँ-चर्र करने लगा। ऐसा प्रतीत होने लगा कि वह गिरा, अब गिरा।

अल्तीन-साका वहाँ बैठा था। उसने महसूस किया कि अब उबीर उसे अवश्य ही पकड़ लेगी।

"अब मैं क्या करूँ?" वह सोचने लगा।

इसी समय एक कौआ उड़ता हुआ आया और बलूत की चोटी पर आकर बैठ गया।

"मेरे प्यारे दोस्त, कौबे, मेरी एक बिनती मानो," अल्तीन-साका ने गिड़गिड़ाकर कहा। "तुम हर जगह उड़ा करते हो, हर जगह जाते हो। उड़कर हमारे नये खेमे में जाओ, मेरे दोनों कुत्तों - अक्कूसाक और अक्तिरनाक - से मिलो और उनसे कहो कि वे झटपट यहाँ पहुँचें क्योंकि मुझे उनकी मदद की बड़ी ख़रूरत है।"

"मैं नहीं जाने का!" कौबे ने जवाब दिया। "मैं तो इसी इन्तज़ार में हूँ कि उबीर तुम्हें पकड़ ले और तब मुझे भी तुम्हारे तन का कुछ हिस्सा मिल जायेगा।"

और वह एक शाखा पर आराम से बैठकर प्रतीक्षा करने लगा।

अल्तीन-साका ने यह देखने के लिए सभी ओर नज़र दौड़ाई कि उसे कहीं से मदद मिल सकती है या नहीं। उसी समय एक झ्यामा उड़ती हुई आयी।

“इयामा, मेरी प्यारी, मेरी एक बिनती मानो! तुम तो हर जगह उड़ा करती हो, हर जगह जाती हो। उड़कर हमारे नये छेमे में जाओ और मेरे कुत्तों – अक्कूलाक और अक्तिरनाक – से कहो कि वे जल्दी से यहां आ जायें, क्योंकि मुझे उनकी मदद की जरूरत है।”

“मैं नहीं जाने की,” इयामा ने जवाब दिया। “मैं तो यह चाहती हूं कि तुम उबीर के हत्ये चढ़ जाओ। तब मेरे पल्ले भी कुछ पड़ जायेगा।”

अल्तीन-साका बहुत उबास हो गया और उसका दिल बैठ गया।

“अब मेरी आखिरी घड़ी निकट है,” उसने सोचा।

अचानक गौरियों का एक दल सामने आया और उसके सिर के ऊपर से उड़ता हुआ गुजरने लगा।

अल्तीन-साका ने उनसे कहा –

“मेरी गौरियो, मेरी प्यारी सखियो, तुम मेरी एक बिनती मानो! तुम उड़कर हमारे नये छेमे में जाओ, मेरे कुत्तों – अक्कूलाक और अक्तिरनाक – को ढूंढो और उन्हें बताओ कि बूढ़ी चुड़ैल उबीर तुम्हारे मालिक को खाना चाहती है।”

“हम उन्हें जरूर ढूंढेंगी! हम उन्हें अवश्य बतायेंगी! हम उन्हें अवश्य बतायेंगी!” गौरियों ने अपनी चूं-चूं की भाषा में कहा और वे बहुत ही तेजी से अल्तीन-साका के छेमे की ओर उड़ गईं।

चिड़ियां छेमे में पहुंचीं और उन्होंने अल्तीन-साका के कुत्तों को बहुत गहरी नींव में सोये हुए पाया। वे अपने मालिक की खोज में इधर-उधर दौड़-धूप करते हुए बेहद थक गये थे और अब मुर्दों की तरह सोये पड़े थे। चिड़ियां कुत्तों को जगाने के लिए उनके कानों पर ठोंगे मारने लगीं। फिर उन्होंने जोरों से पंख फड़फड़ाये, चीं-चीं की।

“उठो अक्कूलाक, उठो अक्तिरनाक,” वे शोर मचाने लगीं। “जल्दी से भागकर झील के किनारे वाले बलूत के पास पहुंचो और मालिक को बचाओ। उबीर उसे खाना चाहती है।”

अक्कूलाक और अक्तिरनाक चौंककर जागे और झील की ओर भागे।

चिड़ियां हवा में आगे-आगे उड़ रही थीं और कुत्ते धूल के बावल उड़ाते हुए उनके पीछे-पीछे भाग रहे थे।

उबीर ने धूल देखी तो अल्तीन-साका से बोली –

“सोने की कौड़ीवाले अल्तीन-साका, जरा उधर तो देखो! रास्ते पर वे धूल के बावल कैसे हैं?”

“वे मेरे लिए खुशी और तुम्हारे लिए मुसीबत ला रहे हैं!” अल्तीन-साका ने जवाब दिया।

उबीर ने कुत्तों के पैरों की धप-धप सुनी तो बोली –

“तुम सुन रहे हो वह गड़गड़ाहट, सोने की कौड़ीवाले अल्तीन-साका, यह क्या है?”

“वह मेरे लिए खुशी और तुम्हारे लिए मुसीबत ला रही है,” अल्तीन-साका ने जवाब दिया।

इसी समय अक्कूलाक और अक्तिरनाक भागते हुए वहां पहुंच गये। वे उबीर पर झपटे और उसे काटने लगे।

उबीर डर गई। उसने अपना कुल्हाड़ा झील में फेंका और खुद भी पानी में कूद गई।

कुत्तों ने अल्तीन-साका से कहा –

“हम भी उबीर के पीछे झील में छलांग लगा रहे हैं। तुम यहीं बैठे रहकर पानी को देखो। अगर हम उबीर को मार डालेंगे तो झील का पानी काला हो जायेगा। अगर वह हमें मार डालेगी तो झील का पानी लाल हो जायेगा।”

इतना कहकर वे झील में कूद गये।

झील के पानी में भारी उबल-पुथल होने लगी, उसमें बड़ी-बड़ी लहरें उठने लगीं। अल्तीन-साका देख रहा था। उसे पानी लाल होता दिखाई दिया।

“उबीर ने मेरे कुत्तों को मार डाला,” उसने सोचा।

उसने फिर ध्यान से पानी की ओर देखा। अब वह काला हो गया था।

अल्तीन-साका खुशी से फूला न समाया। वह जोर से ठठाकर हंसा और बलूत से नीचे उतर आया। अक्कूलाक और अक्तिरनाक पानी से बाहर आ पानी झाड़ने लगे।

“झील का पानी पहले लाल क्यों हुआ था?” अल्तीन-साका ने पूछा।

अक्तिरनाक ने जवाब दिया –

“क्योंकि उबीर हम पर हावी होने लगी थी और उसने मेरा एक कान भी काट लिया था। मगर तभी हमने उसका क्रिस्ता तमाम कर दिया।”

कुत्तों के बाव कुम्भैत घोड़ा बाहर आया।

“सोने की कौड़ीवाले अल्तीन-साका,” घोड़े ने कहा, “जाओ, मेरी पीठ पर सवार हो जाओ, मैं तुम्हें घर ले चलता हूं।”

इस तरह अल्तीन-साका सही-सलामत छेमे में लौट आया। उसके मां-बाप को बेहद खुशी हुई। उन्होंने बहुत बड़ी दावत दी जिसमें अपने सभी सगे-सम्बन्धियों, यार-दोस्तों और जान-पहचानवालों को बुलाया। नौ दिन तक वे खाते-पीते और मौज मनाते रहे!

तीरंदाज और त्सारकिन-खान

काल्मिक लोक-कथा



पुराने जमाने में त्सारकिन-खान के राज्य में एक तीरंदाज रहता था, बहादुर, खूबसूरत और मजबूत काठी का। एक दिन वह किसी झील के तट पर जंगली परिन्दों का शिकार करने गया। वहाँ उसने सुनहरे सिरोंवाली तीन हंसिनियाँ देखीं। तीरंदाज फ़ौरन ज़मीन पर लेट गया, उसने झाड़-झंखाड़ के बीच अपने को छिपा लिया और आगे घटनेवाली घटना का इन्तज़ार करने लगा।

सुनहरे सिरोंवाली हंसिनियाँ तट पर उतरतीं, उन्होंने अपने पंख उतारे और वे तीन सुन्दर युवतियों में बदल गयीं। ये युवतियाँ नहाने के लिए पानी में गईं। तीरंदाज पंखों के नज़दीक गया, उसने एक हंसिनी के पंख उठा लिये और फिर से झाड़-झंखाड़ के बीच जा छिपा।

हंस-कन्याओं ने स्नान किया, वे पानी से बाहर निकलीं और उनमें से दो ने फ़ौरन अपने पंख लगा लिये, मगर तीसरी को उसके पंख न मिले। पंखोंवाली दोनों हंसिनियाँ हवा में उड़ती हुई अपनी बहन के पंखों की तलाश करने लगीं, पर उन्हें वे कहीं नज़र नहीं आये।

“तुम्हारी किस्मत में ऐसा ही लिखा है, बहन!” वे उड़ती हुई चिल्लाईं और जिधर से आई थीं, उधर ही उड़ गईं।

हंस-कन्या अकेली रह गई। तट पर इधर-उधर दौड़ती हुई अपने पंखों की खोज करने और फूट-फूटकर रोने लगी।

“ओ कोई मेरे पंख खोजकर उन्हें मुझे लौटा देगा, अगर वह गरीब होगा तो मैं उसे मालामाल कर दूंगी और अगर बक्सूरत होगा तो उसे खूबसूरत बना दूंगी। मैं उसकी मुंहमांगी मुराद पूरी करूंगी... उसकी हर कामना पूरी करूंगी!” उसने कहा।

करुणाजनक सिसकियाँ लेते और तट पर इधर-उधर दौड़ते हुए वह यही बोहराती रही।

यह सुनकर तीरंदाज झाड़ियों के बीच से बाहर आया और बोला—

“रोओ-धोओ नहीं, हंस-कन्या! इधर आओ, मेरे पास हैं तुम्हारे पंख!”

सुन्दर तीरंदाज के हाथों में अपने पंख देखकर हंस-कन्या बहुत खुश हुई और झेंपती-झर्माती उसके पास गई।

“मेरे भाई,” हंस-कन्या ने कहा, “तुमने मेरे पंखों को खोजकर मुझ पर बड़ी मेहरबानी की है। अब एक मेहरबानी और करो कि उन्हें मुझे लौटा दो। बदले में तुम जो भी चाहोगे, मैं तुम्हें वही दूंगी, तुम्हारी मुंहमांगी मुराद पूरी करूंगी!”

“मुझे तो तुम्हारी ही जरूरत है, मैं और कुछ नहीं चाहता,” तीरंदाज ने जवाब दिया। “तुम मेरी पत्नी बनने को राजी हो?”

हंस-कन्या ने तीरंदाज की ओर देखा। वह जवान लम्बा-तडंगा और खूबसूरत था। वह धीरे से बोली—

“हां।”

तब तीरंदाज ने उसका हाथ पकड़ा, उसे खानाबदोशों के उस खेमे में ले गया जहां वह रहता था। वहां उसने उससे शादी कर ली। तीरंदाज के खेमे में बहुत ही गरीबी थी, मगर वे एक-दूसरे को बहुत प्यार करते थे, घड़ी भर के लिए भी एक-दूसरे की नज़र से ओझल होना या अलग होना सहन नहीं कर सकते थे।

कुछ समय बीता तो त्सारकिन-खान को पता चला कि उसके तीरंदाज की पत्नी बहुत ही सुन्दर है, चांद का टुकड़ा है। खान के मन में जिज्ञासा जगी। यह जानने के लिए कि सचमुच ही तीरंदाज की पत्नी इतनी सुन्दर है, वह खुद उसके खेमे में गया। वह उसे देखकर डंग रह गया और उसने यह मान लिया कि जिन लोगों ने उसकी खूबसूरती की चर्चा की थी, उन्होंने बात को बढ़ाया-चढ़ाया नहीं था। ऐसी सुन्दरी ने तो पहले कभी धरती पर जन्म ही नहीं लिया था। वह तो जैसे सूरज की बेटी लगती

थी ! आंखें उसे देखते-देखते कभी थकती नहीं थीं, सारे राज्य में उसकी मिसाल खोजना मुमकिन नहीं था।

हस-कन्या के रूप से अपनी आंखें सेंकने के बाद त्सारकिन-खान अपने महल में लौटा। उसने फ़ौरन अपने दारखानों यानी वजीरों और सलाहकारों को बुलाया, बढ़िया खान-पान से उनका खूब आदर-सत्कार किया और तब बोला -

“ मेरे वजीरों और सलाहकारों, मैं आपको अपनी जिन्दगी की तरह प्यार करता हूँ। मैं आप से एक सलाह लेना चाहता हूँ। ”

“ हम खुशी से आपको सलाह देंगे, हमारे खान ! ” सभी वजीरों और सलाहकारों ने एक स्वर से कहा।

त्सारकिन-खान बोला -

“ मेरे एक तीरंदाज की बीवी इतनी सुन्दर है कि पृथ्वी पर उसके समान खूबसूरत औरत कभी थी ही नहीं। उसकी मिसाल ढूँढ़ पाना मुमकिन नहीं, बुनिया में कहीं उसका जवाब नहीं है, वह सभी से बढ़-चढ़कर है। ”

त्सारकिन-खान ने तीरंदाज की बीवी के अब्मुत रूप, उसके सुन्दर चेहरे-मोहरे, उसकी मतवाली खाल, प्यारी आंखों और चोटी में गुंथे हुए लम्बे बालों का बखान किया।

“ और सूरज की किरणों के समान यह सुन्दर नारी एक मामूली-से तीरंदाज की बीवी है, ” उसने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा। “ मुझे यह सलाह दें कि मैं उसे कैसे हासिल कर सकता हूँ। ”

कुछ वजीरों-सलाहकारों ने सोच-विचारकर कहा -

“ उसे चुराकर चोरी-चोरी महल में रख लीजिए। ”

दूसरों ने और भी ज्यादा विमारा लड़ाया और सलाह दी -

“ तीरंदाज को मारकर उससे शादी कर लीजिए। ”

कुछ औरों ने सुझाव दिया -

“ तीरंदाज की हत्या न करवाइये बल्कि उसे अपने राज्य से निकाल दीजिए। तब आप किसी तरह की परेशानी के बिना उसे अपनी पत्नी बना सकेंगे। ”

जब वे सभी अपनी-अपनी बात कह चुके तो सब से बड़ा वजीर, जो खान के दायें हाथ बैठा था, खड़ा हुआ और बोला -

“ इन सभी सलाहों में कोई समझदारी की बात नहीं है, ” उसने कहा। “ किसी औरत को उसके घर से चुराकर चोरी-चोरी खान के महल में रखना सम्भव नहीं। कारण कि बेरसबेर लोगों को इसका पता चल जायेगा। तीरंदाज को मारकर उसकी बीवी से

शादी करना छतरनाक होगा, क्योंकि लोग विद्रोह कर सकते हैं और तब इस मुसीबत का कोई अन्त नहीं होगा। तीरंदाज को देश से निकालने में कोई तुक नहीं, क्योंकि वह चोरी-छिपे आकर अपनी बीवी को ले जायेगा। नहीं, नहीं, हमें चालाकी से काम लेना चाहिए। ”

“ तो आप क्या सलाह देते हैं ? ” त्सारकिन-खान ने पूछा।

बड़े वजीर ने जवाब दिया -

“ मैंने सुना है कि सूर्यास्त के देश में एक चौड़ी नदी के छड़े और खड्डोंवाले तट पर एक शेरनी अपने बच्चों के साथ रहती है। लोग कहते हैं कि वह शेरनी पृथ्वी पर पाये जानेवाले किसी भी दरिन्दे से ज्यादा हिंसक और भयानक है। हमारे खान, आप तीरंदाज को उसका कुछ दूध लाने का हुक्म दें। इस तरह वह लौटकर कभी नहीं आयेगा, क्योंकि शेरनी अवश्य ही उसके टुकड़े कर डालेगी। तब आप आसानी से उसकी बीवी हासिल कर सकेंगे। तीरंदाज को इस काम के लिए मेजना कुछ मुश्किल नहीं होना चाहिए, क्योंकि वह अपने खान का हुक्म टालने की हिम्मत नहीं कर पायेगा। ”

बड़े वजीर की यह चालाकी मरी सलाह त्सारकिन-खान को भी पसन्द आई और उसके सलाहकारों को भी।

“ यह बड़ी अच्छी सलाह है ! ” उन्होंने कहा।

त्सारकिन-खान ने बड़े वजीर की सलाह पर पूरी तरह अमल किया। उसने अपनी सक्त बीमारी का ढोंग किया और तीरंदाज को बुलवा भेजा। तीरंदाज आया तो खान ने जोर से आँहें भरते और कराहते हुए उससे कहा -

“ जैसा कि तुम अपनी आंखों से देख रहे हो, एक बहुत ही घातक और छतरनाक बीमारी ने मुझे आ बजोचा है। मेरी बीमारी की दवा सूर्यास्त के देश में मिल सकती है। वहां एक चौड़ी नदी के छड़े और खड्डोंवाले तट पर एक बहुत बड़ी शेरनी अपने बच्चों के साथ रहती है। सिर्फ उसी शेरनी का दूध मेरा स्वास्थ्य और शक्ति लौटा सकता है। फ़ौरन जाकर मेरे लिए कुछ दूध लाओ। ”

इतना कहकर त्सारकिन-खान और भी जोर से कराहने और ऐसे जाहिर करने लगा मानो दर्द के मारे उसकी जान निकली जा रही हो।

तीरंदाज अपने छेमे में लौटा और लम्बे सफ़र की तैयारी करने लगा। उसने अपने सबसे बढ़िया कपड़े पहने और सबसे अच्छे हथियार सजा लिये।

“ तुम कहां जा रहे हो ? ” उसकी पत्नी ने पूछा।

“ खान बहुत सक्त बीमार है। वह सूर्यास्त के देश की एक चौड़ी नदी के छड़े

और खड़ोंवाले तट पर रहनेवाली शेरनी का दूध पीकर ही स्वस्थ हो सकता है। उसने मुझे फ़ौरन वहां जाने का हुक्म दिया है। मेरा मन तो जाने को बिल्कुल नहीं करता, मगर मैं उसका हुक्म टाल नहीं सकता।”

तीरंदाज की बीवी ताड़ गई कि त्सारकिन-खान किसी छिपे हुए मक़सद से उसके पति को शेरनी का दूध लाने के लिए भेज रहा है और उसके मन में जरूर कोई बुराई छिपी हुई है। उसने पीले फूलोंवाला अपना रुमाल पति को देते हुए कहा—

“इस रुमाल को हमेशा अपने साथ रखना, क्योंकि यह तुम्हें मौत से बचायेगा। शेरनी जब तुम पर झपटने लगे तो तुम इसे निकालकर लहरा देना। वह फ़ौरन शांत हो जायेगी और तुम्हें दूध दुह लेने देगी। वह मुझे जानती है, क्योंकि मेरे घर में रह चुकी है।”

तीरंदाज ने पीले फूलोंवाला रुमाल लिया, घोड़े पर जीन कसा और अपनी जवान बीवी से विदा ले घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ सूर्यास्त के देश की ओर चल दिया।

वह बादलों से नीचे मगर खानाबदोशों के खेमों से ऊपर अपने घोड़े को उड़ाये लिये जा रहा था, पहाड़ियों और खड़ों, खारी झीलों और मुरभुरी बालू के मैदानों को पीछे छोड़ता हुआ। वह खान का आदेश पूरा कर अपनी पत्नी के पास लौटने को इतना उतावला था कि दिन को खाने-पीने और रात को सोने के लिए भी रास्ते में कहीं नहीं ठहरा और रात-दिनों का हिसाब तक भूल गया।

इस तरह बहुत दिनों तक उसका सफ़र जारी रहा, आखिर वह सागर जैसी चौड़ी नदी के खड़े तट पर पहुंचा। वह मयानक शेरनी यहीं अपने बच्चों के साथ रहती थी।

शेरनी ने तीरंदाज को इतनी दूरी से देखा जो एक दिन के सफ़र द्वारा तय की जा सकती है। शेरनी जोर से गरजी और तीरंदाज की ओर लपकी। उसने उसपर झपटना और उसके टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहा। मगर तीरंदाज ने बिजली की तेज़ी से पीले फूलोंवाला वह रुमाल निकाल कर लहराया जो उसे उसकी बीवी ने दिया था। शेरनी बुत बनी खड़ी रह गई और उसने फ़ौरन गरजना बन्द कर दिया।

“बहादुर तीरंदाज, यह बताओ कि तुम्हें यह रुमाल कहां से मिला?” उसने पूछा।

“मेरी पत्नी ने दिया है,” तीरंदाज ने जवाब दिया।

“अच्छा तो अब यह बताओ कि तुम यहां किसलिए आये हो?” शेरनी ने पूछा।

“मेरा खान बहुत सख्त बीमार हो गया है,” तीरंदाज ने उसे बताया, “और उसने मुझे तुम्हारा थोड़ा-सा दूध लाने का हुक्म दिया है।”



“अगर ऐसी ही बात है तो झटपट अपने घोड़े से नीचे उतरो। मैं तुम्हें अपना दूध बूह लेने दूंगी। तुम अगर चाहो तो अपनी मशक दूध से भर सकते हो।”

तीरंदाज घोड़े से नीचे उतरा और उसने शेरनी को बूह लिया। जब उसकी मशक भर गयी तो उसने उसे चीन के साथ अच्छी तरह कस लिया, शेरनी को धन्यवाद दिया और उसके स्वास्थ्य की कामना की।

“मैं तुम्हारे लिए भी ऐसी ही कामना करती हूँ,” शेरनी ने कहा। “तुम अपनी पत्नी के पास वापस जाओ, अपने खान को तन्दुरुस्ती दो। मैं तो यही चाहती हूँ कि तुम्हारी क्रिस्मत का सितारा हमेशा चमकता रहे!”

इतना कहकर शेरनी अपने बच्चों के पास लौट गई और तीरंदाज घोड़े पर सवार होकर घर की ओर चल दिया।

घर पहुंचते ही वह दूध मरी मशक लेकर खान के पास गया।

त्सारकिन-खान अब करता तो क्या! उसने इस दूध का एक घूंट पिया और बोला —

“आह, मैं अब बिल्कुल स्वस्थ हो गया हूँ!”

इसके बाद उसने तीरंदाज को विदा किया और फिर से अपने वजीरों-सलाहकारों को बुलवाया।

“मेरे बड़े वजीर ने सलाह तो बहुत अच्छी दी थी, मगर उससे काम नहीं बना,” उसने कहा। “शेरनी ने तीरंदाज के टुकड़े नहीं किये। इसके विपरीत वह तो सही-सलामत घर लौट आया है। अब मैं उसे क्या काम करने के लिए भेजूं कि वह कमी लौट कर न आये?”

वजीर और सलाहकार लगे सोचने। उन्होंने बहुत देर तक अपनी अकल लड़ाई, मगर कोई भी तरकीब उनके विचार में नहीं आई। वे तो अक्लमन्दी का एक भी शब्द नहीं कह पाये।

तब खान के बायीं ओर बैठा हुआ बड़ा वजीर उठा और बोला —

“हमने तीरंदाज को ऐसी जगह भेजा था जहां से हमने उसके कमी लौटने की उम्मीद नहीं की थी। मगर चूंकि ऐसा नहीं हुआ तो इसका सिर्फ यही मतलब है कि उससे पिंड छुड़ाने का हमें कोई उपाय मालूम नहीं है। मेरे ख्याल में तो हमारे लिए अब एक ही रास्ता बाक़ी है — हम सभी गुंडों, शोहदों और बदमाशों को इकट्ठा करें, उन्हें खूब खिलायें-पिलायें और फिर उनसे यह मालूम करें कि क्या वे तीरंदाज को मौत के घाट उतारने और खान को हमेशा के लिए उससे निजात दिलाने का कोई उपाय जानते हैं।”

“बड़े वजीर ने बढ़िया सलाह दी है, हमें ऐसा ही करना चाहिए,” सभी ने सहमति प्रकट की।

पूर्वनिश्चित दिन पर त्सारकिन-खान और उसके वजीरों-सलाहकारों ने छंटे हुए गुंडों-बदमाशों, उठाईगीरों और गलकटों को चोरी-चोरी महल में बुलवाया। उन्होंने उन्हें खूब खिलाया-पिलाया और फिर यह जानने की कोशिश की कि क्या उनमें से कोई खान को तीरंदाज से निजात दिला सकता है।

“अगर तुम में से कोई भी ऐसा नहीं है जो खान की मदद कर सकता है,” वे बोले, “तो मुमकिन है कि तुम ऐसे किसी को जानते हो जो चोरी-छिपे तीरंदाज से पिंड छुड़ाने का काम कर सकता हो?”

इतना कहकर त्सारकिन-खान और उसके वजीर-सलाहकार उन छंटे हुए लफंगों के बीच टहलते हुए उनके जवाब का इन्तजार करने लगे। मगर उन्हें कोई जवाब नहीं मिला। वे ऐसे धुप्पी साधे रहे मानो उनके मुंहों में वह मांस भरा हुआ हो जो वे खा रहे थे और इसलिए बोल न पाते हों। वजीरों-सलाहकारों ने अपना सवाल दोहराया, मगर गुंडे और लफंगे पहले की तरह ही सामोश रहे। अचानक उनमें से एक आदमी अपनी जगह से उछलकर खड़ा हो गया। वह काना या और परले दर्जे का चात्साक और मक्कार। उसने अपने चोगे के बटन खोले और छाती को ठोकते हुए चिल्लाया—

“मैं जानता हूं इसका उपाय!”

त्सारकिन-खान बहुत खुश हुआ और उसने आदेश दिया—

“तो बताओ कि हमें क्या करना चाहिए?”

काने ने कहा—

“आप तीरंदाज को भेजिए—न जाने कहां और लाने को कहिए—न जाने क्या! वह ऐसी चीज की खोज करता फिरेगा जिसकी न कोई शक्ल है न आकार और न ही जिसके मिलने का कोई स्थान। वह इसे कभी नहीं खोज सकेगा और इसलिए यहां कभी भी अपनी सूरत नहीं दिखायेगा।”

त्सारकिन-खान और उसके वजीर-सलाहकार काने की इस तरकीब से बहुत खुश हुए। उन्होंने उसे बहुत-सा इनाम देकर बिदा किया।

अपना नया हुक्म देने का कोई बहाना बनाने के लिए त्सारकिन-खान ने फिर से अपनी सख्त बीमारी का नाटक खेला। उसने तीरंदाज को बुलवाया और आहें मरते तथा कराहते हुए कहा—

“मैं फिर से बहुत सख्त बीमार हो गया हूं और तभी स्वस्थ हो सकता हूं कि अगर तुम जाओ वहां, न जाने कहां और लाओ वह न जाने क्या। सिर्फ तुम ही यह काम पूरा कर सकते हो। इसलिए फौरन जाओ और जिसकी न कोई शक्ल है, न मिलने का स्थान है, वह लेकर आओ।”

“मगर मैं कहां जाऊं और क्या लेकर आऊं?” तीरंदाज ने पूछा।

“यह मैं नहीं जानता, बिल्कुल नहीं जानता,” त्सारकिन-खान ने कहा। “मुझे तो सिर्फ यह मालूम है कि तुम ही इस काम को पूरा कर सकते हो। अगर तुम उसे नहीं ला सकोगे तो मेरी मौत यक़ीनी है।”

इतना कहकर वह बहुत ही जोर से कराहने और दर्द से बुरी तरह छटपटाने लगा।

तीरंदाज अपने खेमे में जाकर सोचने लगा कि अब मैं क्या करूं! वह तीन दिन और तीन रातों तक सोचता रहा। दिन के वक्त वह पहाड़ी की चोटी पर चढ़ जाता और रात को उसे नींव न आती। वह नमड़े की मोटी घटाई पर लेटा-लेटा करबटें बदलता और परेशान होता रहता। उसने बहुत सोचा, बहुत विमर्श लड़ाया, मगर कुछ भी उसकी समस्या में नहीं आया। फिर भी उसने अपनी पत्नी से इसकी चर्चा नहीं की, क्योंकि वह उसे चिन्तित नहीं करना चाहता था।

तीन दिन गुजर गये। तब उसने यह सोचते हुए घोड़े पर जीन कसा—

“अगर मैं अपनी नाक की सीध में चलता जाऊं, तो शायद वहीं पहुंच जाऊंगा जहां खान मुझे भेज रहा है।” वह उछलकर घोड़े पर सवार हुआ और अपनी पत्नी से बिदा लेने के लिए उसने उसे पास बुलाया।

“तुम कहां जा रहे हो?” बीबी ने पूछा।

“खान फिर से बीमार हो गया है,” तीरंदाज ने जवाब दिया। “उसने मुझे न जाने कहां जाकर न जाने क्या लाने को कहा है।”

तीरंदाज की पत्नी ने यह सुनकर कहा—

“घोड़े पर तो तुम वहां नहीं पहुंच पाओगे, पैदल जाना ही बेहतर रहेगा। यह सूत का गोला ले लो। तीन क़दम चलने के बाद इसे अपने सामने फेंक देना। जिधर यह लुढ़कता जाये, तुम उधर ही बढ़ते जाओ। यह सोने की कंधी भी लो। इसे अवश्य अपने साथ ले जाओ और हर सुबह तुम इससे अपने बाल संवारना।”

तीरंदाज ने अपनी बीबी से बिदा ली, तीन क़दम बढ़ाये और फिर सूत का गोला अपने सामने फेंक दिया। सूत का गोला बहुत ही तेजी से लुढ़कने लगा और तीरंदाज उसके पीछे-पीछे चल दिया।

उसने इस गोले के पीछे-पीछे चलते हुए खारी दलदल और रेगिस्तान, ऊंची पहाड़ियाँ और गहरे खड्ड, झीलें और मैदान पार किये, वह घने झाड़-झंखाड़ में से गुजरा। वह दिन को खाने-पीने के लिए न रुकता, रात को न सोता और बिनों, हफ्तों तथा महीनों का हिसाब भी भूल गया। आखिर सूत का गोला एक बड़े और घने जंगल में पहुंचा। तीरंदाज ने भी जंगल में प्रवेश किया और गोले के पीछे-पीछे चलता गया। वह दिन-रात चलता गया, चलता गया, न उसने आराम किया न वह सोया। सूत का गोला आगे ही आगे लुढ़कता गया। आखिर वह नमदे के एक छोटे-से छेमे के पास जाकर ऐसे घायब हो गया मानो पिघल गया हो।

“अब मैं क्या करूं?” तीरंदाज ने अपने आप से पूछा। “मेरे ख्याल में तो मुझे अन्दर जाना चाहिए।”

वह नमदे का मोटा-सा पर्वा उठाकर छेमे के अन्दर गया। वहां उसे एक टुइयां-सी नारी बिछाई वी, बहुत ही सुन्दर।

“तुम कौन हो, कहां से आये हो और किधर जा रहे हो?” उसने पूछा।

“मैं खान का तीरंदाज हूं,” तीरंदाज ने जवाब दिया, “और मुझे न जाने कहां जाना है।”

उस नारी ने तीरंदाज से और कुछ नहीं पूछा, उसे खाना खिलाया और सोने के लिए बिस्तर बिछा दिया। तीरंदाज लेटते ही गहरी नींद सो गया।

सुबह होने पर वह उठा, उसने हाथ-मुंह धोया और सुनहरी कंधी से अपने बाल ठीक करने लगा। उस टुइयां-सी नारी, उस छेमे की मालकिन ने, उसे कंधी फेरते देखा तो पूछा -

“यह सुनहरी कंधी तुम्हारे पास कहां से आई?”

“मेरी पत्नी ने दी है,” तीरंदाज ने जवाब दिया।

टुइयां-सी नारी की खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

“तब तो तुम मेरे बहनोई हो,” वह बोली। “तुम्हारी पत्नी मेरी छोटी बहन है। तुमने कल ही मुझे यह क्यों नहीं बताया?”

सभी तरह के सजीव खाने और पेय उसके सामने रखते हुए वह बोली -

“इतने लम्बे और कठिन सफ़र के बाद चरा अपने पैरों की थकान दूर करो और तीन दिन तक मेरे पास और ठहरो।”

तीरंदाज खुशी से राजी हो गया और टुइयां-सी नारी के छेमे में तीन दिन तक और ठहरा।

तीरंदाज जब आराम कर चुका तो टुइयां-सी नारी ने उससे कहा -

“अब तुम मुझे यह बताओ कि तुम कहां और क्यों जा रहे हो?”

तीरंदाज ने जवाब दिया -

“मेरा खान सख्त बीमार है और उसने मुझे आदेश दिया है कि मैं न जाने कहां जाऊं और न जाने क्या लाऊं। यह क्या चीज है मुझे मालूम नहीं। मेरी पत्नी यानी आपकी छोटी बहन ने मुझे सूत का गोला देकर कहा था कि मैं उसके पीछे-पीछे चलता जाऊं। गोला मुझे यहां ले आया। मगर अब मैं कहां जाऊं, मुझे कुछ मालूम नहीं, क्योंकि सूत का गोला घायब हो गया है।”

यह सुनकर इस छोटे-से छेमे की मालकिन, इस टुइयां-सी नारी ने तीरंदाज को रेशमी धागे का एक गोला देकर कहा -

“इस गोले के पीछे-पीछे चलते जाना। यह तुम्हें मेरी बड़ी बहन के पास से जायेगा। शायद वह तुम्हें यह बता सकेगी कि तुम उस चीज की खोज में कहां जाओ जिसकी न कोई शकल है और न मिलने का स्थान ही।”

खुनांचे तीरंदाज रेशमी गोले के पीछे-पीछे चल दिया। वह दिन को चलता, रात को चलता और आराम करने के लिए कहीं न रुकता। एक बड़े और घने जंगल को पीछे छोड़कर वह तीस दिनों और तीस रातों तक एक स्तेपी में चलता रहा और आखिर पहले जंगल के समान ही एक बड़े और अंधेरे जंगल में जा पहुंचा।

रेशमी सूत का गोला वृक्षों और झाड़ियों के बीच जाता और बाहर निकलता था तथा शाखाएं तीरंदाज के हाथों और शरीर को खरोचती थीं, उसके चेहरे पर आकर लगती थीं। मगर वह रुका नहीं, आगे ही बढ़ता चला गया।

आखिर गोला नमदे के एक छोटे-से छेमे के प्रवेश द्वार पर जाकर रुका और घायब हो गया। छेमा जंगल के मध्य में खड़ा था।

एक टुइयां-सी औरत जो बेहब खूबसूरत थी, छेमे से बाहर निकली।

“तुम कौन हो, कहां से आये हो और किधर जा रहे हो?” उसने तीरंदाज से पूछा।

“मैं राहगीर हूं,” तीरंदाज ने जवाब दिया। “मैं बहुत दूर से आया हूं और बहुत ही दूर जा रहा हूं।”

छोटे से छेमे की मालकिन, इस टुइयां-सी नारी ने तीरंदाज से और कुछ नहीं पूछा, उसे छेमे के अन्दर आने को आमन्त्रित किया, खिलाया-पिलाया और फिर उसके सोने के लिए बिस्तर ठीक कर दिया।

सुबह होने पर तीरंदाज उठा, उसने हाथ-मुंह धोया और उसी सुनहरी कंधी से बाल संवारने लगा। छोटे-से छेमे की मालकिन, उस दुइयां-सी नारी ने तीरंदाज की ओर देखकर पूछा -

“तुम्हें यह सोने की कंधी कहां से मिली?”

“मेरी पत्नी ने मुझे दी थी,” तीरंदाज ने जवाब दिया।

दुइयां-सी नारी का चेहरा खुशी से खिल उठा और उसने कहा -

“तब तो तुम मेरे बहनोई हो, क्योंकि तुम्हारी पत्नी मेरी छोटी बहन है। तुमने कल ही मुझे यह क्यों नहीं बताया?”

इतना कहकर वह घर में उपलब्ध खान-पान की सभी बड़िया चीजें निकाल लाई और तीरंदाज को खिलाते-पिलाते लगी।

जब वह पेट भर कर खा-पी चुका तो घर की मालकिन ने कहा -

“तुम अपने थके हुए पैरों की थकान अच्छी तरह से दूर करो, खूब आराम करो। कुछ समय तक मेरे पास ठहरो।”

तीरंदाज ने इस दुइयां-सी नारी के घर में तीन दिन और रातें बितायीं। चौथे दिन उसने कहा - “तुम मुझे यह बताओ कि कहां और किसलिए जा रहे हो। मुझसे कुछ भी मत छिपाना।”

तीरंदाज ने दुइयां-सी नारी को सभी कुछ बताया कि मैं कहां और किसलिए जा रहा हूं। नारी ने बहुत ध्यान से उसकी बात सुनी, फिर सिर हिलाया और बोली -

“तुम जहां जाना चाहते हो, मुझे उस जगह के बारे में कोई जानकारी नहीं। मैं अपने सहायकों से पूछती हूं।”

इतना कहकर उसने एक सुनहरा सींग लिया, छेमे से बाहर गई और उसे जोर से बजाया।

सींग में से एक सौ आठ दुखद और बासठ सुखद स्वर गूंज उठे। उसी समय स्तेपियों और जंगलों के जानवर भागते, आकाश के पक्षी उड़ते, जमीन के नीचे से कीड़े-मकोड़े रेंगते और छोटे-छोटे जीव-जन्तु फुबकते हुए आने लगे। वे सभी छोटे से छेमे की दुइयां-सी नारी के गिर्द एक घेरे में जमा हो गये।

दुइयां-सी नारी ने कहा -

“वरिन्धो, पक्षियों और कीड़ो-मकोड़ो, तुम सभी जगह जाते हो, दूर-दूर तक बीड़ते, उड़ान करते और रेंगते हो, तुम सभी से परिचित हो और सभी कुछ सुनते हो, क्या तुम में से कोई ऐसा है जो यह जानता हो कि ऐसी चीज कहां मिल सकती है

जिसका न कोई आकार है और न कोई स्थान ही? तुम में से जो यह जानता है वह आगे बढ़कर कहे, ‘मैं जानता हूं’ और जो नहीं जानते वे कहें, ‘हम नहीं जानते।’ इसके बाद तुम लोग अपने स्थानों पर वापस जा सकते हो।”

पक्षियों ने कहा -

“हम नहीं जानते!” और क्रौरन उड़ गये।

वरिन्धे बोले -

“हमें मालूम नहीं!” और क्रौरन स्तेपियों तथा जंगलों में भाग गये।

कीड़ों-मकोड़ों ने कहा -

“हम नहीं जानते!” और क्रौरन रेंगते हुए वापस चल दिये।

तब दुइयां-सी नारी ने अपना सींग उठाया और उसे फिर से बजाया। उस में से एक सौ आठ दर्बीली और बासठ खुशी की तारें निकलीं। इसके साथ ही पानी में रहने वाले सभी जन्तु - मछलियां, कछुए, मेढ़क, सांप और केकड़े उसके गिर्द जमा हो गये।

छोटे-से छेमे की दुइयां-सी मालकिन ने कहा -

“सांपो और मछलियो, तुम सभी जगह जाते हो, दूर-दूर के सागरों-महासागरों में तैरते हो, तुम सभी कुछ जानते और सुनते हो, तुम मुझे बताओ कि क्या तुम में से कोई यह जानता है कि वह चीज कहां मिल सकती है जिसका न कोई आकार है और न स्थान ही? जो यह जानता है आगे बढ़कर कहे, ‘मैं जानता हूं’, और जो नहीं जानते वे कहें, ‘हम नहीं जानते’, और फिर तुम सभी अपने-अपने स्थानों पर वापस जा सकते हो।”

“हमें कुछ मालूम नहीं! हमें कुछ मालूम नहीं! हम कुछ नहीं जानते!” मछलियां, कछुए, सांप, मेढ़क और केकड़े चित्लाये और अपनी शीलों, नवियों और दलदलों में वापस चले गये।

केवल एक बड़ा केकड़ा वापस नहीं गया। वह रेंगकर पानी में गया, फिर छेमे में लौटा और फिर पानी में चला गया।

छोटे-से छेमे की मालकिन, उस दुइयां-सी नारी ने देखा कि केकड़ा असमंजस में है तो वह बोली -

“तुम सभी केकड़ों के खान हो, है न?”

“हां,” केकड़े ने जवाब दिया।

“तुम्हें क्या मालूम है? तुमने क्या सुना है? तुम क्या कहना चाहते हो? बेशक वह सच हो या झूठ, मगर कह डालो!”

केकड़ा बोला -

“ मैं नहीं जानता कि जो कुछ मुझे मालूम है वह सच है या नहीं। ”

“ वह झूठ हो या सच, मगर तुम जो कुछ कहना चाहते हो, वह कहो जरूर, ” छोटे से खेमे की मालकिन, उस टुइयां-सी नारी ने जोर देकर कहा।

“ तो जो कोई भी उस चीज की तलाश करना चाहता है, जिसका न कोई आकार है और न कोई स्थान ही, वह दक्षिण की ओर चलता जाये। एक महीने की यात्रा के बाद वह एक बड़े-से सागर के तट पर पहुंचेगा। अगर वह सागर को पार न कर सके तो पश्चिम को मुड़ जाये और एक महीने के सफ़र के बाद ऐसी जगह पहुंच जायेगा जहां सागर बहुत छिछला है। सागर पार कर जब वह दूसरे तट पर पहुंच जायेगा तो वहां उसे एक चौड़ी सड़क दिखाई देगी। यह सड़क दक्षिण को जाती है। अगर वह एक महीने तक इसी सड़क पर चलता जाये तो उसे पूरब में एक बड़ा और घना जंगल नज़र आयेगा। इस सड़क से दो पहियों के चिह्नोंवाला मार्ग जंगल की ओर जाता है। वहां जाकर रास्ता खत्म हो जाता है। इसके आगे क्या है, मुझे मालूम नहीं। ”

इतना कहकर केकड़ा रेंगकर अपनी झील में चला गया।

“ बहादुर तीरंदाज, तुमने केकड़ों के खान के शब्द सुन लिये न? ” टुइयां-सी नारी ने पूछा।

“ हां, सुन लिये, ” तीरंदाज ने जवाब दिया।

“ तो तुम अपने सफ़र पर चल दो। शायद तुम्हें वहां वह मिल जाये तुम जिसकी तलाश में हो। अन्य किसी को इसके बारे में कुछ मालूम नहीं। अब आगे तुम्हें खुद ही खोज करनी होगी! ”

उसने तीरंदाज को रास्ते के लिए रसद दी और तैयार होने में उसकी मदद की। तब वह उससे विदा लेकर अपने सफ़र पर चल दिया।

चलाचल, चलाचल, दर मंजिल दर कूच, वह दिन-रात चलता गया और घड़ी भर के लिए भी कहीं नहीं रुका। पूरे एक महीने बाद वह सागर-तट पर पहुंचा। उसने उसके आर-पार नज़र दौड़ाई और यह महसूस करते हुए कि वह उसे कभी नहीं लांघ सकेगा, पश्चिम की ओर मुड़ गया और तट के साथ-साथ चलने लगा। एक महीने तक सफ़र करने के बाद वह उस जगह पहुंचा जहां सागर छिछला था। वहां उसने सागर को पार किया। उसे दूसरे तट पर एक चौड़ी सड़क दिखाई दी। वह एक महीने तक उस पर चलता रहा। आखिर उसे पूरब में एक बड़ा और घना जंगल नज़र आया।

वह उसी दिशा में चल दिया, घड़ी भर के लिए भी कहीं नहीं रुका और आखिर वह चौड़े, दो-पहिया गाड़ी के चिह्नोंवाले मार्ग पर जा पहुंचा। वह सड़क छोड़ इस मार्ग पर चल दिया। तीन दिन और तीन रातों तक इसी मार्ग पर चलने के बाद वह आखिर जंगल में जा पहुंचा।

वह जंगल में घुसा और उसने देखा कि दो-पहिया मार्ग वृक्षों के बीच गायब होता है और फिर सामने आ जाता है। वह उसी मार्ग पर चलता गया जो एक अगम्य झुरमुट में जाकर अचानक गायब हो गया। तीरंदाज अब झुरमुट में से आगे बढ़ने लगा। वहां वृक्ष बहुत ऊंचे और घने थे, वे अपनी शाखाओं से आकाश को ऐसे छिपाये हुए थे कि सूरज की एक भी किरण उनके पार नहीं आ पाती थी, कहीं से रोशनी झांक ही नहीं सकती थी। कहीं भी कोई रास्ता नज़र नहीं आता था, न सामने, न बायें और न बायें। तीरंदाज वहां रुककर अपने आप से बोला -

“ अब मैं क्या करूं? मैं ऐसे ही लौट जाने के लिए तो इतनी दूर आया नहीं हूं। ”

उसने अपने इर्दगिर्द नज़र डाली तो अचानक उसे जमीन में एक सुराख दिखाई दिया। वह उस सुराख में घुसा तो उसने अपने को एक भूमिगत मार्ग में पाया। वह वहां अपना रास्ता टटोलता हुआ बढ़ने लगा। वह बढ़ता गया, बढ़ता गया और आखिर जमीन में बनाई गई एक झोंपड़ी के पास पहुंचा। वह झोंपड़ी के अन्दर गया और उसने इधर-उधर नज़र दौड़ाई, मगर उसे वहां कोई भी नज़र न आया। उसने कान लगाये, मगर उसे वहां कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी। फिर भी उसे यह साफ़ दिखाई दे रहा था कि कोई-न-कोई यहां अक्सर आता रहता है।

“ जाने कौन यहां रहता है, ” तीरंदाज ने अपने आप से कहा, “ मगर मुझे सावधान रहना चाहिए ताकि कोई मेरा अहित न कर सके। ”

उसे दीवार में एक बड़ी बरार नज़र आई। वह रेंगकर उसी में जा छिपा और फौरन गहरी नींद सो गया।

नींद में ही उसे दो पहिया गाड़ी की गड़गड़ाहट सुनाई दी। उसकी आवाज़ इतनी ऊंची थी कि वह समझ गया कि यह मामूली गाड़ी नहीं है।

उसने अपने को बहुत ही अच्छी तरह से छिपा लिया और चूहे की तरह चुपचाप लेटे-लेटे सोचने लगा -

“ जाने अब क्या होगा? ”

दो पहिया गाड़ी झोंपड़ी के दरवाजे पर आकर रुकी और बहुत ही भयंकर शकल-धूरतवाले एक जवान देव ने झोंपड़ी में प्रवेश किया। वह बहुत ही बढ़िया कपड़े पहने

था और उसकी पेट्टी के साथ क्रीमती हथियार लटक रहे थे। देव ने अपने हथियार उतारे और उन्हें दीवार पर टांग दिया। फिर उसने अपने कपड़े उतारे और सामनेवाली छूटी पर टांग दिये। इसके बाद वह पालथी मारकर बैठ गया और बोला -

“मुर्जा आओ, मुझे भूख लगी है!”

उसके मुंह से इन शब्दों के निकलते ही पीले फूलों वाला दस्तरखान बिछ गया और उस पर बहुत ही लजीज खाने और शराबें तथा चुने हुए फल रखे दिखाई दिये। हर चीज ऐसी थी कि देखकर तबियत खुश हो और खाकर खूब मजा आये।

देव ने खूब पेट भर कर खाया-पिया और फिर बोला -

“मुर्जा आओ, यह सब कुछ उठा ले जाओ!”

देखते ही देखते पीले फूलोंवाला दस्तरखान और उस पर रखी हुई सभी तश्तरियां, सुराहियां और प्याले ऐसे गायब हो गये मानो वे वहां कभी थे ही नहीं।

देव ने अपने कपड़े पहने, हथियार सजाये और भूमिगत झोंपड़ी से बाहर चला गया। फौरन दूरी पर गायब होती दो पहिया गाड़ी की खड़खड़ाहट सुनाई दी। देव जा चुका था।

तीरंदाज बरार से बाहर निकला। उसने अपने इर्बगिर्ब नजर डाली, मगर उसे वहां न तो कोई चीज दिखाई दी और न कोई प्राणी ही।

“यह देव कौन था जो दो पहिया गाड़ी में यहां आया? वह कौन था जिसने उसके सामने ऐसे बढ़िया-बढ़िया खाने परोसे? खाने की वे सभी चीजें कहां गायब हो गईं जिन्हें उसने छुआ तक भी नहीं था? मेरे ल्याल में तो मुझे भी वह सब कुछ करना चाहिए जो देव ने किया था।”

तीरंदाज ने तब अपने हथियार उतारे और उसी छूटी पर टांग दिये जहां देव ने अपने हथियार टांगे थे और इसी तरह उसने अपने कपड़े दूसरी छूटी पर टांग दिये। इसके बाद वह पालथी मारकर नमदे की चटाई पर बैठ गया और बोला -

“मुर्जा आओ, मुझे भूख लगी है!”

ऐसा कहते ही उसके सामने दस्तरखान बिछ गया जिस पर खान-पान की बढ़िया-बढ़िया चीजें सज गईं। सभी चीजें ऐसी थीं कि देखकर जी खुश हो और खाकर मजा आये।

तीरंदाज ने खाया-पिया और फिर बोला -

“मुर्जा, तुम कहां हो? आओ, आकर मेरे पास बैठो और जी भर कर खाओ-पियो।”

यह सुनकर मुर्जा फौरन सामने आ गया और तीरंदाज के पास बैठकर खाने लगा। जब खा-पी चुका तो बोला -

“मैं तीस वर्ष से उस देव को खिला-पिला रहा हूं जो अभी थोड़ी ही देर पहले यहां था। उसने एक बार भी मुझे अपने साथ खाने या पीने के लिए नहीं बुलाया। मगर तुमने मेरा ध्यान किया और मुझे अपने साथ खाने के लिए बुलाया है। बेहतर यही है कि मैं तुम्हारे साथ रहूं। मुझे अपने संग ले चलो।”

“बहुत खुशी से,” तीरंदाज ने जवाब दिया। “अब यह बात मेरी समझ में आ रही है कि मैं तुम्हारी ही खोज करता हुआ यहां आया था और आखिर अप्रत्याशित तुम्हें यहां पा लिया।”

“तो ठीक है। आज से मैं तुम्हारा हूं और हर जगह तुम्हारे पीछे-पीछे जाऊंगा,” मुर्जा ने कहा।

“बहुत अच्छी बात है,” तीरंदाज ने कहा, “ऐसा ही सही।”

वे भूमिगत झोंपड़ी से बाहर आये और साथ-साथ चल दिये। मुर्जा हर क्षण तीरंदाज के साथ-साथ रहता, मगर किसी को नजर नहीं आता।

वे बहुत देर तक चले या थोड़ी देर तक, यह कोई नहीं जानता। पर तभी अचानक पहियों की जोरदार खड़खड़ाहट सुनाई दी।

मुर्जा तीरंदाज से बोला -

“यह मेरा पहलेवाला मालिक है जो अपने आठ काले घोड़ोंवाली गाड़ी पर आ रहा है। वह बहुत मूछा होगा और खाना खिलाने के लिए मुझे आवाज देगा, मगर अब कोई भी उसकी पुकार का जवाब नहीं देगा।”

वे चलते गये और काफ़ी अंधेरा हो जाने पर एक ऐसी जगह पहुंचे जो वीरान-सुनसान प्रतीत होती थी। वहां धुएं से काला हुआ एक छेमा खड़ा था, उसकी नमदे की छत छस्ता हाल थी और उसमें बहुत से सूराख थे।

तीरंदाज छेमे के अन्दर गया और वहां उसे एक संन्यासी दिखाई दिया। वह सिर नवाये ध्यान कर रहा था और प्रार्थना में इतना खोया हुआ था कि तीरंदाज की ओर उसने आंख उठाकर भी नहीं देखा।

“ऐ पहुंचे हुए संन्यासी,” तीरंदाज ने कहा, “मुझे आप से एक बिनती करनी है। मुझे अपने छेमे में रात बिता लेने दीजिये।”

संन्यासी ने अपनी प्रार्थना बन्द कर कहा -

“इन इलाकों में तो कभी कोई आदमी नहीं आया, तुम कहां से आये हो और किधर जा रहे हो?”

“मैंने अपने खान का हुक्म बजाते हुए बहुत दूर का सफ़र किया है और अब मैं अपने घर लौट रहा हूँ,” तीरंदाज ने जवाब दिया।

संन्यासी ने कहा—

“तुम खुशी से यहां रात बिता सकते हो, मगर तुम्हें खिलाने-पिलाने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है, न नान, न सीख क़बाब और न चाय, कुछ भी नहीं। मेरे खेमे में तो कोई बर्तन या कोई तिपाई तक नहीं है।”

“मुझे किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं है,” तीरंदाज ने जवाब दिया। “मुझे तो सिर्फ़ रात बिताने के लिए जगह चाहिए।”

“तो तुम ठहर सकते हो!” संन्यासी ने कहा और फ़र्श पर घुटने टेक फिर से प्रार्थना करने लगा। मगर सोने से पहले उसने अपनी रसद निकाली और खाने बैठ गया। उसके भोजन में चट्टानों की दरारों के बीच से चुनी हुई जंगली रसभरियां और जंगली फल-फूल और कन्द-मूल शामिल थे।

संन्यासी ने इन्हें खाते हुए तीरंदाज से कहा—

“देखते हो न मैं क्या खा रहा हूँ? तुम्हें ऐसी घटिया खुराक देने की तो मैं हिम्मत भी नहीं कर सकता। इसके अलावा यह काफ़ी भी नहीं है। मेरे पास फल बटोरने के लिए बहुत थोड़ा वक़्त होता है, क्योंकि मुझे खुदा की याद में वक़्त लगाना होता है।”

तीरंदाज के मन पर इस बात का असर नहीं हुआ।

“आप अपनी खुराक खाइये,” उसने कहा, “और मैं अपनी खाऊंगा।” इसके बाद उसने पुकार कर कहा—

“मुर्जा आओ, मुझे मूख लगी है!”

इन शब्दों के मुंह से निकलते ही उसके सामने पीले फूलोंवाला दस्तरखान बिछ गया। उस पर तश्तरियों में बढ़िया खाने सज गये और वही से भरे हुए मर्तबान आ गये। मतलब यह कि सभी ऐसी चीज़ें आ गईं कि देखकर जी खुश हो और खाकर खूब मज़ा आये।

तीरंदाज खाने बैठ गया और उसने संन्यासी से कहा—

“ऐ पहुंचे हुए संन्यासी, आप अब मेरा साथ दें और इन चीज़ों को भी ज़रा चखकर देखें।”

हैरान होता हुआ संन्यासी भी उसका साथ देने और लज़ीज़ खानों को खाते हुए

उनकी तारीफ़ करने लगा। तीरंदाज ने मुर्जा को बुलाया और उसे भी खाने में शामिल होने की दावत दी।

जब वे सभी पेट भर कर खा चुके तो उठे और तीरंदाज ने कहा—

“मुर्जा, ये सारी चीज़ें ले जाओ!”

आन की आन में वे सभी चीज़ें गायब हो गईं जो पीले फूलोंवाले दस्तरखान पर रखी थीं और उनके साथ दस्तरखान भी।

संन्यासी ने जो मजेदार खाने खाये थे उनसे उसका जी बेहद खुश हुआ था। अब वह तीरंदाज की मिन्नत करने लगा कि मुझ से सौदा कर लो।

“बहादुर तीरंदाज,” वह बोला, “मेहरबानी कर, मुझे जाबुई दस्तरखान के साथ अपना मुर्जा दे दो! बदले में मैं तुम्हें बहुत ही बढ़िया चीज़ दूंगा।”

“नहीं, नहीं, ऐसा मैं हरगिज़ नहीं कर सकता,” तीरंदाज ने जवाब दिया। “मैं किसी भी कीमत पर मुर्जा को देने को तैयार नहीं हूँ। मुझे तो खुद उसकी ज़रूरत है।”

मगर संन्यासी भी माननेवाला नहीं था। वह रात भर तीरंदाज की मिन्नत-समाजत करता रहा।

“बहादुर तीरंदाज, मेरी बात मान लो,” वह बोला, “मैं तुम्हें बदले में तुम्हारे मुर्जा से भी बढ़कर कोई कमाल की चीज़ दूंगा।”

“क्या देंगे आप मुझे?” तीरंदाज ने पूछा।

“मैं तुम्हें दिखाता हूँ,” संन्यासी बोला। इतना कहकर उसने एक लंबा रेशमी रुमाल निकाला और तीरंदाज को अपने साथ बाहर चलने को कहा। तीरंदाज बाहर गया। संन्यासी ने अपना रुमाल हिलाते हुए कहा—

“महल प्रकट हो!”

पलक झपकते ही एक शानदार महल उनके सामने प्रकट हो गया। उसकी छतें तो लगभग आकाश को छू रही थीं। ऐसा खूबसूरत था कि जैसा किसी ने कभी देखा ही न हो, उसका मुहरा सोने-चांदी से सजा हुआ था और उसमें मूंगे, मोती और हीरे जड़े हुए थे। उसके अन्दर का साज-सामान और दीवारों की सजावट तो आंखों को चका-चाँध करती थी। ऐसे ठाठ-बाट और ऐसी शान-बान तो बड़े से बड़े खानों के महलों में भी देखने को नहीं मिल सकती थी।

संन्यासी ने तीरंदाज से कहा—

“बहादुर तीरंदाज, तुम जवान हो, तुम्हें महल की ज़रूरत होगी। रही मेरी बात, तो मुझे तो जवान का रस पूरा करने के लिए ही बस कुछ चाहिए। इसलिए तुम मेरा

जादुई रुमाल ले लो और बदले में पीले फूलोवाले दस्तरखान के साथ मुर्चा मुझे दे दो।”
मगर संन्यासी के बहुत गिड़गिड़ाने और मनाने पर भी तीरंदाज राजी नहीं हुआ।
“नहीं, नहीं,” उसने कहा, “मैं अपना मुर्चा नहीं दे सकता।”
मगर तभी मुर्चा ने फुसफुसाकर उसके कान में कहा—
“कर लो इससे सौदा! महल भी तुम्हारा हो जायेगा और मैं भी तुम्हारा ही रहूंगा!”

तीरंदाज ने मुर्चा की बात मान ली और संन्यासी से सौदा करने को राजी हो गया।
संन्यासी ने तब अपना जादुई रुमाल हिलाकर कहा—
“गायब हो जाओ!” और महल फौरन आँखों से ओझस हो गया।
संन्यासी से रुमाल लेकर तीरंदाज बोला—
“मुर्चा अब आपका हुआ!”

संन्यासी को सलाम कहकर वह अपने रास्ते चल दिया।

वह एक पहाड़ी दर्रे में पहुँचा। उसने बर्रा पार किया और फिर अपने आप से कहा—

“मैंने बेवकूफी की है। मुझे ऐसी बदला-बदली नहीं करनी चाहिए थी। अब मेरे पास यह शानदार महल तो है, मगर मुर्चा नहीं है। जाने अब वह कहां है और क्या कर रहा है?”

अचानक उसे मुर्चा की आवाज सुनाई दी। वह बोला—

“कोई गम न करो, बहादुर तीरंदाज। मैं तुम्हारे साथ हूँ, कभी तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊंगा!”

“और संन्यासी का क्या होगा?” तीरंदाज ने पूछा।

“होगा क्या, उसे खुदा को याद करने दो,” मुर्चा ने जवाब दिया। “मैं उसकी नौकरी नहीं बजाऊंगा।”

तीरंदाज बहुत ही खुश हुआ और आगे चलता गया। वह कभी चलता तो कभी दौड़ने लगता। इतना उत्सुक था वह अपनी जबान और खूबसूरत बीबी के पास पहुँचने को। वह बिना रुके चलता गया, चलता गया, उसने बीतते हुए दिनों और रातों की कभी गिनती नहीं की और आखिर सागर-तट पर पहुँचा।

“अगर मैं सागर के किर्ब चक्कर काटकर जाऊँ तो मुझे एक महीने तक और सफ़र करना पड़ेगा,” उसने अपने आप से कहा। “मगर हो सकता है कि यहां मुझे कोई मल्लाह मिल जाये।”

वह तट के साथ-साथ चलता गया और वहां उसने एक बहुत बड़े जहाज को लंगर डाले हुए खड़े देखा। जहाज पर बहुत-से सैनिक सवार थे और वे सभी उस पार जाने वाले थे। तीरंदाज ने उनके करीब जाकर कहा—

“वीर सैनिको, मैं बहुत ही दूर से आया हूँ। मेहरबानी कर मुझे भी अपने साथ उस पार ले चलो!”

सेनापति ने कहा—

“ले चलेंगे। आ जाओ जहाज पर!”

तीरंदाज जहाज पर सवार हो गया और सैनिकों के साथ समुद्र पार करने लगा। कुछ देर बाद सैनिकों को भूख लगी और वे खाने-पीने लगे।

तीरंदाज ने कहा—

“मुझे भी कुछ खाने को मिल जायेगा?”

“यह भी खूब रही!” सैनिक चिल्लाये। “हमने तुम्हें अपने जहाज पर सवार हो जाने दिया और अब तुम यह चाहते हो कि हम तुम्हें खिलायें-पिलायें भी! हमें तुम से क्या लेना-देना है? हमें तो हर आदमी के हिसाब से नपी-तुली खुराक दी जाती है, हम किसी के साथ उसे बांट नहीं सकते!”

तीरंदाज ने कहा—

“तुम्हारी खुराक नपी-तुली होती है, मगर मेरी नहीं। मैं अगर चाहूँ तो तुम सभी को खूब खिला-पिला सकता हूँ और फिर भी इतने ही लोगों के लिए इतनी ही खुराक और बच रहेगी!”

सैनिक यह सुनकर तिलमिला उठे।

“शेखीखोर! बेपर की उड़ानेवाले!” वे सभी गुस्से से चिल्लाये। उन्होंने जाकर अपने सेनापति से सारी बात कही।

सेनापति ने फौरन तीरंदाज को बुलाया और बोला—

“सुना है कि तुमने इस बात की डींग हांकी है कि तुम मेरे सभी सैनिकों को एक साथ ही खाना खिला सकते हो?”

“मैंने तो सिर्फ सच्ची बात कही है,” तीरंदाज ने जवाब दिया।

“अगर ऐसी बात है तो करके दिखाओ। तब हम मान जायेंगे कि तुम ईमानदार और सच्चे हो। अगर तुम झूठे साबित हुए तो हमसे रहम की उम्मीद बिल्कुल न करना। हम बेल जितना बड़ा पत्थर तुम्हारी गर्दन से बांध कर तुम्हें समुद्र में फेंक देंगे!”

“अच्छी बात है,” तीरंदाज ने जवाब दिया, “मैं साबित कर दूंगा कि मैंने जो

कुछ कहा था, वह सच था। आप सभी लोग दो पांतों में बैठ जायें, मगर ऐसे कि बीच में काफ़ी खुली जगह रहे।”

सैनिकों ने वैसा ही किया जैसा तीरंदाज ने कहा था। वे एक-दूसरे के सामने दो पांतों में बैठ गये। इसनी अधिक संख्या थी उनकी कि पांतें जहाज के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैल गईं।

“मुर्जा आओ,” तीरंदाज ने कहा, “ये सैनिक मूखे हैं, इन्हें बढ़िया खाना खिलाओ!”

आन की आन में जहाज के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दोनों पांतों के बीच की खुली जगह में पीले फूलोंवाला एक दस्तरखान बिछ गया और उस पर तरह तरह की खाने-पीने की चीजें, रसमरियां और फल सज गये। थोड़े में यह कि ऐसी सभी चीजें जिन्हें देखकर तबियत खुश हो और खाकर मजा आ जाये।

सैनिकों ने खूब जी भर कर खाया-पिया, मगर खाने-पीने की चीजें बिल्कुल कम न हुई। उतने ही और लोगों के खाने-पीने के लिए काफ़ी चीजें सामने बाक़ी दिखाई दीं।

“आप लोग जी भर कर खा-पी चुके?” तीरंदाज ने पूछा।

“हां!” सैनिकों ने जवाब दिया।

“बहुत अच्छी बात है!” तीरंदाज ने कहा। “मुर्जा आओ, यह सब ले जाओ!”

उसी समय सभी कुछ गायब हो गया—दस्तरखान और तस्तरियां, सुराहियां और थाल।

सैनिक तो आश्चर्य से मुंह बाये रह गये।

“ऐसी अद्भुत चीज तो हमने ज़िन्दगी में पहले कभी देखी ही नहीं!” वे बोले। वे आपस में सलाह-मशविरा करने लगे कि मुर्जा और उसका जादुई दस्तरखान कैसे हासिल करें।

“उसे हमें बेच दो,” उन्होंने तीरंदाज से कहा।

“ओह नहीं,” तीरंदाज ने जवाब दिया। “वह बिकाऊ नहीं है!”

उन्होंने तीरंदाज की बहुत भिन्नत-समाजत की और उसे बहुत-सा सोना देना चाहत, मगर वह राजी न हुआ।

“अच्छा, अगर तुम उसे बेचना नहीं चाहते,” वे बोले, “तो आओ, सौदा ही कर लें। हम भी तुम्हें बदले में कोई ऐसी ही अद्भुत चीज देंगे!”

“आप मुझे क्या दे सकते हैं?” तीरंदाज ने पूछा। “मेरे लिए मुर्जा से क्या कीमती चीज कोई नहीं हो सकती। मुझे उसी की सबसे ज्यादा जरूरत है!”

सैनिकों ने सोने की एक छड़ी निकाली जिसका एक सिरा पतला था और दूसरा मोटा। उन्होंने तीरंदाज को छड़ी दिखाकर कहा—

“हम तुम्हें यह जादुई छड़ी देंगे। अगर तुम इसके मोटे सिरे को ज़मीन पर मारोगे तो असंख्य घुड़सवार सैनिक सामने आ जायेंगे, चमकते-दमकते कवच पहने और इस्पाती तलवारें सजाये। अगर तुम इसका पतला सिरा ज़मीन पर मारोगे तो बेशुमार तीरंदाज सामने आ जायेंगे, तीर-कमानों से लैस।”

जादुई छड़ी देखकर मुर्जा ने तीरंदाज के कान में फुसफुसाकर कहा—

“बहादुर तीरंदाज, इनसे सौदा कर लो। छड़ी भी तुम्हारी हो जायेगी और मैं भी तुम्हारा ही रहूंगा!”

तीरंदाज ने उसकी बात मान ली और मुर्जा के बदले में सुनहरी छड़ी ले ली। कुछ ही देर बाद वे सागर-पार पहुंच गये और जहाज से उतरकर अपने-अपने रास्ते चल दिये, सैनिक एक दिशा में और तीरंदाज दूसरी दिशा में।

तीरंदाज ने चलते-चलते कहा—

“जाने इस समय मुर्जा कहां है?” मगर मुर्जा ने कोई जवाब नहीं दिया।

तीरंदाज एक दिन और एक रात तक और चलता रहा। तब उसने फिर से कहा—

“मुर्जा, तुम कहां हो, मेरे प्यारे दोस्त?”

मगर मुर्जा ने कोई जवाब नहीं दिया।

तीरंदाज चलता गया। जब दो दिन और दो रातें और बीत गये तो उसने फिर अपने दोस्त को आवाज दी—

“तुम कहां हो, मुर्जा? मुझे जवाब दो!”

मगर मुर्जा ने जवाब नहीं दिया।

तीरंदाज को अब बहुत ही दुख हुआ।

“तो वह मुझे दगा दे गया,” उसने अपने आप से कहा। “मुझे उन सैनिकों से हरगिज़ सौदा नहीं करना चाहिए था!”

पांचवें दिन की शाम आई तो तीरंदाज ने मन ही मन सोचा—“आखिरी बार उसे फिर आवाज देकर देखता हूं!”

उसने ऊंची आवाज में कहा—“मुर्जा, जवाब दो! तुम कहां हो?”

और अचानक उसे मुर्जा की आवाज सुनाई दी। वह बोला—

“दुखी न होओ, बहादुर तीरंदाज! तुम्हारा मुर्जा तुम्हारे साथ है! मैं दोपहर को ही आया हूं!”

तीरंदाज की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। वह ज़मीन पर बैठकर बोला—

“भूख के मारे मेरी तो जान निकली जा रही है। लाओ, झटपट खाना खाये!”

फौरन पीले फूलोंवाला दस्तरखान बिछ गया और सभी तरह के लजीज खाने सज गये। तीरंदाज और मुर्जा ने भर पेट खाया-पिया और फिर आगे चल दिये। वे बहुत अर्से तक चलते रहे, उनके लिए दिन और रातें एक समान थे। आखिर वे आधी रात को त्सारकिन-खान के राज्य में पहुंचे।

तीरंदाज ने अपने खेमि में जाकर अपनी पत्नी को जगाया।

“जागो प्यारी,” वह बोला। “मैं आ गया!”

उसकी बीबी की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। वह झटपट उठी और उसने आग जलाई।

“तुम राजी-खुशी तो हो न?” बीबी ने पूछा।

उन्होंने एक-दूसरे को अपना-अपना हास-चास सुनाया और यह बताया कि जुवाई के इतने लम्बे अर्से में उनके साथ क्या कुछ बीती और उन्होंने किस तरह से समय बिताया।

“खान का क्या हाल है?” तीरंदाज ने पूछा। “क्या वह अभी तक बीमार है?”

“तुम जिस दिन गये उसी दिन से खान अच्छा मला है,” बीबी ने जवाब दिया।

“वह मुझे इस बात के लिए राजी करने को तीन बार मेरे पास आ चुका है कि मैं उसकी पत्नी बन जाऊं। मगर मैंने हर बार उससे यही कहा—‘मेरे लिए फिर से शादी करना उचित नहीं। मेरा पति वह ववाई खोजने के लिए गया है जो आपने उसे लाने के लिए कहा था। जहां तक मैं समझती हूं वह जिन्दा है, मैं कैसे आप से शादी कर सकती हूं?’ मगर खान यही राग अलापता रहा—‘तुम्हारा पति मर चुका है। उसे मरे एक अर्सा हो गया।’ तब मैंने उससे कहा—‘अगर आप यह चाहते हैं कि मैं आपकी बात पर विश्वास कर लूं तो आप मुझे उसकी हड्डियां दिखायें। हड्डियां देखने के बाद मैं यह तय कर सकूंगी कि आपको क्या जवाब दूं।’ यह सुनकर खान आग-बबूला हो गया और उसने हुक्म दिया कि मेरे सभी रेबड़ और मेरा सारा भाल-मत्ता छीन लिया जाये। अब हमारे पास खाली खेमे के सिवा कुछ भी नहीं है!”

अपनी बीबी की बातें सुनकर तीरंदाज गुस्से से लाल-पीला हो गया।

“चलो, खान के पास चले!” वह बिल्साया। “मैं उसे उसकी धोखाधड़ी और अनाचार की सजा दूंगा!”

वे खान के महल की तरफ गये। तीरंदाज महल से थोड़ी दूरी पर रुक गया और उसने अपना जादुई रुमाल हिलाकर कहा—

“यहां महल बन जाये!”

फौरन वहां महल बन गया, इतना ऊंचा कि बादलों को छुए और इतना सुन्दर कि उसके सामने खान का महल शोपड़ा-सा लगने लगा।

तीरंदाज और उसकी पत्नी महल में गये। तब तीरंदाज ने कहा—

“मुर्जा आओ, हमें भूख लगी है, खाना खिलाओ!”

उन्होंने खूब खाया-पिया। तब तीरंदाज महल से बाहर निकला और उसने अपनी मुनहरी छड़ी का पतला सिरा जमीन पर मारा। उसी समय तीर-कमानों से लैस अनगिनत सैनिक प्रकट हुए। वे महल के दरवाजों पर खड़े होकर तीरंदाज के हुक्म का इन्तजार करने लगे।

तीरंदाज ने कहा—

“जब तक मेरी आंख न खुले और मैं बिस्तर से न उठूं, किसी को अन्दर न आने देना!”

सुबह हुई तो खान के नौकरों-चाकरों ने खान के महल के करीब ही एक विराट और आलीशान महल सिर ऊंचा किये खड़ा देखा। इस महल को देखकर वे तो चकरा ही गये।

“यह क्या चमत्कार है?” वे बोले। “क्या खुद अल्लाह बुरखान ने रातोंरात यह महल खड़ा कर दिया है या शैतान ने इसे बनाया है?”

और वे त्सारकिन-खान को इसकी सूचना देने मागे।

त्सारकिन-खान ने बाहर आकर इस महल को देखा। वह सकते में ही आ गया।

“यह क्या किस्सा है?” उसने कहा। “जहां तक मुझे याद है, मैंने अपनी सारी जिन्दगी में न तो कभी ऐसा महल देखा है और न कभी इसकी चर्चा ही सुनी है। किसने इसे बनाया है और कौन यहां रहता है? जाओ, उसे मेरे पास लेकर आओ!”

खान के वूत उसका हुक्म बजाने गये।

वे तीरंदाज के महल के सामने पहुंचे। उन्होंने दरवाजे पर खड़े दोनों लम्बे-तडंगे और रोबीले-से दरबानों से पूछा—

“यह किसका महल है? कौन यहां रहता है? तुम पहरा देने वाले कौन हो? तुम आसमान से गिरे हो या जमीन फाड़कर निकले हो? फौरन जवाब दो!”

मगर उल्टे दोनों पहरेदारों ने बिगड़ते हुए पूछा—

“तुम कौन होते हो हम से इतने सवाल पूछनेवाले?”

“हम महाबली त्सारकिन-खान के वूत हैं। तुम से पूछे गये इन सभी सवालों के जवाब हमें उसे जाकर बताने हैं।”

“यह त्सारकिन-खान कौन है?” पहरेदारों ने पूछा “हमने तो कभी उसका नाम भी नहीं सुना और न हम सुनना ही चाहते हैं। हमारा तो अपना खान है। वह इस समय महल में सो रहा है। जाओ, माग जाओ अपना सिर सही-सलामत लेकर!”

खान के दूतों का तो दम निकल गया। वे भागे-भागे त्सारकिन-खान के पास गये और जो कुछ उन्होंने देखा-सुना था, सब उसे कह सुनाया। खान गुस्से से लाल-पीला हो उठा और उसने अपने हरकारों को खूब डांटते-फटकारते हुए कहा —

“मैंने तुम्हें सन्तरियों से बातचीत करने के लिए यहां नहीं भेजा था। मैंने तो तुम्हें उनके मालिक, उनके स्वामी को यहां साने के लिए भेजा था!”

उसने अपने इन दोनों हरकारों को बहुत सख्त सजा देने का हुक्म दिया और उसने अपने दो चुने हुए सैनिक बुलवाये। वे दोनों ही बड़े लम्बे-तड़ंगे और हट्टे-कट्टे थे। उसने उनसे कहा —

“उस महल के मालिक को पकड़कर मेरे पास घसीट लाओ!”

खान के दोनों सैनिक महल के सामने पहुंचे और उन्होंने दरवाजे खोलने की कोशिश की। मगर दरबानों ने उन्हें अलग धकेलते हुए चिल्लाकर कहा —

“कौन हो तुम? अगर तुम्हें अपनी जिनगी प्यारी है तो यहां से दूर रहो!”

त्सारकिन-खान के सैनिक बोले —

“हमें तुमसे बातें करने के लिए नहीं भेजा गया। हम तो इस महल के मालिक को पकड़कर अपने खान के पास ले जाने के लिए आये हैं!”

और उन्होंने फिर से महल में घुसने की कोशिश की।

मगर दरबानों ने उन्हें पकड़कर उनकी मरम्मत शुरू कर दी।

“हमें कुछ नहीं लेना-देना तुम्हारे खान से!” उन्होंने कहा। “हम न तो उसे जानते हैं और न ही जानना चाहते हैं!”

उन्होंने खान के सैनिकों की खूब अच्छी पिटाई कर उन्हें वहां से मगा दिया।

वे दोनों लंगड़ाते और कराहते हुए जैसे-तैसे त्सारकिन-खान के सामने पहुंचे।

“सन्तरियों ने हमें महल में नहीं घुसने दिया!” वे बोले। “हम उनसे टक्कर नहीं ले सके! हम में तो उनसे आधी भी ताकत नहीं!”

उनकी बात सुनकर त्सारकिन-खान ने अपने बजीरों-सलाहकारों को सलाह-मशविरा करने के लिए बुलाया।

“जल्दी से बताइये कि हम क्या करें,” वह बोला। “एक बहुत ही ताकतवर कुश्मन से पाला पड़ गया है जो उस महल में रह रहा है।”

बजीरों-सलाहकारों ने कहा —

“बहुत बड़ी सेना को हल्ता बोलने के लिए भेजिये।”

खुनाचे त्सारकिन-खान ने फौरन एक भारी सेना को अपने सामने इकट्ठी करने का हुक्म दिया।

“हर उस आदमी तक को ले आओ जो सिर्फ घोड़े पर बैठ ही सकता हो!” उसने कहा। “जितनी जल्दी यह काम हो जाये उतना ही ज्यादा अच्छा है!”

त्सारकिन-खान के सेनापतियों ने उसकी फौजें जमा कीं और उन्हें लेकर खान के सामने हाजिर हुए। तैंतीस पसदनों ने, जो तैंतीस कतारों में खड़ी थीं, तीरंदाज के महल को घेर लिया। त्सारकिन-खान का हुक्म पाकर उसके दूतों ने पुकारकर कहा —

“बाहर आओ और सूरज रहते तक हम से दो-दो हाथ करो!”

यह ललकार सुनकर तीरंदाज ने खिड़की खोली और कमर तक बाहर झुककर उनसे पूछा —

“तुम कौन हो और किस लिए यहां जमा हुए हो?”

सैनिकों ने जवाब दिया —

“हम महाबली त्सारकिन-खान के सैनिक हैं!”

तब तीरंदाज बोला —

“मैं त्सारकिन-खान का न तो बुझम हूं और न दोस्त ही। मैं अपने महल में रहता हूं और उससे मेरी कोई लड़ाई नहीं है। पर यदि त्सारकिन-खान लड़ना चाहता है तो ऐसा साफ़-साफ़ कहे। तब मैं जरूर उससे लड़ंगा!”

“हां, मैं लड़ना चाहता हूं!” त्सारकिन-खान ने चिल्लाकर कहा।

इतना सुनकर तीरंदाज अपने महल से बाहर आया और उसने सुनहरी छड़ी का मोटा सिरा जमीन पर मारा। उसी समय इतनी बड़ी संख्या में घुड़सवार सैनिक सामने आ गये कि उन्हें न तो गिना जाये और न ही एक नजर में देखा जाये। हर सैनिक कवच पहने और हाथ में तलवार लिये था। घुड़सवार सैनिक अपनी तलवारें ऊंची कर चिल्लाये —

“आपका क्या हुक्म है, तीरंदाज?”

“त्सारकिन-खान की फौजों से लोहा लो!” तीरंदाज ने कहा।

घुड़सवार आगे बढ़े और त्सारकिन-खान की फौजों से मिड़ गये।

तब तीरंदाज ने सुनहरी छड़ी के पतले सिरे को जमीन पर मारा, उसी समय तीर-कमान लिए हुए बेशुमार तीरंदाज प्रकट हो गये। वे अपनी कमानें ऊंची कर बोले —

“आपका क्या हुक्म है, तीरंदाज?”

“त्सारकिन-खान की फ़ौजों से उलझ जाओ!” तीरंदाज ने हुक्म दिया।

तीरंदाज बुझन पर टूट पड़े और घुड़सवारों की मदद करने लगे।

त्सारकिन-खान की फ़ौजें ऐसे जोरवार हमले की ताब न ला सकीं। उनके पांव उखड़ गये और वे पीछे हटने लगीं। तीरंदाज के सैनिक मार-काट करते हुए आगे बढ़ने लगे। लड़ाई सुबह को शुरू हुई थी और शाम होने तक खान का एक भी सैनिक बाक़ी न बचा। तीरंदाज के सैनिक त्सारकिन-खान को पकड़ने ही वाले थे कि वह अपने घोड़े से नीचे कूदा और अपनी बची-बचायी ताक़त बटोर कर यह चिल्लाता हुआ तीरंदाज के महल की ओर भागा—

“रहम कीजिए! रहम कीजिए! मेरी जान बख़्श दीजिये!”

तीरंदाज ने अपने सैनिकों से कहा—

“इसकी जान मत लो। इसे ज़िन्दा ही मेरे पास लाओ! मैं इससे बातचीत करना चाहता हूँ!”

सैनिक त्सारकिन-खान को लातों-बाहों से पकड़कर घसीटते हुए तीरंदाज के पास ले गये। त्सारकिन-खान उसके सामने ज़मीन पर गिर पड़ा। डर के कारण वह तीरंदाज को पहचान भी नहीं पाया। उसने गिड़गिड़ाकर कहा कि मुझ पर रहम करो और मेरी जान बख़्श दो।

तीरंदाज ने जोर का ठहाका लगाया।

“डरो नहीं,” उसने कहा, “मैं तुम्हें नहीं मारूंगा! तुम लड़ना चाहते थे, इसीलिए मैं लड़ा। अब मैं यह चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ बैठकर खाना खाओ। मुर्जा आओ, हमें मूख लगी है, हमें खिलाओ-पिलाओ!”

फ़ौरन पीले फूलोंवाला दस्तरख़ान बिछ गया और कमाल के लज़ीज़ खाने और शराबें सामने आ गयीं। तीरंदाज खान की आवभगत करने लगा। वह उसके सामने कभी एक चीज़ पेश करता और कभी दूसरी।

तीरंदाज ने कहा—

“मैंने सुना है कि तुम्हारे राज्य में एक तीरंदाज रहता है, जवान, खूबसूरत, मजबूत और बड़ा ही बहादुर। वह कहाँ है? मैं उससे मिलना चाहता हूँ।”

“यह तो मुमकिन नहीं,” त्सारकिन-खान ने जवाब दिया।

“मुमकिन नहीं? मगर क्यों?” तीरंदाज ने पूछा।

“क्योंकि वह मर चुका है।”

“क्या यह सच है? फिर भी मैंने सुना है कि वह ज़िन्दा है और खूब मौज कर रहा है।”

“वह न जाने क्या की खोज में न जाने कहाँ गया था,” त्सारकिन-खान ने बात साफ़ की। “उसे तो बहुत ही पहले आ जाना चाहिये था। पर चूँकि वह नहीं आया, इसलिए जाहिर है कि ज़ख़र मर गया है।”

“मगर न जाने क्या की तलाश में न जाने कहाँ उसे भेजा किसने था?” तीरंदाज ने पूछा।

“किसी ने भी नहीं। वह अपनी ही मर्जी से गया था, न जाने क्यों,” त्सारकिन-खान ने जवाब दिया।

यह सुनकर तीरंदाज जल-भुन गया।

“मैंने कहा था कि मैं तुम्हारी जान बख़्श दूंगा, मगर तुम्हारे जैसा बेशर्म और झूठा आदमी इस लायक नहीं है,” उसने कहा। “तुम्हीं ने तीरंदाज को भेजा था। वह भी इसलिए कि तुम उससे उसकी पत्नी छीन लेना चाहते थे। शुरू में तुमने बीमारी का बहाना कर उसे शेरनी का वूध लाने के लिए भेजा। जब उसने यह कर दिया तो तुमने उसे न जाने कहाँ और न जाने क्या की तलाश में भेज दिया। शौर से मुझे देखो! अगर डर के मारे तुम्हारी आंखें बिल्कुल अंधी नहीं हो गई हैं, तो तुम देख सकोगे कि मैं वही तीरंदाज हूँ... मैं बहुत दूर दूर के देशों में घूमा और न जाने कहाँ पहुंच गया और वह चीज़ लेकर आया हूँ जिसका न कोई आकार है और न मिलने का कोई स्थान। मैं ज़िन्दा और सही-सलामत हूँ। तुम्हें अपने बुरे इराबों में कामयाबी नहीं मिली। अब इन्साफ़ का तलावा तो यही है कि मैं तुम्हारी जान ले लूँ।”

त्सारकिन-खान डर से थर-थर कांपता हुआ तीरंदाज के पैरों पर गिर पड़ा और घुटनों के बल रेंगता हुआ जान बख़्श देने के लिए गिड़गिड़ाने लगा।

तीरंदाज ने ठोकर मारकर खान को एक तरफ़ हटा दिया और बोला—

“तुमने बहुत बड़े-बड़े गुनाह किये हैं, फिर भी मैं तुम्हारी जान नहीं लूंगा। लेकिन मैं तुम्हें अपनी आंखों के सामने भी नहीं देख सकता। इसलिए इसी वक़्त यहां से चलते बनो और याद रखो कि इस राज्य में कभी तुम्हारी परछाईं भी नज़र न आये।”

“मैं इस मेहरबानी के लिए तुम्हारा शुक्रगुज़ार हूँ,” खान ने कहा और अपने बीबी-बच्चों को साथ लेकर हमेशा के लिए वहां से चला गया।

जहां तक तीरंदाज का ताल्लुक है, तो वह अपनी जवान बीबी के साथ खानाबदोशों के उसी छेमे में रहने लगा। उन्होंने इसके बाद हमेशा हंसी-खुशी की ज़िन्दगी गुज़ारी।

हीरे-मोती

तुर्कमानी लोक-कथा



किसी गांव में कभी एक विधवा रहती थी जिसका इकलौता बेटा था — मीराली। मां-बेटा बहुत ही गरीब थे। बूढ़ी औरत उन साफ़ करती, लोगों के कपड़े सीती, धोती और इस तरह अपना और अपने बेटे का पेट पालती।

मीराली जब बड़ा हो गया तो उसकी मां ने कहा —

“बेटे, अब मुझ में और काम करने की हिम्मत नहीं रही। तुम्हें जरूर कोई काम तलाश करना और इस तरह अपनी रोखी-रोटी कमाना चाहिए।”

“अच्छी बात है, मां,” मीराली ने कहा और वह रोज़गार की तलाश में निकल पड़ा। वह जहाँ-तहाँ मटका, मगर कहीं भी उसे कोई काम नहीं मिला।

कुछ अर्से बाद वह एक बाई (अमीर) के घर पर पहुँचा।

“बाई, क्या आपको नौकर की जरूरत है?” मीराली ने पूछा।

“हां, जरूरत है,” बाई ने जवाब दिया।

और उसने उसी समय मीराली को नौकर रख लिया।

एक दिन गुजर गया, मगर बाई ने अपने नये नौकर से कुछ भी करने को नहीं कहा। दूसरा दिन भी गुजर गया, मगर बाई ने उसे किसी तरह का कोई हुक्म नहीं दिया। तीसरा दिन भी गुजर गया, मगर बाई ने उसकी तरफ़ बिल्कुल कोई ध्यान न दिया।

मीराली को यह सब कुछ बहुत अजीब लगा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि बाई ने उसे किसलिए नौकर रखा है।

चुनांचे उसने बाई से जाकर पूछा —

“मालिक, आप मुझे कोई काम करने को देंगे न?”

“हां, हां,” बाई ने जवाब दिया, “कत तुम मेरे साथ चलना।”

अगले दिन बाई ने मीराली को एक बैल चिबह करके उसकी खाल उतारने और इसके बाद चार बड़े-बड़े बोरे लाने और सफ़र के लिए वो ऊंट तैयार करने का हुक्म दिया।

एक ऊंट पर बैल की खाल और बोरे साद दिये गये। दूसरे पर बाई खुद सवार हुआ और वे चल दिये।

जब वे दूर-बराब के एक पहाड़ के दामन में पहुँच गये तो बाई ने ऊंट रोके और मीराली को बोरे और बैल की खाल उतारने का आदेश दिया। मीराली ने ऐसा ही किया। तब बाई ने कहा कि मीराली बैल की खाल को उलट कर उस पर लेट जाये। मीराली की समझ में न आया कि किस्सा क्या है, मगर उसे मालिक का हुक्म टालने की जुर्रत न हुई। उसने वैसा ही किया।

बाई ने मीराली को खाल में लपेटकर बंडल-सा बनाया, उसे अच्छी तरह कस दिया और एक चट्टान के पीछे जाकर छिप गया।

कुछ देर बाद वो बड़े-बड़े पक्षी वहाँ आये। उन्होंने उस खाल को अपनी चोंचों से पकड़ लिया जिससे ताजा मांस की गन्ध आ रही थी और उसे एक अलंघ्य पहाड़ की चोटी पर उड़ा ले गये।

चोटी पर पहुँचकर पक्षी उस खाल को चोंचों और पंजों से नोचने और उसे इधर-उधर खींचने लगे। खाल फट गई और उसमें से मीराली लुढ़क कर बाहर आ गया। पक्षियों ने उसे देखा तो डरकर उड़ गये और खाल को भी अपने साथ उड़ा ले गये।

मीराली उठकर खड़ा हुआ और अपने इर्दगिर्द देखने लगा।

बाई ने उसे नीचे से देखा तो चिल्लाया —

“वहां बुत बने क्यों खड़े हो? तुम्हारे पैरों के आसपास जो रंगीन पत्थर पड़े हैं, उन्हें मेरे पास नीचे फेंक दो!”

मीराली ने नीचे की तरफ नजर डाली। वहां उसे सचमुच ही बहुत-से हीरे इधर-उधर बिखरे पड़े दिखाई दिये। उनमें लाल, नीलम, पन्ने और फ़ीरोजे थे ... हीरे बड़े-बड़े और खूबसूरत थे और धूप में खूब चमक रहे थे।

मीराली हीरे उठा-उठा कर नीचे खड़े बाई के पास फेंकने लगा। बाई उन्हें जल्दी-जल्दी उठाकर अपने बड़े-बड़े बोरे भरता गया।

मीराली बहुत देर तक काम करता रहा। अचानक उसके विभाग में एक ल्याल आया तो उसका खून सूख गया।

“मालिक, मैं यहां से नीचे कैसे उतरूंगा?” उसने पुकार कर बाई से पूछा।

“कुछ और हीरे नीचे फेंक दो,” बाई ने जवाब दिया, “मैं बाद में तुम्हें नीचे उतरने का तरीका बताऊंगा।”

मीराली ने उसपर विश्वास किया और हीरे नीचे फेंकता रहा।

जब बोरे ऊपर तक भर गये तो बाई ने उन्हें ऊंटों पर लाद दिया।

“ए बेटे,” उसने हंसते हुए मीराली को पुकार कर कहा। “अब तो तुम समझ गये न कि मैं अपने नौकरों से क्या काम लेता हूँ। देखो तो वहां पहाड़ पर तुम्हारे जैसे कितने और हैं!”

इतना कहकर बाई अपने ऊंटों को हांक ले गया।

मीराली पहाड़ पर खड़ा रह गया। वह नीचे उतरने के रास्ते की तलाश करने लगा। मगर वहां तो सिर्फ़ खड़ु-खाइयाँ थीं और हर जगह इन्तानी हड्डियाँ बिखरी पड़ी थीं। ये उन लोगों की हड्डियाँ थीं जो मीराली की तरह ही बाई के नौकर रहे थे।

मीराली कांप उठा।

अचानक उसे अपने ऊपने पंखों की जोरदार फड़फड़ाहट सुनाई दी और इस के पहले कि वह मुड़ भी सके, एक बड़ा-सा उल्काव उस पर झपटा। वह मीराली के टुकड़े-टुकड़े करने ही वाला था, मगर मीराली ने अपने होश-हवास कायम रखे और अपने दोनों हाथों से उल्काव के पंजे पकड़ लिए और उन्हें कसकर पकड़े रहा। उल्काव जोर से चीखा, उड़ा और मीराली की नीचे झटक देने के लिए चक्कर काटने लगा। आखिर वह थककर जमीन पर जा गिरा और जब मीराली ने उसे छोड़ा तो वह उड़ गया।

इस तरह मीराली मौत के भयानक मुंह से सही-सलामत निकल आया।

वह बाजार में जाकर फिर से काम की तलाश करने लगा। अचानक उसने उसी बाई को, अपने पुराने मालिक को अपनी तरफ़ आते देखा।

“बाई, क्या आपको नौकर की जरूरत है?” मीराली ने पूछा।

बाई के विभाग में तो मूलकर भी यह बात नहीं आ सकती थी कि उसका कोई नौकर ज़िन्दा भी लौटकर आ सकता है। ऐसा तो पहले कभी हुआ ही नहीं था। इसलिए उसने मीराली को कोई दूसरा ही समझा और उसे अपने साथ घर ले गया।

कुछ समय बाद बाई ने मीराली को एक बैल ज़िबह कर उसकी खाल उतारने और उसके बाद दो ऊंट तैयार करने और चार बोरे लाने का हुक्म दिया।

वे उसी पहाड़ के वामन की तरफ़ रवाना हो गये। वहां पहुंचकर बाई ने पहले की ही भांति मीराली को खाल पर लेटने और उसे अपने गिर्द लपेट लेने के लिए कहा।

“मुझे करके दिखाइये, मैं ठीक से समझा नहीं,” मीराली ने कहा।

“इसमें समझने की बात ही क्या है? देखो, ऐसे करना चाहिए,” बाई ने जवाब दिया और फैलाई हुई खाल पर लेट गया।

तब मीराली ने तुरंत बाई को लपेटकर खाल का बंडल बना दिया, उसे कसकर बांधा और एक ओर को छिपकर खड़ा हो गया।

“अरे मेरे बेटे,” बाई चिल्लाया, “यह तुमने मेरे साथ क्या किया है?”

मगर इसी समय वही दो बड़े-बड़े पक्षी उड़ते हुए आये और बैल की खाल को उड़ाकर पहाड़ की चोटी पर ले गये। वहां पहुंच कर वे खाल को चोंचों और पंजों से फाड़ने लगे, मगर बीच में बाई को लिपटा देखकर डर गये और उड़ गये। बाई लड़खड़ाता हुआ उठकर खड़ा हो गया।

“बाई, वक्त बरबाद मत करो। हीरे नीचे फेंको जैसे मैंने किया था,” मीराली ने नीचे से पुकारकर कहा।

अब बाई उसे पहचान गया और डर और गुस्से से थरथर कांपने लगा।

“तुम पहाड़ से नीचे कैसे उतरे?” बाई ने मीराली से पूछा। “जल्दी से मुझे जवाब दो!”

“कुछ हीरे नीचे फेंक दो। जब मेरे पास काफ़ी हो जायेंगे तो मैं तुम्हें बता दूंगा कि पहाड़ से नीचे कैसे उतरा जा सकता है,” मीराली ने जवाब दिया।

बाई हीरे नीचे फेंकने लगा और मीराली उन्हें जल्दी-जल्दी उठाने लगा। जब बीरे मर गये तो मीराली ने उन्हें ऊंटों पर लाद दिया।

“बाई, अब जरा अपने इर्दगिर्द नज़र डालो,” मीराली ने पुकारकर कहा। “जिन आदमियों को तुमने मौत के मुंह में धकेला था, उनकी हड्डियां सभी जगह बिखरी पड़ी हैं। तुम उनसे नीचे उतरने का रास्ता क्यों नहीं पूछते? जहां तक मेरा सवाल है, मैं तो अपने घर चला।”

इतना कहकर मीराली ने ऊंटों का मुंह मोड़ा और अपनी मां के घर की ओर चल दिया।

बाई पहाड़ की चोटी पर इधर-उधर दौड़ता हुआ धमकियां देता और चीखता-चिल्लाता रहा, मगर बेसूद। वहां उसकी सुनने वाला ही कौन था?!

सालची काजी

ताजिक लोक-कथा



आप यक़ीन करें या न करें, किसी ज़माने में एक ग़रीब आदमी था जो खून-पसीना एक करके काम करता था, मगर फिर भी जैसे का तैसा ग़रीब ही रहता था। बुनाचे उसने अपना शहर छोड़ किसी दूर-दराज़ के शहर में जाकर रोज़ी कमाने का फैसला किया। उसने अपने परिवार से विदा ली और चल दिया।

वह बहुत दिनों चला या थोड़े दिन, यह कोई नहीं जानता, पर आख़िर वह उस शहर में पहुंच गया जहां उसे पहुंचना था। वहां पहुंचते ही वह काम की तलाश में घर-घर, द्वार-द्वार चक्कर काटने लगा। वह कभी किसी काम से इंकार न करता और हर काम को बहुत अच्छी तरह और बहुत ध्यान से करता।

अपनी कमाई में से वह सिर्फ़ उतना ही खर्च करता जितना पेट भरने के लिए जरूरी होता और बाक़ी एक छोटी-सी धैली में यह सोचते हुए रख देता —

“मैं थोड़ी-सी मेहनत और करूंगा, थोड़ा पैसा और बचाऊंगा और फिर अपने बीबी-बच्चों के पास लौट जाऊंगा।”

इस तरह वह कई वर्षों तक लगातार कड़ी मेहनत करता रहा और उसने एक हजार तंगा बचा लिये। एक गरीब आदमी के लिए तो यह रकम बहुत बड़ी थी, इसलिए वह इसके बारे में चिन्ता करने और यह सोचने लगा -

“अगर किसी कारण मेरी यह रकम खो गई तो? इसे अपने साथ-साथ लिये फिरना तो बेवकूफी होगी, क्योंकि मुझ से यह गुम हो सकती है। अगर किसी चोर को पता चला गया तो वह मुझे मारकर मेरी जमा-पूंजी लूट लेगा। घर में इसे छिपाना भी ठीक नहीं होगा, क्योंकि वहां से भी यह गायब हो सकती है। हो सकता है कि कोई इसे छिपाते हुए मुझे देख ले। बहुत से बदमाश और बुरे लोग हैं इस दुनिया में। तब मैं अपने पैसों से हाथ धो बैठूंगा और मुझे खाली हाथ ही घर लौटना पड़ेगा...”

उसके दिमाग में इसी तरह के खयाल आते रहते और उसकी समझ में नहीं आता था कि वह क्या करे। आखिर उसने तय किया कि वह अपने एक हजार तंगा क्राजी के पास रख देगा।

“लोग कहते हैं कि वह ईमानदार और नेक-पाक आदमी है,” उसने मन ही मन सोचा। “मेरी रकम उसके पास सुरक्षित रहेगी। जब मैं अपने घर लौटने की सोचूंगा तो उससे यह रकम ले लूंगा।”

गरीब आदमी ने इस तरह अपने मन में तर्क-वितर्क किया और ऐसा ही सोचकर वह क्राजी के पास गया। क्राजी ने उससे पूछा कि तुम किसलिये आये हो। गरीब आदमी ने जवाब दिया -

“ऐ मुहतरम क्राजी, मैं अपनी रकम आपके पास अमानत के तौर पर रखना चाहता हूं। इससे बेहतर जगह मुझे कोई नहीं सूझती। जब तक मैं इस शहर में रहता और काम करता हूं, तब तक मेहरबानी कर यह रकम अपने पास रख लें।”

क्राजी ने धैली ले ली और बहुत गम्भीर होकर कहा -

“मैं खुशी से ऐसा करने को तैयार हूं। अपनी रकम महफूज रखने के लिए तुम्हें इससे बेहतर जगह नहीं मिल सकती थी।”

गरीब आदमी खला गया और क्राजी ने रकम गिनकर एक बड़ी-सी तिजोरी में रख दी।

कुछ समय बाद गरीब आदमी ने अपने घर जाने की सोची। वह क्राजी के पास गया और बोला -

“मुहतरम क्राजी, मुझे मेरी रकम लौटा दीजिये, क्योंकि कल मैं इस शहर से जा रहा हूं।”

क्राजी ने उसे गौर से देखकर पूछा -

“तुम किस रकम की बात कर रहे हो?”

“मुहतरम क्राजी, वही एक हजार तंगा जो मैंने आपके पास अमानत रखे थे।”

“तुम्हारा दिमाग चल निकला है!” क्राजी चिल्लाया। “कब तुमने मुझे दी थी रकम? वाह, यह भी खूब रही! एक हजार तंगा! तुम्हारी सात पीढ़ियों में किसी ने एक सौ तंगा भी नहीं देखा होगा! तुम्हारे पास कहां से आयेगा एक हजार तंगा!”

गरीब आदमी ने क्राजी को याद दिलाने की कोशिश की कि कब वह उसके पास रकम लेकर आया था और उनके बीच क्या बातचीत हुई थी। मगर क्राजी ने उसकी एक न सुनी। उसने गुस्से से पैर पटके और अपने नौकरों को आवाज दी।

“यह कोई उठाईगीरा है,” वह चिल्लाया। “इसे मार-पीटकर सेरे घर से निकाल दो!”

क्राजी के नौकर गरीब आदमी पर पिस पड़े, उन्होंने बहुत निर्बयता से उसकी पिटाई की और उसे घर से बाहर निकाल दिया।

गरीब आदमी हाथ मलता और आंसू बहाता हुआ बाहर सड़क पर चल दिया।

“मेरी सारी मेहनत गई! मेरी सारी जमा-पूंजी लुट गई!” वह दुखी होता हुआ रोहराता रहा। “लासची क्राजी ने मुझे लूट लिया!”

उसी समय एक औरत पास से गुजरी। इस गरीब आदमी को रोते और आहें भरते देखकर उसने उसे डांटते हुए कहा -

“क्या बात है, भाई? तुम अच्छे खासे मर्ब हो, बाढ़ी रखे हुए और पगड़ी पहने हो। तुम बच्चों की तरह क्यों रो रहे हो?”

गरीब आदमी ने दुखी स्वर में कहा -

“अरी मेरी बहन, काश तुम्हें मालूम होता कि मेरे साथ कैसे घोखा हुआ है! मैं कई बरसों से अपनी ताकत से ज्यादा काम कर रहा हूं। न कमी भर पेट धाया और न कमी पूरी नींद ली। बहुत ही मुश्किल से मैंने एक हजार तंगा बचाये थे। अब मैं वह सारी की सारी रकम खो चुका हूं। अगर तुम्हें यह मालूम हो जाये कि ऐसा किस तरह हुआ, तो तुम मुझे इस तरह नहीं डांटोगी।”

“अच्छा बताओ, तुम्हारे साथ क्या हुआ है?” उस औरत ने कहा।

गरीब आदमी ने बताया कि उसे कैसे घोखा दिया गया है।

“और लोग कहते हैं कि क्राजी नेक-पाक आदमी है!” उसने झल्लाते हुए यह भी जोड़ दिया।

उस औरत ने बहुत हमदर्दी से उसकी बात सुनी और बोली—

“इस तरह दुखी नहीं होओ। अमी बात हाथ से नहीं निकली है। तुम मेरे साथ चलो, मैं कोई तबदीर सोच लूंगी।”

वे उस औरत के घर गये। उसने घर में रखा हुआ एक बड़ा-सा डिब्बा हाथों में लिया और फिर अपने छोटे-से बेटे से बोली—

“मैं इस आदमी के साथ क्राजी के पास जा रही हूँ। थोड़ी दूरी पर तुम हमारे पीछे-पीछे आना और यह कोशिश करना कि तुम पर किसी की नजर न पड़े। जब हम क्राजी के घर पहुंच जायें तो तुम तब तक छिपकर इन्तजार करना जब तक क्राजी इस आदमी की रकम न लौटा दे। जब क्राजी इस डिब्बे को लेने के लिए हाथ फैसाये तो तुम भागकर आना और कहना—

“पिताजी अपने ऊंटों और माल के साथ वापस आ गये हैं!”

“ठीक है, मैं ऐसा ही करूंगा,” लड़के ने कहा।

औरत ने डिब्बा अपने सिर पर रखा और गरीब आदमी को साथ ले क्राजी के घर की ओर चल दी। इस औरत का बेटा कुछ फासले पर उनके पीछे-पीछे चलने लगा।

वे क्राजी के घर पहुंचे। उस औरत ने गरीब आदमी से कहा—

“मैं पहले जाऊंगी और तुम मेरे बाद अन्दर आना।”

वह घर में दाखिल हुई। क्राजी ने उसकी ओर तथा उसके सिर पर रखे हुए बड़े-से बक्से को देखा और बोला—

“बहन, किस काम से यहां आई हो?”

औरत ने जवाब दिया—

“ऐ मुहतरम क्राजी, शायद आप ने मेरा नाम सुना हो। मैं अमीर सौदागर रहीम की बीबी हूँ। मेरा शौहर अपना कारवां लेकर दूर-दराज के देशों में गया है। जाने वह कब लौटे? मैं पिछली कई रातों से चैन की नींद नहीं सो पाई हूँ। खोर हमारे घर के इर्दगिर्द घबककर काटा करते हैं और यक़ीनन वे हमें लूट लेना चाहते हैं। इस डिब्बे में हमारा सारा रुपया, सोना और हीरे-जवाहरात हैं। यह बहुत भारी है और मैं इसे बड़ी मुश्किल से उठाकर यहां लाई हूँ। मैं चाहती हूँ कि आप इसे अपने पास हिफ़ाज़त से रख लें। जब मेरा शौहर लौट आयेगा तो वह खुद इसे लेने आ जायेगा।”

क्राजी ने डिब्बे को उठाकर देखा। जब उसने उसे बहुत भारी पाया तो लालच से उसके हाथ कांपने लगे।

“इस डिब्बे में कम से कम चालीस या पचास हजार तंगा हैं,” उसने सोचा, “इसके अलावा बहुत-से हीरे भी हैं। मैंने सुना है कि यह रहीम बहुत अमीर आदमी है...” तब उसने उस औरत से कहा—

“अच्छी बात है, बहन, मैं तुम्हारी दौलत अपने पास अमानत रखूंगा। तुम यक़ीन मानो कि यहां वह बिल्कुल महफूज़ रहेगी। तुम्हें अपना एक-एक तंगा ज्यों का त्यों मिल जायेगा।”

मगर औरत ने क्राजी के हाथ से डिब्बा लेते हुए कहा—

“यह मुझे सचमुच ही वापस मिल जायेगा न?”

“इसमें तो शक की ज़रा भी गुंजाइश नहीं है!” क्राजी ने कहा। “सारे शहर में मेरे ईमानदार और नेक-पाक होने की धाक है।”

इसी समय वह गरीब आदमी अन्दर आया। क्राजी उसे देखकर बेहद खुश हुआ।

“अल्लाह ने जैसे खुद ही इसे यहां भेज दिया है,” उसने अपने मन में कहा।

“इस औरत के सामने अपनी ईमानदारी का सबूत पेश करने का यह सबसे बढ़िया मौक़ा हाथ लगा है। मैं इस मिस्त्रमंगे को उसका एक हजार तंगा लौटा दूंगा और इस औरत से रुपयों और हीरों से भरा डिब्बा ले लूंगा। इसके लिए एक हजार तंगा खुशी से क़ुर्बान किया जा सकता है, हा-हा!”

तब क्राजी उस औरत से बोला—

“मेरी बहन, मैं फिर दोहराता हूँ कि क्राजी के घर से बढ़कर महफूज़ और भरोसे की कोई दूसरी जगह नहीं है। तुम्हारे घर के मुक़ाबले में यह डिब्बा मेरे पास कहीं ज्यादा महफूज़ रहेगा। जब तुम्हारा शौहर लौट आये या जब तुम खुद चाहो, आकर अपने इस डिब्बे को वापस ले सकती हो।”

क्राजी के नौकरों और उसके दीवानखाने में हाज़िर सभी लोगों ने ऐसे सिर हिलाया मानो कह रहे हों कि क्राजी बिल्कुल सच कह रहा है और उसके हर शब्द पर भरोसा किया जा सकता है।

क्राजी ने ऐसा ढोंग किया कि जैसे गरीब आदमी पर उसकी नज़र अमी-अमी ही पड़ी है, वह बड़े उत्साह से बोला—

“अरे, यह देखो, यह रहा वह आदमी जिसने अपनी सारी जमा-पूंजी यानी एक हजार तंगा मेरे पास रख दिया था। इसने आज सुबह ही मेरे पास आकर अपनी रकम

वापस मांगी थी। मगर मैं इसे पहचान न पाया। मैंने इसे चोर समझा और रकम लौटाने से इन्कार कर दिया। अगर कोई इसे अच्छी तरह जानने-पहचाननेवाला आदमी इसकी शिनास्त कर दे तो मैं फौरन इसे इसकी रकम लौटा दूँ।”

औरत बोली —

“ऐ मुहतरम क्राजी, हम तो लगभग दो साल से इस शरीब आदमी को जानते हैं। यह बहुत दूर से इस शहर में आया था और तभी से बड़ी सक्त मेहनत कर रहा है। कुछ वक्त तक उसने हमारे घर में भी काम किया है। यकीन मानिये कि उसने बहुत ही मेहनत से पैसा कमाया है। इसीलिए तो उसके हाथों में घट्टे पड़ गये हैं।”

क्राजी ने होंठों पर बहुत ही मधुर मुस्कान लाते हुए कहा —

“तो तुम इस आदमी को जानती हो! तब तो देर करने में कोई तुक ही नहीं। मेरे भाई, मेरे पास आकर अपने एक हजार तंगा ले लो। लो, जल्दी करो!”

क्राजी ने अपनी तिजोरी खोली, उसमें से कुछ रकम निकाली और एक हजार तंगा गिनकर बड़े दिखावे के साथ शरीब आदमी को पेश कर दिये।

“हां, तो बहन, अब तो तुम्हें यकीन हो गया होगा कि लोगों की दौलत मेरे पास कैसे महफूज रहती है और कैसे मैं उसे उनके मालिकों को लौटा देता हूँ,” क्राजी ने जल्दी से कहा। “अब तुम डिब्बा मेरे पास छोड़कर चैन से घर जा सकती हो!”

और उसने डिब्बे के लिए अपने हाथ फैला दिये।

इसी वक्त इस औरत का बेटा गली में से दौड़ता हुआ आया।

“मां!” उसने पुकारकर कहा। “जल्दी से घर चलो! पिताजी अपने ऊंट और माल लेकर घर आ गये हैं और तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं!”

“यह बात है! अब जब मेरा शौहर लौट आया है तो मुझे चोरों का बिल्कुल डर नहीं,” इस औरत ने हंसकर कहा। “वह नेक-पाक क्राजी के बिना ही अपनी दौलत की देखभाल कर लेगा।”

इतना कहकर इस औरत ने अपना डिब्बा वापस लिया, उसे सिर पर रखा और शरीब आदमी के साथ क्राजी के घर से बाहर आ गई।

“मेरे भाई, इन्सान को मायूस कभी नहीं होना चाहिए,” उसने कहा। “याद रखो कि दुनिया में ऐसा कोई मक्कार और चालाक आदमी नहीं है जिसकी मक्कारी और चालाकी हमेशा कारगर हो सके। अपने घर जाकर चैन की बंसी बजाओ। बहुत भटक लिये अजनबी इलाकों में। अपनी खून-पसीने की कमाई को खर्च करो और मौज मारो।”

उन्होंने एक दूसरे से विदा ली और अपनी-अपनी राह चल दिये।

अब क्राजी का हाल सुनिये। अकेला रह जाने पर वह गुस्से से आग-बबूसा हो उठा। वह अपनी दाढ़ी के बाल नोचने और पांव पटकने लगा। गुस्से और निराशा के मारे उसका बहुत बुरा हाल था।

“उफ़, किस्मत फूट गई! हाय, बेड़ा चर्क हो गया!” वह गुस्से में बार-बार यही दोहराता रहा। “बुरा हो कम्बख्त रहीम सौदागर का! उसे भी इसी वक्त आना था! एक घंटा, सिर्फ़ एक घंटा देर से आ जाता तो क्या उसे गोली लग जाती! तब सारा किस्मा खत्म हो गया होता! दौलत से भरा हुआ डिब्बा मेरा हो चुका होता! मेरी दौलत कई गुना बढ़ गई होती! मेरी तिजोरी ऊपर तक भर गई होती! हाय, मैं क्या करूँ, मेरी किस्मत बर्षा दे गई! हाय, मेरी फूटी किस्मत!”

तीन अक्लमन्द भाई

उज्ज्वेल लोक-कथा



एक बार का जिक्र है कि कहीं एक शरीर आवमी रहता था जिसके तीन बेटे थे। वह अक्सर अपने बेटों से कहता —

“मेरे बेटो! हमारे पास न तो रेवड़ हैं और न ही सोना, कुछ भी तो नहीं है। इसलिए तुम्हें एक दूसरी ही क्रिस्म का खजाना जमा करना चाहिए — अधिक समझने और जानने की कोशिश करो। कोई भी चीज तुम्हारी नजर से न बच पाये। बड़े-बड़े रेवड़ों की जगह तुम्हारे पास पैनी नजर होगी और सोने की जगह तेज विभाव होगा। ऐसी बौलत जमा कर लेने पर तुम्हें कभी किसी चीज की कमी न रहेगी और तुम दूसरों के मुक्ताबले में उन्नीस नहीं रहोगे।”

वक्त गुजरा और इसके कुछ बाद बूढ़ा चल बसा। भाई मिल बैठे, उन्होंने सारी स्थिति पर विचार किया और फिर बोले —

“हमारे लिए यहां कुछ भी तो करने को नहीं। आओ, घूम-फिर कर दुनिया को देखें। जरूरत होने पर हम चरवाहों या खेत-मजदूरों का काम कर लेंगे। हम कहीं भी क्यों न हों, भूखे नहीं मरेंगे।”

बुनांचे वे तैयार होकर सफ़र पर चल दिये।

उन्होंने सुनसान-वीरान घाटियां लांघीं और ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों को पार किया। इस तरह वे लगातार चालीस दिनों तक चलते रहे।

उनके पास जितनी खुराक थी, अब तक खत्म हो गई थी। वे थककर चूर हो गये थे और उनके पैरों में छाले पड़ गये थे, मगर सड़क थी कि खत्म होने को ही नहीं आ रही थी। वे आराम करने के लिए रुके और फिर आगे चल दिये।

आखिर उन्हें अपने सामने वृक्ष, दुर्ब और मकान नजर आये — वे एक बड़े शहर के नजदीक पहुंच गये थे।

तीनों भाई बहुत खुश हुए और जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाने लगे।

“जो कुछ बुरा था वह पीछे रह गया और आगे तो अच्छा ही अच्छा है,” उन्होंने कहा।

जब वे शहर के बिल्कुल निकट पहुंच गये तो सबसे बड़ा भाई अचानक रुका, उसने जमीन पर नजर डाली और बोला —

“थोड़ी ही देर पहले यहां से एक बहुत बड़ा ऊंट गुजरा है।”

वे थोड़ा और आगे गये तो मंझला भाई रुका और सड़क के दोनों ओर नजर डालकर बोला —

“ऊंट काना था।”

वे कुछ और आगे गये तो सबसे छोटे भाई ने कहा —

“ऊंट पर एक औरत और एक बच्चा सवार थे।”

“बिल्कुल सही है,” दोनों बड़े भाइयों ने कहा और वे तीनों फिर आगे बढ़ चले। थोड़ी देर बाद एक घुड़सवार उनके पास से गुजरा। सबसे बड़े भाई ने उसकी ओर देखकर पूछा —

“घुड़सवार, तुम किसी खोई हुई चीज की तलाश कर रहे हो न?”

घुड़सवार ने थोड़ा रोककर जवाब दिया —

“हां।”

“तुम्हारा ऊंट खो गया है न?” सबसे बड़े भाई ने पूछा।

“हां।”

“बहुत बड़ा-सा?”

“हां।”

“वह काना है न?” मंझले भाई ने पूछा।

“हां।”

“एक छोटे-से बच्चे के साथ उस पर एक औरत सवार थी न?” सबसे छोटे भाई ने सवाल किया।

घुड़सवार ने तीनों भाइयों को शक की नजर से देखा और बोला -

“आह, तो तुम्हारे पास है मेरा ऊंट! जल्दी बताओ, तुम ने उसका क्या किया?”

“हमने तुम्हारे ऊंट की शकल तक नहीं देखी,” भाइयों ने जवाब दिया।

“तो तुम्हें उसके बारे में ये सभी बातें कैसे मालूम हुई?”

“क्योंकि हम अपनी आंखों से और दिमाग से काम लेना जानते हैं,” भाइयों ने जवाब दिया। “जल्दी से उस दिशा में अपना घोड़ा बौड़ाओ। वहां तुम्हें तुम्हारा ऊंट मिल जायेगा।”

“नहीं,” ऊंट के मालिक ने जवाब दिया, “मैं उस दिशा में नहीं जाऊंगा। मेरा ऊंट तुम्हारे पास है और तुम्हें ही उसे मुझे लौटाना पड़ेगा।”

“हम ने तो तुम्हारे ऊंट को देखा तक नहीं,” भाइयों ने परेशान होते हुए कहा।

मगर घुड़सवार उनकी एक भी सुनने को तैयार नहीं था। उसने अपनी तलवार निकाल ली और उसे जोर से घुमाते हुए तीनों भाइयों को अपने आगे-आगे चलने का हुक्म दिया। इस तरह वह उन्हें सीधे अपने देश के पादशाह के महल में ले गया। इन तीनों भाइयों को सन्तरियों के सुपुर्ब कर वह खुब पादशाह के पास गया।

“मैं अपने रेबड़ों को पहाड़ों पर लिये जा रहा था,” उसने कहा, “और मेरी बीबी मेरे छोटे-से बेटे के साथ एक बड़े-से काने ऊंट पर मेरे पीछे-पीछे आ रही थी। किसी तरह उनका ऊंट पीछे रह गया और वे रास्ते से भटक गये। मैं उन्हें खोजने गया तो मुझे रास्ते में तीन आदमी मिले जो पैदल चले जा रहे थे। मुझे पूरा यकीन है कि इन्होंने मेरा ऊंट चुराया है और मेरी बीबी तथा बेटे को मार डाला है।”

“तुम ऐसा क्यों समझते हो?” जब वह आदमी अपनी बात कह चुका तो पादशाह ने पूछा।

“इसलिए कि मैंने इन लोगों से इस सम्बन्ध में एक भी शब्द नहीं कहा था, फिर भी उन्होंने मुझे यह बताया कि ऊंट बहुत बड़ा और काना है तथा उस पर एक औरत बच्चे के साथ सवार है।”

पादशाह ने थोड़ी देर सोच-विचार किया और फिर बोला -

“जैसा कि तुम कहते हो तुम्हारे बताये बिना ही तुम्हारे ऊंट के बारे में उन्होंने सभी कुछ ऐसे अच्छे ढंग से बयान किया है, तो शकर उन्होंने उसे चुराया होगा। जाओ, उन चोरों को यहां लाओ।”

ऊंट का मालिक बाहर गया और तीनों भाइयों को साथ लिये हुए झटपट अन्दर आया।

“चोरो, फौरन बताओ!” पादशाह उन्हें धमकाते हुए चिल्लाया। “फौरन जवाब दो, तुमने इस आदमी का ऊंट कहां गायब किया है?”

“हम चोर नहीं हैं और हमने इसका ऊंट कभी नहीं देखा,” भाइयों ने जवाब दिया।

तब पादशाह बोला -

“मालिक के कुछ भी बताये बिना तुमने ऊंट को बिल्कुल सही तौर पर बयान किया है। अब तुम यह कहने की कैसे जुरत करते हो कि तुमने उसे नहीं चुराया!”

“पादशाह, इसमें तो अचम्भे की कोई बात नहीं है।” भाइयों ने जवाब दिया। “बचपन से ही हमें ऐसी आदत पड़ गई है कि हम किसी चीज को अपनी नजर से नहीं चूकने देते। हमने चीजों को पैनी नजर से देखने और दिमाग से सोचने के काम में बहुत वक्त लगाया है। इसीलिए ऊंट को देखे बिना ही हमने यह बता दिया कि वह कैसा है।”

पादशाह हंस दिया।

“किसी चीज को देखे बिना ही उसके बारे में क्या इतना कुछ जानना मुमकिन हो सकता है?” उसने पूछा।

“हां, मुमकिन है,” भाइयों ने जवाब दिया।

“तो ठीक है, हम अभी तुम्हारी सच्चाई की जांच-पड़ताल करेंगे।”

पादशाह ने इसी समय अपने बजीर को बुलाया और उसके कान में कुछ फुसफुसाया। बजीर फौरन महल से बाहर चला गया। मगर बहुत जल्दी ही वह दो नौकरों के साथ लौटा। नौकर एक टिकठी पर बहुत बड़ी-सी पेटी रखकर लाये थे। नौकरों ने पेटी को बहुत सावधानी से दरवाजे के पास ऐसे रख दिया कि वह पादशाह को दिखाई दे सके और खुद एक तरफ को हट गये। तीनों भाई दूर से खड़े उन्हें देखते रहे। उन्होंने इस बात को बहुत गौर से देखा कि पेटी कहां से और कैसे लाई गई थी, किस ढंग से फर्श पर रखी गयी थी।

“हां, तो चोरो, हमें बताओ कि उस पेटी में क्या है?” पादशाह ने कहा।

“पादशाह सलामत, हम तो पहले ही यह अर्ब कर चुके हैं कि हम चोर नहीं हैं,” सबसे बड़े भाई ने कहा। “पर यदि आप चाहते हैं तो मैं आप को यह बताना सकता हूं कि उस पेटी में क्या है। उसमें कोई छोटी-सी गोले चीज है।”

“उसमें अनार है,” मंजला भाई बोला।

“हां, और वह अभी कच्चा है,” सबसे छोटे भाई ने जोड़ा।

यह सुनकर पादशाह ने पेटी को नजदीक लाने का हुक्म दिया। नौकरों ने फौरन हुक्म पूरा किया। पादशाह ने नौकरों से पेटी खोलने के लिए कहा। पेटी खुल जाने पर उसने उसमें झांका। जब उसे उसमें कच्चा अनार दिखाई दिया तो उसकी हैरानी की कोई हद न रही!

आश्चर्यचकित पादशाह ने अनार निकालकर वहां हाजिर सभी लोगों को दिखाया। तब उसने ऊंट के मालिक से कहा—

“इन लोगों ने यह साबित कर दिया है कि ये चोर नहीं हैं। वास्तव में ये बहुत ही समझदार लोग हैं। तुम कहीं और जाकर अपने ऊंट की तलाश करो।”

पादशाह के महल में उस समय हाजिर सभी लोगों की हैरानी का कोई ठिकाना न था, मगर सबसे बढ़कर तो खुब पादशाह हैरान था। उसने सभी तरह के बढ़िया और लजीब खाने मंगवाये और लगा इन भाइयों की खातिरबारी करने।

“तुम लोग बिल्कुल बेक्रसूर हो और जहां भी जाना चाहो जा सकते हो। मगर जाने के पहले तुम मुझे सारी बात तफ़्सील के साथ बताओ। तुम्हें यह कैसे पता चला कि उस आदमी का ऊंट गुम हुआ है और तुमने यह कैसे जाना कि ऊंट कैसा था।”

सबसे बड़े भाई ने कहा—

“घूस पर उसके पैरों के निशानों से मुझे मालूम हुआ कि कोई बहुत बड़ा ऊंट वहां से गुजरा है। जब मैंने अपने पास से गुजरनेवाले घुड़सवार को अपने चारों ओर नजर बौझाते देखा तो उसी वक्त मेरी समझ में यह बात आ गई कि वह क्या खोज रहा है।”

“बहुत खूब!” पादशाह ने कहा। “अच्छा, अब यह बताओ कि तुम में से किसने इस घुड़सवार को यह बताया था कि उसका ऊंट काना है? कानापन तो सड़क पर निशान नहीं छोड़ता।”

“मैंने इस बात का अनुमान इसलिये लगाया कि सड़क के बायीं ओर की घास तो ऊंट ने चरी थी, मगर बायीं ओर की घास ज्यों की त्यों थी,” मंझले भाई ने जवाब दिया।

“बहुत खूब!” पादशाह ने कहा। “तुम में से यह अनुमान किसने लगाया था कि उसपर बच्चे के साथ एक औरत सवार थी?”

“मैंने,” सबसे छोटे भाई ने जवाब दिया। “मैंने देखा कि एक जगह पर ऊंट के घुटने टेककर बैठने के निशान बने हुए थे। उनके करीब ही मुझे रेत पर एक औरत

के जूतों के चिह्न दिखाई दिये। साथ ही छोटे-छोटे पैरों के निशान थे जिससे मुझे पता चला कि औरत के साथ एक बच्चा भी था।”

“बहुत खूब! तुम ने बिल्कुल सही कहा है,” पादशाह बोला। “मगर तुम लोगों को यह कैसे पता चला कि पेटी में एक कच्चा अनार है? यह बात तो मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आ रही।”

सबसे बड़े भाई ने कहा—

“जिस तरह दोनों नौकर उसे उठाकर लाये थे, उससे बिल्कुल जाहिर था कि वह चरा भी मारी नहीं है। जब वे पेटी को फर्श पर टिका रहे थे तो मुझे उसके अन्दर किसी छोटी-सी गोल चीज के लुढ़कने की आवाज सुनाई दी।”

मंझला भाई बोला—

“मैंने ऐसा अनुमान लगाया कि चूंकि पेटी बगीचे की तरफ से लाई गई है और उसमें कोई छोटी-सी गोल चीज है, तो वह जरूर अनार ही होगा। कारण कि आपके महल के आसपास अनारों के बहुत से पेड़ लगे हुए हैं।”

“बहुत खूब!” पादशाह ने कहा और फिर उसने सबसे छोटे भाई से पूछा—

“मगर तुम्हें यह कैसे पता चला कि अनार कच्चा है?”

“इस वक्त तक बगीचे में सभी अनार कच्चे हैं। यह तो आप खुद ही देख सकते हैं,” उसने जवाब दिया और खुसी हुई खिड़की की ओर संकेत किया।

पादशाह ने बाहर देखा तो पाया कि बगीचे में लगे अनार के सभी वृक्षों पर कच्चे अनार लटक रहे थे।

पादशाह इन भाइयों की असाधारण पैनी नजर और तेज दिमाग से हैरान रह गया।

“घन-बौलत या दुनियावी चीजों के नजरिये से तो तुम बेशक अभीर नहीं हो, मगर तुम्हारे पास अकल का बहुत बड़ा खजाना जरूर है,” उसने तारीफ़ करते हुए कहा।



सबसे बड़ा कौन ?

किर्गीज लोक-कथा

बहुत ही पुराने जमाने की बात है कि किसी गांव में तीन भाई रहते थे। उनका एक साझा चितकबरा बैल था।

एक दिन भाइयों ने हिस्सेबारी खत्म कर अलग-अलग रहने का फ़ैसला किया। मगर तीन भाइयों के बीच एक बैल कैसे बांटा जाता ? पहले तो उन्होंने यह सोचा कि उसे बेच दें, मगर पास-पड़ोस में कोई ऐसा ठमीर आदमी नहीं मिला जो उसे खरीदता। तब उन्होंने उसे बिबह करने और उसका मांस आपस में बांटने की बात सोची। मगर वे ऐसा भी न कर पाये, उन्हें बैल पर तरस आया। किसी

एक भाई को बैल दें, वे इसके लिए भी राखी न हो सके।

चुनांचे उन्होंने किसी अक्लमन्द आदमी के पास जाने का फ़ैसला किया ताकि वह उनका यह मामला निपटा दे।

“अक्लमन्द आदमी जैसा कहेगा, हम वैसा ही करेंगे,” उन्होंने कहा। वे बैल को लेकर अक्लमन्द आदमी के गांव की ओर चल दिये। सबसे बड़ा भाई बैल के सिर के साथ-साथ चल रहा था, मंझला बैल की बगल में और सबसे छोटा बैल के पीछे-पीछे चलता हुआ उसे छड़ी से हांकता जा रहा था।

पौ फटने के समय एक घुड़सवार सबसे छोटे भाई के बराबर पहुंचा, उससे सलाम-बुआ की और पूछा कि वह बैल को कहाँ लिये जा रहा है। सबसे छोटे भाई ने उसे सारा क्रिस्ता सुनाया और यह कहा—

“हम बैल को एक अक्लमन्द आदमी के पास लिये जा रहे हैं जो हमारा मामला निपटा देगा। हम उसकी राय के मुताबिक काम करेंगे।”

घुड़सवार को अलविदा कहते हुए उसने कहा—

“तुम जल्दी ही मेरे मंझले भाई से जा मिलोगे। वह बैल की बगल में चल रहा है। उसे सलाम पहुंचाना और कहना कि वह बैल को जरा तेजी से बढ़ाता जाये। हमें रात होने से पहले अक्लमन्द आदमी के गांव में पहुंचना है।”

“अच्छी बात है,” घुड़सवार ने कहा। उसने अपने घोड़े को बुलकी पर डाला और आगे निकल गया।

घुड़सवार दोपहर के वक्त मंझले भाई के बराबर जा पहुंचा जो चितकबरे बैल की बगल में चल रहा था।

घुड़सवार ने उससे सलाम-बुआ की और बोला—

“तुम्हारे छोटे भाई ने तुम्हें सलाम भेजा है और कहा है कि तुम बैल को तेजी से हांकते जाओ ताकि रात होने से पहले ही मंझिल पर पहुंच जाये।”

मंझले भाई ने घुड़सवार का शुक्रिया अदा किया और बोला—

“जब तुम्हारा घोड़ा बैल के सिर के करीब जा पहुंचे तो तुम मेरे बड़े भाई को मेरा सलाम देना और कहना कि वह बैल को जल्दी-जल्दी हांकता चले। हम जल्दी से जल्दी अक्लमन्द आदमी के गांव में पहुंचना चाहते हैं।”

घुड़सवार घोड़ा बौड़ाता रहा और शाम होने पर ही वह बैल के सिर के पास पहुंचा। उसने सबसे बड़े भाई को छोटे भाइयों का सलाम दिया और बताया कि उन दोनों ने क्या प्रार्थना की है।

“मैं तो अब कुछ भी नहीं कर सकता,” सबसे बड़े भाई ने कहा। “अंधेरा तो हो भी गया है। हमें बैल को हांकना बन्द करके यहीं कहीं रात बितानी होगी।”

और उसने अपनी चाल धीमी कर दी।

मगर घुड़सवार नहीं रुका और घोड़ा बढ़ाता चला गया।

भाइयों ने स्तेपी में रात बिताई। अगली सुबह वे फिर से अपने बैल को हांकते हुए आगे चल दिये। तब, अचानक एक बहुत ही भयानक बात हुई। एक अतिकाय उक्राब आकाश से नीचे झपटा, उसने बैल को अपने पंजों में पकड़ा, उसे ऊपर उठाया और ऊंचे आकाश में उड़ा ले गया।

भाई कुछ बेर तक रोते-सिसकते और दुखी होते रहे और फिर खाली हाथ घर लौट गये।

हसी बीच उक्राब बैल को पंजों में दबाये उड़ता रहा। अचानक उसे नीचे चरागाह में बकरियों का एक रेवड़ दिखाई दिया। उनमें से एक बकरे के बड़े ही लम्बे सींग थे। उक्राब नीचे की ओर झपटा, बकरे के सींगों पर बैठ गया और बैल को नोच-नोचकर खाने तथा उसकी हड्डियां इधर-उधर बिखराने लगा।

अचानक मूसलधार बारिश होने लगी और गड़रिये तथा उसकी सभी बकरियों ने इसी लम्बे सींगोंवाले बकरे की बाड़ी के नीचे पनाह ले ली।

सहसा गड़रिये की बाईं आंख में बहुत जोर का दर्द होने लगा।

“मेरी आंख में जरूर कोई किरकिरी पड़ गई होगी,” उसने सोचा।

शाम होने पर गड़रिया अपने रेवड़ को गांव की ओर हांक ले चला। उसकी आंख का दर्द बढ़ गया था और वह गिड़गिड़ाते हुए लोगों को पुकारने लगा—

“गांववालों, हकीमों को बुला लाओ! उनसे कहो कि वे चालीस नावों में बैठकर मेरी आंख में तैरें और किरकिरी निकालें। वह मुझे चरा भी चैन नहीं लेने देती!”

सो गांववाले गये और चालीस हकीमों को बूझ कर साथे तथा उनसे बोले—

“आप हमारे गड़रिये की आंख में तैरें। किरकिरी खोजकर उसका दर्द दूर करें। मगर ध्यान रखिये कि उसकी आंख को किसी तरह की हानि न पहुंचने पाये।”

चालीस हकीम चालीस नावों में बैठकर गड़रिये की आंख में तैरने लगे। उन्होंने किरकिरी खोज ली जो वास्तव में किरकिरी नहीं, बल्कि बैल के कंधे की हड्डी थी। वह उस समय गड़रिये की आंख में जा गिरी थी जब उसने बारिश से बचने के लिए बकरे की बाड़ी के नीचे पनाह ली थी।

इसके बाद गड़रिये की आंख में दर्द बन्द हो गया, सभी हकीम अपने घर चले गये और बैल के कंधे की हड्डी गांव से बहुत दूर ले जाकर फेंक दी गई।

कुछ देर बाद उसी जगह के करीब से कुछ खानाबदोश गुजरे जहां बैल के कंधे की हड्डी पड़ी थी। रात होनेवाली थी। बुजुर्गों ने आपस में सलाह की और वहीं ठहरने तथा आग जलाने का फैसला किया।

“रात बिताने के लिए यह सफ़ेद जमीन ही सबसे अच्छी और सुरक्षित जगह लगती है,” उन्होंने कहा।

मगर जब सभी खानाबदोशों ने डेरे जमा लिए और सोने की तैयारी करने लगे तो अचानक जमीन हिलने और कांपने लगी। खानाबदोश डर गये। उन्होंने झटपट अपनी चीजें ठेलों पर लाद लीं, धोड़े जोते और प्रीरन वहां से रवाना हो गये।

सुबह होने पर ही उन्हें डर से निजात मिली और उन्होंने अपने खेमे गाड़े। इसके

बाद बुजुर्गों ने भूचालवाली जगह पर चालीस घुड़सवार यह जानने के लिए भेजे कि वहां क्या क्रिस्ता हुआ था।

चालीस घुड़सवार वहां पहुंचे। उन्होंने देखा कि जिस को वे रात के वक्त सफ़ेद जमीन समझ बैठे थे, वह वास्तव में एक अतिकाय हड्डी—बैल के कंधे की हड्डी थी जिसे इस समय भी एक लोमड़ी कुतर रही थी।

“तो इसलिए जमीन हिल रही थी!” घुड़सवार चिल्लाये। उन्होंने निशाना साधा, तीर छोड़े और लोमड़ी को मार डाला।

इसके बाद वे चालीस घुड़सवार इस लोमड़ी की खाल उतारने लगे। मगर वे उसकी एक तरफ़ की खाल ही उतार पाये और दूसरी तरफ़ वैसे ही छोड़ देनी पड़ी। कारण कि अपना पूरा जोर लगाने पर भी वे लोमड़ी को उलट नहीं पाये।

घुड़सवार अपने खेमे में लौटे और उन्होंने बुजुर्गों से सारी बात कही। बुजुर्ग सोचने लगे कि क्या किया जाये।

इसी समय एक जवान औरत इनके पास आई और बोली—

“आपके घुड़सवार जो लोमड़ी की खाल का टुकड़ा साथे हैं, कृपया वह मुझे दे दीजिये। मैं उससे अपने नवजात शिशु की टोपी बनाऊंगी।”

“अच्छी बात है,” बुजुर्गों ने कहा, “ले लो।”

इस जवान औरत ने अपने बच्चे का सिर मापा और उसके सिर के लिए लोमड़ी की खाल में से टोपी काटने लगी। मगर उसने पाया कि लोमड़ी की खाल बच्चे की टोपी का सिर्फ़ आधा हिस्सा बनाने के लिए काफी है। इसलिए वह फिर से बुजुर्गों के पास गई और उसने उनसे बाक़ी आधा हिस्सा देने के लिए कहा।

तब चालीस घुड़सवारों ने यह माना कि वे लोमड़ी को उलटकर उसकी दूसरी तरफ़ की खाल नहीं उतार पाये थे।

“अगर तुम लोमड़ी की आधी खाल से अपने बच्चे की टोपी नहीं बना सकती तो बेहतर यही है कि खुद आकर लोमड़ी के दूसरे हिस्से की खाल उतार लो,” वे बोले।

औरत अपने बच्चे को लेकर वहां गई जहां घुड़सवार लोमड़ी को छोड़ आये थे। उसने बड़ी आसानी से लोमड़ी को उलटा, उसकी दूसरी तरफ़ की खाल उतारी और खाल के दोनों हिस्सों से अपने बच्चे की टोपी बना दी।

अच्छा अब हम आप से यह पूछना चाहते हैं कि आपके लयाल में कौन सबसे बड़ा था—

बैल ? यह मत भूलियेगा कि घुड़सवार को उसकी पूंछ से उसके सिर तक सफ़र करने में पूरा दिन लग गया था।

या फिर उल्लाह ?

यह याद रहे कि वह बैल को आकाश में उड़ा ले गया था।

या फिर बकरा ?

यह मत भूलियेगा कि उल्लाह ने उसी के सींगों पर बैठकर बैल को खाय़ा था।

या फिर गड़रिया ?

याद रखिये कि चालीस हकीम चालीस गावों पर सवार हो उसकी आंख में तैरे थे।

या लोमड़ी ?

मत भूलियेगा कि जब वह बैल के कंधे की हड्डी को कुतर रही थी तो ज़मीन कांपने लगी थी।

या बच्चा ?

याद रखिये कि उसकी टोपी बनाने के लिए लोमड़ी की पूरी छाल की ज़रूरत पड़ी थी।

या फिर वह औरत सबसे बड़ी थी जिसका बच्चा इतना बड़ा था ?

अब आप सोचें, खूब सोचें। हो सकता है कि आप हमें इसका जवाब दे सकें।

अल्दार-कोसे और शिगाई-बाई

कज़ाख़ लोक-कथा



पुराने ज़माने की बात है कि स्तेपी में अल्दार-कोसे नाम का एक गरीब आदमी रहता था। जमा-पूंजी के नाम पर उसके पास सिर्फ़ एक घोड़ा ही था। मगर वह बड़ा ही समझदार आदमी था। हंसी-मजाकों और तरकीबों-तदबीरों का तो वह ख़जाना ही था।

इसी स्तेपी में एक अमीर आदमी भी रहता जिसका नाम था शिगाई-बाई। बड़ा ही कंजूस-मक्खीघूस था वह। सच तो यह है कि वह धनी तो था लेकिन कंजूस इससे भी कहीं ख़याब। वह इस हद तक कंजूस था कि घर आये मेहमान को रोटी का टुकड़ा या पानी का गिलास तक भी न देता।

एक दिन इस समझदार और चतुर अल्दार-कोसे ने शिगाई-बाई को सबक सिखाने का इरादा बनाया।

वह अपने घोड़े पर सवार हो शिगाई-बाई के घर की ओर चल दिया। जब उसके बोस्तों और पड़ोसियों को यह पता चला कि अल्दार-कोसे कहां जा रहा है तो उन्होंने खोर का ठहाका लगाया और बोले -

“हां, हां, जाओ अल्दार-कोसे, शिगाई-बाई तुम्हारी ठाठवार दावत करेगा ! भेड़ के बढ़िया गोشت और लकीर बही से तुम्हारी खातिर करेगा !”

“कोई बात नहीं,” अल्दार-कोसे ने जवाब दिया, “देखा जायेगा।”

अल्वार-कोसे कई दिनों तक स्तेपी में सवारी करता और शिगाई-बाई के खेमे को खोजता रहा। मगर वह जहाँ भी गया, लोगों ने उससे यही कहा —

“शिगाई-बाई की यहाँ खोज करना बेकार है। वह तो हम सभी से दूर किसी जगह जा बसा है।”

अल्वार-कोसे के लिए घोड़े को बढ़ाते जाने के सिवा कोई चारा नहीं था। आखिर उसे स्तेपी में अलग-थलग खड़ा हुआ एक खेमा दिखाई दिया जिसके सभी ओर घने सरकंडे लगे थे।

“बहुत सोच-समझकर ही शिगाई-बाई ने सरकंडों के बीच अपना खेमा खड़ा किया है,” अल्वार-कोसे ने अपने आप से कहा।

वास्तव में ऐसा ही था भी। ऐसा इसलिए किया गया था कि घर के मालिक और उसके परिवार के लोगों को पहले से ही इस बात का पता चल जाये कि कोई अजनबी नज़दीक ही है। सरकंडों की सरसराहट से उन्हें यह मालूम हो जाता था और तब वे घर में उपलब्ध खाने-पीने की सभी चीजों को छिपाने की कोशिश करते थे ताकि मेहमान को कुछ खिलाना-पिलाना न पड़े।

हर चीज को तेजी से भांपनेवाले अल्वार-कोसे को यह बात समझने में देर न लगी। इसलिए वह सरकंडों के बीच से चुपचाप गुजरने और बड़े पांख शिगाई-बाई के खेमे में पहुँचने की तरकीब सोचने लगा।

वह सोचता रहा, सोचता रहा, मगर उसे कुछ न सूझा। फिर कुछ देर बाद उसने एक बहुत ही बढ़िया तरकीब सोच ली।

अपने घोड़े को एक ओर को ले जाकर वह छोटे-छोटे कंकड़-पत्थर इकट्ठे करने लगा। उसने काफ़ी सारे कंकड़ जमा कर लिये। इसके बाद उसने अंधेरा होने तक इन्तज़ार किया और फिर सरकंडों के बीच एक-एक कंकड़ फेंकने लगा।

उसने पहला कंकड़ फेंका तो सरकंडे हिले-डुले और सरसराये। शिगाई-बाई भागकर खेमे से बाहर आया। उसने इधर-उधर देखा और घड़ी भर को आहट ली।

“कौन है?” उसने आवाज़ दी।

उसे कोई जवाब नहीं मिला। शिगाई-बाई खेमे में वापस चला गया।

तब अल्वार-कोसे ने एक और कंकड़ फेंका। सरकंडे फिर से सरसराये और शिगाई-बाई पहले की तरह ही भागा हुआ बाहर आया। उसने अपने इर्दगिर्द नज़र डाली, मगर उसे कोई भी नज़र न आया।

“सरकंडे ज़रूर हवा से ही सरसरा रहे हैं,” शिगाई-बाई ने अपने आप से कहा और उसने भागकर खेमे से बाहर आना बन्द कर दिया।

अल्वार-कोसे इसी के इन्तज़ार में था। उसने अपने घोड़े की लगाम पकड़ी और सरकंडों के बीच से बड़े पांख कंजूस के खेमे की ओर बढ़ने लगा। वह एक कदम बढ़ाता, रुकता और थोड़ा इन्तज़ार करता, फिर एक और कदम बढ़ाता, फिर से रुकता और इन्तज़ार करता।

इस तरह वह खेमे तक पहुँच गया।

उसने मोटे नमड़े का पर्दा उठाया और अन्दर झाँका। खेमा तरह-तरह की चीजों से भरा पड़ा था — सभी जगह कालीन और गद्दे थे, मोटे लोहे से मढ़े हुए सन्दूक एक के ऊपर एक रखे थे। फ़र्श के बीचोंबीच शिगाई-बाई अपने परिवार के साथ आग के पास बैठा था। चूल्हे पर एक बड़े-से पतिले में भेड़ का मांस उबल रहा था। शिगाई-बाई उसे देख रहा था और यह जानने के लिए जब-तब चख लेता था कि वह पका या नहीं। साथ ही वह क्रीमे का गुलमा बना रहा था। शिगाई-बाई की बीवी आटा गूँध रही थी, उसकी बेटी बतख साफ़ कर रही थी और नौकर आग पर भेड़ का सिर भून रहा था।

इसी समय अल्वार-कोसे अचानक दाखिल हुआ।

“सलाम,” वह बोला।

शिगाई-बाई ने झटपट पतिले का ढक्कन बन्द किया और गुलमे के ऊपर बैठ गया। उसकी बीवी आटे पर ही बैठ गई, बेटी ने अपने आंचल से बतख को ढक दिया और नौकर ने भेड़ के सिर को अपनी पीठ के पीछे छिपा लिया।

शिगाई-बाई ने अल्वार-कोसे से सलाम-दुआ की और फिर बोला —

“स्तेपी का क्या हालचाल है?”

अल्वार-कोसे ने जवाब दिया —

“स्तेपी के बारे में इतनी विलक्ष्य और अचम्भे से भरी हुई खबरें हैं कि उन सभी को तुम्हें सुनाने में बहुत वक़्त लगेगा।”

“अगर तुम सभी खबरें नहीं सुना सकते तो कुछ तो सुनाओ।”

“अच्छी बात, मैं सुनाता हूँ। जब मैं तुम्हारे खेमे की ओर घोड़ा बढ़ाये आ रहा था तो मैंने एक बहुत बड़ा और मोटा सांप रेंगता हुआ देखा। सच तो यह है कि वह उस गुलमे से भी बड़ा था जिस पर तुम मेरे अन्दर आते ही बैठ गये हो।”

शिगाई-बाई ने बुरा-सा मुँह बनाया, मगर कहा कुछ नहीं। अल्वार-कोसे ने अपनी बात जारी रखी —

“बाई, तुम यकीन करोगे कि इस सांप का सिर मेड़ के उस सिर जितना बड़ा और काला था जिसे तुम्हारा नौकर अमी-अमी आग पर भून रहा था और अब अपनी पीठ के पीछे छिपाये हुए है?”

शिगाई-बाई ने फिर बुरा-सा मुंह बनाया, मगर बोला कुछ नहीं। चालाक अल्वार-कोसे ने अपनी कहानी जारी रखी—

“यह सांप रेंगता हुआ ऐसे सी-सी कर रहा था जैसे तुम्हारा वह पतीला, जिसमें मांस उबल रहा है। मैं घोड़े से कूबा, एक भारी-सा पत्थर उठाया और अपनी पूरी ताकत से सांप पर दे मारा। सांप का सिर कुचला गया और वह उस गुंघे हुए आटे के समान नज़र आने लगा जिस पर तुम्हारी बीबी बैठी है। ऐसे-ऐसे अजूबे देखे हैं मैंने स्तेपी में। अगर मैंने झूठ बोला हो तो मेरा उस बतबत जैसा हाल हो जिसे तुम्हारी बेटी ने अमी-अमी साफ़ किया है।”

शिगाई-बाई ने फिर बुरा-सा मुंह बनाया, मगर कहा कुछ नहीं। हां, अल्वार-कोसे की खातिरबारी भी उसने नहीं की।

अल्वार-कोसे और शिगाई-बाई काफ़ी रात गये तक बातें करते रहे। पतीले में मेड़ का मांस उबलता रहा, उबलता रहा, छेमे में उसकी प्यारी-प्यारी गंध फैलती रही, फैलती रही।

अल्वार-कोसे को रास्ते में ही काफ़ी देर लग गई थी और उसके पेट में चूहे कूब रहे थे। वह पतीले पर नज़र डालता तो उसके मुंह में पानी भर भर आता। शिगाई-बाई ने यह देखा तो बोला—

“उबलो मेरे पतीले, आधे बरस तक उबलो!”

यह सुनकर अल्वार-कोसे ने झटपट अपने जूते उतारे, सेट गया, जम्हाई ली और कहा—

“आराम करो मेरे जूतो, दो साल तक आराम करो!”

शिगाई-बाई ने जब यह देखा कि मेहमान जाने का नाम ही नहीं लेता तो उसने छुब भी खाना खाये बिना ही सोने का फ़ैसला कर लिया।

मेड़ के मांसवाला पतीला तिपाई पर रख दिया गया और हर कोई अपने-अपने कालीन पर सेट गया।

“जैसे ही अल्वार-कोसे सोयेगा,” शिगाई-बाई ने मन ही मन सोचा, “वैसे ही मैं अपने घरवालों को जगा दूंगा और हम मेड़ का मांस खा लेंगे।”

“जैसे ही कंजूस शिगाई-बाई की आंख सगेगी,” अल्वार-कोसे ने अपने आप से कहा,

“वैसे ही मैं पेट भरकर खाऊंगा। मेड़ का मांस जब पका हुआ है तो मुझे मूछा रहने की क्या पड़ी है!”

शिगाई-बाई को ही पहले नींद आई। वह कुछ देर तक सेटा रहा, फिर उसकी आंखें मुंदीं और उसके खरटि छेमे में गूँजने लगे।

अल्वार-कोसे उठा, उसने पतीले में से मांस निकाला, खाया और फिर शिगाई-बाई के पुराने जूते पतीले में डाल दिये। इसके बाद उसने पतीले को ढक दिया, फिर से सेट गया और इन्तज़ार करने लगा कि देखें आगे क्या होता है।

कुछ देर बाद शिगाई-बाई की आंख खुली, उसने घड़ी भर आहट ली, अल्वार-कोसे पर नज़र डाली और उसे सोया हुआ मानकर सावधानी से अपनी बीबी-बेटी को अगाने लगा।

“उठो, अब उठो!” उसने कहा। “जब तक अल्वार-कोसे सोया हुआ है, आओ, हम थोड़ा-सा मांस खा लें!”

शिगाई-बाई ने ढक्कन हटाया, पतीले में से अपने जूते निकाले और छुरी से उनके टुकड़े किये। वे खाने लगे। वे टुकड़ों को चबाते रहे, चबाते रहे, मगर वे जैसे के तैसे बने रहे, गले से नीचे न उतरे। यह क्या मामला है, मांस इतना सख्त क्यों है?

“यह सब उसी निकम्मे अल्वार-कोसे का क्रसूर है,” शिगाई-बाई ने अपनी बीबी से कहा। “उसी की वजह से मेड़ का मांस इतना सख्त हो गया है। पर खैर, कोई बात नहीं। जब यह कम्बख्त यहां से चलता बनेगा तब हम इसे नर्म होने तक पकायेंगे और खा लेंगे। अब लाओ, इन टुकड़ों को फिर से पतीले में डाल दें।”

शिगाई-बाई की बीबी ने चमड़े के टुकड़े इकट्ठे किये और उन्हें पतीले में डाल दिया। इसके बाद शिगाई-बाई ने अपनी बीबी को हुक्म दिया कि वह आग जलाये और पिछले बिन के आटे के पराठे सेंक दे।

जब पराठे तैयार हो गये तो शिगाई-बाई ने उन्हें ठंडा भी न होने दिया और गर्म-गर्म ही अपने चोरे में ठूस लिया तथा अपने रेबड़ों की देखभाल करने के लिए स्तेपी में चल दिया।

कंजूस के छेमे से बाहर निकलते ही अल्वार-कोसे मागा हुआ उसके पीछे-पीछे गया और बोला—

“आह, शिगाई-बाई, कितनी अच्छी बात है कि मेरी आंख खुल गई वरना मुझे तुम्हें अलविदा कहे बिना ही जाना पड़ता। मैं आज अपने घर जा रहा हूँ।”

उसने शिगाई-बाई को जोर से बांहों में कस लिया। गर्म-गर्म पराठों ने कंजूस को बुरी तरह झुलसा दिया।

शिगाई-बाई ने झुक में तो बर्ब को बर्बाद किया, पर बाद को वह उसे सहन न कर पाया और चिल्ला उठा -

“ओह! ओह! वे मेरा तन झुलस रहे हैं! मुझे झुलस रहे हैं!”

उसने पराठों को चोरो में से बाहर निकाला और चिल्लाया -

“इन्हें कुत्ते खा जायें!”

“ओह शिगाई-बाई,” अल्दार-कोसे ने कहा, “तुम कुत्तों को पराठे खिलाने की क्यों सोच रहे हो? कुछ मुझे ही खिला दो!”

इतना कहकर उसने पराठे झपट लिये और खाने लगा।

“शिगाई-बाई, तुम्हारी बीबी बड़िया पराठे बनाती है,” अल्दार-कोसे ने कहा।

“मैंने तो एक जमाने से ऐसे मजेदार पराठे नहीं खाये।”

शिगाई-बाई ने कोई जवाब न दिया और मूँचे पेट ही घोड़े पर सवार हो स्तेपी की ओर चल दिया।

वह शाम को घर लौटा तो अल्दार-कोसे को अपने छेमे में हाजिर पाया।

“तुमने तो मुझ से अलविदा कही थी? मैं तो यही समझा था कि तुम अपने घर जा रहे हो,” शिगाई-बाई ने कहा।

“मैं जाने को तैयार तो हुआ था, मगर बाद को मैंने अपना इरादा बदल लिया,” अल्दार-कोसे ने जवाब दिया। “तुम्हारे छेमे में क्या मजा है।”

शिगाई-बाई ने नाक-भों सिकोड़ी, मगर करता तो क्या! वह अपने मेहमान को घर से निकाल तो नहीं सकता था।

अगली सुबह को शिगाई-बाई फिर से स्तेपी में जाने को तैयार हुआ और अपनी बीबी से बोला -

“मुझे चमड़े की मशक में वही भर कर ला दो, मगर ध्यान रखना कि उस पर अल्दार-कोसे की नजर न पड़ने पाये।”

शिगाई-बाई की बीबी ने चमड़े की मशक में वही डालकर अपने पति को दे दी। शिगाई-बाई ने इसे अपने चोरो के नीचे छिपाया और छेमे से चल दिया।

“इस बार तो सब कुशल ही रहेगा,” उसने मन ही मन सोचा।

मगर उसका ख्याल गलत था। कारण कि अल्दार-कोसे क्रौरन भागता हुआ बाहर आया और उसने शिगाई-बाई को बांहों में कस लिया। उसने शिगाई-बाई को इतने जोर

से कसा कि वही से भरी हुई मशक उलट गई और वही शिगाई-बाई के चोरो से नीचे बह चला।

शिगाई-बाई ने गुस्से से सास-पीला होते और मशक अल्दार-कोसे के हाथों में ठूंसते हुए चिल्लाकर कहा -

“लो, पी लो! लो, पी लो!”

“अगर तुम कहते हो तो पी ही लूंगा,” अल्दार-कोसे ने जवाब दिया। “मैं इन्कार करके तुम्हें नाराज नहीं करूंगा।”

और वह सारा वही पी गया।

शिगाई-बाई इस बार फिर स्तेपी में भूखा ही गया। चतुर अल्दार-कोसे छेमे में आकर उसकी बीबी और बेटों से गपशप करने लगा।

अल्दार-कोसे कई दिन तक कंजूस के घर में बना रहा। शिगाई-बाई ने चाहे कोई भी तरकीब या चालाकी क्यों न सोची, वह अपने मेहमान से बाजी न मार सका। चाहे-अनचाहे उसे अल्दार-कोसे को खिसाना-पिलाना ही पड़ा।

शिगाई-बाई सुबह से शाम तक अपने मेहमान को छेमे से निकालने और उससे बदला लेने की तरकीब सोचता रहता। वह सोचता रहा, सोचता रहा और आखिर उसे एक बात सूझ ही गई।

अल्दार-कोसे उसके पास जिस घोड़े पर सवार होकर आया था, उसके सिर पर सफ़ेद पदम था। शिगाई-बाई ने इस घोड़े को मार डालने का फ़ैसला कर लिया। वह जब भी इस घोड़े के पास से गुजरता उसे घूरता और उसकी आंखों में दुर्भावना झलक उठती।

अल्दार-कोसे का ध्यान इस ओर गया। उसी शाम को उसने कुछ कालिख ली और अपने घोड़े के सफ़ेद पदम पर मस बी। साथ ही उसने कुछ बड़िया लेकर शिगाई-बाई के सबसे अच्छे घोड़े के सिर पर चिस्ती बना दी।

इसके बाद वह छेमे में आकर आराम से सो रहा।

रात को शिगाई-बाई दबे पांव छेमे से बाहर आया, उसने अपने घोड़ों में से सिर पर सफ़ेद पदम वाला घोड़ा अलग किया, उसे मार डाला और जोर से चिल्लाने लगा -

“ओह, अल्दार-कोसे, तुम्हारी तक्रबीर फूट गई! देखो तुम्हारे घोड़े का क्या बुरा हाल हो गया है!”

मगर अल्दार-कोसे तो छेमे से बाहर भी नहीं निकला।

“ऐसे परेशान न होओ, शिगाई-बाई,” वह बोला, “चिन्ताओ मत। यह तो बड़ी मामूली-सी बात है। घोड़े के टुकड़े कर डालो। तुम्हें और मुझे खाने को काफ़ी मांस मिल जायेगा।”

यह सुनकर शिगाई-बाई खूब खिलखिलाकर हंसा। वह बेहद खुश हुआ कि आखिर उसने अपने इस घृणित मेहमान से बदला ले लिया है।

सुबह को ही उसे पता चला कि उसने अपने सबसे अच्छे घोड़े को बिबह कर डाला है।

शिगाई-बाई का गुस्से के मारे बहुत बुरा हाल था। मगर वह करता तो क्या! उसे अपने घोड़े का मांस पकाना और अल्वार-कोसे के साथ बांटकर खाना पड़ा।

मगर आखिर अल्वार-कोसे ही शिगाई-बाई के घर में रहता-रहता तंग आ गया। उसने अपने गांव लौटने और शिगाई-बाई की बेटी को अपने साथ ले जाने का इरादा बना लिया।

“अगर मैं उसे अपनी बीवी बना लूं तो उसके लिए यह कहीं अधिक अच्छा होगा,” उसने मन ही मन सोचा। “शिगाई-बाई जैसे बाप के घर में रहने पर तो वह भी ऐसी ही कंजूस बन जायेगी।”

शिगाई-बाई की बेटी का नाम था बिज-बुल्लुक। फक्कड़ और मस्त अल्वार-कोसे उसे पहली ही नज़र में पसन्द आ गया था। वह उसे कनखियों से देखती रहती थी।

एक सुबह को शिगाई-बाई सदा की मांति स्तेपी की ओर जाने को घोड़े पर सवार हो चुका था। उस समय अल्वार-कोसे ने उससे कहा—

“देखो, शिगाई-बाई, मैं बहुत दिनों से तुम्हारे घर में मेहमान हूँ। अब मुझे घर जाना चाहिए। जब तुम शाम को घर लौटोगे तो अपने खेमे को बहुत खुसा-खुला पाओगे, उसमें बहुत-सी फ़ालतू जगह होगी।”

शिगाई-बाई ने यह सुना तो उसे अपने कानों पर यक़ीन न हुआ।

“सिर्फ़ मुझे बिज (सूजा) दे दो,” अल्वार-कोसे ने अपनी बात जारी रखी। “मैं रवाना होने से पहले अपने जूतों की मरम्मत करना चाहता हूँ।”

“ठीक है, ठीक है,” शिगाई-बाई ने कहा। “बिज ले लो, अपने जूतों की मरम्मत करो और चलते बनो। अब तुम्हें जाना ही चाहिए।”

इतना कहकर उसने स्तेपी की ओर घोड़ा बढ़ा दिया।

अल्वार-कोसे खेमे में लौटा और उसने शिगाई-बाई की बीवी से कहा—

“हां तो, मालकिन, बिज को तैयार कर दो। मैं उसे अपने साथ ले जाऊंगा।”

“तुम्हारा विमाग़ चल निकला है क्या?” शिगाई-बाई की बीवी ने हैरान होकर कहा। “क्या तुम जैसे भिखमंगे को शिगाई-बाई अपनी बिज सौंप देगा?”

“वह तो मुझे सौंप भी चुका है। अगर यक़ीन नहीं, तो खुद उससे पूछ लो।”

शिगाई-बाई की बीवी खेमे से बाहर भागी गई और उसने पुकार कर अपने पति से पूछा—

“शिगाई-बाई! शिगाई-बाई! क्या यह सच है कि तुमने अल्वार-कोसे को बिज देने की हामी मरी है?”

“हां, हां!” शिगाई-बाई ने जवाब दिया। “दे दो उसे बिज और हमारे घर से बका हो जाने दो!”

इतना कहकर शिगाई-बाई ने घोड़े को चाबुक लगाया और उसे सरपट दौड़ाता हुआ स्तेपी की ओर चला गया।

शिगाई-बाई की बीवी अपने पति का हुक्म टालने की हिम्मत नहीं कर सकती थी। उसने अपनी बेटी को तैयार किया और खेमे से बाहर ले आई। अल्वार-कोसे ने सफ़ेद पदमवाले घोड़े पर लड़की को अपने साथ बिठाया और घोड़े को एड़ लगाई। शिगाई-बाई का खेमा बहुत पीछे रह गया।

वे जब घोड़ा दौड़ाते जा रहे थे तो अल्वार-कोसे ने लड़की से कहा—

“अच्छे लोगों के बीच रहोगी और खुद भी अच्छी बन जाओगी।”

शाम को शिगाई-बाई अपने खेमे में लौटा। जब उसे यह मालूम हुआ कि उसकी गैरहाज़िरी में क्या गुल खिला है, तो वह आग-बबूला हो उठा, फ़ौरन घोड़े पर सवार हुआ और उसे सरपट दौड़ाता हुआ उनकी खोज में निकला। उसने पूरी स्तेपी का चक्कर काट लिया, मगर उसे अल्वार-कोसे कहीं भी नज़र न आया। आखिर वह खाली हाथ घर लौट आया।

बोरोल्दोई-मेर्गेन और उसका बहादुर बेटा

अल्ताई लोक-कथा



बहुत पुराने जमाने की बात है कि नीले अल्ताई पहाड़ों में एक नरमसी दानव रहता था। उसका नाम था अलमिस।

अलमिस की लम्बी-सम्बी काली मूँछें थीं जो उसके कंधों पर लगामों की तरह झूलती रहती थीं। उसकी दाढ़ी उसके घुटनों को छूती थी। उसकी आँखें खून से भरी थीं। उसके बाँत लम्बे-सम्बे और पैसे थे। उसकी जंगलियों पर नाखूनों की जगह तेज पंजे थे। उसके सारे जिस्म पर मोटे-मोटे काले बाल थे।

अलमिस बहुत भयानक, झूल्वार और जालिम था। वह जंगलों में शिकारियों पर हमले करता और गांवों में औरतों पर। वह न तो बूढ़ों को छोड़ता, न बच्चों को। वह अपने शिकारों पर झपटता और उन्हें खा जाता।

अलमिस इतना ताकतवर और चालाक था कि कोई भी उससे जूझने की हिम्मत न करता। अलमिस को देखते ही लोग सिर पर पांव रखकर भागते और छिपने की कोशिश करते। उनकी समझ में नहीं आता था कि वे क्या करें।

“अलमिस हमसे ज्यादा ताकतवर और चालाक है,” वे कहते। “न कोई उसे

जीत सकता है और न चकमा दे सकता है। हमें उसे बर्दाश्त करना और चुप ही रहना होगा।”

इस तरह वे अलमिस का कुल्म सहते और चुप रहते।

एक गांव में बोरोल्दोई-मेर्गेन नाम का एक शिकारी रहता था। वह बड़ा हुष्ट-पुष्ट, बहादुर और समझदार था। कुछ लोग शिकार पर जायें तो खाली हाथ भी लौट सकते हैं, मगर बोरोल्दोई-मेर्गेन के साथ ऐसा कभी नहीं होता था। वह हमेशा सफल ही लौटता – लोमड़ियां, सेबल, गिलहरियां और अन्य रोयेंदार जानवर मारकर लाता। वह सभी जंगलों में और सभी पहाड़ों पर घूम चुका था। कोई बरिन्दा कभी उसका बाल भी बांका नहीं कर पाया था, उसे कभी कोई हानि नहीं पहुंची थी, कारण कि उसकी अक्ल बहुत तेज थी, नजर बहुत पैनी थी और उसकी बांहों में बल था।

एक दिन अलमिस पहाड़ों से उतरकर बोरोल्दोई-मेर्गेन के गांव में जा पहुंचा। डरे-सहमे हुए लोग इधर-उधर दौड़ने लगे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वे कहां छिपें। अलमिस एक बच्चे को उठाकर पहाड़ों में वापस खला गया।

जब तक वह नजदीक था, गांव के लोग सिर्फ कानाफूसी ही करते रहे, उन्हें ऊंचा बोलने की भी हिम्मत न हुई। मगर उसके जाने के बाद वे ऊंची-ऊंची आवाज में चिल्लाने और रोने लगे।

“जाने अगली बार यह दानव किसका बच्चा उठा ले जायेगा?” मातायें सिसकती हुई चिल्ला रही थीं, बच्चे रीं-रीं, रुं-रुं कर रहे थे और मर्द नाक-भौंह सिकोड़कर चुप्पी साधे थे।

तब बोरोल्दोई-मेर्गेन चुप न रह सका और बोला –

“आंसू बहाने या छिपकर जान बचाने से काम नहीं चलेगा। हमें अलमिस को दूसरी दुनिया में पहुंचाना चाहिए। केवल तभी हम डर से छुटकारा पाकर चैन की जिनगी बिता सकेंगे।”

लोगों ने जवाब दिया –

“हम उसका क्या बिगाड़ सकते हैं या उससे कैसे छुटकारा पा सकते हैं? न तो हम पकड़ें हैं कि आकाश में ऊंचे उड़ जायें और न मछलियां कि पानी में छिप जायें। हमें तो बुष्ट दानव के पंजों और जबड़ों का शिकार होना पड़ेगा।”

बोरोल्दोई-मेर्गेन को बहुत दुख और परेशानी हुई। उसने अपने बेटे की ओर देखते हुए मन ही मन सोचा –

“मेरे बेटे ने धरती पर इसलिए जन्म नहीं लिया है कि अलमिस उसे अपने तेज-

तेज दांतों से फाड़ डाले। दूसरे बच्चे भी इसलिए दुनिया में नहीं आये हैं। अलमिस को अवश्य ही मौत के घाट उतारना और माताओं के दुख का अन्त करना होगा।”

मगर यह किया कैसे जाये ?

अलमिस को लड़ाई के लिए ललकारने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता था — एक आदमी की तो बात ही क्या, वह सभी का सफाया कर सकता था। इसके अलावा गांव के लोग उससे लड़ने को तैयार भी नहीं होते। अलमिस ने उन सभी को डरा दिया था, उनका दम निकाल दिया था। उनमें न हौसला रहा था और न हिम्मत। अलमिस को चकमा देना भी असम्भव था। वह हमेशा खतरे को भांप लेता था, जहां भी कोई गड़बड़ होती उसे फौरन ताड़ जाता था।

बोरोल्डोई-मेर्गेन लगातार यह सोचता रहा कि अलमिस से लोगों का पिंड कैसे छुड़ाये। वह सोचता रहा, सोचता रहा, बहुत वक्त तक इसी ख्याल में डूबा रहा और आखिर उसने तय कर लिया कि उसे क्या करना है।

मगर उसने किसी से भी अपने इराबे की चर्चा नहीं की।

उसने अपने सबसे मजबूत धनुष और सबसे तेज तीर लिए और अपने बेटे से पूछा —

“तुम में हौसला है ?”

“हां, है !” लड़के ने जवाब दिया।

“तुम्हारे दिल में लोगों के लिए दया है ?”

“है !”

“तो चलो मेरे साथ। हमारा रास्ता लम्बा और काम जान-जोखिम का होगा।

मगर हम जायेंगे अरुण। तुम मुझ से कुछ पूछना चाहते हो ?”

मगर लड़के ने सिर हिला दिया। शिकारी और उसका बेटा पहाड़ों की ओर चल दिये जहां अलमिस रहता था।

उन्होंने एक घना जंगल पार किया, चट्टानी ढालों पर चढ़े और किसी पगडंडी के बिना ही चलते गये। आखिर वे जंगल के बीच एक खुली जगह में पहुंच गये।

वहां एक लम्बा-सा ठूठ खड़ा था और उसकी बगल में कुछ झाड़ियां और वृक्ष उगे हुए थे। आसपास न कोई वरिन्दा था न परिन्दा।

बोरोल्डोई-मेर्गेन रुका, उसने अपनी शिकारियोंवाली पोशाक उतारी और ठूठ को पहना दी। उसका बेटा चुपचाप खड़ा देखता रहा, पर उसने कोई सवाल न पूछा। बाप ने ठूठ के करीब आग जला दी। लड़का फिर भी चुपचाप देखता रहा और उसने कुछ भी नहीं पूछा।

शिकारी ने बेटे से कहा —

“यहां आग के पास बैठ जाओ। चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये, यहां से भागना नहीं।”

“मैं नहीं भागूंगा।”

“जो कुछ होगा उससे तुम्हारा दिल बहल उठेगा।”

“नहीं बहलेगा।”

“तो बैठकर इन्तजार करो।”

लड़का आग के पास बैठ गया। बाप ने अपने तीर-कमान लिये और झाड़ियों में जाकर छिप रहा। इन दोनों के अलावा इर्दगिर्द कोई नहीं था, एकदम सामोशी थी, गहरा सन्नाटा था।

वे दोनों बहुत देर तक यहां बैठे रहे।

अचानक टहनियां तड़कीं, और शाखायें चटकीं तथा वृक्षों के बीच से खुद अलमिस नमूदार हुआ। उसकी काली मूछें उसके कंधों पर झूल रही थीं, उसकी आंखें अंगारों की तरह जल रही थीं और वह अपने तेज दांतों को पीस रहा था। लड़के को आग के पास बैठे देखकर उसने खुशी से जोर का ठहाका लगाया।

“मैं तो शिकार की खोज में गांव जा रहा था और शिकार तो यहीं बैठा हुआ मेरा इन्तजार कर रहा है !”

फिर उसने ठूठ पर नजर डाली और उसे शिकारी समझ हंसकर बोला —

“हां, तो शिकारी, अब तुम मुझे अपने बेटे को खाते हुए देखोगे ! तुम्हें उसकी रक्षा करने की हिम्मत नहीं होगी।”

इतना कहकर अलमिस आग की तरफ लपका।

वह जब बौड़ा तो उसकी दाढ़ी हवा में लहराई और उसके लम्बे फर कोट के छोर फड़फड़ाये। अलमिस ने लड़के को पकड़ने की कोशिश की, मगर वह ठूठ के पीछे भाग गया। अलमिस उसके पीछे भागा, मगर लड़का ठूठ के गिर्द चक्कर काटता रहा और दानव उसे पकड़ न पाया।

इसी बीच बोरोल्डोई-मेर्गेन ने निशाना साधा और तीर चलाया जो अलमिस की छाती के बीच जाकर लगा। अलमिस दर्द से चीख उठा। इतनी ऊंची थी उसकी चीखें कि उनके शोर से वृक्ष झुक गये, चट्टानों में दरारें पड़ गईं और वे लुढ़ककर पहाड़ों से नीचे जा गिरीं।

और बोरोल्डोई-मेर्गेन दानव को एक के बाद एक तीर मारता गया।

अलमिस गुस्से से आग-बबूला होकर ठूठ पर झपटा जिसे शिकारी ने अपनी पोशाक पहना दी थी। वह उसे नोचने और काटने लगा। और अचानक ज़मीन पर ढेर हो गया। बोरोल्दोई-मेर्गेन उसके पास गया तो उसने अलमिस को मरा हुआ पाया।

बोरोल्दोई-मेर्गेन ने अपने बेटे से यह नहीं पूछा कि उसे डर महसूस हुआ था या नहीं। उसने तो सिर्फ़ इतना ही कहा -

“आओ चलें!”

वे दोनों गांव की ओर चल दिये। गांव में पहुंचकर बोरोल्दोई-मेर्गेन ने लोगों से कहा -

“हमारे बच्चे अब सुख-चैन के जीवन में फूलें-फलेंगे। उनकी माताओं को डर से निजात मिल गई है। अलमिस खत्म हुआ, वह मारा जा चुका है।”

“किसने उसे मारा है?” लोगों ने पूछा।

“मैंने।”

“तुम अपने छोटे-से बेटे को किसलिए साय ले गये थे?”

“अलमिस को फांसने के लिए।”

“मगर अलमिस तो उसके टुकड़े-टुकड़े भी कर सकता था?”

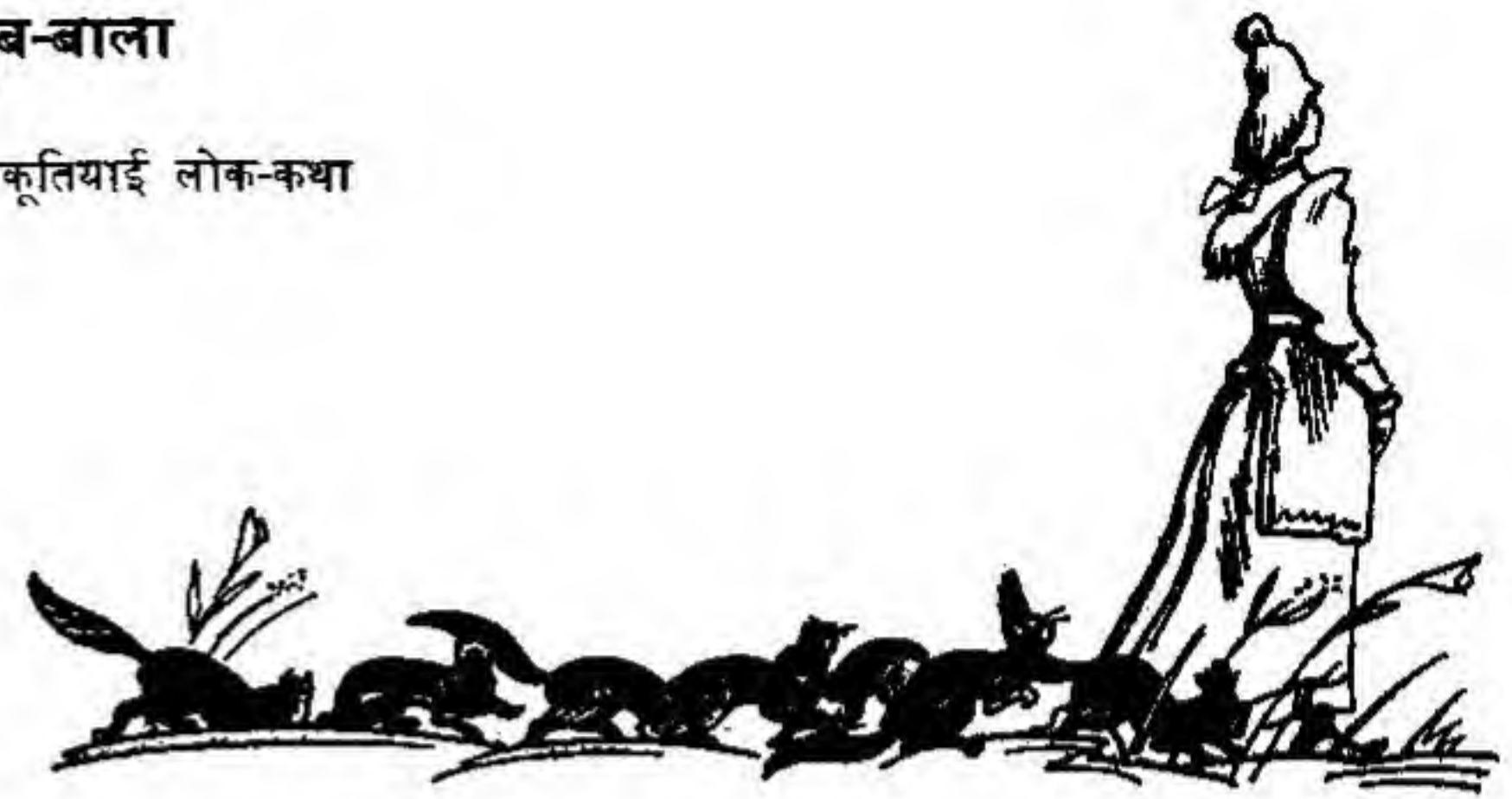
“हां, कर सकता था।”

इसके बाद एक भी शब्द कहे-सुने बिना बोरोल्दोई-मेर्गेन अपने घर में चला गया।

इस तरह नीले अल्ताई पहाड़ों के लोगों को अपने पुराने और जालिम दुश्मन से निजात मिली।

दूब-बाला

याकूतियाई लोक-कथा



कहते हैं कि पांच गायों की मालकिन, एक नाटी बुढ़िया, किसी सुबह को उठी और खेत में गई।

बड़े और लम्बे-चौड़े खेत में उसे पांच पत्तियोंवाली लम्बी-सी दूब दिखाई दी। बुढ़िया ने उसे इस तरह उखाड़ा कि उसकी जड़ और पत्तियां न टूटें और घर लाकर अपने तकिये पर रख दिया। इसके बाद वह बाहर जाकर अपनी गायों को दुहने लगी।

बुढ़िया गायें दुह रही थी कि अचानक उसे अपने खेमे में घंटियों की टनटनाहट सुनाई दी। बुढ़िया हड़बड़ाकर उठी और उतावली में उससे दूध की बालटी गिर गयी और दूध बिखर गया। वह भागी-भागी खेमे में गई और उसने अपने इर्दगिर्द नज़र डाली। उसे हर चीज़ पहले की तरह ही दिखाई दी - दूब तकिये पर पड़ी हुई थी। बुढ़िया फिर से बाहर गई और अपनी गायों को दुहने लगी। अचानक उसे फिर से घंटियों की टनटनाहट सुनाई दी। जल्दी में वह फिर दूध बहाकर खेमे में भागी गई और वहां उसने क्या देखा - एक बहुत ही सुन्दर लड़की उसके बिस्तर पर बैठी हुई है। लड़की की आंखें हीरों की तरह चमकती थीं और उसकी माँहिं दो काले सेबलों जैसी थीं। दूब लड़की बन गई थी!

नाटी बुढ़िया की खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

उसने लड़की से कहा -

“मेरे पास मेरी बेटी बनकर रहो!”

इस तरह वे इकट्ठी रहने लगीं।

एक दिन खरजीत-बेर्गेन नामक एक नौजवान शिकारी शिकार के लिए ताइगा में गया। उसे एक भूरी गिलहरी दिखाई दी और उसने उस पर तीर छोड़ा। वह सुबह से शाम तक तीर चलाता रहा, मगर एक बार भी गिलहरी को बीध नहीं पाया।

गिलहरी कूदकर एक फ़र वृक्ष पर चढ़ गई, वहां से बर्च वृक्ष और फिर श्रीदारु पर जा पहुंची। नाटी-सी बुढ़िया के छेमे के पास पहुंचकर वह चीड़ पर बैठ गई।

खरजीत-बेर्गेन भागा-भागा चीड़ के पास गया और उसने एक और तीर छोड़ा। मगर गिलहरी बचकर निकल गई और तीर नाटी बुढ़िया की चिमनी में जा गिरा।

“दादी, मुझे मेरा तीर लौटा दो!” खरजीत-बेर्गेन चिल्लाया, मगर नाटी बुढ़िया बाहर नहीं आई और उसने कोई जवाब नहीं दिया।

खरजीत-बेर्गेन चिढ़ा हुआ था, वह गुस्से से लाल-पीला हो उठा और छेमे के अन्दर जा घुसा।

वहां उसने एक बहुत ही सुन्दर लड़की बैठी देखी। वह इतनी सुन्दर थी कि खरजीत-बेर्गेन दम साधे रह गया और उसका सिर चकराने लगा। उसके मुंह से बोल नहीं फूटा, वह भागकर बाहर गया, घोड़े पर सवार हुआ और उसे सरपट दौड़ाता घर पहुंचा।

“माता-पिता,” वह बोला, “पांच गायों की मालकिन नाटी बुढ़िया के छेमे में बहुत ही सुन्दर लड़की है। आप शादी-ब्याह तय करनेवालों को फ़ौरन वहां भेजें। मैं उस लड़की से शादी करना चाहता हूं।”

खरजीत-बेर्गेन के पिता ने फ़ौरन नौ घुड़सवार लड़की के लिए भेजे।

ब्याह तय करनेवाले नाटी बुढ़िया के छेमे में पहुंचे। उन्होंने लड़की को देखा तो उनके होश हवा हो गये – इतनी सुन्दर थी वह। जब वे ज़रा संभले तो उनमें से सबसे अधिक सम्मानित और बुज़ुर्ग को छोड़कर बाकी सभी छेमे से बाहर आ गये।

“नाटी बुढ़िया,” बुज़ुर्ग बोला, “क्या तुम खरजीत-बेर्गेन से इस युवती की शादी कर दोगी?”

“मुझे कोई आपत्ति नहीं,” नाटी बुढ़िया ने जवाब दिया।

तब उन्होंने लड़की से पूछा कि वह राज़ी है या नहीं। उसने भी सहमति प्रकट की।

“तुम्हें दुलहन के लिए काफ़ी धन देना पड़ेगा,” नाटी बुढ़िया ने कहा। “तुम्हें इतनी गायें और घोड़े देने पड़ेंगे जितने मेरे खेत में समा सकें।”

कुछ ही समय बाद नाटी बुढ़िया के खेत में गायें और घोड़े भेज दिये गये। वे बेशुमार थे।



फिर उन्होंने लड़की को जल्दी-जल्दी और बड़ी अच्छी तरह नई पोशाक पहनाई। वे चितकबरा घोड़ा लाये, उन्होंने उसे चांदी की लगाम पहनाई, उस पर चांदी का ज़ीन कसा और उसकी बगल में चांदी का चाबुक लटका दिया। खरजीत-बेर्गेन ने अपनी बुलहान का हाथ थामा, उसे बाहर ले गया, चितकबरे घोड़े पर बिठाया और खुद भी घोड़े पर सवार हो गया और वे घर की ओर चल दिये।

वे घोड़े बढ़ाये जा रहे थे कि खरजीत-बेर्गेन को सड़क पर अचानक एक लोमड़ी दिखाई दी।

लोमड़ी को सामने देख खरजीत-बेर्गेन को अपने पर काबू न रहा। वह बोला—

“मैं लोमड़ी का पीछा करने जा रहा हूँ, मगर जल्द ही लौट आऊंगा। तुम इसी सड़क पर घोड़ा बढ़ाती जाना। आखिर एक दोराहा आयेगा। पूर्व की ओर सेबल की रोयेंदार खाल लटकी दिखाई देगी और पश्चिम की ओर सफ़ेद गलेवाले भालू की खाल नज़र आयेगी। तुम पश्चिम की ओर को नहीं मुड़ना, उस सड़क पर जाना जहाँ सेबल की खाल दिखाई दे।”

इतना कहकर उसने लोमड़ी के पीछे अपना घोड़ा सरपट दौड़ाना शुरू कर दिया।

लड़की अकेली ही घोड़ा दौड़ाती रही और आखिर दोराहे पर पहुँच गई। मगर वहाँ पहुँचते ही उसे खरजीत-बेर्गेन की हिदायत का ख्याल न रहा। वह उस सड़क की ओर मुड़ गई जहाँ भालू की खाल लटकी हुई थी और जल्दी ही लोहे के एक बड़े-से छेमे के पास जा पहुँची।

उस छेमे में से शैतान की बेटी लोहे की पोशाक पहने हुए बाहर आई। उसकी एक टांग थी और सो भी टेढ़ी-मेढ़ी। उसकी एक बांह थी, टांग की तरह ही टेढ़ी-मेढ़ी। माथे के बीच में उसकी एक धुंधली आंख थी और उसकी लम्बी तथा काली ज़बान थी जो उसकी छाती तक लटकी हुई थी।

शैतान की बेटी ने लड़की को पकड़ लिया, उसे घोड़े से नीचे धींचा, उसके चेहरे की खाल उतार कर अपने चेहरे पर चढ़ा ली। इसके बाद उसने लड़की के सभी बढ़िया कपड़े उतारकर पहन लिये और लड़की को छेमे के ऊपर से दूर फेंक दिया। इसके बाद वह चितकबरे घोड़े पर सवार हुई और पूर्ववाली सड़क पर बढ़ चली।

जब वह खरजीत-बेर्गेन के पिता के छेमे के करीब पहुँचने वाली थी, तभी खरजीत-बेर्गेन उससे आ मिला। मगर उसे न तो कोई परिवर्तन दिखाई दिया और न वह कुछ अनुमान ही लगा पाया।

खरजीत-बेर्गेन के रिश्तेदार दुलहन का स्वागत करने के लिए जमा हुए। नौ सुन्दर नौजवान और आठ लड़कियां अस्तबल के दरवाजे पर उससे मिलने के लिए आयीं।

लड़कियों ने आपस में बात करते हुए कहा -

“दुलहन जैसे मुंह खोलेगी और कुछ बोलेगी, वैसे ही सब से सुन्दर मोती उसके मुंह से झड़कर नीचे लुढ़कने लगेंगे।”

वे उन मोतियों को पिरोने के लिए धागे ले आईं।

नौजवानों ने आपस में बात करते हुए कहा -

“दुलहन के एक कदम बढ़ाते ही उसके पीछे-पीछे काले सेबल चलने लगेंगे।”

उन्होंने सेबलों को बाँधने के लिए अपने तीर-कमान तैयार कर लिये।

मगर दुलहन ने जब बोलना शुरू किया तो उसके मुंह से मेढक गिरे और जब उसने कदम बढ़ाया तो भट्टे भूरे नेवले उसके पीछे-पीछे भागने लगे।

दुलहन का स्वागत करने के लिए जमा हुए सभी लोग मुंह बाये रह गये और उनके बिल को बड़ी ठेस लगी।

मगर उन्होंने अस्तबल से दुलहन के छेमे तक हरी घास का कालीन बिछा दिया और दुलहन का हाथ थामकर उसे वहाँ से ले गये।

दुलहन छेमे के अन्दर गई। उसने तीन नौउछ श्रीदार वृक्षों की फुनगियों को लेकर चूल्हे में आग जलाई।

इसके बाद शादी की बड़िया दावत हुई। सभी ने खाया-पिया, खेल खेले और मौज मारी। कोई भी यह न माँप पाया कि यह असली दुलहन नहीं है।

कुछ ही समय बाद नाटी बुढ़िया अपनी गायें दुहने के लिए खेत में गई। उसने देखा कि उसी जगह पाँच पत्तियोंवाली दूब फिर से उग आई है। यह पहली की तुलना में अधिक नाजूक और सीधी थी।

नाटी बुढ़िया ने दूब को जड़ समेत उखाड़ा, उसे अपने छेमे में ले गई और तकिये पर रख दिया। वह फिर से खेत में जाकर गायें दुहने लगी। अचानक उसे अपने छेमे में घंटियों की टनटन सुनाई दी। वह अन्दर गई तो दंग रह गई। वही लड़की वहाँ बैठी थी, पहले से भी अधिक सुन्दर नजर आती हुई।

“तुम यहाँ कैसे आ गई, किसलिए लौट आई?” नाटी बुढ़िया ने पूछा।

“माँ, जब मैं और खरजीत-बेर्गेन उसके छेमे की ओर जा रहे थे तो रास्ते में उसने मुझ से कहा कि मैं लोमड़ी का पीछा करने जा रहा हूँ और तुम उस सड़क की ओर मुड़ जाना जहाँ सेबल की खाल लटकी हो। मूलकर भी उस सड़क की तरफ न मुड़ना

जहाँ मालू की खाल लटकी हुई हो। मगर मैं उसकी यह चेतावनी भूल गई, गलत सड़क की ओर मुड़ गई और शीघ्र ही लोहे के बने एक छेमे के पास जा पहुँची। शैतान की बेटी ने मुझे पकड़ लिया, मेरे चेहरे की खाल उतारकर उसने अपने चेहरे पर चढ़ा ली। तब उसने मेरे बड़िया कपड़े उतारकर खुद पहन लिये और मुझे अपने लोहे के छेमे के ऊपर से फेंक दिया। इसके बाद वह मेरे चितकबरे घोड़े पर सवार होकर चली गई। कुछ भूरे कुत्तों ने मेरी लाश को अपने जबड़ों में दबाया और तुम्हारे छेमे के पासवाले चौड़े खेत में खींच लाये। दूब की शक्ल में मैंने फिर से जन्म लिया है। ओह माँ, क्या मैं खरजीत-बेर्गेन से फिर कभी मिल भी पाऊँगी?”

नाटी बुढ़िया ने उसकी दास्तान सुनकर उसे दिलासा देते हुए कहा -

“बुद्धी न होओ, तुम उससे जरूर मिलोगी, उससे मुलाकात होने तक तुम पहले की ही तरह मेरी बेटी बनकर मेरे घर में रहो।”

इस तरह दूब-बाला फिर से नाटी बुढ़िया के छेमे में रहने लगी।

चितकबरे घोड़े को मालूम हो गया कि दूब-बाला फिर से ज़िन्दा हो गई है। उसने खरजीत-बेर्गेन के पिता से इन्सानी आवाज में कहा -

“आपको यह मालूम होना चाहिए कि खरजीत-बेर्गेन जब अपनी दुलहन को यहाँ ला रहा था, तो उसने रास्ते में उसे अकेले ही सफ़र जारी रखने के लिए छोड़ दिया था। अब वह दोराहे पर पहुँची तो उस तरफ़ को मुड़ गई जहाँ मालू की खाल लटकी हुई थी और लोहे के छेमे के करीब जा पहुँची। शैतान की बेटी लपक कर बाहर आई, उसने दुलहन के चेहरे की खाल उतारकर अपने चेहरे पर चढ़ा ली, उसके बड़िया कपड़े उतारकर खुद पहन लिये और तब दुलहन को अपने लोहे के छेमे के ऊपर से फेंक दिया। अब वह शैतान की बेटी आपके छेमे में रहती है और आपकी बहू है। मेरी असली मालकिन फिर से ज़िन्दा हो गई है। आपको उसे अपने छेमे में लाकर अपने बेटे से ब्याह देना चाहिए वरना आप मुसीबत के शिकार हो जायेंगे। शैतान की बेटी आपका तनूर और छेमा गिरा देगी, आपका जीना दूबर कर देगी और आप सभी को मौत के घाट उतार देगी।”

घोड़े की बात सुनकर बूढ़ा बाप छेमे में भागा गया।

“मेरे बेटे, तुम अपनी बीवी कहां से लाये हो?” उसने खरजीत-बेर्गेन से पूछा।

“यह कौन है?”

“वह पाँच गायों की मालकिन, नाटी बुढ़िया की बेटी है,” उसने जवाब दिया।

तब बाप बोला -

“चितकबरे घोड़े ने मुझ से शिकायत की है। उसने बताया है कि अपनी बीबी को यहां लाते हुए तुमने उसे रास्ते में अकेली छोड़ दिया था। दोराहे पर पहुंच कर वह शलत-सड़क की तरफ मुड़ गई और लोहे के खेमे के पास जा पहुंची। शैतान की बेटी ने उसे घोड़े से नीचे घसीट लिया, उसके चेहरे की खाल उतारकर अपने चेहरे पर चढ़ा ली और उसके बड़िया कपड़े पहन लिये। शैतान की बेटी ने हम सभी की आंखों में धूल झोंकी है और कुटिलता से यहां अपना घर बना लिया है... तुम नाटी बुढ़िया के घर जाओ और दुलहन को मनाकर यहां ले आओ। रही शैतान की बेटी, तो उसे किसी बिगड़ैल घोड़े की पूंछ के साथ बांधकर घोड़े को खेतों में खदेड़ दो। घोड़े को खेत में उसकी हड्डियां बिखरा देने दो वरना वह हम सभी को—लोगों और रेबड़ों को मौत के मुंह में धकेल देगी।”

शैतान की बेटी ने यह सारी बात सुन ली। वह डर से, गुस्से से स्याह पड़ गई।

खरजीत-बेर्गेन अपने बाप की बात सुनकर गुस्से से अंगारा हो गया।

उसने शैतान की बेटी को पकड़ा, उसे टांग से पकड़कर खेमे से बाहर घसीटा और एक बिगड़ैल घोड़े की पूंछ से बांध दिया।

घोड़ा सरपट दौड़ता हुआ खुले मैदान में जा पहुंचा, उसने शैतान की बेटी को दुलत्तियां जमाई और पैरों तले रौंदा। उसके जिस्म ने कीड़ों और सांपों के ढेर की शक्ल ले ली। खरजीत-बेर्गेन और उसके बाप ने उन्हें जला दिया।

इसके बाद खरजीत-बेर्गेन घोड़े पर सवार होकर नाटी बुढ़िया के खेमे की ओर चल दिया। वह अस्तबल के पास जाकर अपने घोड़े से नीचे उतरा। नाटी बुढ़िया ने उसे देखा तो झटपट खेमे से बाहर आई। वह इतनी खुश हुई मानो कोई खोया हुआ व्यक्ति मिल गया हो या मरा हुआ जिन्दा हो उठा हो। उसने अस्तबल से खेमे तक हरी घास का कालीन बिछा दिया, अपने सबसे बड़िया और मोटे घोड़े को ज़िबह किया और शाबी की दावत की तैयारी करने लगी।

जहां तक दूब-बाला का सम्बन्ध है तो वह तो खरजीत-बेर्गेन को देखते ही रो-रोकर यह कहने लगी—

“तुम मेरे पास क्यों आये हो? तुमने शैतान की बेटी को मेरा खून बहाने और मेरी कोमल खाल उतारने दी, भूरे कुत्तों को मेरा तन नोचने दिया। अब तुम यहां किस लिए आये हो? दुनिया में पक्षियों से ज्यादा लड़कियां हैं और मछलियों से

श्याबा औरतें। जाओ, उन्हीं में से जाकर अपनी बीबी चुनो। मैं तुम से शाबी नहीं करूंगी!”

“मैंने तुम्हें शैतान की बेटी को कभी नहीं सौंपा था,” खरजीत-बेर्गेन बोला। “न मैंने भूरे कुत्तों के सामने तुम्हें फेंका था। मैंने ताइगा में लोमड़ी के पीछे जाने से पहले तुम्हें रास्ता दिखा दिया था। मैंने तुम्हें मौत के मुंह में नहीं भेजा था।”

नाटी बुढ़िया ने उसकी दाईं और बायीं आंख से आंसू पोछे और दूब-बाला तथा खरजीत-बेर्गेन के बीच बैठ गई।

नाटी बुढ़िया ने कहा—

“तुम जो मरकर फिर से जिन्दा हुई हो, तुम दो खोये हुए फिर मिले हो, तुम क्यों खुशी नहीं मनाते? तुम्हें पहले की तरह ही प्यार करना चाहिए, पहले की तरह ही धुल-मिलकर सुख की जिन्दगी बितानी चाहिए। तुम दोनों मेरी बात मानो और मैं जैसा कहती हूं वैसा ही करो।”

सड़की उसकी बात मानते हुए धीरे से बोली—

“अच्छी बात है। तुम जैसा चाहती हो मैं वैसा ही करूंगी। मैं बीबी को मूल जाऊंगी, समा कर दूंगी।”

खरजीत-बेर्गेन यह सुनकर खड़ा हो गया, नाचने और उछलने-कूदने तथा दूब-बाला को बांहों में कसने और चूमने लगा।

तब उन्होंने चितकबरे घोड़े पर चांदी का जीन कसा, उसे चांदी की लगाम पहनाई, उस पर चांदी का जीनपोश बिछाया और उसकी बगल में चांदी का चाबुक लटकाया। दूब-बाला ने अपने सबसे बड़िया कपड़े पहने और वे दोनों घोड़ों पर सवार हो अपनी राह चल बिये।

सम्बे समय तक वे घोड़े दौड़ाते रहे। बर्फ़ गिरी तो उन्हें जाड़े का, पानी बरसा तो गर्मी का और खेतों पर घुंघ छाई तो पतझड़ का पता चला। वे घोड़े बढ़ाते गये, बढ़ाते गये और आखिर खरजीत-बेर्गेन के पिता के खेमे के पास पहुंच गये।

खरजीत-बेर्गेन के सभी रिश्तेदार, उसके नौ के नौ भाई दुलहन का स्वागत करने आये। उन्होंने अस्तबल से खेमे तक हरी घास का कालीन बिछा दिया।

“जब दुलहन यहां आयेगी, एक और फिर दूसरा कदम बढ़ायेगी तो उसके पैरों के निशान सेबलों में बदलते जायेंगे,” उन्होंने अपने आप से कहा।

ऐसा सोचकर वे तीर-कमान बनाने लगे। उन्होंने इतनी कड़ी मेहनत की कि उनकी हथेलियों से खाल उतर गयी।

खरजीत-बेर्गेन की आँठों बहनें सूत कातने लगीं। उन्होंने इतनी मेहनत की कि उनकी उंगलियों से खाल उतर गई। वे दुलहन का इन्तजार करती हुई अपने आप से यह कह रही थीं -

“वह जब आयेगी तो गूँजती आवाज में बोलेगी और उसके मुँह से कीमती लाल गिरेंगे।”

खरजीत-बेर्गेन अपनी दुलहन के साथ आया। उसकी दो बहनों ने उनके घोड़ों को अस्तबल में बांध दिया। उन्होंने दुलहन को सहारा देकर नीचे उतारा। वह गूँजती आवाज में बोली, उसके मुँह से लाल झड़े और लड़कियाँ लाल समेटने और उन्हें धागों में पिरोने लगीं। दुलहन छेमे की तरफ बढ़ी तो उसके पद-चिह्न सेबलों में बबलने लगे। नौजवानों ने तीर-कमान संभाले और सेबलों को बाँधने लगे।

दुलहन छेमे में आई, उसने तीन नौउम्र श्रीदारु के शिखर लेकर चूल्हे में आग जलाई।

शादी की बढ़िया दावत उड़ाई गई। सभी गांवों से मेहमान जमा हुए। उनमें गवये भी थे और नर्तक भी, क्रिस्सागो और पहलवान भी तथा नट और मदारी भी।

तीन दिन तक खूब बढ़िया दावत होती रही। मेहमान अपने-अपने घर चले गये, पैबल भी और घोड़ों पर भी।

खरजीत-बेर्गेन और उसकी बीबी ने मिलकर घर बनाया। वे प्यार-मुहब्बत से रहते और सुख-चैन की बंसी बजाते हुए बहुत लम्बे समय तक ज़िन्दा रहे। कहते हैं कि उनके पोते-पोती आज भी ज़िन्दा हैं।

सोने का प्याला

बुर्यात लोक-कथा

कहते हैं कि बहुत ही पुराने ज़माने में एक बड़ा जबरबस्त खान रहता था जिसका नाम सनद था।

एक दिन उसने अपने लोगों को एक नये इलाक़े में ले जाने का फ़ैसला किया जहाँ छेमे गाड़ने की जगह अच्छी थी और चरागाहें भी बेहतर थीं। मगर उन इलाक़ों तक पहुँचने का रास्ता बहुत लम्बा और मुश्किल था।

रवाना होने के पहले सनद खान ने सभी बूढ़ों को मार डालने का हुक्म दिया।

“बूढ़े रास्ते में हमारे लिए बोझ बने रहेंगे,” उसने कहा। “एक भी बूढ़ा या बूढ़ी हमारे साथ न रहे और न ही किसी को ज़िन्दा बाक़ी छोड़ा जाये। जो कोई मेरा हुक्म टालेगा उसे सज़ा दी जायेगी।”

यह बड़ा अत्याचारपूर्ण आदेश था, लोगों के दिलों को इससे बहुत सवमा पहुँचा। मगर वे लाचार थे, उनके लिए खान का हुक्म बजाने के सिवा कोई चारा न था। कारण कि वे सभी खान से डरते थे और उनमें उसका हुक्म टालने की हिम्मत नहीं थी।

सनद खान की प्रजा में से त्सिरेन नाम के एक नौजवान ने ही यह क्रसम खाई कि वह अपने बूढ़े पिता की हत्या नहीं करेगा।

बाप-बेटे ने यह तय किया कि त्सिरेन अपने बूढ़े बाप को सनद खान और अन्य सभी लोगों से चोरी-चोरी चमड़े के एक बड़े-से बोरे में छिपा देगा और उसे नये इलाक़ों में अपने साथ ले चलेगा। बाद में जो कुछ होगा, देखा जायेगा...



सनद खान पुरानी जगह को छोड़कर अपने लोगों और रेवड़ों के साथ दूर-दराज के उत्तरी इलाकों की ओर रवाना हो गया। इन्हीं लोगों के साथ त्सिरेन के घोड़े की पीठ पर लदे हुए चमड़े के एक बोरे में बन्द त्सिरेन का बाप भी जा रहा था। त्सिरेन दूसरों की नज़र बचाकर अपने पिता को खिला-पिला देता और जब वे पड़ाव डालते तो वह अच्छी तरह अन्देरा हो जाने तक इन्तज़ार करता, फिर बोरे को खोल कर अपने पिता को बाहर निकालता ताकि बूढ़ा आराम कर सके, अपने बर्ब करते हुए अंगों को ज़रा सीधा कर ले।

इस तरह वे बहुत वक़्त तक सफ़र करते रहे और आखिर एक बहुत बड़े समुद्र के किनारे पहुंच गये।

सनद खान ने अपने लोगों को पड़ाव डालने और रात भर आराम करने का हुक्म दिया।

खान का एक नौकर तट पर गया। उसे सागर के तल में कोई चमकती-बमकती चीज़ दिखाई दी। उसने बहुत ध्यान से देखा तो पाया कि वह ग़ैर मामूली शक्ल का सोने का एक बहुत बड़ा प्याला है। वह फ़ौरन भागा हुआ खान के पास गया और उसे बताया कि तट के करीब ही सागर के तल में सोने का एक कीमती प्याला पड़ा हुआ है।

सनद खान ने न कुछ सोचा, न विचारा और यह फ़रमान जारी कर दिया कि सोने का प्याला फ़ौरन उसे लाकर दिया जाये। पर चूंकि कोई भी समुद्र में गोता लगाने को तैयार न था, किसी को भी ऐसी हिम्मत न हो रही थी, इसलिए खान ने हुक्म दिया कि वे लोग अपने नामों की परचियां डाल लें।

खान के एक नौकर के नाम की ही परची निकली। उस आदमी ने गोता लगाया, मगर फिर कभी बाहर नहीं आया।

उन्होंने फिर से परचियां डालीं। इस बार जिस आदमी के नाम की परची निकली, उसने एक खड़ी चोटी पर से समुद्र में छलांग लगाई, मगर वह भी समुद्र में ही रह गया।

इस तरह खान के बहुत-से लोग अपनी जानों से हाथ धो बैठे।

मगर ज़ालिम खान ने एक बार भी इस खतरनाक इरादे को छोड़ने की बात नहीं सोची। उसके हुक्म के मुताबिक़ उसकी प्रजा में से एक के बाद एक आदमी बिना किसी हील-हुज़्जत के समुद्र में कूदता और अपनी जान गंवाता गया।

आखिर सोने के प्याले के लिए त्सिरेन की समुद्र में कूदने की बारी आई। ऐसा करने से पहले त्सिरेन अपने बाप से विदा लेने के लिए उस जगह गया जहां उसने उसे छिपा रखा था।

“अलविदा, अब्बा जान,” त्सिरेन बोला। “अब हम दोनों ही मौत के मुंह में जानेवाले हैं।”

“क्यों, क्या हुआ? तुम पर ऐसी क्या मुसीबत आ पड़ी है?” बूढ़े ने पूछा।

तब त्सिरेन ने उसे बताया कि उसे प्याले के लिए समुद्र में गोता लगाना होगा क्योंकि उसके नाम की परची निकल आई है।

“मगर जितने भी लोगों ने गोता लगाया, उन में से एक भी बाहर नहीं आया,” उसने कहा। “इसलिए मुझे खान के हुक्म के मुताबिक़ समुद्र में डूबकर मरना होगा और आपको यहां देखकर उसके नौकर आपकी हत्या कर डालेंगे।”

बूढ़े बाप ने बेटे की सारी बात सुनी और बोला—

“अगर यही सिलसिला जारी रहा तो तुम सभी लोग सोने का प्याला हासिल किये बिना ही समुद्र में डूब जाओगे। प्याला तो समुद्र के तल में है ही नहीं। तुम्हें समुद्र के करीबवाला वह पहाड़ दिखाई दे रहा है न? सोने का प्याला तो उसकी चोटी पर है। जिसे तुम सभी लोग प्याला समझ रहे हो, वह तो सिर्फ़ उसकी परछाई है। अजीब बात है कि तुम में से किसी को भी यह बात नहीं सूझी!”

“तो मुझे क्या करना चाहिए?” त्सिरेन ने पूछा।

“पहाड़ पर चढ़ो, प्याले को खोजो और लाकर खान को दे दो। उसे खोजने में कोई मुश्किल नहीं होनी चाहिए। वह चमकता है और इसलिए दूर से ही देखा जा सकता है। हां, यह मुमकिन है कि प्याला ऐसी खड़ी चट्टान पर हो जिस पर चढ़ना तुम्हारे लिये मुश्किल हो। उस हालत में तुम्हें पहाड़ी पर हिरनों के नज़र आने तक इन्तज़ार करना और उन्हें डराने का ढंग सोचना चाहिए। हिरन जब डरकर भागेंगे तो हड़बड़ी में प्याले को नीचे गिरा देंगे। तुम उस वक़्त उसे फुर्ती से झपट लेना, वरना वह किसी गहरे और अंधेरे खड्ड में जा गिरेगा और फिर कभी नहीं मिलेगा।”

त्सिरेन ने अपने पिता को धन्यवाद दिया और फ़ौरन पहाड़ की ओर चल दिया।

पहाड़ की चोटी पर चढ़ना कुछ आसान नहीं था। त्सिरेन झाड़ियों, वृक्षों और नुकीली चट्टानों का सहारा लेते हुए ऊपर चढ़ने लगा, उसके चेहरे और हाथों पर खरोंचें आ गईं और खून बहने लगा। उसके कपड़े तार-तार हो गये। आखिर चोटी के करीब पहुंचने पर त्सिरेन को सोने का प्याला दिखाई दिया। वह बहुत ही खूबसूरत था। वह एक ऊंची और अगम्य चट्टान पर रखा हुआ था और चमक रहा था।

त्सिरेन ने महसूस किया कि वह चट्टान पर कभी नहीं चढ़ सकेगा। इसलिए अपने बाप की सीख पर अमल करते हुए वह हिरनों के नज़र आने का इन्तज़ार करने लगा।

उसे बहुत देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ा। कुछ ही देर बाद बहुत-से हिरन चोटी पर दिखाई दिये। वे नीचे देखते हुए वहां इत्मीनान से खड़े थे। त्सिरेन जोर से चिल्लाया। हिरन डरकर इधर-उधर भागने लगे और उन्होंने सोने का प्याला नीचे गिरा दिया। प्याला लुढ़कता हुआ नीचे आया और त्सिरेन ने उसे फुर्ती से झपट लिया।

वह हाथों में प्याला लिये और बेहद खुश होता हुआ पहाड़ से नीचे उतरा। वह सनद खान के पास गया और प्याला उसके सामने रख दिया।

“समुद्र के तल से तुमने यह प्याला कैसे हासिल किया?” खान ने उसे पूछा।

“मुझे यह वहां नहीं मिला,” त्सिरेन ने जवाब दिया। “मैं तो इसे उस पहाड़ पर से लाया हूँ। समुद्र में तो हमें इसकी परछाई ही नजर आ रही थी।”

“तुम्हें किसने यह बात सुनाई?” खान ने पूछा।

“मैंने अपने ही विमाण से यह सोचा,” त्सिरेन ने जवाब दिया।

खान ने उससे और कुछ भी नहीं पूछा और उसे जाने दिया।

अगले दिन सनद खान और उसके लोग आगे चल दिये।

उन्होंने लम्बा सफ़र तय किया और आखिर वे एक बहुत बड़े रेगिस्तान में पहुंचे। यहां सूरज की गर्मी से धरती तपती थी और सारी घास झुलस कर रह गई थी। आस-पास कोई बरिया, या छोटा-सा नाला भी नहीं था। लोग और जानवर प्यास से बुरी तरह परेशान होने लगे। सनद खान ने पानी की तलाश में सभी दिशाओं में घुड़सवार भेजे, मगर बहुत कोशिश करने पर भी उन्हें पानी कहीं नहीं मिला क्योंकि सभी ओर लुश्क और झुलसी हुई जमीन थी। लोग हताश हो रहे थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वे क्या करें या किधर जायें।

त्सिरेन चोरी-छिपे उस जगह गया जहां उसने अपने पिता को छोड़ा था।

“अब्बा जान, बताइये अब हम क्या करें?” उसने पूछा। “प्यास के मारे हम सब की और जानवरों की जान निकली जा रही है।”

बूढ़े ने जवाब दिया—

“तीन साल की एक गाय को खुला छोड़ दो और उस पर कड़ी नजर रखो। जहां भी वह रुककर जमीन को सूंघने लगे, वहीं खुदाई करो।”

त्सिरेन भागा गया और उसने तीन साल की एक गाय खुली छोड़ दी। गाय अपना सिर नीचे किये हुए जहां-तहां घूमने लगी। आखिर वह एक जगह पर रुकी और गर्म धरती को सूंघने और जोर-जोर से सांस लेने लगी।

“यहां खुदाई करो,” त्सिरेन ने कहा।

लोग खोदने लगे और जल्द ही उन्हें एक बड़ा-सा जमीनदोज चश्मा मिल गया। ठंडा और साफ़ पानी जोर से बाहर निकलने लगा। हर किसी ने जी भर कर पानी पिया और सभी का दिल बाग-बाग हो गया।

सनद खान ने त्सिरेन को अपने पास बुलाकर पूछा—

“इस लुश्क जमीन में तुमने जमीनदोज चश्मा कैसे ढूंढ़ लिया?”

“कुछ अलामतों की मदद से मुझे पता लग गया कि चश्मा कहां है,” त्सिरेन ने जवाब दिया।

लोगों ने कुछ और पानी पिया, आराम किया और फिर आगे चल दिये। बहुत दिनों तक उनका सफ़र जारी रहा, फिर वे रुके और उन्होंने पड़ाव डाला। अचानक रात को मूसलधार बारिश होने लगी और उनका अलाव बुझ गया। बहुत कोशिश करने पर भी लोग फिर से आग न जला पाये। वे पानी से तर-ब-तर हो गये और ठण्ड से उनकी कुलफ़ी जमने लगी। उनकी समझ में नहीं आता था कि वे क्या करें।

तभी किसी को दूर के पर्वत की चोटी पर एक अलाव जलता दिखाई दिया।

सनद खान ने फ़ौरन हुक्म दिया कि पहाड़ से आग लाई जाये।

लोग खान का हुक्म बजाने के लिए दौड़े। पहले एक, फिर दूसरा और फिर तीसरा आबूमी पहाड़ पर चढ़ा। वे सनोबर की घनी शाखाओं के नीचे जलती हुई आग के पास जा पहुंचे और वहां उन्होंने एक शिकारी को आग तापते हुए देखा। उनमें से प्रत्येक अपने साथ एक लकड़ी का टुकड़ा जलाकर लाया, मगर कोई भी उसे जलता हुआ पड़ाव तक नहीं पहुंचा पाया। भारी बारिश के कारण आग रास्ते में ही बुझ गई।

सनद खान को बहुत गुस्सा आया। उसने हुक्म दिया कि जो लोग आग लाने के लिए गये थे और खाली हाथ लौटे थे, उन्हें क़त्ल कर दिया जाये।

जब त्सिरेन की आग लाने की बारी आई तो वह चोरी-चोरी वहां पहुंचा जहां उसने अपने पिता को छिपा रखा था। उसने पूछा—

“अब्बा जान, अब क्या किया जाये? पहाड़ से पड़ाव तक आग कैसे लाई जाये?”

बूढ़े ने जवाब दिया—

“जलती हुई लकड़ी लाना ठीक नहीं रहेगा। वह रास्ते में बरसात से भीगकर बुझ जायेगी। अपने साथ एक बड़ा-सा बर्तन से जाओ और उसमें अंगारे भर लाओ। सिर्फ़ इसी तरह तुम पड़ाव तक आग ला सकोगे।”

त्सिरेन ने वैसा ही किया जैसा उसके बाप ने कहा था। वह पहाड़ से अंगारों से भरा हुआ एक बर्तन ले आया। लोगों ने आग जलाई, कपड़े सुखाये, अपने को गर्माया और खाना पकाया।

सनव खान को जब यह पता चला कि आग लानेवाला कौन है, तो उसने त्सिरेन को अपने पास बुलवाया।

त्सिरेन आया तो खान उस पर बरस पड़ा —

“जब तुम्हें मालूम था कि आग कैसे लाई जा सकती है तो तुम चुप क्यों बैठे रहे? तुमने फौरन ही ऐसा क्यों नहीं बताया?”

“क्योंकि मुझे खुद भी यह मालूम नहीं था कि यह कैसे किया जाये,” त्सिरेन ने जवाब दिया।

“मगर फिर भी तुमने किया तो? सो कैसे?” खान ने जोर देकर पूछा।

खान ने सवाल की ऐसी झड़ी लगा दी कि त्सिरेन को यह मानना ही पड़ा कि अपने पिता की बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह के फलस्वरूप ही वह उसके सभी हुक्म पूरे कर पाया।

“तुम्हारा बाप कहाँ है?” खान ने पूछा।

त्सिरेन ने जवाब दिया —

“मैं उसे चमड़े के बोरे में यहाँ तक अपने साथ लाया हूँ।”

तब सनव खान ने हुक्म दिया कि त्सिरेन के बूढ़े बाप को उसके सामने लाया जाये। उसने बुजुर्ग से कहा —

“मैं अपना हुक्म रद्द करता हूँ। बूढ़े जवानों के लिए भार नहीं है। उम्र का मतलब है अकलमन्दी। अब आपको छिपने की जरूरत नहीं। आप सभी के साथ आजादी से घोड़े पर सवार होकर चल सकते हैं।”

पवन-राज कोतूरा

नेनेत्स लोक-कथा



किसी खानाबदोश कबीले में कभी एक बूढ़ा रहता था जिसकी तीन बेटियाँ थीं। सबसे छोटी बेटी ही सबसे दयालु और समझदार थी।

बूढ़ा बहुत गरीब था। उसका खालों का खेमा खस्ता हाल था और उसमें जहाँ-तहाँ सूरख थे। उनके पास पहनने को बहुत ही थोड़े गर्म कपड़े थे। जब जोर का पाला पड़ता तो बूढ़ा अपनी तीनों बेटियों के साथ सिमट-सिमटा कर आग के पास बैठ जाता और इस तरह वे गर्म रहने की कोशिश करते। रात को सोने के समय वे आग बुझा देते और फिर सुबह होने तक ठिठुरते रहते।

एक बार जाड़े के ऐन बीच में बर्फ का एक बहुत ही भयानक तूफान आया। बहुत ही तेज हवा एक दिन चलती रही, दूसरे दिन धली और तीसरे दिन भी चलती रही। ऐसा लगता था कि हवा खेमों को उड़ा ले जायेगी। लोगों को खेमों से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं होती थी और वे मूखे और ठिठुरते हुए भीतर ही बैठे रहते थे।

बूढ़े और उसकी तीन बेटियों का भी ऐसा ही हाल था। वे खेमे में बैठे हुए गरजते तूफान की आवाज सुन रहे थे। तब बूढ़ा बोला —

“ऐसे बैठे रहकर तूफान के खत्म होने का इन्तजार करना बेकार होगा। इसे तो पवन-राज कोतूरा ने मेजा है। वह जरूर नाराज है और इस बात के इन्तजार में है कि हम उसे अच्छी-सी बीवी भेजें। मेरी सबसे बड़ी बेटी, तुम कोतूरा के पास जाओ वरना हमारी सारी क़ौम ही तबाह हो जायेगी। तुम उसके पास आकर उसकी मिन्नत करो कि वह तूफान को बन्द कर दे।”

“मैं वहाँ जा ही कैसे सकती हूँ?” लड़की बोली। “मुझे रास्ता नहीं आता।”

“ मैं तुम्हें एक छोटी-सी स्लेज देता हूँ। इसे हवा के रुख की सामनेवाली दिशा में रख कर धीरे से धकेल देना और इसके पीछे-पीछे चलती जाना। हवा से तुम्हारे कोट के बन्द खुल जायेंगे, मगर तुम उन्हें कसने के लिए हरगिज नहीं रुकना। तुम्हारे जूतों में बर्फ़ भर जायेगी, मगर तुम उसे निकालने के लिए नहीं ठहरना। एक ऊँचे पहाड़ तक पहुँचने के पहले तुम नहीं रुकना। उसपर चढ़ जाना और छोटी पर पहुँच कर ही अपने जूतों में से बर्फ़ निकालने और कोट के बन्द कसने के लिए रुकना। कुछ समय बाद एक छोटा-सा पक्षी उड़ता हुआ आयेगा और तुम्हारे कंधे पर बैठ जायेगा। उसे डराकर भगाना मत, उसके साथ मेहरबानी से पेश आना और उसे प्यार से सहला देना। तब अपनी स्लेज पर सवार होकर पहाड़ से नीचे उतर जाना। स्लेज तुम्हें कोतूरा के छेमे के बरबाजे के बिल्कुल सामने पहुँचा देगी। तुम छेमे में चली जाना, वहाँ किसी चीज को छूना मत, बस बैठकर इन्तज़ार करना। जब कोतूरा आये तो जो वह कहे, वही करना। ”

सबसे बड़ी बेटी ने फ़र का कोट पहना, पिता की बी हुई स्लेज को हवा के रुख के सामने रखा और उसे धकेल दिया। स्लेज फिसलने लगी।

वह स्लेज के पीछे-पीछे थोड़ी दूर चली तो उसके कोट के बन्द खुल गये, उसके जूतों में बर्फ़ भर गई और उसे बहुत ही ख़ाबा ठंड महसूस हुई। उसने अपने पिता की हिदायतों पर अमल नहीं किया। वह रुकी, उसने अपने कोट के बन्द बाँधे और जूतों में से बर्फ़ निकाली। इसके बाद वह हवा के प्रतिकूल चलती रही। वह बहुत देर तक चली और आखिर उसे एक ऊँचा पहाड़ दिखाई दिया। जैसे ही वह उसकी छोटी पर पहुँची वैसे ही एक छोटा-सा पक्षी उड़ता हुआ आया। वह उसके कंधे पर बैठने ही वाला था कि लड़की ने अपने हाथ हिलाकर उसे दूर भगा दिया। पक्षी ने कुछ देर तक उसके सिर के ऊपर चक्कर काटे और फिर दूर उड़ गया। सबसे बड़ी बेटी स्लेज में बैठी और पहाड़ से नीचे उतरने लगी। स्लेज एक बड़े-से छेमे के सामने जाकर रुक गई।

लड़की छेमे के अन्दर गई। उसने इधर-उधर नज़र डाली तो सबसे पहले उसे हिरन के गोदत का एक बहुत बड़ा मुना हुआ टुकड़ा दिखाई दिया। उसने आग जलाई, अपने को गर्माया और मांस के टुकड़े काटने लगी। वह एक टुकड़ा काटती और खा लेती, फिर दूसरा काटती और उसे भी खा जाती। वह पेट भर कर खा चुकी थी कि तभी अचानक उसे छेमे की तरफ़ किसी के आने की आवाज़ सुनाई दी। बरबाजे पर लटकी हुई खाल उठी और एक बवान बेव अन्दर आया। यही था कोतूरा। उसने बूढ़े की सबसे बड़ी बेटी पर नज़र डाली और कहा –

“ लड़की, तुम कहां से आई हो और तुम्हें यहाँ क्या काम है ? ”

“ मेरे पिता ने मुझे भेजा है, ” लड़की ने जवाब दिया।

“ किसलिए ? ”

“ इसलिए कि तुम मुझे अपनी बीवी बना लो। ”

“ मैं अभी शिकार से लौटा हूँ और कुछ मांस लाया हूँ। तो तुम उठो और उसे पकाओ, ” कोतूरा ने कहा।

बूढ़े की सबसे बड़ी बेटी ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था। जब मांस तैयार हो गया तो कोतूरा ने उसे बर्तन से निकालकर दो हिस्सों में बांट लेने को कहा।

“ तुम और मैं एक हिस्सा खायेंगे, ” वह बोला। “ दूसरा हिस्सा लकड़ी की तश्तरी में रखकर पासवाले छेमे में ले जाओ। खुद छेमे में मत जाना, बरबाजे पर इन्तज़ार करना। एक बुढ़िया तुम्हारे पास बाहर आयेगी। उसे मांस देना और उसके खाली तश्तरी लाने तक इन्तज़ार करना। ”

बूढ़े की सबसे बड़ी बेटी ने तश्तरी में मांस रखा और लेकर बाहर चली गई। हवा बहाड़ रही थी, बर्फ़ गिर रही थी और अंधेरा छाया हुआ था। ऐसे तूफ़ान में कुछ बिछाई ही कैसे दे सकता था ... लड़की थोड़ी दूर गई, रुकी और फिर उसने मांस बर्फ़ पर फेंक दिया। इसके बाद वह खाली तश्तरी लिये हुए कोतूरा के पास आ गई।

कोतूरा ने उसे देखा और पूछा –

“ तुम मांस दे आई ? ”

“ हाँ, दे आई, ” लड़की ने जवाब दिया।

“ मुझे तश्तरी दिखाओ तो। मैं देखना चाहता हूँ कि उन्होंने मांस के बदले में तुम्हें क्या दिया है, ” उसने कहा।

सबसे बड़ी बेटी ने उसे खाली तश्तरी दिखाई, कोतूरा चुप रहा। उसने अपने हिस्से का मांस खाया और जाकर सो रहा।

सुबह हुई तो वह उठा और कुछ ताखी खालें छेमे में लाकर बोला –

“ जब तक मैं शिकार से लौटता हूँ, तुम इन खालों से मुझे एक नया कोट, नये जूते और इस्ताने बना दो। मैं लौटने पर उन्हें पहन कर देखूंगा कि तुम काम करने में होशियार हो या नहीं। ”

इतना कहकर कोतूरा शिकार के लिए टुंड्रा में चला गया। बूढ़े की सबसे बड़ी बेटी

काम में जुट गई। अचानक दरवाजे पर लटकी हुई खाल ऊपर को उठी और पके बालों वाली एक बुढ़िया अन्दर आई।

“बेटी, मेरी आंख में कोई किरकिरी पड़ गई है,” वह बोली। “देखो तो, शायद तुम उसे निकाल सको।”

“मेरे पास तुम्हारे साथ मत्थापच्ची करने का वक्त नहीं है,” सबसे बड़ी लड़की ने जवाब दिया। “मैं काम कर रही हूं।”

बुढ़िया कुछ नहीं बोली, मुड़ी और छेमे से बाहर चली गई। सबसे बड़ी बेटी अकेली रह गई। उसने खालों को जल्दी से कमाया और उन्हें छुरी से काटने लगी। वह शाम तक जल्दी से काम खत्म कर देना चाहती थी। वह इतनी उतावली में थी कि उसने ढंग से कपड़े बनाने की कोशिश नहीं की, मगर जैसे-तैसे उन्हें खत्म कर देना चाहा। उसके पास सीने को सुई नहीं थी और उसे एक दिन में ही काम खत्म करना था।

शाम को कोतूरा शिकार से लौटा—

“मेरे कपड़े तैयार हैं?” उसने पूछा।

“हां,” सबसे बड़ी बेटी ने जवाब दिया।

कोतूरा ने कपड़े लेकर उन पर हाथ फेरा। उसे खाल खुरबरी-सी महसूस हुई। ऐसे बुरी तरह उन्हें कमाया गया था। उसने देखा तो पाया कि कपड़ों को बुरी तरह काटा गया था, उनकी लापरवाही से सिलाई की गई थी और वे उसके लिए बहुत छोटे थे।

ऐसा देखकर वह बेहद झट्टा उठा और उसने सबसे बड़ी लड़की को छेमे से बाहर फेंक दिया। उसने उसे बहुत ही दूर फेंका और वह बर्फ के एक ढेर पर जा गिरी। वह वहां पड़ी रही, पड़ी रही और आखिर ठंड से जमकर मर गई।

हवा का शोर, उसकी दहाड़ और ऊंची हो गई।

बूढ़ा अपने छेमे में बैठा हुआ बिन-रात हवा को दहाड़ते और तूफान को गरजते हुए सुनता रहा। फिर वह बोला—

“सबसे बड़ी बेटी ने मेरी बात नहीं मानी, उसने मेरी हिदायतों पर अमल नहीं किया, इसीलिए हवा गरजती जा रही है। कोतूरा नाराज है। मेरी मंझली बेटी, तुम उसके पास जाओ।”

बूढ़े ने स्लेज बनाई और अपनी मंझली बेटी से वही कुछ कहा जो उसने अपनी सबसे बड़ी बेटी से कहा था और उसे कोतूरा के पास भेज दिया। वह खुद अपनी सबसे छोटी बेटी के साथ छेमे में बैठा तूफान के रुकने का इन्तजार करने लगा।

मंझली बेटी ने हवा के रुख के सामने स्लेज को रखा, उसे धकेला और उसके पीछे-पीछे चल दी। रास्ते में उसके कोट के तस्मे खुल गये और उसके जूतों में बर्फ भर गई। उसे बेहद ठंड लगी और अपने पिता की हिदायतें मूलकर उसने अपने जूतों में से बर्फ निकाली और अपने कोट के तस्मे समय से पहले ही बांध लिए।

वह पहाड़ के पास पहुंची और उस पर चढ़ी। वहां छोटा-सा पक्षी देखकर उसने अपने हाथ हिलाये और उसे खदेड़ दिया। फिर वह अपनी स्लेज में सवार हुई और पहाड़ से नीचे उतरकर सीधी कोतूरा के छेमे के सामने जा पहुंची।

वह छेमे में दाखिल हुई, उसने आग जलाई, पेट भर कर हिरन का मांस खाया और कोतूरा का इन्तजार करने लगी।

कोतूरा शिकार से लौटा तो उसने मंझली बेटी को देखा और पूछा—

“तुम किसलिए यहां आई हो?”

“मेरे पिता ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है,” मंझली बेटी ने जवाब दिया।

“किसलिए?”

“तुम्हारी बीबी बनने के लिए।”

“तो बैठो क्यों हो? मैं भूखा हूं, जल्दी से मेरे लिए कुछ मांस पकाओ।”

मांस जब तैयार हो गया तो कोतूरा ने उसे बर्तन से निकालने और दो हिस्सों में बांटने का हुक्म दिया।

“आधा मांस हम दोनों खायेंगे,” वह बोला। “बाक़ी आधे हिस्से को लकड़ी की उस तश्तरी में डालकर पड़ोस के छेमे में ले जाओ। तुम खुद छेमे में नहीं जाना, उसके पास खड़ी रहकर तश्तरी के वापस लाये जाने का इन्तजार करना।”

मंझली बेटी मांस लेकर बाहर गई। हवा दहाड़ रही थी, बर्फ चक्रवात बना रही थी और कुछ भी देख पाना कठिन था। इसलिए आगे जाना न पसन्द करते हुए उसने मांस को बर्फ में फेंक दिया, घड़ी भर को वहां खड़ी रही और फिर कोतूरा के पास वापस आ गई।

“तुम उन्हें मांस दे आई?” कोतूरा ने पूछा।

“हां, दे आई,” मंझली बेटी ने जवाब दिया।

“तुम बहुत जल्दी आ गई हो। मुझे तश्तरी दिखाओ तो! मैं देखना चाहता हूं कि उन्होंने तुम्हें बदले में क्या दिया है।”

मंझली बेटी ने तश्तरी दिखाई। कोतूरा ने खाली तश्तरी देखी तो मुंह से एक शब्द भी नहीं कहा और जाकर सो रहा। सुबह वह हिरन की कुछ खालें लाया और

दूसरी लड़की से उसकी बहन की ही तरह शाम तक नये कपड़े तैयार करने के लिए कहा।

“काम शुरू कर दो,” वह बोला। “शाम को मैं देखूंगा कि तुम कैसी सिलाई करती हो।”

यह कहकर कोतूरा शिकार पर निकल गया और दूसरी बेटी काम लेकर बैठ गई। वह बड़ी जल्दी में थी, क्योंकि उसे किसी तरह शाम तक सभी काम खत्म कर लेना था। अचानक एक सफ़ेद बालोंवाली बुढ़िया खेमे में आई।

“मेरी आंख में कुछ पड़ गया है, बच्ची,” उसने कहा। “जरा इसे निकाल तो दो। मैं खुद इसे नहीं निकाल सकती।”

“मेरे पास तुम्हारी आंख से मत्थापच्ची करने का वक्त नहीं है,” दूसरी बेटी ने जवाब दिया। “जाओ और मुझे काम करने दो।”

बुढ़िया ने कोई जवाब न दिया और एक भी शब्द और कहे बिना वहां से चली गई। जब रात हुई, तो कोतूरा अपने शिकार से वापस आया।

“मेरे नये कपड़े तैयार हैं?” उसने पूछा।

“हां, ये रहे,” दूसरी बेटी ने जवाब दिया।

“तो देखू मैं जरा इन्हें पहनकर।”

कोतूरा ने कपड़े पहने और उसने देखा कि उनकी कटाई खराब है, वे उसके लिए बहुत छोटे हैं और तमाम सीवनें टेढ़ी-तिरछी हैं। कोतूरा गुस्से से साल-पीला हो गया। उसने दूसरी बेटी को वहीं फेंक दिया, जहां उसने उसकी बहन को फेंका था और वह भी ठंड से मर गई।

और बूढ़ा अपनी सबसे छोटी बेटी के साथ खेमे में बैठा रहा और तूफ़ान के शांत होने की व्यर्थ प्रतीक्षा करता रहा। हवा पहले से भी ज्यादा तेज थी और लगता था कि किसी भी घड़ी खेमा उड़ जायेगा।

“मेरी बेटियों ने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया,” बूढ़े ने कहा। “उन्होंने बात और बिगाड़ दी है, उन्होंने कोतूरा को नाराज कर दिया है। अब तुम ही खिंदा बची हो, लेकिन फिर भी मैं तुम्हें इस आशा के साथ कोतूरा के पास भेज रहा हूं कि वह तुम्हें अपनी पत्नी बना लेगा। अगर वह ऐसा नहीं करता, तो हमारी सारी क़ौम मूखों मर जायेगी। इसलिए बिदिया, तैयारी करो और चल पड़ो।”

और उसने उसे बता दिया कि उसे कहां जाना है और क्या करना है।

सबसे छोटी बेटी खेमे के बाहर आई। उसने स्लेज को हवा की प्रतिकूल दिशा में रखा और धक्के से उसे चलता कर दिया। सांय-सांय करती और गरजती हवा सबसे छोटी बेटी को गिराने की कोशिश कर रही थी और बर्फ़ उसकी आंखों को अंधा किये दे रही थी, जिससे वह कुछ भी न देख पा रही थी।

मगर छोटी बेटी अपने पिता के आवेश के एक शब्द को भी बिन मूले और बिल्कुल उसी के कहे मुताबिक़ हर बात करती अंधड़ में क़दम-पर-क़दम बढ़ाती चली गई। उसके कोट के बन्द खुल गये, मगर वह उन्हें बांधने के लिए नहीं रुकी। उसके जूतों में बर्फ़ मर गई, मगर वह उसे निकालने के लिए नहीं रुकी। सर्वां बहुत ही ज्यादा थी और हवा बड़ी तेज थी, मगर वह जरा भी न रुकी और चलती ही चली गई। पहाड़ पर चढ़ जाने के बाद ही वह रुकी और उसने बर्फ़ को अपने जूतों से निकालना और अपने कोट के बन्दों को बांधना शुरू किया। तभी एक छोटी चिड़िया उड़ती हुई आई और उसके कंधे पर आकर बैठ गई। लेकिन छोटी बेटी ने चिड़िया को मगाया नहीं। इसके बजाय उसने उसे नरमी से सहलाया और बुलराया। जब चिड़िया उड़कर चली गई, तो छोटी बेटी स्लेज पर सवार हुई और ढाल पर से फिसलती हुई सीधे कोतूरा के खेमे के सामने पहुंच गई।

वह खेमे के भीतर गई और इंतज़ार करने लगी। अचानक दरवाजे पर लटकी छाल उठी और एक जवान बैत्याकार पुरुष भीतर आया। जब उसने छोटी बेटी को देखा, तो वह हंस पड़ा और बोला—

“तुम मेरे पास क्यों आई हो?”

“मेरे पिता ने मुझे भेजा है,” सबसे छोटी बेटी ने जवाब दिया।

“किसलिए?”

“आपसे यह निवेदन करने के लिए कि तूफ़ान को रोक दीजिए, क्योंकि अगर आपने ऐसा नहीं किया, तो हमारी सारी क़ौम खत्म हो जायेगी।”

“तुम वहां क्यों बैठी हो? तुम आग जलाकर कुछ गोश्त क्यों नहीं पका लेती?” कोतूरा ने कहा। “मुझे भूख लगी है और भूखी तुम भी होगी ही, क्योंकि मैं देखता हूं कि जब से तुम आई हो, तुमने कुछ नहीं खाया है।”

छोटी बेटी ने जल्दी से गोश्त पकाया और बर्तन से निकालकर कुछ गोश्त कोतूरा को दिया। कोतूरा ने उसमें से कुछ खाया और फिर उससे आधा गोश्त पड़ोस के खेमे को ले जाने के लिए कहा।

छोटी बेटी ने गोश्त की तश्तरी को उठाया और बाहर चली गई। हवा ओरों से गरज रही थी और चक्करों में घूम और नाच रही थी। वह जाये, तो कहां? पड़ोसियों का स्नेहा कहां है? वह जरा देर खड़ी सोचती रही और फिर खुद बिना यह जाने कि कहां जा रही है, वह तूफान में ही चल पड़ी।

अचानक उसके सामने वही चिड़िया आ गई, जो पहाड़ पर उसके पास उड़कर आई थी। अब उसने उसके चेहरे के पास फुदकना शुरू किया। छोटी बेटी ने चिड़िया के ही पीछे चलने की सोच ली। जिधर-जिधर चिड़िया उड़ती थी, उधर-उधर ही वह जाती थी। वह चलती चली गई और आखिर, एक तरफ कुछ हटकर, कुछ दूरी पर, उसे दमकती हुई चिंगारी जैसा कुछ दिखाई दिया। छोटी बेटी की खुशी का पारावार न रहा और वह यह सोचती हुई उसी तरफ चली गई कि स्नेहा वहीं होगा। मगर पास आने पर उसने देखा कि जिसे उसने स्नेहा समझा था, वह असल में एक बड़ा टीला है, जिस से बल खाता धुआं उठ रहा है। छोटी बेटी ने टीले का चक्कर लगाया और उसे अपने पैरों से टटोला। अचानक उसके आगे एक दरवाजा आ गया। सफेद बालोंवाली एक बुढ़िया ने दरवाजे से झांका और कहा—

“कौन हो तुम? किसलिए आई हो?”

“मैं तुम्हारे लिए कुछ गोश्त लाई हूं, बाबी,” छोटी बेटी ने जवाब दिया। “कोतूरा ने मुझसे इसे तुम्हें देने को कहा था।”

“किसने, कोतूरा ने? तो ठीक है, मैं ले लेती हूं। तुम यहीं, बाहर ही इंतजार करो।”

छोटी बेटी टीले के पास खड़ी इंतजार करती रही। उसने काफ़ी देर इंतजार किया। आखिर दरवाजा फिर खुला, बुढ़िया ने बाहर झांका और उसे लकड़ी की तश्तरी दे दी। उस पर कुछ रखा हुआ था, मगर लड़की यह न समझ सकी कि वह क्या है। उसने तश्तरी ली और उसे लेकर कोतूरा के पास लौट आई।

“तुमने इतनी देर क्यों लगाई?” कोतूरा ने पूछा। “तुम्हें वह स्नेहा मिला?”

“हां।”

“तुमने उन्हें गोश्त दे दिया?”

“हां।”

“मुझे तश्तरी दो। मैं देखना चाहता हूं कि इसमें क्या है।”

कोतूरा ने देखा और पाया कि तश्तरी में कई छुरियां, लोहे के सूए और छालों को कमाने की खुरचनियां और मृगरियां थीं। कोतूरा जोरों से हंस पड़ा और बोला—

“तुम्हें कई बुढ़िया चीजें मिली हैं, जो तुम्हारे लिए बड़े काम की साबित होंगी।”

सुबह कोतूरा सोकर उठा और वह खेमे में हिरन की कुछ छालें ले आया और उसने छोटी बेटी को शाम तक एक नया कोट, जूते और इस्ताने तैयार करके देने के लिए कहा।

“अगर तुमने अच्छे बनाये,” उसने कहा, “तो मैं तुम्हें अपनी बीबी बना लूंगा।”

कोतूरा खला गया और छोटी बेटी काम में लग गई। बुढ़िया के उपहार बहुत उपयोगी सिद्ध हुए। कपड़े बनाने के लिए छोटी बेटी को जितनी भी चीजों की जरूरत थी, वे सभी उसके पास थीं। लेकिन एक बिन के भीतर कोई कितना कर सकता है? छोटी बेटी ने इसकी चिंता में जरा भी वक्त नहीं लगाया, बल्कि जितना वह कर सकती थी, करने की कोशिश की। उसने छालों को साफ़ और चिकना किया, उन्हें काटा और सीना शुरू किया। अचानक दरवाजे पर लटकी छाल उठी और सफेद बालोंवाली एक बुढ़िया भीतर आई। छोटी लड़की उसे तुरंत पहचान गई—यह वही बुढ़िया थी, जिसके पास वह गोश्त ले गई थी।

“मेरी मदद कर, बच्ची,” बुढ़िया बोली। “मेरी आंख में कुछ गिर गया है। जरा इसे निकाल दे, मैं खुद इसे नहीं निकाल सकती।”

छोटी बेटी ने मना नहीं किया। उसने अपना काम अलग रख दिया और जल्दी ही बुढ़िया की आंख से किरकिरी को निकाल दिया।

“बहुत अच्छा,” बुढ़िया ने कहा। “मेरी आंख में अब तकलीफ़ नहीं है। अब जरा मेरे बायें कान में तो देख।”

छोटी बेटी ने बुढ़िया के कान में देखा और चौंक पड़ी।

“क्या बिछ रहा है?” बुढ़िया ने पूछा।

“तुम्हारे कान में एक लड़की बैठी हुई है,” छोटी बेटी ने जवाब दिया।

“तू उसे बुला क्यों नहीं लेती? वह कोतूरा के कपड़े तैयार करने में तेरी मदद करेगी।”

छोटी बेटी बहुत ही खुश हुई और उसने लड़की को आवाज दी। उसकी पुकार पर एक नहीं, बल्कि चार लड़कियां बुढ़िया के कान से कूद पड़ीं और चारों तरफ काम में जुट गईं। उन्होंने छालों को कमाया और चिकना किया, काटा और सिया। कपड़े जल्दी ही तैयार हो गये। उसके बाद बुढ़िया ने चारों लड़कियों को फिर अपने कान में छिपा लिया और वहां से चली गई।

शाम को कोतूरा अपने शिकार से लौटकर आया।

“तुमने मेरा कहा सब कर लिया?” उसने पूछा।

“हां,” छोटी बेटा ने जवाब दिया।

“दिखाओ मुझे मेरे नये कपड़े, मैं उन्हें पहनकर देखूंगा।”

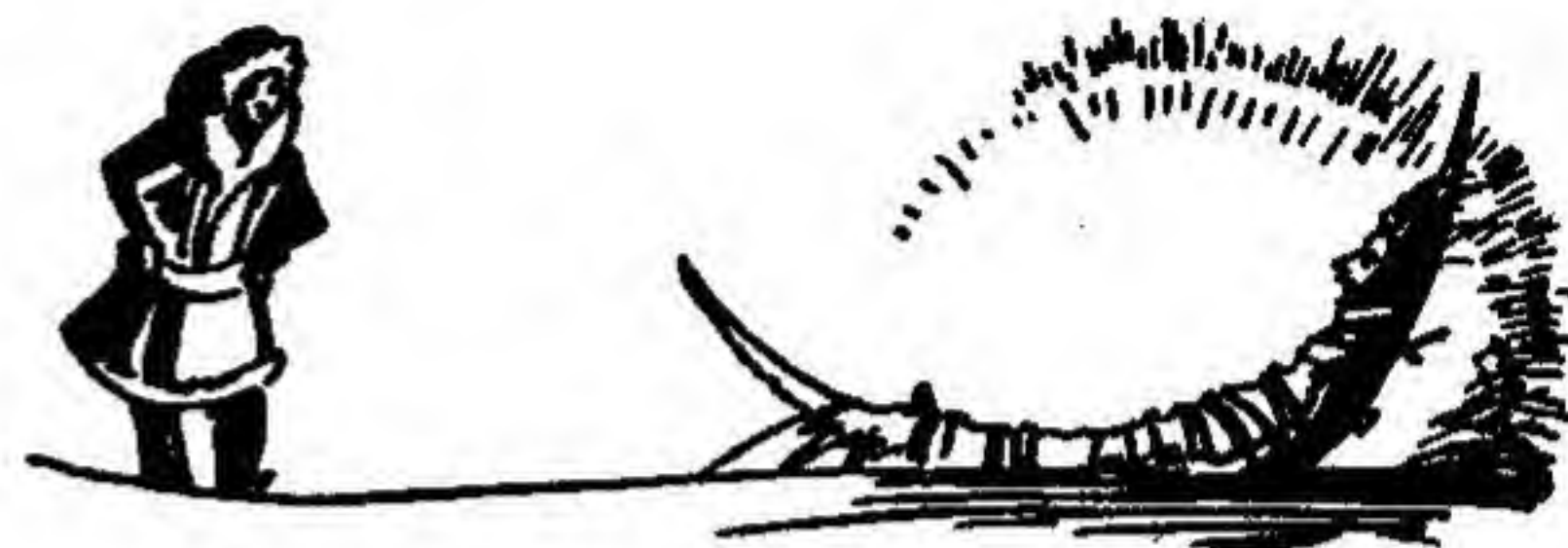
छोटी बेटा ने उसे कपड़े दिये, कोतूरा ने उन्हें लेकर उनपर अपना हाथ फेरा—छालें गरम और छूने में अच्छी लगती थीं। उसने कपड़े पहने—वे न बहुत छोटे थे, न बहुत बड़े, बल्कि उस पर फबते थे और टिकाऊ थे। कोतूरा मुस्कराया और बोला—

“तुम मुझे पसंद हो और मेरी मां और मेरी चारों बहनों को भी तुम अच्छी लगती हो। तुम काम अच्छा करती हो और हिम्मतवाली हो। अपनी क्रीम को बचाने के लिए तुमने एक खबरबस्त तूफान का सामना किया। मेरी बीवी बनो और मेरे साथ मेरे छेमे में रहो।”

उसके मुंह से ये शब्द निकले ही थे कि टुंड्रा में तूफान शांत हो गया। लोग अब हवा से बचने की कोशिश नहीं करते थे, ठंड के मारे जमते नहीं थे। दिन की रोशनी में सब के सब अपने-अपने छेमों से निकल आये!

लड़की और चन्द्रमा

चक्वी जाति की लोक-कथा



चक्वी जाति में कभी एक आदमी रहता था जिसकी सिर्फ एक ही संतान, इकलौती बेटा थी। लड़की अपने बाप की सबसे अच्छी मददगार थी। वह हर गर्मी अपने छेमे से बहुत दूर गुजारती, अपने पिता के बारहसिंगों के झुण्ड की देखभाल करती। जाड़े में वह झुण्ड को और भी दूर ले जाती। कभी-कभार ही वह खुराक के लिए अपने सभारी के बारहसिंगे पर घर आती।

एक रात को जब वे छेमे की ओर जा रहे थे तो बारहसिंगे ने अपना सिर ऊपर उठाया और आकाश की ओर देखा।

“उधर देखो! उधर देखो!” वह चिल्लाया।

लड़की ने ऊपर को देखा तो पाया कि चंद्रमा एक स्लेज में नीचे आ रहा है। उसकी स्लेज में दो बारहसिंगे जुते हुए थे।

“वह कहाँ और किसलिए जा रहा है?” लड़की ने पूछा।

“वह तुम्हें उठा ले जाना चाहता है,” बारहसिंगे ने जवाब दिया।

लड़की को बड़ी चिन्ता हुई।

“अब मैं क्या करूं? बहुत मुमकिन है कि वह मुझे अपने साथ उठा ही ले जाये!” वह चिल्लाई।

बारहसिंगे ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। वह अपने सुम से बर्फ हटाने लगा और इस तरह उसने एक गढ़ा बना लिया।

“जल्दी करो, इस गढ़े में छिप जाओ!” वह बोला।

लड़की गढ़े में जा बैठी और बारहसिंगा उसके ऊपर बर्फ जमाने लगा। कुछ ही बेर में लड़की गायब हो गई और वहाँ बर्फ का टीला ही बाकी रह गया जो यह जाहिर करता था कि लड़की कहां छिपी हुई है।

चन्द्रमा आकाश से नीचे आया, उसने अपने बारहसिंगे रोके और स्लेज से उतरा। उसने अपने इर्दगिर्द, इधर-उधर देखा और लड़की की तलाश की। मगर वह उसे नहीं मिली। चन्द्रमा बर्फ के टीले के पास भी गया, उसके शिखर को भी देखा, मगर वह न मांप सका कि वहां क्या है।

“बड़ी अजीब बात है!” चन्द्रमा ने कहा। “जाने वह लड़की कहां गायब हो गई? वह तो मुझे कहीं दिखाई ही नहीं देती। अच्छा, मैं अब आता हूं और कुछ बेर बाद फिर नीचे आऊंगा। तब मैं उसे जरूर खोज लूंगा और अपने साथ ले जाऊंगा।”

ऐसा सोचकर वह स्लेज में सवार हो गया और उसके बारहसिंगे उसे आकाश में उड़ा ले गये।

उसके जाते ही बारहसिंगे ने बर्फ हटा दी और लड़की गढ़े से बाहर निकल आई।

“हमें जल्दी से छेमे में पहुंच जाना चाहिए,” वह बोली। “वरना चन्द्रमा मुझे फिर से देख लेगा और नीचे आ जायेगा। दूसरी बार मैं उससे छिप नहीं सकूंगी।”

वह स्लेज पर सवार हुई और बारहसिंगा हवा से बातें करने लगा। वे बहुत जल्दी ही अपने डेरे पर पहुंच गये और लड़की अपने पिता के छेमे में भाग गई। मगर उसका पिता वहां नहीं था। अब कौन मदद करेगा?

बारहसिंगा बोला—

“तुम्हें अवश्य छिप जाना चाहिए क्योंकि चन्द्रमा हमारा पीछा कर रहा होगा।”

“मगर मैं कहां छिपूँ?” लड़की ने पूछा।

“मैं तुम्हें बड़े-से पत्थर में बदल दूँ तो कैसा रहे?” बारहसिंगा बोला।

“नहीं, इससे फायदा नहीं होगा। उसे पता चल जायेगा।”

“अगर हथौड़े में बदल दूँ?”

“नहीं, यह भी ठीक नहीं होगा।”

“बांस?”

“नहीं।”

“बरवाजे पर लटकनेवाली छाल का एक बाल?”

“नहीं, नहीं।”

“तब क्या बनाऊँ? हाँ, अब सूझा—चिराय बना दूँ?”

“ठीक है।”

“तो झुक जाओ।”

लड़की झुक गई। बारहसिंगे ने जमीन पर अपना सुम मारा और लड़की चिराय बन गई। उसकी तेज रोशनी से सारा छेमा जगमग कर उठा।

इसी बीच चन्द्रमा लड़की के बारहसिंगों के बीच उसकी खोज करता रहा था। अब वह तेजी से डेरे की ओर आया।

उसने अपने बारहसिंगों को एक छम्मे के साथ बांधा, छेमे के अन्दर गया और फिर से लड़की की तलाश करने लगा। उसने उसे सभी जगह खोजा, मगर वह उसे नहीं मिली। उसने लड़की को छेमे की छत को सहारा देनेवाले छम्मों के बीच खोजा, हर बर्तन की जांच-पड़ताल की, खालों का हर बाल, बिस्तर के नीचे की हर टहनी, फर्श की मिट्टी के हर कण को बहुत ध्यान से देखा, मगर लड़की कहीं भी नहीं मिली।

जहां तक चिराय का ताल्लुक है, उसे वह दिखाई ही नहीं दिया। बेशक वह खूब चमकता था, मगर चन्द्रमा की भी उतनी ही चमक-दमक थी।

“अजीब बात है,” चन्द्रमा बोला। “कहां चली गई वह? मुझे फिर से आकाश में वापस जाना पड़ेगा।”

वह छेमे से बाहर गया और बारहसिंगों को खोलने लगा। वह अपनी स्लेज पर सवार हो गया और जाने ही वाला था कि लड़की बरवाजे पर लटकते हुए छाल के पर्दे के पास आई और कमर तक बाहर झुककर जोर से हंसी और उसने पुकारते हुए चन्द्रमा से कहा—

“यह रही मैं! यह रही मैं!”

चन्द्रमा अपने बारहसिंगे वहीं छोड़कर तेजी से छेमे की ओर भागा आया। मगर लड़की फिर से चिराय बन गई थी।

चन्द्रमा उसकी खोज करने लगा। उसने हर टहनी और हर पत्ते को देखा, खालों के हर बाल और मिट्टी के कण-कण की जांच की, मगर लड़की उसे नहीं मिली।

“बड़ी अजीब बात है यह! कहां चली गई वह? कहां गायब हो गई? लगता है कि मुझे लड़की के बिना ही लौटना पड़ेगा।”

मगर जैसे ही वह छेमे से बाहर गया और उसने अपने बारहसिंगे खोलना शुरू किये, वैसे ही लड़की ने पर्दे से बाहर झांका और हंसकर कहा—

“यह रही मैं! यह रही मैं!”

चन्द्रमा भागकर छेमे में गया और फिर से खोज करने लगा। उससे बहुत बेर तक तलाश की, हर चीज को उलट-पलट कर देखा, मगर लड़की उसे नहीं मिली।

वह तो खोज-खोज कर बहुत ही थक गया, दुबला और कमजोर हो गया। टांगें हिलाते या बांहें ऊपर उठाते हुए भी उसे तकलीफ होती।

लड़की अब उससे डरती नहीं थी। वह अपनी असली शक्ति में सामने आ गई, छेमे से बाहर निकलकर उसने चन्द्रमा को चित गिराया और रस्ती से उसके हाथ-पैर बांध दिये।

“ओह ! ” चन्द्रमा कराह उठा। “ मैं जानता हूं कि तुम मेरी जान ले लोगी ! तो मुझे मार ही डालो ! ठीक है, मेरे साथ ऐसा ही होना चाहिए, यह मेरा अपना ही दोष है। मैं तुम्हें धरती से उठा ले जाना चाहता था। मगर मरने से पहले मुझे खालों से ढक दो, मुझे अपना तन गर्मा लेने दो, मैं तो बिल्कुल ठिठुर गया हूं ... ”

लड़की को बड़ी हैरानी हुई।

“तुम ठिठुर गये हो ? ” वह बोली। “तुम तो खुले में रहते हो, बेघर हो, तुम्हारा तो कोई छेमा नहीं है। तुम खुले में रहते हो और तुम्हें वहीं रहना चाहिए। तुम्हें खालों का क्या करना है ! ”

तब चन्द्रमा लड़की के सामने गिड़गिड़ाने लगा और उसने कहा —

“चूंकि मैं बेघर हूं और मेरी किस्मत में सदा ऐसे ही रहना बदा है, इसलिए तुम मुझे आकाश में घूमने के लिए आजाद कर दो। मैं तुम्हारे लोगों के लिए वर्षानीय रहूंगा, उन्हें खुशी दूंगा। तुम मुझे आजाद कर दो और मैं तुम्हारे लोगों के लिए आकाश-बीप बन जाऊंगा और टुंड्रा में से उन्हें राह दिखाऊंगा। तुम मुझे आजाद कर दो और मैं रात को विन में बदल दूंगा ! मुझे आजाद कर दो और मैं तुम्हारे लोगों के लिए साल भर का हिसाब बन जाऊंगा। शुरू में मैं बूढ़े सांड का चांद बनूंगा, फिर बछड़ों के जन्म का, फिर जल का, फिर पत्तों का, उसके बाद गर्माहट का, फिर मृग-भृंग झड़ने का, फिर जंगली बारहसिंगों के प्यार का, फिर प्रथम जाड़े और उसके बाद छोटे होते हुए दिनों का चांद बन जाऊंगा। ”

“अगर मैं तुम्हें आजाद कर दूं, तो फिर से ताकतवर हो जाने और अपने हाथों-पैरों की शक्ति लौट आने पर तुम मुझे उठा ले जाने के लिए आकाश से नीचे तो नहीं उतरोगे ? ”

“ओह नहीं, कभी नहीं ! मैं तो तुम्हारा रास्ता ही भूल जाने की कोशिश करूंगा ! तुम मुझ से कहीं अधिक समझदार हो ! मैं फिर कभी आकाश से नीचे नहीं आऊंगा ! तुम सिर्फ मुझे आजाद कर दो और मैं धरती तथा आकाश को जगमग कर दूंगा। ”

इस तरह लड़की ने चन्द्रमा को आजाद कर दिया। वह आकाश में ऊपर उठा और धरती उसकी रोशनी में नहा गई।

बूढ़ा और जवान पाला

लिथुआनियाई लोक-कथा



कभी कहीं एक बूढ़ा पाला रहता था और उसका एक बेटा था जवान पाला। ऐसा शोखीखोर था वह कि बयान से बाहर। वह अपनी डींग हांकता हुआ यही कहता फिरता था कि उस जैसा समझदार और शक्तिशाली बुनिया में दूसरा कोई है ही नहीं।

एक दिन जवान पाले ने अपने मन में कहा —

“मेरा बाप बूढ़ा हो गया है और अपना काम ढंग से नहीं करता। मैं जवान और ताकतवर हूँ। मैं लोगों को ठंड से कहीं अधिक अकड़ा सकता हूँ। मुझ से न तो कोई बच सकता है और न ही मुझ पर कोई क्राबू पा सकता है। मैं हरेक को मज्जा चखा सकता हूँ।”

बस, जवान पाला किसी को ठंड से अकड़ाने के लिए चल दिया। सड़क पर पहुंच कर उसने देखा कि एक जागीरदार बग्गी में बैठा जा रहा है जिसके आगे मोटा-ताजा और तेज घोड़ा जुता हुआ है। जागीरदार खुद भी हट्टा-कट्टा था, फ़र का गर्म कोट पहने हुए और उसके पैर नमदे से ढके हुए थे।

जवान पाले ने जागीरदार को देखा तो हंसा।

“वाह!” उसने कहा। “ढक लो, खूब ढक लो अपने को! मगर फिर भी मुझ से न बच पाओगे! हो सकता है कि मेरा बूढ़ा बाप तुम से न निपट पाता, मगर मैं तो

तुम्हें वह मज्जा चखाऊंगा कि याद करोगे! न फ़र का कोट तुम्हें बचा पायेगा और न तुम्हारा नमदा!”

जवान पाला उड़कर जागीरदार के पास पहुंचा और लगा उसे सताने, परेशान करने। वह नमदे के भीतर जा घुसा, आस्तीन में गया, कासर के नीचे घुसड़ गया और उसकी नाक पर चुटकियां-सी काटने लगा।

जागीरदार ने अपने कोचवान को हुक्म दिया कि वह घोड़े को और तेज कर दे। “बरना मेरी तो कुलफ़ी जम आयेगी,” वह चिल्लाया।

जवान पाला उसे और अधिक तंग करने लगा, नाक पर अधिक जोर से चुटकियां काटने और हाथों-पैरों को बर्फ़ बनाने लगा। जागीरदार को सांस लेने में भी तकलीफ़ होने लगी।

जागीरदार इधर-उधर हिला-डुला, सीट पर दायें-बायें हुआ, उसे मुरझुरी आई और वह और ज्यादा सिकुड़-सिमट गया।

“और तेज चलाओ,” वह चिल्लाया। “और तेज कर दो घोड़े को!”

मगर कुछ ही बेर बाद उसने चिल्लाना भी बन्द कर दिया। उसकी आवाज ही जाती रही थी।

जागीरदार जब घर पहुंचा और उसे बग्गी में से निकाला गया तो मुश्किल से ही उसकी सांस आ-जा रही थी।

जवान पाला अब उड़कर अपने पिता, बूढ़े पाले के पास पहुंचा और लगा अपनी डींग हांकने, शोखी बघारने।

“देखी पिताजी, देखी आपने मेरी ताकत! मेरी बराबरी आप क्या करेंगे! देखा कैसे हट्टे-कट्टे जागीरदार की मैंने कुलफ़ी जमा दी! कैसे मैं फ़र के गर्म कोट के नीचे जा छिपा! आपसे यह कभी न हो पाता! ऐसे मजबूत और हट्टे-कट्टे आदमी का आप कभी ऐसा बुरा हाल न कर पाते!”

बूढ़ा पाला मुस्कराया।

“अरे शोखीखोर!” उसने कहा। “बहुत बढ़-बढ़कर डींग न हांक अपनी ताकत और बहादुरी की! यह सही है कि तूने मोटे जागीरदार का ठंड से बुरा हाल कर दिया और तू उसके फ़र कोट के नीचे जा घुसा। मगर यह तो कोई मार्क की बात नहीं। वह देखो, वह हड़ीला-सा किसान मरियल-से घोड़े की स्लेज पर तार-तार हुआ कोट पहने जा रहा है। देख रहा है न?”

“हां, देख रहा हूँ।”

“वह लकड़ियां काटने के लिए जंगल की ओर जा रहा है। तू जाकर जरा उसकी कुलफ्री बनाने की कोशिश कर देख। अगर तुझे ऐसा करने में कामयाबी मिल जाये तब मैं मान जाऊंगा कि तू बहुत ताकतवर है।”

“वाह! यह भी कौन-सी बड़ी बात है!” जवान पाला बिल्लाया। “मिनट भर में उसे जमाये देता हूं!”

जवान पाला हवा में उड़ता हुआ किसान की ओर चल दिया। उसके करीब पहुंचकर उसने उस पर हल्का बोल दिया और लगा उसे परेशान करने। वह उसपर एक ओर से झपटा फिर दूसरी ओर से, मगर किसान अपना घोड़ा बढ़ाता गया, रुका नहीं। तब जवान पाले ने किसान के पैरों पर चुटकियां काटनी शुरू कीं, मगर किसान अपनी स्लेज से उतर गया और अपने घोड़े के साथ-साथ दौड़ने लगा।

“जरा ठहरो तो,” जवान पाले ने सोचा। “जंगल में पहुंचने पर मैं तुम्हारी कुलफ्री बनाऊंगा!”

देहाती जंगल में पहुंचा, उसने कुल्हाड़ी निकाली और लगा जोर-जोर से फर और भूज वृक्षों पर चलाने। छपछियां कट-कटकर सभी दिशाओं में गिरने लगीं।

मगर जवान पाले ने उसे चैन न लेने दिया। उसने देहाती के हाथ-पैर ठंड से जकड़ लिये और उसके कालर के नीचे जा घुसा।

किन्तु जवान पाले ने उसे ठंड से जितना ही ज्यादा परेशान करने की कोशिश की, देहाती ने उतने ही ज्यादा जोर-शोर से कुल्हाड़ी चलाई और उतने ही ज्यादा वृक्ष काट डाले। आखिर वह पसीने-पसीने हो गया और उसने अपने दस्ताने भी उतार दिये।

जवान पाला बहुत देर तक किसान को परेशान करता रहा और आखिर थक गया।

“खैर, कोई बात नहीं,” उसने अपने आप से कहा। “तुम्हारे छक्के तो मैं छुड़ाकर ही रहूंगा। जब तुम घर की ओर जाओगे, तब मैं तुम्हें बर्फ कर दूंगा।”

वह स्लेज की ओर भागा और किसान के दस्ताने पड़े देखकर उनमें जा घुसा। वह वहां बैठा था और अपने आप से यह कहता हुआ हंस रहा था—

“अब मैं भी देखूंगा कि किसान अपने दस्ताने कैसे पहनता है! मैंने उन्हें ऐसे अकड़ा दिया है कि कोई उनमें अपनी उंगलियां तक नहीं घुसेड़ सकता!”

जवान पाला बैठा था किसान के दस्तानों में और किसान किसी भी ओर चीज की ओर ध्यान दिये बिना लकड़ियां काटता जाता था। वह लकड़ियां काटता गया, काटता गया और आखिर उसने इतनी लकड़ियां काट लीं कि स्लेज भर जाये।

“अब मुझे घर चलना चाहिए,” किसान ने सोचा।

उसने अपने दस्ताने लिये और उन्हें पहनने की कोशिश की, मगर वे पत्थर की तरह सख्त थे।

“हां, अब बताओ, तुम क्या करोगे?” जवान पाले ने हंसते हुए अपने मन में पूछा।

मगर किसान ने जब यह देखा कि दस्ताने ठंड से अकड़ गये हैं तो उसने कुल्हाड़ी लेकर उन पर लगातार चोट करना शुरू की।

किसान कुल्हाड़ी से दस्तानों की करता था घुनाई और उसके भीतर बैठे पाले को जाली भी चलाई।

किसान ने जवान पाले की वह पिटाई की कि मुश्किल से ही उसकी जान बची।

किसान अपने घोड़े को तेजी से दौड़ाता हुआ लकड़ी लेकर अपने घर चला गया।

जवान पाला लड़खड़ाता और कराहता हुआ अपने पिता के पास पहुंचा।

बूढ़े पाले ने जवान पाले को आते देखा तो जोर का ठहाका लगाया।

“क्या बात है बेटा,” उसने पूछा। “तुम ऐसे लड़खड़ा क्यों रहे हो?”

“किसान की कुलफ्री बमाते-बनाते बिल्कुल दम निकल गया।”

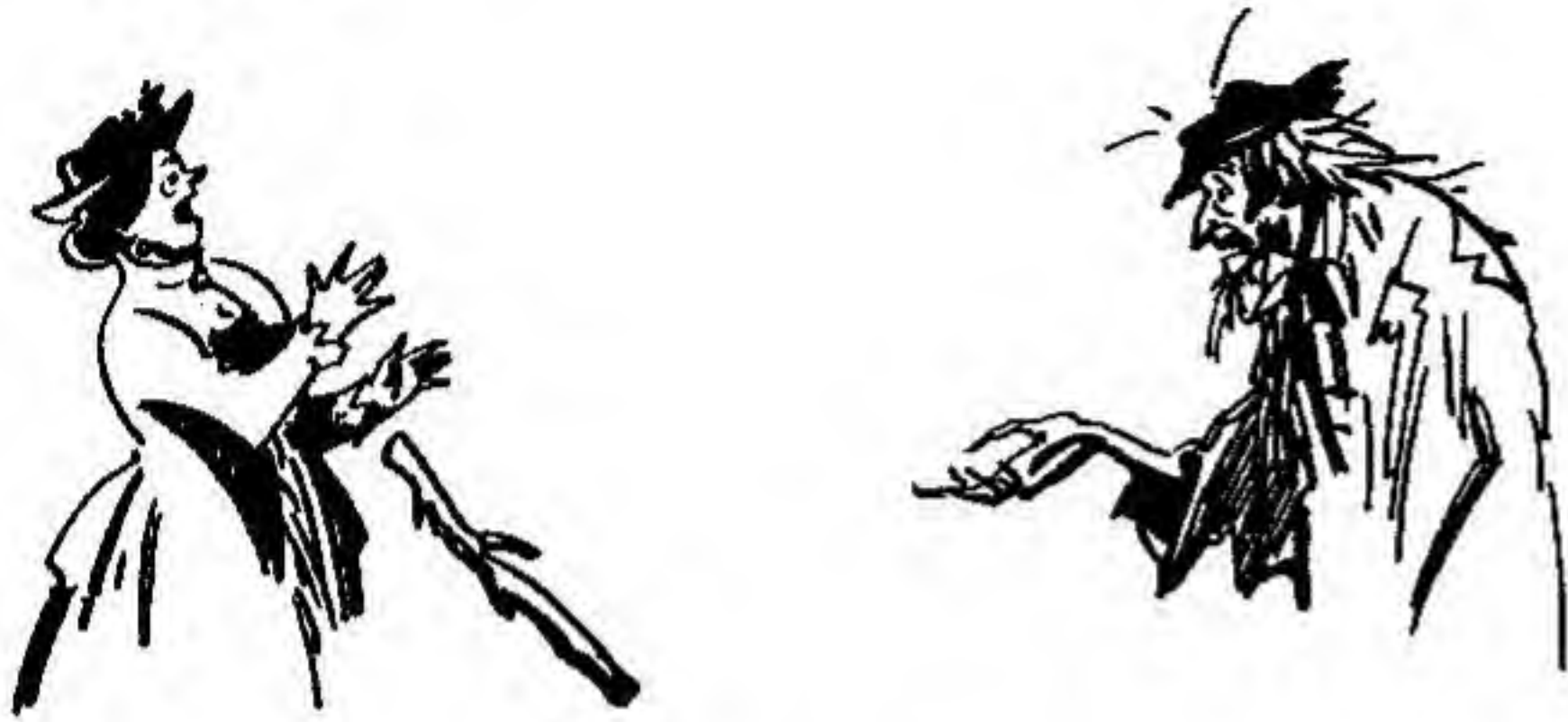
“तुम ऐसे बर्बनाक ढंग से कराह क्यों रहे हो?”

“किसान ने मार-मारकर मुरकस निकाल दिया है।”

“तो मेरे बेटे, तुम्हारे लिये यह अच्छा सबक है। हरामखोर जागीरदारों से निपटना तो कुछ मुश्किल नहीं, मगर किसान के सामने कभी किसी की दाल नहीं गलती! यह अब कभी न भूलना!”

एक नवाब कैसे घोड़ा बना

लाटवियाई लोक-कथा



किसी जमाने में कहीं एक नवाब रहता था, बहुत ही जातिम। उसे अपने मजदूरों पर जरा भी ब्या न आती और उनसे ऐसे कसकर काम लेता कि उनकी जान सबों पर आ जाती। त्योहारों-समारोहों पर भी वह उन्हें चैन न लेने देता।

एक बार क्या हुआ कि एक बड़े त्योहार के दिन भी, जब अधिकतर लोग मेहनत करने के बाद आराम कर रहे थे, उसने अपने मजदूरों को अनाज गाहने के लिए खलिहान में भेज दिया।

इसके पहले बेचारे मजदूर सारा दिन और सारी रात अनाज गाहते रहे थे। वे इतने थक गये थे कि उनसे खड़ा भी न हुआ जाता था।

उन्होंने खलिहान में जाकर काम शुरू ही किया था कि नवाब हाथ में डंडा लिये हुए खुद वहां आ पहुंचा। उसे लगा कि उसके मजदूर बहुत धीरे-धीरे काम कर रहे हैं। वह उन्हें डांटने-फटकारने और गालियां देने लगा। अपना डंडा दिखाता हुआ वह चिल्लाया —

“ए कामचोरो! जब तक सारा अनाज नहीं गाह लोगे, तुम्हें यहां से बाहर नहीं जाने दूंगा।”

मजदूरों ने नवाब से यह प्रार्थना की कि वह उन्हें गाहनी में जोतने के लिए एक घोड़ा दे दे ताकि काम जरा जल्दी से हो जाये।

“क्या कहा, तुम्हें घोड़ा दे दूं!?” वह चिल्ला उठा। “अगर तुमने फिर कभी घोड़े का नाम लेने की भी जुरत की तो मैं अपने हाथों से तुम सब के गले घोंटकर तुम्हें भार डालूंगा! कोई घोड़ा-बोड़ा नहीं मिलेगा तुम्हें! घोड़े के लिए आराम करना जरूरी है। तुम लोग खुद ही यह काम करो!”

नवाब डांट-फटकारकर झटपट खलिहान से बाहर चला गया। धूल फांकना मला किसी भच्छा लगेगा!

वह बाहर गया ही था कि मजदूरों ने किसी को पुकारते हुए सुना —

“ए रुक जाओ! रुक जाओ!”

तभी एक घोड़ा हिनहिनाया और लगाम की घंटी बजी। जाहिर था कि कोई घोड़े को लगामें पहना रहा था।

कौन हो सकता है यह?

अचानक एक बूढ़ा खलिहान में आया। बहुत ही बूढ़ा था वह। उसकी लम्बी सफेद दाढ़ी और बिजली की तरह चमकती हुई आंखें थीं। वह अपने पीछे-पीछे एक जानदार मुर्गी घोड़े को कसकर लगामों से पकड़े लिये आ रहा था।

उसने मजदूरों को नमस्कार किया और बोला —

“यह रहा तुम्हारे लिये घोड़ा। इसे गाहनी के साथ जोतो और इससे खूब कसकर काम लो। जब अंगल जाओ तो छकड़े पर लकड़ी लादकर लाने की जरूरत नहीं। तुम बस बूझ गिराकर उसी के सिरे पर इस घोड़े को जोत देना। वह तनों-शाखाओं समेत उसे घसीटकर नवाब के घर पहुंचा आयेगा। अगर यह अड़े और काम करने से इन्कार करे तो इस पर बड़ी बेरहमी से खाबुक बरसाना, जरा भी ब्या नहीं करना। इसके पहलुओं और पीठ पर चाहे कितने भी खाबुक मारना, मगर इसके सिर को मूलकर भी नहीं छूना। इसे खाने के लिए भी कुछ नहीं देना। शाम को इसे अस्तबल में ले जाकर पट्टों के सहारे छत से टांग देना। सारा दिन काम करने के बाद उसे रात भर छत से लटके रहने देना। इससे केवल लाभ ही होगा।”

बूढ़ा इतना कहकर गायब हो गया।

घोड़ा जोर से हिनहिनाया। उसकी आवाज नवाब की कावाज से इतनी मिलती-जुलती थी कि मजदूरों को यह पहचानने में देर न लगी कि यह कैसा घोड़ा हो सकता है।

“शायद यह बिजली का देवता पेकोन ही था जो हमारे लिये यह घोड़ा लेकर आया था,” उन्होंने कहा। “पेकोन देव की आज्ञा का तो अवश्य ही पालन किया जाना चाहिए। उसने हमें जैसा हुक्म दिया है, हम वैसा ही करेंगे।”

उन्होंने मुश्की घोड़े को गाहनी के साथ जोत दिया और फौरन काम में जुट गये। घोड़ा बड़ा अड़ियल था। वह जोर-जोर से हिनहिनाने, पैर पटकने और गर्दन झटकने लगा। जाहिर था कि वह काम से जी चुराता था। मगर उन्होंने इसकी कुछ परवाह न करते हुए उसकी खूब पिटाई की ताकि वह अड़े नहीं।

उस दिन के बाद यही सिलसिला चलता रहा। जब कभी कोई कठिन काम करना होता तो वे मुश्की घोड़े को ही जोत लेते। अगर वह अड़ता तो वे चाबुकों और डंडों से उसकी खूब मरम्मत करते।

घोड़ा आराम किये बिना दिन भर काम में जुटा रहता। जब रात होती तो वे उसे अस्तबल में ले जाकर पट्टों के सहारे छत से टांग देते जहां वह सुबह होने तक लटका रहता।

उसे खाने के लिये भी कुछ न दिया जाता। काम के अपने सारे समय में वह जाड़े के दिनों में छकड़े से चोरी-चोरी थोड़ा-सा मूसा और गर्मियों में कुछ बिछुआ ही खा पाता।

जिस दिन से घोड़ा आया था, उसी दिन से जालिम नवाब का कहीं अता-पता न था। उसकी बीवी ने उसकी बहुत तलाश की, बहुत खोज की, मगर बेसूब।

पूरा एक साल गुजर गया। शुरू में तो घोड़ा बड़ा जानदार, चुस्त और तेज था, मगर साल के अन्त में वह बिल्कुल ढल गया। उसकी आंखें धंस गईं, होंठ लटक गये, अगल-बगल हड्डियां निकल आईं, पीठ टेढ़ी-मेढ़ी हो गई और उसके बाल इधर-उधर बुलक गये।

नवाब की बीवी ने इस घोड़े को एक दिन आंगन में देखा तो साईस से कहा -
“इस बूढ़े और बेकार के घोड़े को तो अब जंगल में ले जाकर गोली मार देनी चाहिए। इसे देखकर तो मेरी तबीयत परेशान होने लगती है!”

मगर साईस ने भी सम्भवतः यह अनुमान लगा लिया था कि यह घोड़ा किस तरह का है और इसलिए उसने उसे ले जाकर गोली नहीं मारी।

एक बड़े त्योहार की सुबह को, जब सभी लोग आराम कर रहे थे, मुश्की घोड़ा चुपचाप अपने अस्तबल से बाहर निकला। वह नवाब के सब्जी के बगीचे में जाकर पत्ता गोभी खाने लगा।

नवाब की बीवी घूमने के लिए बाहर आई और बगीचे में टहलने लगी। यहां उसने क्या देखा कि वही कम्बल घोड़ा जल्दी-जल्दी पत्ता गोभी के पत्ते तोड़ता और हड़पता जाता है।

मालकिन आग-बबूला हो उठी।

“ओह, कम्बल, चंरा ठहर तो! मैं अभी तुझे मजा चखाती हूं!”

इतना कहकर उसने मोटा-सा डंडा उठाया और घोड़े के सिर पर दे मारा। उसने डंडा मारा ही था कि उसे अपने सामने अपना पति खड़ा दिखाई दिया।

नवाब ने बड़ी दयनीय और भरी-भरी-सी आवाज में कहा -

“प्यारी बीवी, तुम मुझे क्यों पीटती हो? क्या तुम मुझे गोभी के पत्ते खाते भी नहीं देख सकतीं? साल भर भूखा रहने के बाद तो मुझे ये बड़िया से बड़िया पकवानों से भी ज्यादा मजेदार लग रहे हैं!”

बीवी ने अब उसे पहचान लिया और लगी हाय-वाय करने। नवाब तो अब बिल्कुल नवाब जैसा न रहा था। वह सूखकर कांटा हो गया था और उसके चेहरे का रंग स्याह पड़ गया था। उसकी दाढ़ी और नाखून लम्बे-लम्बे हो गये थे। उसके सारे जिस्म पर छरोछें और छराशें ही नजर आ रही थीं। उसके कपड़े बिल्कुल खींचे होकर रह गये थे।

उसकी बीवी ने उसका हाथ थामा और चुपचाप भीतर ले गई ताकि किसी की नजर न पड़े।

उस दिन के बाद नवाब बहुत शान्त और ब्यालु हो गया।

जैसी करनी वैसी भरनी

एस्तोनियाई लोक-कथा



एक बार का जिक्र है कि एक बूढ़ा राहगीर सड़क पर चला जा रहा था। झुटपुटा हो गया था और रात का अन्धेरा छानेवाला था।

बूढ़े ने किसी जगह रात बिताने के लिए पनाह लेने की सोची। उसने एक बड़े-से घर की छिड़की पर दस्तक दी।

“मुझे अपने घर में रात बिता लेने दीजिये,” उसने कहा।

उसकी आवाज सुनकर घर की अमीर मालकिन बाहर निकली और लगी अजनबी को डांटने-फटकारने और उसे भला-बुरा कहने।

“अभी तुम पर कुत्ते छोड़ दूंगी!” वह चिल्लाई। “तब तुम्हें मजा आयेगा मेरे घर में रात गुजारने की इच्छा प्रकट करने का! चलता बन यहां से!”

बूढ़ा आगे चल दिया। उसे किसी गरीब का छोटा-सा घर दिखाई दिया। उसने छिड़की खटखटाई।

“भले लोगो, मुझे अपने घर में एक रात के लिए पनाह दे दो!”

“चले आओ, अन्दर चले आओ,” मालकिन ने तपाक से कहा। “तुम खुशी से हमारे घर में रात बिता सकते हो, मगर यहां जगह की तंगी है और शोर-गुल बहुत है।”

अजनबी घर के अन्दर गया। उसने देखा कि घर में बहुत गरीबी है। वहां उसे बहुत-से बच्चे दिखाई दिये और उनकी कमीजें फटी-पुरानी थीं, तार-तार हुई पड़ी थीं।

“तुम्हारे बच्चे ऐसे फटेहाल क्यों हैं?” अजनबी ने पूछा। “तुम उन्हें नई कमीजें क्यों नहीं बनवा देतीं?”

“कहां से बनवा दूं नई कमीजें?” औरत ने जवाब दिया। “मेरे पति का देहान्त हो चुका है और बच्चों के पालन-पोषण का भार मुझे अकेले ही उठाना पड़ता है... कपड़ों-सत्तों की तो बात ही दूर रही, हमारे पास तो खाने भर के लिए भी काफ़ी पैसे नहीं हैं।”

अजनबी यह सब कुछ सुनकर मौन रहा। घर की मालकिन ने रात का खाना मेज पर लगाया और उससे खाने में शामिल होने के लिए कहा।

“नहीं, धन्यवाद,” बूढ़े ने जवाब दिया। “मुझे मूख नहीं है। मैंने अभी थोड़ी बेर पहले ही खाना खाया है।”

उसने अपना पैला खोला और उसमें से खाने की सभी चीजें निकालकर बच्चों को खिलाई। इसके बाद वह लेट गया और लेटते ही खरटि लेने लगा।

सुबह हुई तो बूढ़ा उठा, उसने मेहमाननेवाजी के लिए घर की मालकिन का शुक्रिया अदा किया और वहां से रवाना होते समय कहा -

“जो काम सुबह ही शुरू करोगी, शाम तक उसे ही जारी रखोगी।”

औरत अजनबी के इन शब्दों का अर्थ नहीं समझी और उसने इनकी ओर लास ध्यान भी नहीं दिया। वह बूढ़े को फाटक तक छोड़कर घर में लौटी।

“अगर इस गरीब आवामी ने भी यह कहा कि मेरे बच्चे चिथड़े पहने हुए हैं, तो बाक़ी लोग जाने क्या कहेंगे!” उसने सोचा।

चुनांचे उसने घर में पड़े हुए कपड़े के आखिरी टुकड़े से कमीज सीने का इराबा किया। इसलिए वह अपनी धनी पड़ोसिन के घर से गज लेने गई ताकि उस कपड़े को मापे और यह देखे कि वह एक कमीज के लिए भी काफ़ी है या नहीं।

गरीब औरत अपनी पड़ोसिन के घर से लौटकर सीधे माल-सामान की अपनी कोठरी में गई। उसने ताक से कपड़ा लिया और उसे मापने लगी। वह मापती जाती थी और कपड़ा अधिकाधिक लम्बा होता जाता था। उसका तो अन्त ही नबर नहीं आता था। वह बिन भर उसे मापती रही और केवल शाम होने पर ही खत्म कर पाई।

इतना कपड़ा तो उसकी और उसके बच्चों की कमीजों के लिए आजीवन काफ़ी होगा।

“तो यह मतलब था अजनबी के शब्दों का!” उसने सोचा।

उसी शाम को वह अपनी धनी पड़ोसिन को गज वापस देने गई। उसने अपनी पड़ोसिन को सारा किस्सा सच सच कह सुनाया और बताया कि अब उसने कपड़े से कोठरी भर ली है।

“हाय, राम! मैंने उसे अपने घर में रात क्यों नहीं बिताने दी!” धनी औरत ने मन ही मन सोचा। उसने फौरन अपने नौकर को बुलाकर कहा—

“ए नौकर! जल्दी से गाड़ी में घोड़ा जोतो और उस मिछारी के पीछे जाओ! जैसे भी हो उसे वापस लेकर आओ! गरीबों की खुले दिल से मदद करनी चाहिये। मैं तो हमेशा ऐसा ही कहती आई हूं!”

नौकर सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ उस मिछारी की तलाश में चल दिया। अगले दिन वह उस से जा मिला। मगर बूढ़े ने वापस चलने से इन्कार कर दिया।

नौकर ने बहुत दुखी होते हुए कहा—

“मेरी जान मुसीबत में पड़ गई! अगर तुम्हें लेकर वापस नहीं जाता हूं, तो मालकिन पगार दिये बिना ही मुझे चलता कर देगी।”

“दुखी न होओ, नौजवान,” बूढ़े ने कहा। “चलो, ऐसा ही सही! मैं तुम्हारे साथ चलता हूं।”

बूढ़ा घोड़ा-गाड़ी में सवार होकर नौकर के साथ चल दिया।

धनी औरत अपने फाटक पर खड़ी हुई बड़ी बेसब्री से उनके लौटने का इन्तजार कर रही थी।

मालकिन ने सिर झुकाकर और मुस्कानें बिखराते हुए बूढ़े का स्वागत किया। उसने उसे खिलाया-पिलाया और सोने के लिए नर्म बिस्तर बिछा कर कहा—

“प्यारे बाबा, लेट कर आराम करो!”

बूढ़ा धनी औरत के घर में एक दिन, दूसरे दिन और फिर तीसरे दिन रहा। वह खाता-पीता, आराम करता और पाइप के कश लगाता रहा। मालकिन उसे खाने-पीने को देती रही, मीठी-मीठी बातें करती रही, मगर मन ही मन गुस्से से उबलती रही।

“जाने यह बूढ़ा-खूसट कब यहां से चलता बनेगा?”

मगर वह बूढ़े को निकालने की हिम्मत न कर पाती। ऐसा करने से उसकी सारी मेहनत, सारी दौड़-धूप पर पानी फिर जाता।

चौथे दिन सुबह ही सुबह बूढ़े ने चलने की तैयारी शुरू की। मालकिन की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। वह उसे विदा करने के लिए घर से बाहर निकली। बूढ़ा

चुपचाप फाटक तक गया और ऐसे ही बाहर निकल गया। तब धनी मालकिन अपने को बश में न रखकर बोली—

“मैं आज क्या करूं, मुझे यह तो बताते जाओ।”

बूढ़े ने उसकी ओर देखा और कहा—

“जो तुम सुबह करोगी, वही शाम तक करती जाओगी।”

धनी औरत भाग कर मकान के अन्दर गई और उसने कपड़ा मापने के लिए गज उठाया।

मगर तभी उसे जोर की छींक आई, इतने जोर की कि आंगन में जमा भुर्गियां डर कर पंख फड़फड़ाती हुई इधर-उधर भागने लगीं।

इसके बाद वह हके बिना दिन भर छींकती रही—

“आं-छी! आं-छी! आं-छी!”

वह न तो छा-पी पाई और न प्रश्नों के उत्तर दे सकी। उस से केवल यही सुनाई दे रहा था—

“आं-छी! आं-छी! आं-छी!”

और केवल सूर्यास्त होने और अन्धेरा छा जाने पर ही उसने छींकना बन्द किया।